प्रकीर्णक पुस्तकमाला

श्रीनिवास ग्रंथावली

संपादक
डा० श्रीकृष्ण लाल

नागरीप्रचारिणी सभा, काशी

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_182906

UNIVERSAL
LIBRARY

OUP—707—25-4-81—10,000.

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No H 80 S77S

Accession No. PG H6306

Author श्रीनिवास

Title श्रीनिवास ग्रन्थावली

This book should be returned on or before the date last marked below

प्रकीर्णक पुस्तकमाला

श्रीनिवास ग्रंथावली

संपादक
डा० श्रीकृष्ण लाल



नागरीप्रचारिणी सभा, काशी,-

प्रकाशक—नागरीप्रचारिणी सभा, काशी,
मुद्रक—नागरी मुद्रण, काशी,
प्रथम सस्करण १५००, स० २०१०, मूल्य.

भूमिका

वैराग्य, नीति और श्रृगार शतको के स्वनामधन्य कवि भर्तृहरि ने तीन प्रकार की वृत्तियो वाले मनुष्यो की चर्चा की है :

वैराग्ये संचरत्येको, नीतौ भ्रमति चापरः।
श्रृगारे रमते कश्चित् भूरि भेदाः परस्परम्॥

हिंदी साहित्य में वैराग्य, नीति और श्रृगार यही तीन प्रधान वृत्तियाँ है जिनमें परस्पर भूरि भेद है। श्रृंगार रस में प्रवृत्त कवि और कोविदो की सख्या अपार है, वैराग्य का सचार करानेवाले साहित्यकार भी हिंदी में कम नही हैं, परंतु नीति-साहित्य हिंदी में बहुत ही कम है। कबीर, तुलसी, नरहरि और रहीम के पश्चात् रीतिकाल के पिछले खेवे में वृद, बैताल, गिरधर कविराय, दीनदयाल गिरि और गिरधरदास के सुभाषित, नीति के दोहे, छप्पय, कुडलियाँ और अन्योक्तियाँ ही नीति-साहित्य की निधि है। यो तो अन्य अनेक कवियो ने भी नीति के दोहे और छद लिखे है और सतसई के रचयिता कवियो ने भी नीति के दोहे कुछ न कुछ अवश्य ही लिखे है परंतु सब मिलाकर हिंदी का नीति-साहित्य समृद्ध नही कहा जा सकता।

उन्नीसवी शताब्दी में गद्य साहित्य का प्रचार होने पर जहाँ श्रृगार और वैराग्य का साहित्य प्रचुर मात्रा में लिखा जाने लगा, वहाँ नीति-साहित्य की उपेक्षा ही दिखाई पड़ती है। गद्य-साहित्य के प्रारंभिक चार महारथियो में लल्लूलाल ने 'राजनीति' के नाम से हितोपदेश का ब्रजभाषा गद्य में अनुवाद कर नीति-साहित्य की नीव अवश्य डाली परंतु अन्य लेखको द्वारा उसकी उपेक्षा ही हुई। कुछ विद्वानो का अनु-

मान है कि नाटक और उपन्यास उपदेश के लिए ही बने है[1], परतु हिंदी के अधिकांश नाटक और उपन्यास भी शृगार के ही पोषक रहे हैं। शृगार, भक्ति और वैराग्य की धूमधाम में हितोपदेश की परम्परा पर नीति-साहित्य की उत्कृष्ट रचना का एक मात्र श्रेय आधुनिक युग में लाला श्रीनिवास दास को है।

शृंगार और वैराग्य के विपरीत जो लाला श्रीनिवास दास ने सदाचार-नीति-प्रधान साहित्य की रचना की उसे बहुत कुछ अँगरेजी साहित्य का प्रभाव माना जा सकता है। अँगरेजी शिक्षा और साहित्य के प्रभाव से १९ वी शताब्दी के शिक्षितो में शृगार और वैराग्य के प्रति उपेक्षा और नीति तथा चरित्र-शोधन गुण का आग्रह बढ़ रहा था। "अँगरेजी भाषा की अग्रगण्य लेखक-मंडली'[2] अपने चरित्र-शोधन शिक्षा का बडा अभिमान रखती थी और मानती थी कि "मारल प्रीचिग केवल अग्रेजी ही में गिरो है'[2] परतु बालकृष्ण भट्ट ने इस दावे का थोथापन सिद्ध करते हुए लिखा है कि—

"उदार चरितानान्तु वसुधैव कुटुम्बकम्"—इस तरह के सैकडों हजारों चोखे से चोखे जिनके एक एक पद में 'मारल्स' टपका पडता है विलायत के किस साहब ने उन्हें (भारतीय ऋषिगण को) आकर सिखाया था। तब

---

१. उपदेश जगत् का बहुत बडा बोझा साहित्य के इन्हीं दो (नाटक और उपन्यास) अटूट और अजर पहियों पर रहता है। ये दोनों चक्के ऐसे पक्के और प्रौढ़ हैं कि जब से जगत् की सृष्टि हुई और उपदेश का जब से उपयोग होने लगा तब से ये दोनों सदा देश के साहित्य में उपदेश वहन का कार्य निरतर करते आते है किंतु तनिक भी नहीं घिसे न नाकाम हुए। गोपालराम गहमरी, काशी हिन्दी साहित्य सम्मेलन

२. भट्ट निबधमाला, भाग २, प्रथम सं० २००४, पृ० ९२।

यह कहना कि 'मोरालिटी' सिर्फ अंग्रेजी तालीम के साथ गिरी है, निरा बड़बोल और हिमाकत है[1]—

फिर भी यह तो मानना ही पड़ेगा कि अंगरेजी शिक्षा के प्रभाव से ही लोगो को शृगार से अरुचि हुई और अपने ऋषिगणों की नीति-शिक्षा की ओर रुचि हुई। उदाहरण के लिए 'हरिश्चंद्र चंद्रिका' भाद्रपद कृष्ण सवत् १९३६ मे प्रकाशित चतुर्भुज मिश्र गयावासी का बनाया 'अवधूत' नाटक की प्रस्तावना देखिए:

सूत्रधार—क्या प्यारी अभी तक शिगार ही करती हो ?

नटी—शिंगार क्या—मै तो योगिन बन बैठी हूँ, प्राणप्यारे ! आज आप ही आप नाट्य खेलो, मै नहीं आऊँगी .

सूत्रधार—क्या प्यारी रूठ गई ? नहीं आवेगी ?

नटी—नहीं जी नहीं ! आजकल नये सभ्य लोग आदि रस से घिनाते हैं, तो हमको देखकर कब आनदी होंगे—ढके पर्दे यहाँ ही रह जाय तो अच्छा है .

सूत्र०—अरी भोली तू कुछ नहीं समझती . यह ऊररी बात है . कमल-नैनी को कौन छोड़नेवाला है ! क्या हाथी के दाँत तुमने नहीं देखे ? वह क्या खाने से लिये है ?

नटी—स्वामी ! क्या समाचार-पत्र नहीं पढ़ते हो ? इसी रस के कारण कितना विवाद होता है . भीतरे भीतर चाहे देवता मनावे पर ऊपर से तो मेरा अपमान जरूर ही करेंगे [पृ० १६८]

इससे जान पड़ता है कि रीतिकालीन शृंगारी साहित्य के प्रति नये सभ्य लोगो में विवाद प्रारम्भ हो गया था और धीरे धीरे नई शिक्षा वाले शृगार रस से अरुचि रखने लगे थे। शृगार के उत्कट विरोध

---

१ वही पृ० ६२

का युग अभी आगे आने वाला था, परंतु १९ वीं शताब्दी के तीसरे चतुर्थांश से ही कुछ लोगो मे शृगार से अरुचि होने लगी थी और यह अगरेजी शिक्षा के कारण ही हुआ था। फिर लाला श्रीनिवास दास तो पाश्चात्य साहित्य के बडे प्रेमी थे और उनकी रचनाओ पर पाश्चात्य साहित्य का पर्याप्त प्रभाव है। अस्तु, लाला श्रीनिवास दास को भारतेन्दु के साथ आधुनिक युग का अग्रदूत माना जा सकता है।

लाला श्रीनिवास दास, भारतेन्दु हरिश्चंद्र के सच्चे समकालीन थे। इनका जन्म भारतेन्दु से कुछ ही महीने पश्चात् सं० १९०७ में हुआ था और मृत्यु भी थोडे ही समय के अंतर पर सं० १९४४ में हुआ और इन्हें आयु भी भारतेन्दु की अपेक्षा केवल दो वर्ष अधिक मिली। नाटककार के रूप में भारतेन्दु युग में भारतेन्दु के समकक्ष केवल इन्ही को रखा जा सकता है और उपन्यास-लेखक के रूप में तो ये १९ वी शताब्दी में अद्वितीय है। इनका हिन्दी-प्रेम भी भारतेन्दु के समान ही उत्कट था, भारतेन्दु से इनकी घनिष्ट मित्रता भी थी और उनके पत्रो तथा रचनाओ को ये बडे चाव से पढ़ते थे[1]। भारतेन्दु को भी इनकी रचनाएँ प्रिय थी। इनके 'रणधीर और प्रेममोहिनी' नाटक में प्रस्तावना का अभाव देख उन्होने स्वय इसकी प्रस्तावना लिखकर इसका अभिनय कराया और इस प्रस्तावना में सूत्रधार के मुख से कहलवाया कि—

उस (रणधीर और प्रेममोहिनी) नाटक में वे सब गुण हैं जो मै चाहता हूँ.

लाला श्रीनिवास दास माहेश्वरी वैश्य थे और मथुरा-निवासी लाला मंगीलाल के तीन पुत्रो में मध्यम थे। लाला मंगीलाल मथुरा के सुप्रसिद्ध सेठ राजा लक्ष्मण दास, जिनका वृ दावन में विख्यात श्रीरंग जी का मंदिर है, के यहाँ मुनीबी का काम करते थे। इन सेठ जी की एक

---

१. भारतेन्दु मडल—श्रीब्रजरत्न दास पृ० ४६.

कोठी दिल्ली में भी थी और वहाँ के प्रधान मुनीब लाला मगीलाल थे। लाला श्रीनिवास दास बचपन से ही बडे मेधावी और कार्य कुशल थे। इन्होने घर पर ही हिन्दी, उर्दू, संस्कृत, फारसी, और अंगरेजी की शिक्षा प्राप्त की और १८ वर्ष की अवस्था में ही महाजनी कारबार और व्यापार में इतने दक्ष हो गए कि उन्हे दिल्ली की कोठी का सारा भार सौप दिया गया। इनकी योग्यता देखकर पजाब सरकार ने इन्हे म्यूनिसिपल कमिश्नर और आनरेरी मैजिस्ट्रेट बनाया और अनेक पत्रो ने सं० १९४० में इनका नाम लेजिस्लेटिव कौसिल के लिए भी प्रस्तावित किया। अपनी योग्यता और कार्य-कुशलता के कारण ये वैश्य-समाज और राजकीय शासको द्वारा समान रूप से आदृत थे।

व्यापार के कार्य में अत्यंत व्यस्त रहते हुए भी इन्हे अध्ययन की लगन थी और इन्होने हिंदी, संस्कृत, फ़ारसी, और अंगरेजी में प्रचुर साहित्य का अध्ययन किया था। इनकी रचनाओ से इनके विस्तृत ज्ञान का परिचय मिलता है। अध्ययन के साथ मौलिक रचना की ओर भी इनका ध्यान रहता था। अपने व्यस्त अल्प जीवन में इन्होने चार नाटक और एक उपन्यास लिखा, 'सदादर्श' पत्र का सपादन किया, साथ ही 'कविवचन-सुधा', 'हरिश्चद चंद्रिका' तथा 'भारतेन्दु' मे लेख भी लिखते रहते थे। 'प्रह्लाद चरित्र' इनकी प्रथम रचना है जो अत्यंत साधारण और कुछ अर्थों में असफल भी कही जा सकती है। सम्भवत: इसी कारण लाला जी इसे अपनी रचना कहने में संकोच करते थे और इसका प्रकाशन इनके जीवन-काल में नही हुआ मरने पर सं० १९५२ में हुआ। 'तप्ता सवरण' इनकी दूसरी नाटक-रचना है जो प्रथम बार 'हरिश्चद्र मैग-जीन' में १४ फरवरी १८७४ तथा १५ मार्च १८७४ में क्रमश. छपा था और १८८३ खड्गविलास प्रेस बाँकीपुर से पुस्तकाकार प्रकाशित हुआ। लेखक ने इसकी भूमिका में लिखा है:

इसमें कुछ लोकोपकारी विषय नहीं पाया जाता, यह केवल शृंगार विषयक पुरानी चाल का एक छोटा सा नाटक है, परंतु सज्जनों ने इसका यहाँ तक आदर किया कि गुजराती भाषा मै इसका अनुवाद होकर मुम्बई के 'बुद्धिवर्धक' नामी प्रसिद्ध मासिक पत्र मै प्रकाशित हुआ.

लोकोपकारी विषय न होने से ऐसा जान पडता है कि लेखक को यह नाटक बहुत रुचिकर नही जान पडा क्योंकि लाला श्रीनिवास दास के साहित्य की प्रथम विशेषता उसका लोकोपकारी और शिक्षाप्रद होना है। फिर भी पाठको ने इसका आदर किया और यह है भी आदरयोग्य. यह ठीक है कि इस पर प्राचीन संस्कृत नाटकों विशेषकर 'शकुतला' की बडी गहरी छाप है, परंतु १८७४ तक इतनी मौलिक नाट्य-रचना भी हिन्दी में नही हुई थी। 'नाटक अथवा दृश्य काव्य' शीर्षक पुस्तिका में भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने हिन्दी नाटको का जो क्रम स्थिर किया है उसके अनुसार 'नहुष' हिन्दी का पहला नाटक है, राजा लक्ष्मण सिंह की 'शकुतला' दूसरा, भारतेन्दु का 'विद्यासुंदर' तीसरा और लाला श्रीनिवास दास का 'तपती सवरण' चौथा नाटक है।[1] इनमें 'नहुष' नाटक के संबंध में कुछ कहा नही जा सकता, परंतु 'शकुंतला' और 'विद्यासुंदर' दोनो अनुवाद ग्रथ हैं, अस्तु 'तप्ता सवरण' अपने युग की प्रथम सफल मौलिक रचना कही जा सकती है।

लेखक की तीसरी रचना 'रणधीर और प्रेममोहिनी' हिन्दी का प्रथम दु.खान्त नाटक है। १९ वी शताब्दी में भारतेन्दु की 'चंद्रावली' नाटिका और लाला श्रीनिवास दास की 'रणधीर और प्रेममोहिनी' नाटक ही सफल रचनाएँ हैं जिनमें 'चंद्रावली' नाटक की अपेक्षा काव्य ही अधिक है; वास्तविक नाट्य-कला की दृष्टि से 'रणधीर और प्रेममोहिनी' ही भारतेन्दु युग की सर्वोत्तम कृति है। यह १८७८ में लिखी गई और उसी वर्ष

---

१ भारतेन्दु-ग्रथावली भाग १ प्रथम सस्करण पृ० ७५३

प्रकाशित होकर 'सदादर्श' सम्मिलित 'कविवचन सुधा' के पाठको को बिना मूल्य वितरित हुई। इस नाटक की पाठको और आलोचको ने भूरि भूरि प्रशंसा की। प्रयाग के अगरेजी पत्र 'इडियन ट्रिब्यून' ने २३ फरवरी १८७८ मे लिखा था कि 'इस रचना में आदि से अंत तक लेखक ने इगलैंड के कृत्रिम नाट्य-रचनाओ के अस्वाभाविक आडम्बरो के प्रदर्शन के बिना ही निर्बाध रूप से संकलनत्रयी का निर्वाह किया है। किसी काल-दोष से यह भद्दा नही हुआ और विषम तत्वो के प्रयोग से कही असुदर नही हुआ। इस नाटक मे हम परोक्ष रूप से पृथ्वीराज युगीन भारत में पहुच जाते हैं और चौहान द्वारा कन्नौज की राजकुमारी के हरण का स्वप्न देखने लगते है।'[१] और म्योर सेन्ट्रल कालेज इलाहाबाद के सस्कृत प्रोफेसर पं० आदित्यराम भट्टाचार्य एम० ए० ने लिखा था कि 'हिन्दी रचनाओ के वर्तमान अभावावस्था में कोई भी रचना चाहे वह मौलिक रूपांतर हो अथवा अनुवाद, स्वागत योग्य है, परंतु जब आपकी प्रस्तुत रचना के समान एक कृति उन अनेक गुणो से युक्त है जो एक नाटकीय रचना को सुरुचिपूर्ण पाठको के पढ़ने योग्य बनाती है—शैली की सुकुमारता, सकलनत्रयी, चरित्रों का चरित्र-चित्रण और इन सबके साथ उद्देश्य मे नैतिक सदाचरण से पूर्ण और हृदयस्पर्शी ढग से दुःखात हो तो ऐसी

---

१ Throughout the piece, the author maintains all the three unities inviolate without giving it the unnatural appearance of plays of the artificial School in England. It is disfigured by no anachronisms and the beauty is marred nowhere by the introduction of heterogeneous elements. We are imperceptibly transported to the India of Prithi Raj and begin to dream of the Chohan carrying off the princess of Kanauge...

रचना त्रिगुण स्वागत योग्य है।'[1] इतना ही नहीं लन्दन के 'एलेन्स इंडियन मेल' (Allens Indian Mail) ने २८ अगस्त १८८३ में लाला श्रीनिवास दास की हिन्दी रचनाओं की प्रशंसा की। हिन्दी के 'सार सुधानिधि' 'कविवचन सुधा', 'भारतमित्र' 'सज्जन-कीर्ति-सुधाकर' (उदयपुर), 'भारतबंधु' (अलीगढ़) 'शुभचिंतक' (कानपुर) 'हिंदी प्रदीप' (प्रयाग) आदि पत्रोंने इस नाटक की मुक्तकंठ से प्रशंसा की। कलकत्ता के बँगला पत्र 'सोमप्रकाश' और बम्बई के गुजराती पत्र 'रास्तगोफ्तार' ने भी इसकी अनुकूल आलोचना की। प्रयाग की आर्य नाट्य-सभा ने ६ दिसम्बर १८७९ को इसका अभिनय भी किया जिसे देखने अनेक महाशय दूर दूर से आए थे और अभिनय भी अति उत्तम हुआ। इस अभिनय के लिए भारतेन्दु ने एक प्रस्तावना लिखी थी जो इस प्रकार है :

नान्दी

(गाइए गनपति जगबन्दन। चाल में)

गीत

जय जय हरि निज जन सुखदाई। विश्व ब्रह्म विभु त्रिभुवनराई॥
भक्त चकोर चंद्र सुखरासी। घट घट व्यापक अज अविनासी॥

१.In the present dearth of Hindi productions any work whether it be an original adaptation or translation, is welcome, but when a production such as that of yours combines in it the many excellent merits that make a dramatic composition readable to readers of taste, the graces of style, the unities, the delineation of character, and withal is really moral in its aims and touchingly tragical, such a work is thrice welcome.

आरज धर्म्म प्रचारक स्वामी। प्रेमगम्य प्रभु पन्नगगामी ॥
करि करुणा प्रभु प्रीति प्रकासौ। भारत सोक मोह तम नासौ ॥

(सूत्रधार आता है।)

सूत्रधार—हाँ प्रभु ! "भारत सोक मोह तम नासौ". देखो अगरेजों की दया से पश्चिम से विद्या का स्रोत प्रवाहित होकर सारे भारतवर्ष को प्लावित कर रहा है परतु हिन्दू लोग कमल के पत्ते भाति उसके स्पर्श से अब भी अलग हैं. (कुछ सोचकर) सचमुच नाटक के प्रचार से इस भूमि का बहुत कुछ भला हो सकता है. क्योंकि यहाँ के लोग कौतुकी बड़े हैं. दिल्लगी से इन लोगों को जैसी शिक्षा दी जा सकती है वैसी और तरह से नहीं. तो मैं भी क्यों न कोई ऐसा नाटक खेलूँ जो आर्य्य लोगों के चरित्र का शोधक हो (नेपथ्य की ओर देखकर) प्यारी ! आज क्या यहाँ न आओगी ?

(नटी आती है)

नटी—प्राणनाथ ! मै तो आप ही आती थी. कहिए क्या आज्ञा है ?

सूत्रधार—प्यारी ! आज इस आर्य्य समाज के सामने कोई ऐसा नाटक खेलो जिसका फल केवल चित्त बिनोद ही न हो

नटी—जो आज्ञा, परतु वह नाटक सुखात हो कि दुःखात ?

सूत्र०—प्यारी ! मेरी जान तो इस संसार रूपी कपट नाटक के सूत्रधार ने जगत को दुःखात बनाया है. कैसा भी राजपाट, उत्साह, विद्या, खेल तमाशा क्यों न हो अत में कुछ नहीं. सबका अत दुःख है इससे दुःखात ही नाटक खेलो.

नटी—मेरी भी यही इच्छा थी. क्योंकि दुःखात नाटक का दर्शकों के चित्त पर बहुत देर असर बना रहता है.

सूत्र०—और नाटक भी कोई नवीन हो और स्वभाव बिरुद्ध न हो. कहो तुम कौन सोचती हो.

नटी—नाथ ! दिल्ली के रईस लाला श्रीनिवास दास जी का बनाया रणधीर प्रेममोहिनी नाटक क्यों न खेला जाय . मेरे जान तो उसका आज कल हिन्दी समाज में चर्चा भी है इससे वही अच्छा होगा .

सूत्र०—हाँ, हाँ बहुत अच्छी बात है . उस नाटक में वे सब गुण हैं जो मै चाहता हूँ . तो चलो हम लोग शीघ्र ही वेश सजें . और खेल का आरभ हो .

नटी—चलिए .

(दोनों जाते हैं)

नट का गान

आवहु मिलि भारत भाई । नाटक देखहु सुख पाई—आवहु मिलि०
जब सों बढ़यौ विषय इत मूरखता सब नैननि छाई ।
तब सों बाढे भाँड भगतिया गनिका के समुदाई ।
ऐसो कोउ न बिनोद रह्यौ इन जामैं जीअ लुभाई ।
सज्जन कहन सुनन देखन के लायक दृग सुखदाई ॥
ताही सों यह सब गुन पूरन नाटक रच्यौ बनाई ।
याहि देखि श्रम करहु सफल मम यह बिनवत सिर नाई ॥
आवहु मिलि भारत भाई ॥
श्री हरिश्चद्र (बनारस)

दु.खांत नाटक लिखना भारतीय नाट्य-परंपरा मे नही है फिर भी यह नाटक भारतेन्दु को रुचिकर हुआ और सभी पाठक भी इससे मुग्ध रहे, यह इस नाटक की सफलता का सर्वोत्तम प्रमाण है ।

'रणधीर और प्रेममोहिनी' के पश्चात् सन् १८८२ में लाला जी का प्रथम उपन्यास 'परीक्षागुरु' प्रकाशित हुआ जिसे हिंदी का भी प्रथम उपन्यास कहा जा सकता है । अम्बिकादत्त व्यास ने 'गद्य-काव्य मीमांसा' के अत में ७६ उपन्यासो के नाम और प्रकाशन-तिथि दी है

जिसके अनुसार 'परीक्षागुरु' ही हिंदी का सर्वप्रथम उपन्यास ठहरता है। इससे पूर्व दो उपन्यास-ग्रथो की रचना का उल्लेख प्राप्त होता है--एक पंजाब के श्रद्धाराम फुल्लौरी की 'भाग्यवती' और दूसरा भारतेन्दु हरिश्चंद्र कृत 'पूर्णप्रभा चंद्रप्रकाश' है, परंतु पिछली कृति गुजराती से अनुवाद मात्र है जिसे मल्लिका देवी ने अनुवादित किया था और भारतेन्दु ने उसे शोधा था। 'भाग्यवती' यदि मौलिक रचना है तो निश्चय ही उसे हिंदी का सर्वप्रथम उपन्यास माना जा सकता है, परंतु हिंदी का प्रथम सफल और मौलिक उपन्यास लाला श्रीनिवास दास का 'परीक्षागुरु' ही है जिसका 'भारतेन्दु' पत्रिका ने 'रणधीर और प्रेममोहिनी' का सहोदर कह कर स्वागत किया था।

लाला जी की अंतिम कृति 'संयोगता स्वयम्बर' एक ऐतिहासिक नाटक है जो चंद बरदाई कृत 'पृथ्वीराज रासो' और आत्माराम केशवजी द्विवेदी कृत 'पृथिराज चहुआण' से कथा-भाग लेकर रचा गया और सार सुधानिधि यंत्र कलकत्ता से १८८५ ई० में प्रकाशित हुआ। लालाजी की ये पाँच ही कृतियाँ है, परंतु इन्ही के बल पर वे १९ वी शताब्दी के सर्वाधिक सफल नाटककार और उपन्यासकार माने जा सकते है. ये कवि नही थे परंतु अपने नाटको और उपन्यास में जहाँ तहाँ इनके रचे कुछ छंद और गीत भी मिलते है जो प्रायः प्राचीन ग्रथो से अनुवादित अथवा रूपान्तरित हुए हैं।

'परीक्षागुरु' के एक प्रधान पात्र लाला ब्रजकिशोर में, ऐसा जान पड़ता है, लेखक ने बहुत कुछ अपना ही चरित्र उतार दिया है। प्रामाणिकता (honesty) को ये सर्वश्रेष्ठ गुण समझते थे और इस गुण की विशेष चर्चा इन्होने 'परीक्षागुरु' में तो किया ही है अपने 'सदाचरण' शीर्षक लेख में जो 'भारतेन्दु' में सं० १९४० में प्रकाशित हुआ था, इसी प्रमाणिकता की महत्व प्रदर्शित किया है। प्रामाणिकता की इतनी महिमा गानेवाले लाला श्रीनिवास दास स्वयं भी एक प्रामाणिक

करने वाला है इसका सब गुण उन नाटक देखने ही से उन पर प्रगट हो जायगा और इसी भाँति प्रतिकूलता के बंधन से छूटकर अनुकूलता भूषण से भूषित होकर नाटक-दर्शन रूपी अलौकिक कुसुम कानन में घूमने फिरने से अनिर्वचनीय आनद पावेंगे और उसके काव्यों के वायु के (की) ठढी और सुगधित झकोरों के उनके जी की कली खुल जायगी . नाटकों के अभिनय करने में जो स्वच्छदता होती है उसे छोडकर उससे देश का कितना उपकार होता है कि हम लिख नहीं सकते . देखिये जो कि यदि एक बडा राजा वा कोई धनी अथवा कोई पडित किसी बुरे काम में प्रवर्त होय तो उसको हम लोग सभा में कभी शीक्षा न दे सकेंगे और जो कुसस्कार की दावाग्नि बहुत काल से प्रगट होकर हम लोगों के मगलमय सभ्यता बन को जला रही है उस महादावाग्नि को हम लोग दोष कथन वारि से घर बैठे बुझाना चाहैगे तो कभी न बुझैगी . इसमें अब हम लोगों को कुशलता के उद्योग बीजों को अवश्य बोना चाहिए और वह किसी एक मनुष्य के प्रयत्न से अभी अकुरित न होगी परतु यदि नाटकों के अभिनय का आरभ हो जायगा तो यह सब कुचाल आप से आप छूट जायगी और इसी भाँति फिर सब लोग अच्छी बातों से रुष्ट न होकर उसके प्रचार में प्रयत्न करेंगे . 'कवि–वचन सुधा' १७ अगस्त १८७२ पृ० १९७–१९८

कुसस्कारो और कुचालों को दूर करने के लिए नाटको के अत्यधिक प्रचलन की आवश्यकता समझ कर भारतेन्दु ने अनेक लेखो द्वारा नाटक रचने और अभिनय करने की प्रेरणा दी है। दूसरे, हिदी भाषा को पूर्ण समृद्ध करने की दृष्टि से भारतेन्दु ने नाटको का एकांत अभाव देखकर उसके लिखने का स्वय प्रयत्न किया और दूसरो को भी प्रेरणा दी . 'रत्नावली' (सं० १८६८) की भूमिका में वे लिखते हैं :

हिंदी भाषा में जो सब भाँति की पुस्तकें बनने के योग्य हैं, अभी बहुत कम बनी हैं, विशेष करके नाटक तो (कुँवर लक्ष्मणसिंह के शकुंतला के सिवाय) कोई भी ऐसे नहीं बने हैं जिनको पढ के कुछ चित्त को आनंद और इस भाषा का बल प्रगट हो इस वास्ते मेरी ऐसी इच्छा है कि दो चार नाटकों का तर्जुमा हिंदी में हो जाय तो मेरा मनोरथ सिद्ध हो (भारतेन्दु ग्रथावली भाग १ पृ० ४३)

नाटक को बुरा समझने वालो को निरुत्तर करने के लिए उन्होने तर्क उपस्थित किया था :

और जो नाटक करना कोई बुरी बात होती तो सभ्य सिरोमणि विद्यासागर अँगरेज़ लोग इसके होने में क्यों प्रयत्न करते और बडी बडी रगशालाओं में नित्य नित्य बड़े बड़े अधिकारी लोग क्यों वेश धारण करके नाटकाभिनय करते ? जो कहो कि यह नाटक भारतखंड के हेतु एक नई बात है सो नहीं देखिए पूर्व्व काल में भगवान श्रीकृष्ण चंद्र ने अपने पुत्र शाम्ब और श्री प्रद्युम्न को और अपने छोटे भाई गद को एक बड़े समाज के साथ नाटक करने की आज्ञा दिया था और उन लोगों ने 'रामाभिनय' नाटक किया था और इसी भाँति से भरत-खड भूषण श्री महाराज विक्रमादित्य और महाराज भोज के समय इसका सपूर्ण रूप से प्रचार था इसमें विशेष प्रमाण का कुछ काम नहीं है, उस समय के शकुंतला और रत्नावली इत्यादि नाटक अब भी प्रमाण आदर्श रूप से वर्तमान हैं और पढ़नेवालों को अपूर्व आनद देते हैं.

निबंध के उपसंहार रूप में भारतेन्दु ने नाटक-विरोधियो से साग्रह निवेदन किया था कि—

अहा ! हे नाटक विरोधी मानवगण आप लोग इस चमत्कार कार्य्य में क्यों उत्साह नहीं बढ़ाते और इस आनदमय रस-समुद्र में क्यो नहीं

स्नान करते और बड़े बड़े महात्मा वीर रसिक शिरोमणि दुष्यत, युधिष्ठिर, राम और वत्सराज ऐसे लोगों के साक्षात् दर्शन और उनके गुण स्वभाव श्रवण की इच्छा क्यों नहीं करते ? इस हेतु अब यही हमारी प्रार्थना है कि आप लोग इस बात को सुन कर कान में रुई दे के न बैठें जहाँ तक हो सकै इसकी उन्नति में प्रयत्न करैं जिससे हमारे देश बासियों का उपकार हो. (कविवचन-सुधा, १७ अगस्त, १८७२ पृ० १६८)

इसके अतिरिक्त 'रणधीर प्रेममोहिनी' की प्रस्तावना के अंत में भारतेन्दु जी ने जो गीत दिया है उसमें भी नाटक रचने और देखने का आग्रह स्पष्ट है। भारतेन्दु के साथ ही अन्य लोगों ने भी नाटक-प्रचलन के लिए नाटकों के गुण प्रदर्शित किये। 'तप्ता संवरण' भी प्रस्तावना मे नट और सूत्रधार की बाते सुनिये :

नट—आज तो लाला श्रीनिवास दास रचित 'तप्ता सवरण' नाटक करिये और यह भी बतलाइये नाटक करने से क्या लाभ होता है.

सूत्रधार—क्या तुम नहीं जान्ते ? प्रथम तो मन बहलाने के लिए यह बहुत उत्तम उपाय है, दूसरे नाटककार समय पर अपना रूप वाणी स्वभाव बदल सक्ता है, तीसरे नाटक के द्वारा सैकडों हजारों वर्ष की बातें प्रत्यक्षवत् दृष्टिगोचर हो जाती हैं इसलिए राजा लोगों को इस्का अभ्यास करना अत्यत आवश्यक है.

नट—यह ठीक, पर अब तो इस देश मै कोई भलामानस नाटक करै तो उस्की बडी चर्चा हो.

सूत्र०—हाँ, अब तो ऐसे ही है, पर पहले यह बात न थी, क्योंकि होती तो कालिदासादि महाकवि नाटक न रचते और नाटक उत्तम काव्यों की गणना मैं न होता देशातर मै तो इस्का अब भी बडा प्रचार है. ईश्वर करै यहाँ के मनुष्य भी इस्का आनद लें.

तप्ता सवरण—प्रथम संस्करण, पृ० १-२,

रणधीर और प्रेममोहिनी' के निवेदन में भी लाला जी लिखते हैं :

पुस्तकों में पीट्रार्क के लेखानुसार 'जामे जमशेद' की तरह संसार को सब चीजें दिखाई देती हैं, परतु जो लोग पुस्तक पढकर उस्की राह से उन चीजों का रूप अपने मन में नहीं बना सक्ते उनके लिए नाटक की रीति बहुत हितकारी है. 'सर टाम्स ओबरबरी' लिखता है कि संसार में 'पाठ-शाला की अपेक्षा भी नाटकशाला ज्यादा जरूरी है क्योंकि पढ़ने की अपेक्षा अनुभव सै लोग ज्यादा सीखते हैं ' देखो नाटक में बर्तमान अथवा हजारों वर्ष पहले की चाहे जिस बात को इस समय अपनी आँखों सै देख सक्ते हो .

और 'सयोगता स्वयंबर' में भी नाटक के प्रचार की ही भावेना को सामने रखकर नट और सूत्रधार से इस प्रकार का सवाद कराया गया है .

नट—नाटकों के अभिनय करने मे चित्त बिनोद के सिवाय और क्या गुण है, और इसका प्रचार शिष्ट जनों में कब से पाया जाता है ?

सूत्रधार—इसमें सबसे विशेष गुण तो ये प्रतीत होता है कि अभि-नय कर्त्ता अपने चित्त पर पूरा अधिकार रख सक्ता है और उसका भाव चाहे जिस रीति सै प्रगट कर सक्ता है . अभिनय देखनें से दर्शकों के चित्त पर उस चरित्र के प्रत्यक्ष देखने का सा अनुभव हो जाता है . बहुत प्राचीन काल से देवता स्वर्ग में इसका सुखानुभव करते आए हैं जैसे विक्रमोर्वशी मे लक्ष्मी स्वयंबर वृत्तान्त लिखा है और 'उत्तर राम-चरित्र' में तो श्री रामायन के अभिनय से साक्षात् सर्वेश्वर रामचद्र जी के चित्त पर बड़े भारी असर होने का भाव दरसाया गया है .

सयोगता स्वयंबर पृ० ४.

भारतेन्दु, लाला श्रीनिवास दास और अन्य अनेक 'समकालीन' लेखको के प्रयास से नाटकों का प्रचलन भी पर्याप्त हुआ। 'सत्य हरिश्चद्र' की प्रस्तावना में भारतेन्दु ने बड़े संतोष से लिखा है :

धन्य है विद्या का प्रकाश कि जहाँ के लोग नाटक किस चिड़िया का नाम है इतना भी नहीं जानते थे, भला वहाँ अब लोगों की इच्छा इधर प्रवृत्त तो हुई।

और स० १९४० में लिखी अपनी 'नाटक' पुस्तिका में उन्होने तब तक बने लगभग ५० नाटको की सूची भी प्रस्तुत की। भारतेन्दु की मृत्यु के पश्चात् भी नाटक-रचना का क्रम उसी वेग से चलता रहा और १९०० ई० तक सैकड़ो नाटको की रचना हो गई। इन नाटको से हिंदू समाज मे प्रचलित कुसंस्कारो, अज्ञानजनित कुचालो और कुरीतियो के निवारण का सफल प्रयत्न हुआ, हिन्दी साहित्य का भडार भरा और हिंदी भाषा को बल प्राप्त हुआ। अस्तु, भारतेन्दु युग को नाटको का युग कहना युक्तिसंगत और समीचीन है।

इस नाटक-युग में जहाँ भारतेन्दु ने अनुवाद और मौलिक सब मिला कर लगभग डेढ़ दर्जन रूपक लिखे, बालकृष्ण भट्ट ने लगभग बीस रूपक और राधाचरण गोस्वामी ने सात-आठ, वहाँ लाला श्रीनिवास दास ने केवल चार ही नाटक लिखे। परतु इन चार ही नाटको के बल पर ये भारतेन्दु युग के किसी भी नाटककार से पीछे नही हैं। इन चार नाटकों में भी 'रणधीर और प्रेममोहिनी' उनकी सर्वोत्तम रचना है और यद्यपि इस पर शेक्सपीयर के 'रोमियो जूलिएट' तथा सस्कृत के नाटकों की छाया अवश्य पड़ी है, फिर भी इस रचना में लाला श्रीनिवास दास की प्रतिभा पूर्ण रूप से प्रस्फुटित हुई है। इस मौलिक नाटक का जितना आदर हुआ, उतना भारतेन्दु के भी किसी नाटक का नही हुआ

'रणधीर और प्रेममोहिनी' में दो राज परिवारो की कथा कही गई है एक परिवार सूरत के महाराज का है जिसमें महाराज के अतिरिक्त उनका पुत्र रिपुदमन सिंह और कन्या प्रेममोहिनी है। प्रेममोहिनी के सा उसकी दो सखियाँ मालती और चम्पा हैं। दूसरा परिवार रणधीर सि

का है जो पाटन का निर्वासित राजकुमार है और सूरत में आकर राज-महल के पास ही अपरिचित परदेशी बनकर ठहरा है। निर्वासित होने पर भी इस परदेशी क्षत्रिय के पास विदूषक के रूप में चौबे जी, कारिन्दा के रूप में सुखबासीलाल, मोदी के रूप में नाथूराम, भृत्य जीवन और गुरु तथा पुरोहित के रूप में पंडित सोमदत्त हैं। दैवयोग से शिकार खेलने में रिपुदमन और रणधीर सिंह की मित्रता हो जाती है और सखियों के द्वारा रणधीर की धीरता, वीरता और सौन्दर्य आदि गुणों की चर्चा सुन प्रेममोहिनी भी उसकी ओर आकृष्ट होती है। परंतु उन दोनों के पिता सूरतपति का रणधीर के प्रति अकारण द्वेष भाव है, सभवतः इसलिए कि इस अभिमानी राजा को रणधीर के राजकुमार होने की बात ज्ञात नहीं है, वे उसे एक साधारण परदेशी क्षत्रिय मात्र जानते हैं। प्रेममोहिनी के स्वयंबर में रणधीर के अनाहूत प्रवेश और निर्भीक व्यवहार से सूरतपति का क्रोध और प्रेममोहिनी का प्रेम द्विगुणित हो उठता है और स्वयंबर में आए हुए नरेशों की कायरता तथा रिपुदमन के मैत्री-निर्वाह और रणधीर की वीरता के कारण नाटक का दुखद अंत होता है। कथा का विकास सरल रेखा में हुआ है जिसमें दैव-संयोग और आकस्मिक घटनाओं का पूरा योग है देवयोग से रणधीर पाटन से सूरत आकर राजमहल के पीछे ठहरता है जहाँ प्रेममोहिनी की सखियाँ उसे और उसके करतब देख देखकर मुग्ध हो राजकुमारी से उसका गुण वर्णन करती है। दैवयोग से ही जब रिपुदमन को मारने के लिए सिंह पंजा उठाता है तभी अचानक रणधीर आकर सिंह के पेट में कटार मार रिपुदमन के प्राण बचाता है और दोनों में मैत्री स्थापित हो जाती है; फिर दैवयोग से ही सूरतपति की स्वयंबर-सभा में सरोजनी नृत्य करती हुई गाती है और रणधीर पिछले दिन की भूल सुधारने के लिए गले से मोतियों का हार निकाल कर देता है और इसी के कारण सारा बखेड़ा खड़ा होता है जिसमें रिपुदमन, रणधीर और अन्य अनेक लोगों

की मृत्यु का योग उपस्थित होता है। किंतु केवल इन आकस्मिक घटनाओ एव दैव-संयोग से ही नाटक का दुखद अंत नही होता, सूरतपति के अहंकार और रणधीर तथा रिपुदमन की राजपूती आन बान-शान के कारण भी अनेक लोगो को व्यर्थ प्राण देने पडते हैं। सब मिलाकर 'रणधीर और प्रेममोहिनी' का कथानक अत्यंत सरल है और इसमें आकस्मिक घटनाओ के सहारे ही कथानक आगे बढ़ता है।

इस नाटक की सबसे बडी विशेषता इसका चरित्र-चित्रण है। नाटक का नायक रणधीर एक शूर वीर क्षत्रिय राजकुमार है जो अपने विविध गुणो में अद्वितीय दिखाया गया है। धीरोदात्त नायक के इसमें सभी गुण है—यह सत्यवादी, आचारवान्, विद्याव्यसनी और अद्वितीय रूपवान् तथा योद्धा है, जिसमें यश की कामना और नि.स्वार्थ भावना कूट कूट कर भरी हुई है। उसका सौन्दर्य अपूर्व है। प्रेममोहिनी की सखी मालती चंपा से उसके रूप-गुण का वर्णन करती हुई कहती है :

सखी उसको स्मर्ण करते ही शरीर के रोम खड़े होते हैं, उसका सब अग साँचे ढला बना है, मैंने तो ऐसी सजधज का जवान सब उमर में कभी नहीं देखा है जिस समय वो अपने "पवन वेग" घोडों को किले के मैदान में फेरकर अपना कर्तब दिखाता है, उस समय और राजकुमार उस्की फुर्ती देख चकित हो, चित्र बन जाते हैं, उसके शरीर में चुस्त पोशाक ऐसी जमकर बैठती है कि बहुत से राजकुमार उस्की नकल करते हैं; जिस समय उस्के मनोहर मुख की रसभरी मुसकान और शरमाते नेत्रों की मदमाती चितवन मेरे ध्यान में आती है, मेरी तो सुधबुध ठिकाने नहीं रहती, मैं उस्की अलबेली छबि कहाँ तक बर्णन करूँ, सब नगर उस्की मोहिनी मूरत देख मोहित हो रहा है.

वीरता में भी वह अद्वितीय है। सूरत का सेनापति जब उसे युद्ध के लिए ललकारता है तब वह बिना फल का एक भाला मारकर सेनापति को पाँच सात गज ऊँचा उछाल देता है और सूरत के महाराज

जब घबड़ा कर स्वयबर सभा में आए हुए सभी राजाओ को सम्बोधित कर कहते हैं :

जो वीर इस समय हमारे सेनापति को बचावेगा वोही आज की शस्त्र विद्या में जीतनेवाला समझा जायगा।

तब अन्य राजाओ के उठने से पहले ही वह घोडे समेत उछल-कर सेनापति को गिरते गिरते रोक लेता है और सूरतपति के आगे लाकर खडा कर देता है। उसी सभा मे जब उसकी निर्भीकता और दृढ़ता के लिए दड देने को नगर का राजा उसके ऊपर झपटता है तब वह बड़ी आसानी से उसका कटार छीन अपने दुपट्टे से उसकी मुसके बाँधकर सभी राजाओ को चुनौती देते निर्भय सभा से निकल जाता है और फिर अपने मित्र रिपुदमन की मृत्यु का समाचार पा शस्त्र लेने के लिए भी नही ठहरता और रिपुदमन के धनुष से ही असख्य राजाओ से युद्ध करने लगता है। उस युद्ध में अकेले ही उसने जो वीरता प्रदर्शित की उससे लव और अभिमन्यु की याद आ जाती है। म्योर सेन्ट्रल कालेज के सस्कृत प्रोफेसर आदित्यराम भट्टाचार्य ने रणधीर सिंह की वीरता के लिए लिखा था कि यह नाटक का एक दोष है क्योकि कलियुग में इस प्रकार के वीर के पैदा होने की सम्भावना नही है, त्रेता में ही ऐसे वीर होते थे जो अकेले अक्षौहिणी सेना से युद्ध कर सकते थे। रणधीर की वीरता वास्तव में कलियुग में आश्चर्यजनक ही है।

परंतु रूप और वीरता से भी अधिक उल्लेखनीय उसका शील स्वभाव है। रिपुदमन के प्राण बचाकर वह अपना उपकार जताने के लिए रुकता नही वरन् यह सोचकर कि मुझे देख यह वीर वृथा ही लज्जित होगा वह जाने लगता है। आचारवान् तो वह इतना है कि स्त्रियो की परछाईं से भागता रहता है। सरोजनी जब रणधीर से अपना नृत्य और गान का गुण दिखाने की प्रार्थना करती है तब वह मन ही मन कहता है :

न मेरी इन बातों में रुचि, न ये काम मेरे करने लायक, मैं अब तक एकांत के सहारे बचा हूं, नहीं कुसंग से बड़े बड़े तपस्वियों का तप भंग हो गया, तब मेरी क्या गिन्ती थी.

और जब प्रेममोहिनी अपने स्वप्न में देखे हुए हंस की चर्चा करती हुई कहती है कि उसने चुगे पर चोंच भी न डाली तब मालती हँसकर कहती है :

वो भी रणधीर की तरह स्त्रियों से लजाता होगा.

लोभ तो उसे जैसे छू भी नहीं गया है। सूरतपति की स्वयम्बर-सभा में प्रवेश करते समय जब बात ही बात में सेनापति से विवाद उपस्थित हो जाता है और वह उसे छः सात हाथ ऊपर फेंक देता है उस समय सूरतपति घोषणा करते हैं कि जो कोई सेनापति को बचावेगा वही आज की शस्त्र-विद्या में सफल माना जायगा, तब वह घोड़े समेत उछलकर सेनापति को गिरते गिरते बचाकर सूरतपति के सामने ला खड़ा करता है, परंतु उसके इस कार्य से जब सूरतपति प्रसन्न होने के बदले उदास हो जाते हैं तो वह मन ही में कहता है :

तुम्हारे उदास होने से मेरा क्या नुक़सान ? मैंने किसी तरह के लालच से ये काम नहीं किया मैं तो केवल जस चाहता हूँ.

और उसका निर्लोभ तो इस सीमा तक पहुँचा हुआ है कि प्रेम-मोहिनी जैसी सुंदरी को अपने पास एकांत में पाकर भी वह लुब्ध नहीं होता और जब प्रेममोहिनी उसपर अनेक प्रकार से अपना प्रेम प्रकट करती है तब वह दो टूक जवाब देकर चला जाता है कि :

ऐसी बातों से तो कामी पुरुष मोहित होते हैं, मेरे ऊपर तुमारा मोहिनी मंत्र नहीं चल सक्ता.

पिता, सौतेली माता, मित्र और आज्ञाकारी भृत्य जीवन सबके साथ उसका शील-निर्वाह उत्तम कोटि का है। जिस पिता ने उसकी

सौतेली माता के बहकाने पर उसे निर्वासित किया था, वही उसकी मृत्यु पर विलाप करता है :

हा ! रणधीर ! प्राण जीवन ! आज्ञाकारी ! शीलसिंधु बेटा ! ऐसे अमोघ बली होकर सदा मेरी आज्ञा में रहते थे, मेरे डर से थर थर काँपते थे × × × × × × × मेरी आज्ञा से प्रसन्न होते थे, अपनी सौतेली मा को निज माता से बढकर मान्ते थे

जीवन तो अपने स्वामी के वियोग में संसार-त्यागी बन जाता है। वह रणधीर सिह को तपस्वी समझता था। सुखबासीलाल को उसने चेतावनी दी थी :

रणधीर सिह तपस्वी था उस्का माल कच्चे पारे की तरह तुमको कभी नहीं पचेगा.

वह सदाचारी व्यक्तियो का आदर करता था, परंतु सुखबासीलाल जैसे धूर्त और बेईमानो पर दया करना नही जानता था। उसके चरित्र में दृढ़ता थी, सरोजनी के प्रेम-निवेदनो की उसने बडी दृढ़ता से अवहेलना की।

परंतु शक्ति, शील और सौन्दर्य की अपेक्षा कही अधिक रणधीर सिह में नीतिमत्ता का प्रभाव है। रिपुदमन जब उससे मित्रता करना चाहता है तब पहले तो वह जैसे आनाकानी करता सा दिखाई देता है, वह स्पष्ट कहता है ·

ससार में किसी तरह के प्रयोजन बिना कोई किसी काम में प्रवृत्त नहीं होता, पर जो लोग लौकिक चतुर हैं, वे आदि में दूसरे से मिल्ती बार अपना कुछ प्रयोजन नहीं जताते, प्रीति हुए पीछे दूसरे पर सब तरह का बोझा डालकर अपना प्रयोजन प्रगट करते हैं, उस्समय सकोच में आकर या तो दूसरे को उनका प्रयोजन सिद्ध करना पडता है या दोनों में परस्पर बिगाड हो जाता है. ऐसे संकोच अथवा बिगाड होनें के बदले आदि में प्रीति करनें वाले का प्रयोजन समझ लिया जाय, और उस्का

काम हो सके तो उसके कहनें से पहले कर दिया जाय, न हो सके तो उसको पीछे के लिये धोखे में न रक्खा जाय; ये बात मेरी राह में अच्छी हैं.

परंतु जब रिपुदमन आग्रह करता है कि उसे केवल उसकी प्रीति चाहिये, उसका अन्य कोई प्रयोजन नहीं है तो वह उसकी मित्रता स्वीकार कर लेता है परतु फिर भी उसे ठोक बजाकर समझ लेना चाहता है कि वह कैसा व्यक्ति है। वह मन में सोचता है :

जब इनसे प्रीति करनी ठैरी तो पहले इन्का सुभाव जान्ना चाहिये क्योंकि जिस्का सुभाव मिल्ता है उस्से उसको प्रीति होती है आज इनके आगे हँसी चोहल की बातें कर, गानें की चर्चा छेड, शास्त्र का प्रसग ला, इनके मन की रुचि परख लें.

इस परीक्षा में वह रिपुदमन को अपने से भी अधिक नीतिवान् और सतर्क पाता है, क्योकि सरोजनी से बात करनेवाले व्यक्ति का पता लगाने में जब उसे धोखा हो जाता है और चौबेजी को ही वह दोषी समझ लेता है तब रिपुदमन की प्रेरणा से वह फिर से उखाड़ पछाड करके ठीक बात का पता लगाता है। इसके लिए वह रिपुदमन का कृतज्ञ होता है और आज के न्याय से प्रसन्न होकर कहता है

शरीर के सुख से मन का सुख बिल्कुल अलग है. मन के सुख बिना शरीर के सुख कुछ काम नहीं आते शरीर के दुख से मन व्याकुल होय तो शरीर के सुख से मन को सतोष आ जाता है परतु शरीर के सुख से मन सुखी नहीं होता मन सब बातों में शरीर का सहायक है परतु मन की शक्ति से (जिस्मे शरीर नाम मात्र सहायक हो) आज के इन्साफ़ का सा कोई अलौकिक काम बन जाता है तब मन को असली सुख होता है और इस्के आगे शरीर का सुख कुछ नहीं जचता.

रणधीर सिह की नीतिमत्ता का इससे भी उत्कृष्ट उदाहरण उस समय प्राप्त होता है जब प्रेममोहिनी और उसकी सखियाँ उसे विश्राम

करने के लिए निमंत्रित करके अपना सब समाचार सुनाने का लोभ देती हैं। उस समय वह उनसे अलग होने की इच्छा से दो टूक जवाब देता है:

न हमको किसी का डर न किसी के चरित्र जानने की इच्छा . हम कभी स्त्री के बचन पर नहीं चले हमको क्षमा करो

और जब सखियाँ अनुनय-विनय और छल-कपट से रणधीर सिंह को प्रेममोहिनी के प्रति अनुरक्त कराने के लिए किसी बहाने से चली जाती है और प्रेममोहिनी अनेक वाक् कौशल से अपना प्रेम प्रकट करती है तब वह सोचता है .

इस्की कल्पलता सी बाणी से प्रेम सुगन्धित पुष्प तो जरूर झडते हैं परतु इस्के आगे से हटकर इस्की परीक्षा लेनी चाहिये .

और परीक्षा लेने के लिए उसे झिडक कर वह एक वृक्ष की ओट मे खडा होकर उसका प्रलाप सुनता और प्रेम-चेष्टाओं का निरीक्षण करता है और जब उसे उसके निष्कपट प्रेम का पूर्ण प्रमाण मिल जाता है तभी उससे प्रेम करता है।

रणधीर सिंह की इस छोटी अवस्था में इतनी अधिक नीतिमत्ता और सतर्कता कुछ अस्वाभाविक सी जान पडती है। उसकी सारी नीतिमत्ता पर शेक्सपीयर के 'हैमलेट' नाटक के वृद्ध नीतिज्ञ पोलोनियस और 'टेम्पेस्ट' के प्रास्पेरो की छाया स्पष्ट दिखाई पडती है। पोलोनियस ने अपने पुत्र लायरटीज़ को फ्रास की यात्रा करते समय कुछ नीत्युपदेश किया था जिसका पालन लायरटीज़ ने तो सभवतः नही किया था परतु रणधीर ने अच्छी तरह से किया। उसी प्रकार प्रास्पेरो अपनी पुत्री और उसके प्रेमी के प्रेम की परीक्षा के लिए एक वृक्ष की आड़ मे छिपकर उनके प्रेम-संलाप सुनता था और उनके सच्चे प्रेम का प्रमाण पाकर ही उसने दोनो को विवाह-सूत्र में बँधने की अनुमति दी परतु यहाँ तो रणधीर सिंह स्वय प्रेममोहिनी के प्रेम की परीक्षा लेता है। नीतिमत्ता एक अच्छा गुण है, परंतु रणधीर सिंह जैसे एक शील, शक्ति, सौन्दर्य से युक्त

नवयुवक में वह सीमा को पार कर गई है इसी कारण वह अस्वाभाविक हो उठी है। 'परीक्षागुरु' में भी लाला श्रीनिवास दास ने सावधानी और सतर्कता की श्रेष्ठतम गुणो में गणना की है, परंतु रणधीर की इतनी अधिक सतर्कता एक राजपूती आन, बान, शान वाले व्यक्ति में शोभा नही देती। सच तो यह है कि नीतिमत्ता के प्रीति लेखक के विशेष आग्रह ने ही रणधीर सिह को इतना अधिक सावधान और सतर्क बना दिया कि वह अस्वाभाविक सा दिखाई पड़ने लगा है।

मित्रता और प्रेम के सम्बन्ध में यह सतर्कता और सावधानी जहाँ अस्वाभाविक सी जान पडती है वहाँ अपने कर्तव्यो के प्रति उसकी सावधानी और सतर्कता उसकी बुद्धिमत्ता का द्योतक है। उसे विद्या का व्यसन है और रिपुदमन जैसे मित्र के आ जाने पर भी वह नियमित विद्याभ्यास नही छोडता और पडित सोमदत्त से प्रश्न कर करके ज्ञान और नीति की शिक्षा प्राप्त करता है। चौबे जी से परिहास की बाते करने मे कुछ समय नष्ट हुआ उसका उसे पश्चाताप होता है कि :

देखो आज हँसी हँसी की बातों मे इतना समय वृथा चला गया. इतनी देर विद्या पढ़नें में मन लगाते तो कितना लाभ होता. कालिदास और भवभूत्यादि कवियों की आयु साधारण लोगों से अधिक न थी, परतु वे समय की महिमा जान्ते थे, इस कारण उनका नाम आज तक अमर है.

परतु ऐसे सतर्क और सावधान व्यक्ति से भी एक भूल हो ही गई जिसका बहुत बड़ा मूल्य उसे और उसके मित्रो को चुकाना पड़ा। स्वयम्बर-सभा में सरोजनी को नाचते और गाते देखकर रणधीर सिंह को सहसा स्मरण हो आता है कि उसने पिछले दिन के बखेड़े में सरोजनी को कुछ पुरस्कार नही दिया और पिछले दिन की भूल का परिमार्जन करने के लिए स्थान और काल की बात सोचे बिना ही वह अपने गले से मोतियों की माला निकाल कर सरोजनी को देता है। उसके इस

कार्य को स्वयं रिपुदमन भी अच्छा नहीं समझता और जब सूरत के महाराज ने कहा:

कहो ये इस काम से कलकी हुआ कि नहीं ?

तो रिपुदमन को भी विवश होकर कहना पड़ा .

कलकी तो चद्रमा भी है, मैं इतने अश में रणधीरसिंह की बडाई नहीं करता .

परंतु उसे कलंक ही मात्र लगा हो ऐसी बात नही, इसी एक छोटी सी घटना ने भविष्य की सभी दुखद घटनाओ का बीज बोया । उसके इसी कार्य से अपमानित अनुभव कर सब राजा उसके विरुद्ध हो जाते हैं और इसके फलस्वरूप जो युद्ध होता है उसमें रिपुदमन और रणधीर की मृत्यु होती है और उन्ही के वियोग में प्रेममोहिनी और पाटनपति का भी अत होता है ।

रणधीर सिह की अपेक्षा रिपुदमन अधिक गम्भीर और सरल है । वह रूपवान्, गुणवान्, शीलवान् और वीर योद्धा है । राजाओ की संपूर्ण सेना से वह अकेले अपनी सेना ले युद्ध करता है । जीवन उसकी वीरता का वर्णन करता है :

रिपुदमन की बीरता देखकर मै तो चकित हो गया . आपके लिए वो बीर अपनें मरनें का डर छोडकर लडता है . उस्के हात से कितनेक राजा और सेनापति मारे गए उस्के वेग से बैरी की सेना काई सी फटती चली जाती है, पहाड से हाथियों पर उस्की तरवार बिजली सी गिरती— परतु उसकी वीरता से कही बढ़कर उसकी मित्रवत्सलता है जिसके कारण वह अकेले जान पर खेलकर अपने मित्र की रक्षा करता है । मित्र के लिए वह पिता से भी कह बैठता है.

मैंने आज तक आपकी आज्ञा बिना कभी किसी काम का मनोर्थ भी नहीं किया और आगे को आपकी आज्ञा पालन करने का निश्चय बिचार है परंतु जिस विषय में आज्ञा न निभ सके उसमें प्रथम ही

आपको आज्ञा देनी मुनासिब नहीं . आप जान्ते हैं कि मन अपनी पूर्ति हुए बिना किसी के भय अथवा लिहाज़ से नहीं बदल सक्ता .

रणधीर जब उसकी परीक्षा लेता है तब उसे आश्चर्य सा होता है कि

इनके मन का भेद लेने वास्ते मैंनें ये उपाय किए थे परंतु इन्को सब बातों में एक सा पाया .

वह रणधीर का योग्य सखा है, उसमें रणधीर के समान ही नीतिमत्ता और बुद्धिमानी है । रणधीर कही कही धोखा भी खा जाते है परंतु रिपुदमन सर्वत्र सतर्क और सावधान रहता है । मित्र का रहस्य जानते हुए भी वह अपने पिता पर प्रकट नही करता क्योकि मित्र से उसे रहस्य प्रकट करने की अनुमति नही मिली । वह रणधीर का योग्य सखा और प्रेममोहिनी का योग्य सहोदर है ।

नाटक की नायिका प्रेममोहिनी का चरित्र भी नाटककार ने बडे कौशल से चित्रित किया है । उसकी अनुपम सुंदरता का परिचय तो प्रारंभ में ही चम्पा और मालती के वार्तालाप से मिल जाता है । स्वयम्बर-सभा के लिए सूरतपति ने प्रेममोहिनी की जो प्रतिमा बनवाई है उसे देखकर चम्पा मुग्ध भाव से चित्रकार की प्रशंसा करती हुई कह उठती है :

सखी ! इस्का रचनेंवाला ब्रह्मा से क्या कम है ! इसकी लाज भरी चितवन, रस भरे होट और हास्य भरे कपोल कैसे सुहावनें लगते हैं !!

तब मालती कहती है:

बस बहन ! छमा करो, तुमारी परख मैंनें देख ली, तुम इसकी इतनी बड़ाई करती हो पर मुझको तो प्रेममोहिनी के आगे ये कुछ भी नहीं जचती. उसको दैव नें अनुपम बनाया है उसके सुभाव की लायकी और चतुराई तो अलग रही, उसके मुख की ज्योति पल पल में चद्रकला सी बढ़ती है, इसके शरीर की लावण्यता (के लावण्य) से एक एक गहने के, तीन

तीन, चार चार रूप दिखाई देते हैं, उसके शरीर की सुगंधि से भौंरे मतवाले होकर गूँजते हैं . सो इसमें कहाँ से आवेंगे ?

नाटको की परम्परा के अनुसार प्रेममोहिनी भी अनुपम रूपवती है और परम्परा के अनुसार वह भी नायक के रूप-गुण की प्रशसा सुनकर मोहित होती है और उसके लिए वन-उपवन में भटकती फिरती है, परंतु साथ ही वह बुद्धिमती है और नीति-पथ का अनुसरण करने का प्रयत्न करती है। अपनी सखियो की बातचीत के बीच में वह जाना मुनासिब नही समझती क्योकि यह कार्य नीति-विरुद्ध है, परंतु फिर भी यौवन के स्वभाव से विवश हो अपने स्वयम्बर की चर्चा करती हुई दोनो सखियों की बात वह छिपकर सुनती है। मालती द्वारा रणधीर के रूप-गुण की चर्चा सुनकर उसक हृदय में एक हलचल सी मच जाती है, परंतु वह बुद्धिमती नायिका जानती है कि वह पराधीन है, पिता की इच्छा से उसे चलना है, इसी कारण उन बातो के सुनने का उसे दुःख है। वह मन में सोचती है·

ये बातें मैंनें क्यों सुनी ! मनुष्य का मन एक सरोवर के समान है, जैसे सरोवर में तारे, आकाश, चद्रमा, वृक्ष और पर्वतादिक की अनेक परिछाहीं पडती हैं, इसी तरह मनुष्य के मन में भी अनेक बातों का ध्यान बना रहता है; और जैसे सरोवर मे एक ककरी डालनें से वे परछाहीं बिगड जाती हैं इसी तरह मनुष्य के मन में भी किसी बात का नया बिचार आनें से पहले सब बिचारों में हलचल पड़ जाती है; हा ! ये सब जानने का दुख है, जो इस बात की भनक मेरे कान तक न पहुँची होती, तो मुझको इस पचायत से क्या काम था .

उसके हृदय में एक सघर्ष की सृष्टि होती है। एक ओर तो रणधीर के रूप-गुण की प्रशसा सुन वह उसपर आकृष्ट होती है दूसरी ओर अपनी पराधीनता के बोध से संकुचित होती है। मालती जब उसका रहस्य समझकर कहती है:

मुझको नहीं मालुम था कि तुमारे मन को भी उस चद्रमा ने "चद्र-कांति मणि" बना लिया .

तब वह लज्जित होकर अपना सघर्ष प्रकट करती है :

नहीं सखी मैं मोहित नहीं हुई, जैसे दूज के चद्रमा को संसार "पुण्य दर्शन" समझ कर देखता है, तैसे रणधीर सिंह को एक बार देखनें की मेरे मन में इच्छा है, परतु मैं सुभाव की परीक्षा हुए बिना प्रीति नहीं किया चाहती, क्योंकि गुण की प्रीति के समान रूप की प्रीति मन में नहीं होती केवल आँखों में रहती है, और रूप घटनें अथवा उससे अधिक मिलनें पर वो तत्काल घट जाती है .

वह केवल रूप ही नही चाहती गुण भी चाहती है, फिर भी रणधीर सिह के प्रति उसके हृदय में पूर्वानुराग का उदय अवश्य हो गया, इसी कारण वह रणधीर के देखने का प्रयत्न करती है और जब पहली बार उसे देख नहीं पाती तो सम्भवतः उसकी उत्कठा और बढ़ जाती है । स्वयम्बर-सभा में रणधीर की निर्भीकता और कौशल देख उसे बिना पहचाने वह उससे प्रेम करने लगती है । दूसरी ओर रणधीर के रूप-गुण की प्रशसा सुन उसके हृदय में पहला प्रेम था ही, अस्तु इस दुविधा में कि जिसके रूप-गुण की प्रशंसा पहले सुनी थी उस रणधीर से प्रेम करे, अथवा प्रथम दर्शन में ही मुग्ध कर देनेवाले इस शूरवीर से, वह कह उठती है.

आज समुद्र ने अपनी मर्जादा छोड़ दी, सूर्य चंद्रमा की चाल बदल गई, अग्नि में दाहक शक्ति नहीं रही, पवन की वाहक शक्ति जाती रही

मालती उसे सुझाती है कि हो सकता है ये दोनों व्यक्ति एक ही हों और प्रेममोहिनी इसका विश्वास करके प्रसन्न हो जाती है । फिर तो उसका प्रेम उमड कर सभी मर्यादाएँ भंग कर देती है । प्रथम दर्शन से पूर्व ही पूर्वानुराग उसके अंतर को विकल कर चुका था, अब वह विकलता सीमा पार कर उसे अपने प्रियतम की खोज के लिए प्रेरित

करता है और वह हार खोजने के बहाने नजर बाग में पहुँचती है। उसका रहस्य सखियो से छिपा नही रह पाता। मालती कह उठती है :

मेरे जान तो तुम हार ढूँडने का मिस करके रणधीरसिंह को ढूँडने यहाँ आई हो.

और प्रेममोहिनी के पूछने पर कि तूने यह बात कैसे जानी वह कहती है:

इस्समय तुम पत्तों की आहट सुनकर चारों तरफ देखने लगती हो. प्रेममोहिनी को स्वीकार करने के अतिरिक्त और कोई चारा ही नही। उसे स्वय इसका आश्चर्य है कि उसकी प्रकृति एकाएक कैसे बदल गई, वह नीतिवती बुद्धिमती होकर भी कैसे अपना धैर्य खो बैठी। वह स्वयं सोचती है:

मेरा सुभाव एक सग कैसे बदल गया? प्रेम की वर्षा से अनुराग की 'नदी' पल पल में बढ़ती है, तरह तरह के मनोर्थ 'भवर' और मिलाप की तरगें 'लहर' के समान उठ रही हैं, कुल मर्जाद के बृक्ष बिना परिश्रम बह गए, धीरज की नाव हात नहीं आती, इद्रियाँ 'परदेशी' की भाँत दूर हुई जाती हैं, उस शोभा 'समुद्र' से मिले बिना इस (नदी) के शात होने का कोई उपाय नहीं दिखाई देता. हाय ये नदी रुकने से पल, पल में दुगनी होती है.

प्रेम के इसी अप्रतिहत वेग के कारण रणधीर और प्रेममोहिनी के प्रथम मिलन के समय रणधीर की रक्षता के विपरीत प्रेममोहिनी का कातर प्रेम-निवेदन अस्वाभाविक नही जान पडता। जब वह व्याकुल होकर कहती है:

हे जीवितेश्वर आपके वियोग से मै प्राण छोडती हूँ पर आपके चरण मुझसे नहीं छोड़े जाते. मैनें जब से आपका नाम सुना मन बचन कर्म से आपको स्वामी समझा, आपके सिवाय कभी किसी पुरुष को पुरुष भी समझा हो तो सूर्य चद्रमा साक्षी हैं. आपनें मुझको त्याग दिया परतु

आपकी तरफ से मुझको कुछ खेद न हुआ क्योंकि पति को स्त्री पर सब तरह का अधिकार होता है. हा ! इस अभागी देह से आपकी कुछ सेवा न बनी ये बात मेरे मन में खटकती है, अच्छा अब भगवान से ये प्रार्थना है कि जो मेरा दूसरा जन्म होय तो आपकी दासी होकर जन्म सफल—
(रुक गई)

तब रणधीर सिह का भी हृदय पिघल उठता है और अपनी रुक्षता पर पश्चाताप करता हुआ वह उसका सच्चा प्रेमी बन जाता है ।

प्रेममोहिनी की प्रथम मिलन की यह कातरता सहसा द्वितीय मिलन की प्रगल्भता में परिणत हो जाती है । रणधीर द्वारा प्रेमपत्र लिखवा कर उसी को उसे पास रखने को देकर वह अपनी चतुरता का परिचय देती है जो एक रीतिकालीन नायिका को ही शोभा देता है । यह प्रगल्भता सचमुच ही अस्वाभाविक जान पडती यदि इसमें पीछे दो सौ वर्षो तक व्याप्त रीतिकालीन काव्य की भूमिका न होती । कालिदास (कालिदास हजारा के सग्रहकर्त्ता) की नायिका की प्रथम समागम में ही प्रगल्भता देखकर जब उसके प्रीतम को कुछ संदेह होने लगता है तब वह चतुर नायिका देखिए किस प्रकार उसका संदेह मिटाती है :

प्रथम समागम के औसर नवेली बाल,
सकल कलानि पिय प्यारे को रिझायो है ।
देख चतुराई मन सोच भयो प्रीतम के,
लखि पर नारि मन सभ्रम भुलायो है ॥
कालिदास ताही समै निपट प्रवीन तिया,
काजर ले भीतिहू मैं चित्रक बनायो है ।
व्यात लिखी सिहनी निकट गजराज लिख्यो,
योनि से निकसि छौना मस्तक पै आयो है ॥

रीतिकालीन नायिका की प्रतिनिधि-स्वरूपा प्रेममोहिनी की प्रगल्भता इसीलिए आश्चर्यजनक नही जान पडती ।

प्रेममोहिनी की प्रेम की प्रगल्भता के साथ ही प्रेम की प्रौढ़ता भी कुछ काम आश्चर्यजनक नही है क्योकि वह शीघ्र ही रणधीर के लिए अपने पिता से आग्रह और अनुरोध करती है और रणधीर की मृत्यु के साथ ही स्वय भी अपना प्राण त्याग देती है। प्रेममोहिनी के प्रेम का विकास इतने वेग से और इतने कम समय में हुआ है कि सहसा आश्चर्य होता है कि पूर्वानुराग से लेकर मृत्यु तक प्रेम का पूरा प्रसार इतने अल्प समय में सभव कैसे हुआ। परंतु नाटक में यह देखने का अवकाश ही कहाँ है। घटनाएँ इतनी वेग से आगे बढ़ती हैं और कथा का अंत इतने अप्रत्याशित ढग से होता है कि प्रेममोहिनी के प्रेम का उदय, विकास और अंत अचानक ही घटित हो जाता है। इसीलिए प्रेममोहिनी के चरित्र का पिछला भाग उतना स्पष्ट और स्वाभाविक नही बन पडा है।

रणधीर, प्रेममोहिनी और रिपुदमन के अतिरिक्त चौबे जी, सुखबासीलाल, जीवन, नाथूराम और सूरतपति का चरित्र भी स्पष्ट रेखाओं में बड़ी निपुणता से चित्रित हुआ है। ये सभी चरित्र प्रकार विशेष (Types) हैं, व्यक्ति नही और इनके चित्रण में लेखक के सूक्ष्म निरीक्षण और लौकिक ज्ञान का पता चलता है। इस नाटक के सभी चरित्रो में नीतिमत्ता और लौकिक ज्ञान का प्रकाश है। जीवन भृत्य होकर भी नीतिवान् है। जब रणधीर सिह स्वयबर-सभा से हताश सा होकर लौटता है और फिर सभा में जाने की इच्छा रहते हुए भी केवल इसलिए नही जाना चाहता कि उसके पास सूरतपति का निमंत्रण नही आया उस समय जीवन ही उसे बताता है कि सब राजाओ के निमंत्रण में आपका भी निमत्रण हो गया और इसीलिए वह निस्सकोच स्वयंबर-सभा में जाता है। फिर रिपुदमन से जब सभी राजाओं का युद्ध हो रहा था उस समय रणधीरसिह को जीवन जाने देना नही चाहता, परंतु जब वह कर्तव्य की दुहाई देकर पूछता है कि क्या

ऐसे अवसर पर मेरा मित्र की सहायता के लिए न जाना उचित है तब जीवन उसे रोक नहीं पाता। उसका कर्तव्य-ज्ञान बहुत ही उत्कृष्ट कोटि का है। इसी प्रकार सुखबासीलाल की धूर्तता, चौबेजी का सरल विनोद और नाथूराम का काइयाँपन सभी इस नाटक में अपूर्व हैं।

नाटकत्व की दृष्टि से 'रणधीर और प्रेममोहिनी' में आदर्शवाद और नीतिवाद परम्परावाद और कौतुकवाद का अद्भुत सम्मिश्रण है। एक ओर रणधीर सिंह और रिपुदमन आदर्श योद्धा, अपूर्व रूपवान् और नीतिवान् हैं वहाँ उनमें कौतुकप्रियता भी कुछ कम नहीं है। पूरे नाटक में रीतिकालीन छेड़छाड और कौतुकप्रियता का एक ऐसा वातावरण है जिसे आज के पाठक समझ नही सकेंगे। रिपुदमन के प्राणों की रक्षा कर जब रणधीर सिंह जाने लगता है तब रिपुदमन को छेड़छाड की सूझती है। वह सोचता है:

मेरे मन में इस वीर से प्रीति करने की बड़ी चाहना है पर ऐसे सज्जन खुशामद की बातों से कभी प्रसन्न नहीं होते, इस्कारण पहले इनसे छेड़छाड की बातें करूँ

यह छेड़छाड़ और कौतुकपूर्ण वार्तालाप सिह के पजो की छाया में दो अपरिचित व्यक्तियो में कुछ अद्भुत सा जान पड़ता है इसी प्रकार रणधीर द्वारा नए मित्र के लिए यह सोचना:

जब इनसे प्रीति करनी ठैरी तो पहले इन्का सुभाव जान्ना चाहिये क्योंकि जिस्से जिस्का सुभाव मिलता है उस्से उसको प्रीति होती है. आज इनके आगे हँसी चोहल की बातें कर, गाने की चर्चा छेड़, शास्त्र का प्रसग ला, इनके मन की रुचि परख लें.

भी विचित्र सा जान पड़ता है। परतु इससे भी विचित्र है रणधीर और प्रेममोहिनी के प्रथम प्रेम-मिलन का प्रथम सम्भाषण। तृतीय अंक का प्रथम गर्भांक देखिए:

प्रेममोहिनी (मुस्कराती हुई, लाज से नीची आँख करके) प्यारे प्राणनाथ ! मुझको अपने प्रिय मित्र के नाम एक प्रेम-पत्रिका लिखानी है, आपको अवकाश हो तो कृपा करके लिख दीजिये . आप सा चतुर लिखने वाला मुझे कहाँ मिलेगा ?

रणधीर (अचरज से, मन में) इसने ये कैसी आश्चर्य की बात कही . मैं इसकी मीठी बातों में आकर ठगा तो नहीं गया ? घड़ी भर पहले ये मेरे वियोग से शरीर छोडती थी . अब ये मुझसे अपने मित्र के नाम चिट्ठी लिखाती है . ईश्वर जाने इसकी बातों में क्या क्या भेद होगा . (प्रगट) अच्छा तुम अपना प्रयोजन बता दो .

प्रेम०—प्रेम स्वाभाविक प्रेम, सच्चा प्रेम, अचल प्रेम और कुछ नहीं .

रण०—हमको तुम्हारी तरह प्रेम जताना नहीं आता, पर तुम्हारे लिये पुस्तकों के बल से कुछ लिखते हैं . (प्रेममोहिनी ने दवात कलम कागज ला दिया .)

रण०—(लिखकर) सुनो—

"प्रेम जल की वर्षा से प्यासे पपहिये की प्यास हरनेवाले जलधर, प्रेम-प्रफुल्लित पुष्पों की सुगधि से ससार को सुगंधित करनेवाले तरुवर, प्रेम-भूमि मे वियोग की वायु झेलकर अचल रहनेवाले भूधर प्रेम-पियूष के सिंचने से मुरझाई लता को हरे करनेवाले हिमकर ! आपका चंद्रमुख निहारने की मेरे नयन-चकोरों को बान पड गई है, इस कारण पल भर के वियोग से ये व्याकुल हो जाते हैं . आपको ऐसा चुम्बक कहाँ मिला जिसके बल से आप दूर बैठकर मेरा मन खैंचते हो कोई प्राणी बंधन में रहने से प्रसन्न नहीं होता पर मैं आपके प्रीति-जाल में प्रसन्न हूँ . आपने ये विद्या कहाँ सीखी ? जो हमको सिखा दो तो हम भी आपके ऊपर आजमायें संसार के विष वृक्ष में एक प्रीति ही अमृत फल है . संसार-सागर के पैरने वालों में थके हुओं को एक प्रीति ही सहारा देने

सेनापति तथा अन्य राजाओ का मान-मर्दन करता है। उस समय प्रेम-मोहिनी उसे रणधीर सिंहजी के रूप में नही जानती और प्रथम दर्शन में ही उससे प्रेम करने लगती है। परतु जिसका रूप-गुण सुनकर हृदय में स्थान दिया और प्रथम दर्शन में जिसकी छबि अपने नेत्रो में भर ली वे दोनो एक ही व्यक्ति हैं इसका ज्ञान न होने से प्रेममोहिनी एक उलझन में पड जाती है जो पाठको और दर्शको के लिए एक कौतुक का विषय बन जाता है।

इसी प्रकार चौबेजी की हास परिहास और चोज भरी बातें भी भारतेन्दु युग की अपनी विशेषता थी। 'हरिश्चंद्र चंद्रिका' में प्रायः प्रत्येक मास 'चोज की बातें' शीर्षक स्तम्भ में छोटे छोटे चुटकुले रहते थे जिनमें विनोद की सामग्री पूर्ण मात्रा में होती थी। इन चोज की बातो में 'चौबे जी' पर प्रायः चुटकुले निकलते रहते थे। दिसम्बर १८७८ में 'चौबे जी' के सम्बंध में दो चोज की बातें प्रकाशित हुई थी। पहली बात में मथुरा के एक चौबे जी ने किसी सस्कृत पाठशाला के विद्यार्थियों को हिल-हिल झूम-झूम पढ़ते देख किसी पंडित से प्रश्न किया था:

झुकत झुकत विद्यारथी कहा बूढे कहा बार।
मैं तोहि पूछूँ हे सखे, याको कौन बिचार॥

इसके उत्तर में पंडित जी ने बताया था कि :

आगे समुद अगम्य है अपने बैठ करार।
रतन लेन को झुकत हैं झिझकत देख अपार॥

दूसरे चुटकुले में कहा गया है कि एक बार मिर्ज़ा राजा जयसिंह ने मथुरा में अब्दुन्नबी खां की मसजिद की ऊँची गुमटी देखकर घोषणा की कि जो इस गुमटी से कूदेगा उसे एक सहस्र मुद्रा पुरस्कार में मिलेंगे। मथुरा के एक चौबे जी ने यह घोषणा सुन अपनी मृतप्राय जरा-जीर्ण

माँ को ला उपस्थित किया कि यह गुमटी से कूदेगी आप मुझे सहस्र मुद्रा दें। मिर्जा राजा ने कहा कि इस बूढ़ी के कूदने से पुरस्कार नहीं मिलेगा क्योंकि यह तो गिरते ही मर जायगी। चौबे जी ने कहा कि आप एक आदमी की मौत चाहते हैं और मैं एक सहस्र मुद्रा इसीलिए इस बूढ़ी को मरने के लिए ले आया। यह चोज की बात मार्च १८७९ में फिर उद्धृत की गई। जनवरी १८७९ में भी मथुरा के चौबे जी के संबंध में एक चोज की बात प्रकाशित हुई थी कि एक मथुरा का चौबे कहीं बैल पर चढ़ा पूरियाँ खाता चला जाता था। किसी कान्यकुब्ज पडित ने यह देखकर ठट्ठे से पूछा 'चौबे जी तुम जो चौके में न बैठ बैल पर बैठे पूरियाँ खा रहे हो सो इसका प्रमान क्या है ?'

चौबे जी ने उत्तर दिया 'प्रसिद्ध कौं प्रमान कछु नहीं चाहियतु।'

कान्यकुब्ज पंडित बोला 'सो क्या ?'

चौबेजी ने कहा 'कि चौका याही के मार्ग सों निकर्‌यौ है।'

इस बात के सुनते ही वह पडित हँसकर रह गया।

अस्तु, जान पड़ता है कि भारतेन्दु युग में चोज की बातो का खूब प्रचलन था और सम्भवतः इन चुटकुलों में मथुरा के चौबे प्रधान पात्र थे। 'रणधीर और प्रेममोहिनी' में चौबे जी की चोज की बातें युग को ही देन हैं जिन्हे हास्य रस की अवतारणा के लिए लेखक ने स्थान दिया है।

लेखक ने जान बूझकर नाटक को दुःखांत बनाया है। नाटक के दुःखांत होने की प्रारम्भ से कोई सम्भावना नही जान पड़ती। रणधीर-सिह और रिपुदमन जैसे दो अद्‌भुत योद्धा और बुद्धिमान् नीतिज्ञ सरलता से राजाओं की सम्मिलित सेना को परास्त कर सकते थे, परंतु नाटक को दुःखांत बनाने के लिए ही रिपुदमन पहले अकेले ही सारी सेना से युद्ध करता दिखाया गया है और उस समय रणधीरसिंह निद्रा में मग्न

पड़ा है और जागने पर भी वह शीघ्र मित्र की सहायता को नही दौड़ पड़ता, जीवन से तर्क-वितर्क में लग जाता है और जब उसे रिपुदमन की मृत्यु का समाचार ज्ञात होता है तब शीघ्रता से बिना अपना शस्त्र लिए दौड़ पड़ता है जिसका परिणाम मृत्यु के अतिरिक्त और कुछ हो ही नही सकता। रिपुदमन जैसे मरने के लिए ही रणधीर को सूचना दिए बिना अकेले लड़ने को चल पड़ता है। यदि दोनो वीर मिलकर अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित हो युद्ध करते तो उनकी विजय निश्चित थी। फिर सूरतपति ने कैसे अपने इकलौते पुत्र को अकेले लड़कर मर जाने दिया यह बात भी समझ में नही आती।

दु.खांत नाटको के नायक मे स्वभावगत स्वच्छदता और बाहरी परिस्थितियो का सघर्ष जो होना चाहिए वह 'रणधीर और प्रेममोहिनी' नाटक मे अवश्य है परतु बाह्य परिस्थितियो का संघर्ष बहुत कुछ कृत्रिम सा जान पड़ता है। रिपुदमन मित्र होकर भी रणधीर से पूर्णतः परिचित नही है क्योकि रणधीर सिह ने अपना परिचय तो अवश्य दिया परतु ऐसी पहेली के रूप में जिसे रिपुदमन समझ नही सका। रिपुदमन और रणधीर सिह की पूरी बातचीत ही एक पहेली है:

रिपुदमन—ये तो चदन की बडाई है जो अपने आसपास के वृक्षों को अपनी बराबर के बना लेता है, भला ये सुखदाई चदन कौन से बाग की रमणीय भूमि में शोभायमान है (अर्थात् आप कहाँ रहते हैं)

रणधीर—(मन में) अब क्या जवाब दूँ, झूँट बोलना मुनासिब नहीं और सच कहने में बिगाड होता है; (बिचार कर, प्रगट) पाटल की पिछली तिहाई न होने से उसका नाम आपको मालूम होगा.

रिपुदमन—(मन में) इन्के इस बचन का अर्थ इस्समय समझ में नहीं आता, कदाचित बिचारने से आ जाय, पर न आवै तौ भी इन्से पूछना तो मुनासिब नहीं, क्योंकि इन्को समझा कर कहना होता तो पहले ही लपेट कर क्यौं कहते.

नाटक पढ़ने से यह पता तो नहीं चलता कि रणधीर सिंह के सच कहने में किस बिगाड़ की सम्भावना थी, परंतु पहेली के रूप में परिचय देने से उसे झूठ भी नहीं बोलना पड़ा और नाटक भी लेखक के विचारानुसार दुःखांत हो गया। यदि उसने अपना समझ में आनेवाला परिचय दिया होता तो नाटक सम्भवतः दुःखांत न हो पाता। परंतु उस युग में इस वियोगात नाटक ने अच्छा प्रभाव डाला। 'सार-सुधानिधि', १ नवम्बर १८८० ई० मे इस नाटक की आलोचना करते हुए लिखा गया था

इसकी रचना प्रणाली से ग्रथकर्त्ता की बहुदर्शिता और योग्यता का परिचय होता है, प्रथम तो इस नाटक को वियोगात रखने से साहित्यशास्त्र का पूरा शासन दिखाया है. क्योंकि बहुतों को यह विश्वास है कि साहित्य द्वारा उपदेश तो क्या होना है, बरन् रस की बातों में और भी लोगों का चित्त बिगड जाता है और अत को लम्पट हो जाते हैं, परतु यह नहीं जानते कि जब इस की भी शास्त्र सज्ञा है तब इस द्वारा अवश्य शासन होता है। जिन लोगों के (की) समझ में साहित्य का प्रेमाभिषिक्त उपदेश नहीं आता है उनके लिये वियोगान्त काव्य विशेष उपदेशक है, क्योंकि × × × × × × जितना साहित्य अलंकार है वह सब विप्रलम्भ (वियोग) ही में निःशेषित हुआ है, और शृगार का यावत सुख है, वह सब विरह ही मे दिखाया गया है जिसकी अतिम दशा मरण है।× × × × × जिसके अत में शृगार करुणा में परिणत हो चिरकाल तक अपना स्वाभाविक आधिपत्य दर्शकों पर जमाये रहता है, इसी अभिप्राय से यह भी वियोगान्त रक्खा गया है।

शैली की दृष्टि मे भी यह नाटक अत्यत कृत्रिम है। यह सच है कि इसमें पात्रो के अनुरूप ही भाषा का प्रयोग हुआ है, जैसे चौबे जी की ब्रजभाषा, नाथूराम की मारवाड़ी, सुखबासीलाल की फ़ारसी मिश्रित हिन्दुस्तानी तथा अन्य पात्रो की हिन्दी भाषा, परंतु बीच बीच में जो पहेलियाँ, जो चोहलबाजी तथा चतुरई की बातें मिलती हैं वे नाटक को

स्वाभाविकता पर कुठाराघात करनेवाली हैं। फिर लम्बे लम्बे स्वगत भाषण और पृथक् भाषणो के कारण सम्पूर्ण नाटक बहुत ही कृत्रिम हो गया है, परंतु जब हम इस तथ्य पर विचार करते हैं कि यह नाटक उस समय लिखा गया था जब हिन्दी का अपना रगमच था ही नहीं, हिन्दी में नाटको का जन्म हो ही रहा था और इससे पूर्व मौलिक नाटक केवल इने-गिने ही थे तथा उसकी पृष्ठभूमि में दो-ढाई सौ वर्षों का विचित्र मार्ग का अनुयायी रीतिकालीन साहित्य था, तो उसकी कृत्रिमता समझ में आ जाती है। इन कृत्रिमताओ से युक्त भी यह नाटक अपने युग का भूषण है।

उपन्यास

आधुनिक युग में जिस साहित्य-रूप ने शिक्षित जनता पर दिग्विजय प्राप्त किया है, भारतेन्दु युग के आरम्भ में उस साहित्य-रूप का अस्तित्व भी नही था। यद्यपि भारतेन्दु इस साहित्य-रूप से अपरिचित नहीं थे और इसके प्रचार और प्रसार की इच्छा उनके मन में बहुत पहले से ही विद्यमान थी, क्योकि अक्टूबर १८७३ में 'हरिश्चंद्र मैगज़ीन' का प्रारम्भ करते हुए उन्होने उसके मुखपृष्ठ पर छपवाया था.

Published in connection with the Kavi-Vachan-Sudha, containing articles on literary, scientific, political and religious subjects; antiquities, reviews, dramas, history, novels, poetical selections, gossip, humour and wit, edited by Harish Chandra.

परतु फिर भी मौलिक उपन्यासो की रचना बहुत देर में हुई। 'भारतेन्दु' की ही प्रेरणा से संस्कृत, बँगला और मराठी उपन्यासों का अनुवाद प्रारम्भ हुआ था। बाबू गदाधरसिह ने १८७३ में संस्कृत से कादम्बरी

और बँगला से 'दुर्गेशनंदिनी' का अनुवाद प्रस्तुत किया। १८७५ में किसी के पूछने पर भारतेन्दु ने अनुवाद के लिए कुछ पुस्तकों की सूची प्रस्तुत की थी जिसमें फारसी से आईने अकबरी, संस्कृत से राजतरंगिणी, विक्रमचरित्र, ललित विस्तर; यास्क, वात्स्यायन, गौतम आदि के सूत्र और बँगला से विधवार दांते मिसी, नवीन तपस्विनी, कृष्णाकुमारी, दुर्गेशनंदिनी, नवनारी आदि अच्छे अच्छे नाटक और प्रबंध थे। परंतु उनकी इच्छानुसार नाटकों और उपन्यासों का समुचित प्रचार न हो सका इसीलिए राधाकृष्ण दास ने 'नाटकोपन्यास' पाक्षिक पुस्तिका निकालने का विचार किया जिसका विज्ञापन नवम्बर १८७८ के 'हरिश्चद्र चद्रिका' में इस प्रकार प्रकाशित हुआ था :

हिन्दी भाषा में नाटक और उपन्यास का सम्पूर्ण रूप से अभाव है विशेष कर के अँगरेजी और बंगभाषा के अनुसार उत्तम नाटक आज तक बहुत ही कम प्रकाशित हुए हैं और उपन्यासों के तो अभी तादृश स्वाद से भी हमारे देश बाधवगण वचित हैं, इस हेतु ऐसा विचार किया है कि एक पाक्षिक पुस्तिका २० पृष्ट की हिन्दी भाषा की पूर्वोक्त नाम की प्रचलित हो और इसमें केवल मनोहर उपन्यास और नाटक रहे. अनेक कृतविद्यों ने बँगला और अगरेजी से अच्छे अच्छे नाटकों और उपन्यासों (नाबेल्स) का अनुवाद करना भी स्वीकार किया है.

परंतु इस प्रकार की पाक्षिक पत्रिका सम्भवतः नही निकल सकी, परंतु कृतविद्यो ने अनुवाद अवश्य किया जो 'हरिश्चद्र चंद्रिका' और 'भारतेन्दु' पत्रिकाओं में धारा प्रवाह प्रकाशित हुआ। साथ ही कुछ अर्द्ध मौलिक कहानियाँ भी पुस्तकाकार प्रकाशित होने लगी। इन कहानियों को लक्ष्य कर 'हरिश्चद्र चंद्रिका, मोहन चद्रिका' स० १९३८ में 'नाटक वा उपन्यास' शीर्षक लेख में लिखा गया था :

जब से हमारे आधुनिक शिक्षितों की रुचि इधर हुई तबसे इनके लेखक भी बहुत हुए. हम यह नहीं कहते कि उनके लेख रसीले वा

हृदयवेधक नहीं होते, परतु हमें इतना तो जान पडता है कि 'गतानुगतिको लोकः'—इस कहावत के अनुसार सब ही, जिन्हें नाटक क्या चिडिया होती है वा उपन्यास कितना वजनदार रहता है यह मालूम नहीं, नाटक वा उपन्यास लिखने लगे . वस्तुतः नाटक वा उपन्यासों का आशय यही रहता है कि लोगों को जो उपदेश वा शिक्षा की जाती है, जिसके तरफ़ किसी का ध्यान नहीं जमता, वह इस मिष से और रगीन बातों से जमाना. परतु आजकल के नाटक वा उपन्यासों से वह आशय तो बहुत ही कम क्या निकलता है—उलटी और लोगों की विषयासक्ति बढ़ती जाती है .

ऐसे विषयासक्ति बढ़ानेवाले उपन्यासों और अनुवादो के युग में पहला 'वजनदार' मौलिक और सफल उपन्यास लाला श्रीनिवास दास का 'परीक्षागुरु' था । जैसा कि लेखक ने भूमिका में लिखा है:

अब तक नागरी और उर्दू भाषा में अनेक तरह की अच्छी अच्छी पुस्तकें तैयार हो चुकी हैं, परतु मेरे जान इस रीति से कोई नहीं लिखी गई इसलिए अपनी भाषा मैं यह नई चाल की पुस्तक होगी .

'परीक्षागुरु' नई चाल की पुस्तक है, परतु इसमें नवीनता किस प्रकार की है इसका स्पष्टीकरण भी स्वय लेखक ने भूमिका मे इस प्रकार किया है:

पहले तो पढ़नेवाले इस पुस्तक मैं सौदागर की दुकान का हाल पढ़ते ही चकरावेंगे क्योंकि अपनी भाषा मैं अब तक वार्ता रूपी जो पुस्तकें लिखी गई हैं उन्मैं अक्सर नायक नायका वगैरे का हाल ठेठ सिलसिलेवार लिखा गया है जैसे 'कोई राजा, बादशाह, सेठ, साहूकार का लडका था उसके मन मैं इस बात से यह रुचि हुई और उस्का यह परिणाम निकला' ऐसा म्लिसिला इस्मैं कुछ भी नहीं मालूम होता .

इससे पूर्व जो उपन्यास लिखे जाते थे वे पुरानी कहानियो के अनुरूप 'एक था राजा और उसकी थीं कई रानियाँ' आदि से प्रारम्भ

होता था, परंतु 'परीक्षागुरु' का प्रारम्भ बड़े ही सुदर नाटकोय ढंग से एक अगरेजी सौदागर की दूकान में एकत्र हुए तीन मित्रों के साथ लाला मदनमोहन द्वारा काच की जोडी का सौदा करते हुए हुआ है। इस नाटकीयता के प्रवेश से उपन्यास में एक अपूर्वता आ गई है। अपनी इसी नाटकीयता के कारण यह 'रणधीर और प्रेममोहिनी' का सहोदर कहा गया।

यह अपूर्वता और नवीनता लेखक ने अगरेजी मे ली थी और अपनी इस नवीनता के कारण यह उपन्यास अपने युग की सभी रचनाओं से विशिष्ट है। 'परीक्षागुरु' के बाद भी अनेक उपन्यास लिखे गए, परतु प्रेमचद से पहले 'परीक्षागुरु' जैसी विशिष्ट रचना हिन्दी में दूसरी नही थी। जैसा कि पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी ने लिखा है, 'परीक्षागुरु' हिन्दी की एक स्थायी निधि है।

'परीक्षागुरु' एक धनी मानी लाला मदनमोहन के पतन और उद्धार की कहानी है। १९ वी शताब्दी में लाला मदनमोहन जैसे अमीरों की कमी नही थी। 'हरिश्चद्र चद्रिका' ज्येष्ठ शुक्ल १९३७ वि० मे पंच का प्रपंच' शीर्षक स्तम्भ में पंच और चडूलचाई की बातचीत में उस युग के अमीरो की एक झांकी देखने योग्य है। अमीरो के यहाँ जो पासवान होते हैं जिनकी बातो से अमीर प्रसन्न रहते हैं और जिनसे भले का बुरा और बुरे का भला झट बन जाता है उन्हे चंडूलचाई कहते है। पच महराज चडूलचाई से पूछते हैं :

क्यौ भाई, तो क्या इनमें (अमीरों में) इतनी भी समझ नहीं है कि ये अपना लाभ नफा देख सकते ?

इसके उत्तर में चडूलचाई कहता है :

यदि ये ऐसे सच्चे अकलमद होते तो क्यौ ऐसे काम करते ? क्यौं लोगों को मुँह पर स्तुति और पीठ पर गालियाँ खाते ? क्यौं इन्हें

अक्ल का इतना अजीर्ण होता कि जिसके मारे अपरम्पार द्रव्य के भस्म भी किसी एक कोने में भस्म होते ? हम सरीखे लोगों का गुजारा कैसे चलता ? बात की बात में हाँ और बात ही बात में ना कौन करता ? गरीबों को ऐश व आराम के सुख कैसे मालूम होते ? सीधे भोले इस शब्द का उपयोग मूर्खताबोधक कहाँ होता ? घर वालों को रोने पीटने की क्यों नौबत आती ? अमीर शब्दका अर्थ भी लोगों को कैसे मालूम पडता ? इन अमीरों को अक्ल का अजीर्ण था, इसका उल्लेख भारतेन्दु ने भी 'अधेर नगरी' प्रहसन में किया है। चूरन वाला कहता है:

चूरन खाते लाला लोग। जिनको अकिल अजीरन रोग।

लाला मदनमोहन भी इसी प्रकार के एक अमीर हैं जिनको अकल का अजीर्ण है और मुशी चुन्नीलाल, मास्टर शिंभूदयाल आदि 'चंडूलचाइयो' की कृपा से उनका अपरम्पार धन विनष्ट हो रहा है। एक ओर मास्टर शिंभूदयाल का कहना था कि 'अमीरों को ऐश के सिवाय और क्या काम है ?' (पृ० १८३) और पडित पुरुषोत्तमदास राजनीति का प्रमाण देकर समझाते थे कि:

राजा सुख भोगहि सदा मत्री करहिं सम्हार।
राजकाज बिगरे कछू तो मंत्री सिर भार॥ (पृ० १८४)

दूसरी ओर बिहारी बाबू लाला जी को जुए की आदत दिलाने के लिए किस सफाई से निवेदन करते हैं :

भोजला पहाड़ी पर एक बड़े धनवान् जागीरदार रहते हैं उन्को ताश खेलनें का बडा व्यसन है वह सदा बाजी बदकर खेलते हैं और मुझको इस खेल के पत्ते ऐसी राह से लगाने आते हैं कि जब खेलें तब अपनी ही जीत हो, मैंने उन्को कितनी ही बार हरा दिया इसलिये अब वह मुझको नहीं पतियाते परतु आप चाहें तो मैं वह खेल आप को सिखा दूँ फिर आप उन्से निधडक खेलें आप हार जायँगे तो वह रकम मैं दूगा और जीतें तो उस्मैं से मुझको आधी ही दें. (पृ० २४५-२४६)

एक ओर पंसारी का लड़का हरगोविंद बारह बारह रुपए मूल्य की लखनऊ की बनी टोपियाँ अठारह अठारह रुपए में लाकर लालाजी की प्रशंसा का पात्र बनता है (पृ० १७३), दूसरी ओर हकीम अहमद हुसैन झूठे किस्से गढ़ गढ़ कर एक शीशी अतर के लिए पच्चीस रुपए का नोट प्राप्त करता है। मुंशी चुन्नीलाल और मास्टर शिभूदयाल तो मिस्टर ब्राइट, मिस्टर रसल और घोड़ों के व्यापारी आगा हसन जान से मिलकर दलाली और कमीशन के हज़ारो रुपए स्वय खाते हैं और लाला जी को दिवालिया बनाते रहते हैं। इस प्रकार लाला मदनमोहन अपने सभासदों की खुशामद की बातों में पड पड़कर अपने सच्चे शुभ-चितक लाला ब्रजकिशोर से खिचते जाते हैं और स्वय दिवालियेपन की ओर गिरते जाते हैं। एक दिन जब सचमुच ही लाला मदनमोहन दिवा-लिया बन गये उस समय उनके सभी खुशामदी मित्र एक एक कर छोड जाने लगे। मास्टर शिभूदयाल को स्कूल में काम बढ़ गया, मुंशी चुन्नी-लाल जाते जाते भी गहनो की पेटी ले जाने की तरकीब सोचते हैं। मित्रो ने अलग रंग बदले। लाला हरदयाल ने तो एक स्वांग ही रच डाला। वह स्वय तो अपने मित्र को देने के लिए गहनो का कलमदान उठा लाया और एक एक कर सब गहने अपने मित्र को देने लगा परतु इसी समय उसके पिता ने आकर सब गहने छीन लिए और हरदयाल के साथ ही लाला मदनमोहन को भी अच्छी तरह डाटा। मेरठ के एक मित्र ने दश हजार की दर्शनी हुडी भेजी परतु साथ ही एक तार भेजकर हुडी खड़ी रखवा दी। अन्य मित्रो ने भी इसी प्रकार टालमटोल कर लाला मदनमोहन की सहायता से मुँह मोड़ लिया।

लाला मदनमोहन की इस बिगड़ी दशा में दो व्यक्तियो ने उसकी पूरी सहायता की। एक तो उसकी पतिव्रता पत्नी थी जिसे उसने अपने खुशामदी मित्रो के साथ ऐश व आराम में बिलकुल ही उपेक्षित बना रखा था और दूसरे लाला ब्रजकिशोर जिन्होंने प्रारंभ से ही उसे सदु-

पदेश देकर सुधारने का प्रयत्न किया था और उसपर विपत्ति आने पर धैर्यपूर्वक उसकी पूरी सहायता कर विपत्ति से उद्धार किया। लाला ब्रजकिशोर एक आदर्श मित्र हैं जिन्होने तन, मन, धन से अपने उपकारी के पुत्र की रक्षा के लिए मानापमान की कुछ परवाह न कर उसे ठीक रास्ते पर लाने का प्रयत्न किया। वे केवल आदर्श मित्र ही नही बडे ही दूरदर्शी बुद्धिमान् पुरुष हैं और उन्ही की कार्य-कुशलता से लाला मदनमोहन विशेष क्षति उठाये बिना ही संकट से पार लग गए।

'परीक्षागुरु' का कथानक लेखक ने बडी निपुणता से गूँथा है। जहाँ तक घटनाओ के क्रमिक विकास का प्रश्न है, इस उपन्यास का कथानक बहुत सफल नही कहा जा सकता और न तो हिन्दी के प्रथम उपन्यास में इस प्रकार के कौशल की आशा ही की जा सकती है, परंतु विविध चरित्रों के उद्घाटन और विविध विषयो के सारभूत तथ्यो और रहस्यों के उद्घाटन के लिए एक शृंखलाबद्ध कथानक की कल्पना करना ही उस युग की सबसे बडी सफलता थी। लाला मदन-मोहन, लाला ब्रजकिशोर, मुशी चुन्नीलाल, मास्टर शिभूदयाल, लाला हरदयाल और लाला हरकिशोर के विशिष्ट चरित्रो के उद्घाटन करने वाले यथार्थवादी वार्तालाप तथा सुख दु ख, प्रामाणिकता, सावधानी, सज्जनता, भले-बुरे की पहचान जैसे विषयो पर गम्भीर विचार-विमर्श करने वाले सवादो की योजना के लिए एक शृंखलाबद्ध कथा की आव-श्यकता थी और उस आवश्यकता की पूर्ति के लिए एक कथा को सूत्रबद्ध करना साधारण कौशल का काम नही है। 'परीक्षागुरु' का महत्व उसके कथानक में नही उसके विविध चरित्रो के रेखाचित्र उपस्थित करने और उन चरित्रो का पूर्णरूप से उद्घाटन करने के लिए नाटकीय ढग के यथार्थवादी वार्तालाप उपस्थित करने में है। लाला श्रीनिवास दास के ये रेखाचित्र और नाटकीय ढंग के ये वार्तालाप अद्भुत हैं। उपन्यास के नवे प्रकरण—सभासद—में लाला जी ने मुंशी

चुन्नीलाल, मास्टर शिंभूदयाल, पडित पुरुषोत्तम दास, हकीम अहमद हुसैन तथा बाबू बैजनाथ का जो रेखाचित्र उपस्थित किया है वह उनके सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक विश्लेषण की अद्भुत प्रतिभा का द्योतक है। बालकृष्ण भट्ट ने अपने प्रसिद्ध प्रबंध 'सौ अजान एक सुजान' में अनेक सुंदर रेखाचित्र उपस्थित किए हैं। उदाहरण के लिए सेठ हीराचद के पुरोहित बसंतराम का एक रेखाचित्र देखिए :

पाठकजन, यह सेठजी के पूज्य पुरोहित के घराने का था। नाम इसका बसतराम था, पर सब लोग इसे बसता-बसता कहा करते थे। नाक फसडी, होठ मोटे, आँख घुच्चू सी, माथा बीच में गड्ढेदार, चेहरा गोल, रग काला मानों अजन गिरि का एक टुकडा हो। पढ़ना-लिखना तो इसके लिए काला अक्षर भैस बराबर था। जब यह मा के गर्भ में था तभी इसके बाप ने यमपुर की राह ली। केवल नाम मात्र के ब्राह्मण इन पुरोहितों की पहले तो सृष्टि ही निराली होती है कि पुरोहिती कर्म से जीनेवाले सौ पचास इकट्ठे किये जायँ तो बिरले एक दो उनमें ऐसे निकलेंगे जो आवारगी, उजड्डपन, छिछोरेपन से खाली होंगे। विद्या, गुण अथवा किसी प्रकार की योग्यता का तो जिक्र ही क्या, उनमें साधारण रीति की मनुष्यता ही हो तो मानो बडी कुशल है। तब इस रण्डापुत्र का कहना ही क्या! इस अभागे को तो जन्म ही से कोई कुछ कहने सुननेवाला न था।

एकेनापि कुपुत्रेण कोटरस्थेन वह्निना,
दह्यते तद्वन सर्वं कुपुत्रेण कुल यथा।

कुपुत्रों में भी यह उस तरह का कुपूत न था कि खोडर में रक्खी आग के समान केवल अपने ही कुल को भस्म करे, अपिच जहाँ जहाँ इसकी थोडी भी पैठ या सचार हो गया, वहाँ वहाँ इसने भरपूर अपना-सा उन घरानेवालों को कर दिखाया। यह सदा इसी ताक में रहा करता था कि किस घराने में कौन कौन नये केवे हैं। उन्हें किसी-न-किसी तरह अपने

ढंग पर चढ़ाय खातिरखाह गुलछर्रे उड़ाया करता, जब देखा यहाँ कुछ सार न रहा, तो निर्गंधोज्झित पुष्प के समान उसे त्याग भ्रमर के समान दूसरा ठौर ढूँढ़ने लगता। [सौ अजान एक सुजान–पचमावृत्ति स० १९८५ पृ० २८-२९]

भाषा के चमत्कार, व्यग्य और स्पष्टता में यह रेखाचित्र अपूर्व है और लाला श्रीनिवास दास के रेखाचित्र इसकी तुलना में नगण्य है, परतु व्यक्तित्व-प्रदर्शन के लिए सूक्ष्म दृष्टि से स्वभाव का निर्देश जितनी गहराई में लाला श्रीनिवास दास ने किया है उतना भट्ट जी नही कर सके है। पंडित पुरुषोत्तम दास का एक रेखाचित्र देखिए ·

पडित पुरुषोत्तम दास भी बचपन सै लाला मदनमोहन के पास आते जाते थे इन्को लाला मदनमोहन के यहाँ सै इन्के स्वरूपानुरूप अच्छा लाभ हो जाता था परतु इन्के मन मैं औरों की डाह बडी प्रबल थी लोगों को धनवान, प्रतापवान, विद्वान, बुद्धिमान, सुदर, तरुण, सुखी और कृतिकार्य देखकर इन्हैं बडा खेद होता था . यह यशवान मनुष्यों सै सदा शत्रुता रखते थे, अपनें दुखिया चित्त को धैर्य देने के लिए अच्छे अच्छे मनुष्यों के छोटे छोटे दोष ढूँढा करते थे, किसी के यश मै किसी तरह का कलक लग जानें सै यह बड़े प्रसन्न होते थे, पापी दुर्योधन की तरह सब संसार के विनाश होने में इन्की प्रसन्नता थी, और अपनी सर्वज्ञता बताने के लिए जाने बिना जानें हर काम मैं पाँव अडाते थे . मदनमोहन को प्रसन्न करने के लिए अपनी चिड करेले की कर रक्खी थी . चुन्नीलाल और शिभूदयाल आदि की कटती कहनें मै कसर न रखते थे परतु अकल मोटी थी इसलिये उन्होंने इन्हें खिलोना बना रक्खा था, और परकैच कबूतर की तरह वह इन्हैं अपना बसवर्ती रखते थे .

इसमें न वह भाषा का चमत्कार है न व्यग्य, परतु लेखक की सूक्ष्म दृष्टि और मनोवैज्ञानिक विश्लेषण की क्षमता अपूर्व है। परतु इस रेखा-चित्र से भी कहीं अधिक चमत्कारपूर्ण इस उपन्यास के वार्तालाप है

जिनसे चरित्रो की विशेषता अच्छी तरह जानी जा सकती है। द्वितीय प्रकरण के प्रारम्भ का वार्तालाप सुनिये

"हैं अभी तो यहाँ के घटे मै पोनें नो ही बजे हैं तो क्या मेरी घडी आध घटे आगे थी ?" मुशी चुन्नीलाल नें मकान पर पहुँचते ही बड़े घटे की तरफ देखकर कहा . परतु ये उस्की चालाकी थी उस्नें ब्रजकिशोर सै पीछा छुडाने के लिये अपनी घड़ी चाबी देनें के बहानें सै आध घटे आगे कर दी थी

"कदाचित् ये घटा आध घंटे पीछे हो" मास्टर शिभूदयाल ने बात साध कर कहा .

"नहीं, नहीं ये घटा तोप से मिला हुआ है" लाला मदनमोहन बोले .

"तो लाला ब्रजकिशोर साहब की लच्छेदार बातें नाहक अधूरी रह गई ?" मुशी चुन्नीलाल ने कहा .

"लाला ब्रजकिशोर की बातें क्या हैं चकाचू का जाल है वह चाहते हैं कि कोई उन्के चक्कर सै बाहर न निकलने पाये ." मास्टर शिभूदयाल नें कहा .

"मै यों तो ये काच न लेता पर अब उन्की ज़िद सै अदबद कर लूँगा ."

"निस्सदेह जब वे अपनी जिद नहीं छोडते तो आपको अपनी बात हारनी क्या जरूर है " मुशी चुन्नीलाल ने छींटा दिया .

"हितोपदेश मै कहा है

"आज्ञालोपी सुतहु को त्यागैं न नृपति विनीत।
को विशेष नृप, चित्र मै जो न गहे यह रीत ॥"

पडित पुरुषोत्तम दास ने मिल्ती मै मिलाकर कहा .

इस प्रकार के यथार्थवादी वार्तालाप हिन्दी मे पहली बार देखने को मिलते हैं और प्रेमचद से पूर्व इस प्रकार के यथार्थवादी और सूक्ष्मदर्शिता के द्योतक वार्तालाप किसी नाटक अथवा उपन्यास में देखने को नही मिलते।

इस प्रकार के वार्तालाप की तत्कालीन पत्र-पत्रिकाओ मे चर्चा भी खूब चली क्योकि लोगो को अंगरेजी ढग के ये वार्तालाप रुचिकर नही थे। 'हरिश्चद्र चद्रिका और मोहन चंद्रिका' सम्मिलित पत्रिका के पौष शुक्ल १९३९ वि० अंक मे जहा इसकी प्रशसा में लिखा गया था :

ऐ धनिकों, ऐ राजगणों, हे निरक्षरों, हे कज्जेदलालों, हे प्रेम के फँसे जवानों, हे बजाजो वा बाजार के बैठने हारो, दुनिया का मजा चीखने चाहो, कठपुतलियों का तमाशा देखने चाहो, खुशामदियों के गुण रेखने चाहो, रडियों का गाना सुनने चाहो, मामलेमुकद्दमों में बहस सीखने चाहो या अपनी मूर्खता को झींखने चाहो, तो परीक्षागुरु का आश्रय करो. वही अंत मे यह भी लिखा गया था :

ग्रथकर्ता ने जो अग्रेजी प्रणाली इसमें रक्खी है वह पढने वालों को अर्थानुसधान में विघ्नकारक हैं, वैसे ही कितनेक स्थानों में लेखनावेश में आगा पीछा भी भूलना योग्य नहीं. जैसे प्रथम ही प्रथम काच की जोडी खरीदने का समय और गुलाब फूटने का समय ठीक नहीं मिलता.

वार्तालाप की भारतीय प्रणाली नाटको के समान रही है जिसमें पहले कहने वाले का नाम-सकेत देकर तब कही हुई बात लिखी जाती है। परतु अगरेजी प्रणाली में उद्धरणी चिह्न लगा कर बात प्रारभ्भ कर दी जाती है और कहने वाले का नाम संकेत मध्य में अथवा अत में होता है। कभी कभी केवल बात ही कह दी जाती है, कहनेवाले का नाम नही दिया जाता परतु सदर्भ से पता लग जाता है कि कहनेवाला कौन व्यक्ति है। लाला श्रीनिवास दास ने 'परीक्षागुरु' में अगरेजी प्रणाली ही रखी है और बड़ी सफलतापूर्वक उसका निर्वाह किया है। केवल वार्तालाप की प्रणाली ही नही उपन्यास में वार्तालाप की शैली और आत्मा भी अगरेजी साहित्य से प्रभावित रही है।

परंतु 'परीक्षागुरु' का वास्तविक महत्व उसके रेखाचित्रों तथा अभिनव प्रणाली के वार्तालापों में उतना नही है जितना गम्भीर विचार-

विमर्श और व्यापक ज्ञान से परिपूर्ण उन लम्बे लम्बे सवादों में है जहाँ प्रतिदिन के जीवन की छोटी बडी समस्याओ की विविध उदाहरणो द्वारा विशद व्याख्या और विवेचना हुई है। यो तो सम्पूर्ण उपन्यास में अनेक विषयो पर गम्भीर विचार-विमर्श मिलते है, परतु बारहवे प्रकरण में 'सुख दु.ख' पर जो विवेचन है वह अपनी स्पष्टता में अद्वितीय है। मुंशी चुन्नीलाल, मास्टर शिभूदयाल और लाला मदनमोहन के सशयो और शंकाओ का समाधान तर्क और उदाहरणो द्वारा करके लाला ब्रजकिशोर सुख और दु ख की स्पष्ट व्याख्या करते हैं। मु शी चुन्नीलाल पहले अपना संशय उपस्थित करते है .

सुख दुःख तो बहुधा आदमी की मानसिक वृत्तियों और शरीर की शक्ति के आधीन है एक बात सै एक मनुष्य को अत्यत दुःख और क्लेश होता है वही बात दूसरे को खेल तमाशे की सी लगती है, इसलिए सुख दुःख होनें का कोई नियम नहीं मालूम होता

फिर मास्टर शिभूदयाल सुख दु ख की अपनी व्याख्या उपस्थित करते है:

मेरे जान तो मनुष्य जिस बात को मन सै चाहता है उस्का पूरा होना ही सुख का कारण है और उस्मैं हर्ज पडने ही सै दुःख होता है .

इस पर लाला ब्रजकिशोर अपने तर्क उपस्थित करते हैं ·

तो अनेक बार आदमी अनुचित काम करके दुःख मै फँस जाता है और अपनें किये पर पछताता है इस्का क्या कारण ? असल बात यह है कि जिस्समय मनुष्य के मन मै जो बृत्ति प्रबल होती है वह उसी के अनुसार काम किया चाहता है और दूरअदेशी की सब बातों को सहसा भूल जाता है परतु जब वो बेग घटता है तबियत ठिकानें आती है तो वो अपनी भूल का पछतावा करता है और न्याय बृत्ति प्रबल हुई तो सबके साम्हनें अपनी भूल अगीकार कर कै उस्के सुधारनें का उद्योग करता है पर निकृष्ट प्रवृत्ति प्रबल हुई तो छल करके उस्को छिपाया चाहता है अथवा अपनी भूल दूसरे के सिर रक्खा चाहता है और एक अपराध छिपानें के

लिए दूसरा अपराध करता है परंतु अनुचित कर्म से आत्मग्लानि और उचित कर्म से आत्मप्रसाद हुए बिना सर्वथा नहीं रहता .

कितना अनुभव और ज्ञान भरा है लाला ब्रजकिशोर की इन बातो में ! इस प्रकार के एक दो नहीं सैकडो अनुभव, ज्ञान और सदाचरण के उपदेश इस पुस्तक मे भरे पडे है। ज्ञान और तर्क की पुष्टि के लिए सेकडो उदाहरण महाभारत, हितोपदेश, गुलिस्ताँ, शेक्सपीयर के नाटक, इंगलैंड, रोम और ग्रीक के इतिहास तथा बेकन के निबंध, स्पेक्टेट, स्त्री बोध आदि पत्र-पत्रिकाओ एवं अन्य ग्रथो से उद्धृत किए गए है। जीवन को सफल और सदाचारी बनाने के लिए जिन उपदेशो की आवश्यकता है प्राय. वे सभी उपदेश इस उपन्यास में यथास्थान रख दिए गए है। नीति-शिक्षा का इतना सफल प्रयास अन्य किसी उपन्यास मे मिलना कठिन है। लाला मदनमोहन के पूछने पर लाला ब्रजकिशोर स्वाभाविक और बनावटी सज्जनता का भेद समझा रहे हैं

हा सज्जनता के दो भेद हैं एक स्वाभाविक होती है जिसका वर्णन मै अब तक करता चला आया हूँ . दूसरी ऊपर से दिखाने की होती है जो बहुधा बड़े आदमियों मे और उन्के पास रहनेवालों मे पाई जाती है . बड़े आदमियों के लिए वह सज्जनता सुदर वस्त्रों के समान समझनी चाहिए जिस्को वह बाहर जाती बार पहन जाते हैं और घर में आते ही उतार देते हैं . स्वाभाविक सज्जनता स्वच्छ वर्ण के अनुसार है जिस्को चाहे जैसे तपाओ, गलाओ परतु उस्मैं कुछ अतर नहीं आता ऊपर से दिखानेंवालों की सज्जनता गिल्टी के समान है जो रगड लगते ही उतर जाती है ऊपर के दिखानेंवाले लोग अपना निज स्वभाव छिपाकर सज्जन बन्नें के लिये सच्चे सज्जनों के स्वभाव की नकल करते हैं परतु परीक्षा के समय उनकी कलई तत्काल खुल जाती है ; उन्के मन मै विकास के सकुचित भाव, सादगी के लिए बनावट, धर्म प्रवृत्ति के बदले स्वार्थ-

परता और धैर्य के बदले घबराहट इत्यादि प्रगट दिखनें लगते हैं, उन्का सब सद्भाव अपनें किसी गूढ प्रयजन के लिये हुआ करता है परतु उन्के मन को सच्चा सुख इससै सर्वथा नहीं मिल सक्ता . [पृ० २२४—२२५]

आज की उपन्यास-कला की दृष्टि से 'परीक्षागुरु' के लम्बे-लम्बे व्याख्यान सौर उपदेशात्मक वार्तालाप बहुत कुछ असगत से जान पडते हैं क्योंकि इनके कारण कथा की प्रगति रुक जाती है और कथा के प्रति पाठको का कुतूहल कुठित हो जाता है, परंतु लाला श्रीनिवास दास की दृष्टि मे नाटक और उपन्यास यदि लोकोपकारी नही हुए तो उनकी कोई सार्थकता नही । इसी लोकोपकार को दृष्टि में रखकर ही लाला मदनमोहन ने लाला ब्रजकिशोर से निवेदन किया था कि .

मैं चाहता हूँ कि सब लोगों के ही निमित्त इन दिनों का सब वृत्तात छपवा कर प्रसिद्ध कर दिया जाय .

और जब लाला ब्रजकिशोर ने आपत्ति की कि :

इस्की क्या ज़रूरत है ? ससार मैं सीखनेंवालों के लिए बहुत से सतशास्त्र भरे पड़े हैं .

तब लाला मदनमोहन ने बडे उमंग से कहा :

नहीं सच्ची बातों मे लजाने का क्या काम है ? मेरी भूल प्रगट हो तो मै मन सै चाहता हूँ कि मेरा परिणाम देखकर और लोगों की आँखें खुलें . इस अवसर पर जिन जिन लोगों सै मेरी जो, जो बातचीत हुई है वह भी मै उसमै लिखनें के लिए बता दूँगा .

अस्तु, 'परीक्षागुरु' की कथा को लेखक एक सच्ची घटना का रूप देता है । लेखक ने इस कौशल से कथा को उपस्थित किया है कि उसके सच होने मे संदेह नही रहता और अंत मे लाला मदनमोहन की उपर्युक्त बात से रहा सहा संदेह भी दूर हो जाता है ।

'परीक्षागुरु' के लाला ब्रजकिशोर एक अमर चरित्र है । ऐसा सज्जन, सतर्क, सावधान, बुद्धिमान, नीतिज्ञ, कृतज्ञ और सबसे बढकर प्रामाणिक

चरित्र हिन्दी साहित्य में दूसरा ढूँढ़ने पर भी नही मिलेगा । हिन्दी उपन्यासो के अमर चरित्र—सूरदास, होरी, शेखर, सुमन, भूतनाथ आदि के साथ लाला ब्रजकिशोर भी एक ऐसे चरित्र हैं जिन्हे आसानी से भुलाया नही जा सकता । सूरदास, होरी और सुमन आदि चरित्रो का निर्माण जैसे प्रेमचद की लेखनी से ही सम्भव हुआ है, भूतनाथ की कल्पना जैसे केवल देवकीनदन खत्री ही कर सके है, उसी प्रकार लाला ब्रजकिशोर की सृष्टि लाला श्रीनिवास दास ही कर सके है ।

'परीक्षागुरु' मे कथा कहने की शैली तटस्थ भाव की ऐतिहासिक शैली नही है जैसा प्रेमचद आदि परवर्त्ती उपन्यासकारो में मिलती है, वरन् इसमें ऐसा जान पडता है कि किसी सच्ची घटना का लेखक अपने पाठको से बाते कर रहा है । नाटको के सूत्रधार की भाँति लेखक भी बीच बीच में जैसे प्रकट हो जाता है और अपना तटस्थ भाव छोड कर पाठको से प्रत्यक्ष बाते करने लगता है । अस्तु, तेईसवे प्रकरण मे लेखक अचानक प्रकट हो पाठको से प्रश्न कर बैठता है :

ब्रजकिशोर कौन हैं ? मदनमोहन की क्यों इतनी सहानुभूति करते हैं ? और विस्मित पाठको की जिज्ञासा दूर करने के लिए जैसे स्वय कह उठता है.

अच्छा ! अब थोडी देर और कुछ काम नहीं है जितनें थोडा सा हाल इन्का सुनिये

इसी प्रकार चौबीसवे प्रकरण के अंत में लेखक पाठको की कुतूहल वृत्ति जगाने के लिए ही मानो कह उठता है :

अब आज हरकिशोर और ब्रजकिशोर दोनों इजत खोकर मदनमोहन के पास से दूर हुए हैं इन्मैं से आगै चलकर देखैं कौन कैसा बरताव करता है ?

इसी प्रकार नवे प्रकरण में जब लेखक लाला मदनमोहन के कुछ सभासदो का रेखाचित्र उपस्थित करता है, परतु लाला ब्रजकिशोर और हरकिशोर का रेखाचित्र उपस्थित नही करता तब पाठको के हृदय की सहज जिज्ञासा समझ कर वह अपना खेद प्रकट करता है :

खेद है कि लाला ब्रजकिशोर और हरकिशोर आदि के वृत्तात लिखनें का अवकाश इस्समय नहीं रहा . अच्छा फिर किसी समय विदित किया जायगा पाठकगण धैर्य रक्खें . (पृ० २१४)

इस प्रकार लेखक कभी कभी कथा को आगे बढ़ाने, बीच बीच में आई हुई गुत्थियो को सुलझाने और अस्पष्ट बातो को स्पष्ट करने के लिए जैसे अपना तटस्थ भाव छोड़ प्रकट हो जाता है। एक स्थान पर तो वह चुन्नीलाल की धूर्तता को धिक्कारने के लिए भी प्रकट हो गया है। छब्बीसवे प्रकरण के अत मे जब निहालचद मोदी अन्य लेनदारो के साथ लाला मदनमोहन से तकाजे के लिए आ पहुचता है और सभी लेनदार अपनी अपनी बात करते है उस समय जब मुशी चुन्नीलाल लाला ब्रजकिशोर को निर्दोष समझते हुए भी उसे अपराधी ठहराने का प्रयत्न करता है तब लेखक जैसे इस धृष्टता को सहन नही कर पाता और प्रकट होकर कह उठता है .

अफसोस ! जो दुराचारी अपने किसी तरह के स्वार्थ से निर्दोष और धर्मात्मा मनुष्यों पर झूठा दोष लगाते हैं अथवा अपना क़सूर उन्पर बरसाते हैं उन्के बराबर पापी ससार मै कौन होगा ? [पृ० ३२२]

लाला श्रीनिवास दास जैसे नीतिज्ञ लेखक से ऐसी ही आशा थी। इसी प्रकार चौदहवे प्रकरण में लाला मदममोहन के पास जब एक अखबार के एडीटर का पत्र अपनी विपत्ति कथा और सहायता की प्रार्थना लेकर आता है तब लेखक भारत मे पत्र-पत्रिकाओं की इस दुर्दशा से व्यथित हो अपने को सम्हाल नही पाता और एकदम प्रकट हो एक भाषण-सा दे डालता है :

एक अखबार के एडीटर की इस लिखावट से क्या क्या बातें मालूम होती हैं ? प्रथम तो यह कि हिंदुस्थान मै विद्या का सर्वसाधारण की अनुमति जान्नें का देशातर के वृत्तात जान्नें का और देशोन्नति के लिये देश हितकारी बातों पर चर्चा करनें का व्यसन अभी बहुत कम है,

बलायत की बस्ती हिंदुस्थान की बस्ती सै बहुत ही थोड़ी है तथापि वहाँ अखबारों की डेढ़ दो लाख कापियाँ निकलती हैं, वहाँ के स्त्री, पुरुष, बूढ़े, बालक गरीब, अमीर सब अपने देश का बृत्तात जान्ते हैं और उस्पर वादा विवाद करते हैं, किसी अखबार मै कोई बात नई छपती है तो तत्काल उस्की चर्चा सब देश मै फैल जाती है और देशातर को तार दोड जाते हैं, परंतु हिंदुस्थान में ये बात कहाँ ? यहाँ बहुत सी अखबारों की पूरी दो दो सौ कापियाँ भी नहीं निकलतीं, और जो निकलती हैं उन्मैं भी जान्ने के लायक बातें बहुत ही कम रहती हैं क्योंकि बहुत से एडीटर तो अपना कठिन काम सपादन करनें की योग्यता नहीं रखते और बलायत की तरह उन्को और विद्वानों को सहायता नहीं मिल्ती; बहुत से जान बूझ कर अपना काम चलानें के लिए अजान बन जाते हैं, इसलिये उचित रीति सै अपना कर्तव्य संपादन करनें वाले अखबारों की सख्या बहुत थोडी हैं पर जो है उस्को भी उत्तेजन देनें वाला और मन लगाकर पढनें वाला कोई नहीं मिल्ता (पृ० २४२)

अस्तु, 'परीक्षागुरु' मे लेखक का व्यक्तित्व भी पूर्ण रूप से व्यक्त हुआ है। सच तो यह है कि पूरी पुस्तक में लेखक का ही व्यक्तित्व—उसके व्यापक अध्ययन के फल-स्वरूप विविध विषयों का ज्ञान, उसकी मनुष्यो को पहचानने की सूक्ष्म दृष्टि, उसकी नीतिज्ञता और कार्यकुशलता आदि—पूर्ण रूप से उभड़ आया है।

इस उपन्यास का नाम 'परीक्षागुरु' रक्खा गया है जिसका अर्थ है परीक्षा ही गुरु है। लाला ब्रजकिशोर मन में विचार करते है कि :

जो बात सौ बार समझाने सै समझ में नहीं आती वह एक बार की परीक्षा सै भली भाँति मन मैं बैठ जाती है और इसी वास्तै लोग 'परीक्षा' को 'गुरु' मान्ते हैं. (पृ० ३६१ ऊपर)

इसी परीक्षा रूपी गुरु के द्वारा ही मदनमोहन का सुधार हुआ और

उसे घर बैठे ही सारे सुख प्राप्त हो गए। जैसा कि लेखक ने पुस्तक के अंत में लिखा है :

जो सच्चा सुख, सुख मिलने की मृगतृष्णा से मदनमोहन को अब तक स्वप्न मे भी नहीं मिला था वही सच्चा सुख इस्समय ब्रजकिशोर की बुद्धिमानी से परीक्षागुरु के कारण प्रामाणिक भाव से रहने में मदनमोहन को घर बैठे मिल गया.

इसी कारण इस पुस्तक का नाम भी परीक्षागुरु रक्खा गया।

लालाजी की भाषा

लाला श्रीनिवास दास की भाषा जैसा कि उन्होंने 'रणधीर और प्रेममोहिनी' की भूमिका में लिखा है 'हिन्दी' है जिसे 'दिल्ली से बनारस के परे तक करोड़ों आदमी बोलने वाले हैं' परंतु यह खड़ी बोली हिन्दी आज की हिन्दी से बहुत कुछ भिन्न है। इसके मूलत कई कारण है। भारतेन्दु युग मे जो बोलचाल की भाषा थी वही लिखित रूप मे भी प्रयुक्त होती थी। इसका एक प्रमुख कारण हिन्दी का वह दावा था कि इसमें जो लिखा जाता है वही पढ़ा जाता है और जैसा उच्चरित होता है ठीक वैसा ही लिखा जाता है। इस सिद्धान्त के अनुसार बोलचाल की भाषा मे जिस शब्द का जैसा उच्चारण होता था लिखने में भी वही रूप रखा जाता था। अस्तु, 'कौन सा' का उच्चारण बोलचाल में 'कौन् सा' होता था और भारतेन्दु युग मे इसी रूप में 'कौन्सा' लिखा भी जाता था। इसीलिए भारतेन्दु युग के लेखक प्राय· उस्का, इन्का, इस्समय, कौन्सा, इस्पर, ठैरना (ठहरना), मनोर्थ (मनोरथ), झर्ना (झरना), इन्कार, सुन्ना (सुनना), जान्ना (जानना), साम्नें (सामने), पहचान्ता (पहचानता), सक्ता (सकता) आदि लिखते थे। बीसवी शताब्दी के प्रारम्भ में महाबीरप्रसाद द्विवेदी ने जब व्याकरण-सम्मत भाषा लिखने की प्रथा चलाई तब इनका, उनका, इस समय, इस पर, जानना, सामना आदि लिखा जाने लगा। भारतेन्दु युग की

दूसरी विशेषता, तद्भव और प्रांतज अथवा स्थानीय शब्दो का व्यापक प्रयोग था। दूषण देना के लिए 'दूसना' शब्द का प्रयोग 'हरिश्चंद्र चन्द्रिका' कार्तिक शुक्ल स० १९३७ के एक निबध के शीर्षक में इस प्रकार मिलता है 'दूसरे को दूसना दूर नही।' 'साँजी' शब्द का प्रयोग विनायक शास्त्री 'बेताल' ने अपने एक लेख ('हरिश्चंद्र चद्रिका' ज्येष्ठ स० १९३८) के शीर्षक मे इस प्रकार किया है 'लिखना तो साँजी और कहना तो हाँजी'। भारतेन्दु की एक कविता का शीर्षक है 'मुँह दिखावनी'। इसी प्रकार 'प्रेमघन' की एक कविता है ·

अँगरेजन के हित चित चाय। ब्रह्मा में बाजे अरराय॥
करें हाकिमी गोरा जाय। खर्चा भारत सीस बिसाय॥

इसमें अरराय, बिसाय शब्द प्रांतज है। भारतेन्दु युग की हिन्दी का एक नमूना 'भारतमित्र' के प्रथम अक मे उपक्रम में देखिए .

बड़े आश्चर्य की बात यह है कि आज तक ऐसा कोई समाचार पत्र नहीं प्रचारित हुआ जिससे हियाँ के हिंदुस्तानी लोग भी पृथ्वी के दूसरे लोगों की तरह अपने अक्षर और अपनी बोली में पृथ्वी की समस्त घटना को जान सकें . क्या यह बडी पछतावे की बात नहीं है जब कि इस १९ वीं सद्दी में बगाली तथा अन्यान्य जाति के आदमी अपनी अपनी बोली में केवल एक समाचार पत्र की उन्नति से विद्या में, ज्ञान में, दिन दिन उन्नत हुए जाते हैं और हमारे हिंदुस्तानी भाइ केवल अज्ञान खटिया पर पैर फैलाए हुए पड़े हैं .

अथवा अम्बिकादत्त व्यास के 'आश्चर्य वृत्तांत' से देखिए :

मैं चकाचहा का लगढग एक मिनट तक यों ही पत्थर की मूर्ति की भाँति ठठका रहा—फिर देखा कि वह एक ओर चला औ मुझे अपने साथ ले चलने की सूचना की . (पृ० ६)

इसमें हियाँ, खटिया, चकचिहा, लगढग (लगभग) ठठका आदि शब्द तद्भव और प्रांतज हैं। इसी प्रकार बालकृष्ण भट्ट ने महाचट, खुचुर, डाँक जाना, आदि शब्दो का व्यवहार किया है। महावीर प्रसाद

द्विवेदी ने आगे चल कर इन तद्भव और प्रांतज शब्दों के स्थान पर तत्सम और व्यापक क्षेत्र में समझे जाने वाले शब्दो के व्यवहार पर बल दिया। अस्तु, द्विवेदी युग की भाषा भारतेन्दु युग की प्रतिमित भाषा से कहीं अधिक व्याकरणसम्मत, सस्कृत-परिष्कृत और गम्भीर साहित्यिक भाषा बन गई।

भारतेन्दु युग की उस तद्भव तथा प्रातज शब्द-प्रधान, स्थान स्थान के उच्चारण के आधार पर लिखित अव्यवस्थित भाषा में भी लाला श्रीनिवास दास की भाषा अपनी अलग विशेषता रखती है। एक तो उनके प्रयुक्त शब्दो में कहीं कहीं निष्प्राणीकरण की प्रवृत्ति विशेष देख पडती ह, अर्थात् उन्होंने अनेक महाप्राण ध्वनियों को अल्प प्राण बना दिया ह। उदाहरण के लिए इनकी रचना में हाथ के स्थान पर हात, झूठा के स्थान पर झूटा (पृ० २१५) हठ के स्थान पर हट (पृ० ३२२), पिघलना के स्थान पर पिगलना, ढूँढ़ना के स्थान पर ढूँड़ना (पृ० १६०), ढिठाई के स्थान पर ढिटाई (पृ० २३२), चिढ़ के स्थान पर चिढ़, बग्घीके स्थान पर बग्गी प्रायः सभी जगह मिलता ह। इतना ही नही कहीं कहीं पर 'ह' की ध्वनि का भी लोप हो गया है। अस्तु, उन्होने घबराहट के स्थान पर घबराट (पृ० ३२१) लिखा ह। कहीं कहीं इसके विपरीत अल्पप्राण ध्वनि को महाप्राण भी कर दिया गया ह जैसे उकताना के स्थान पर उखताना (पृ० १९०) परतु यह केवल अपवाद-स्वरूप है। यह निष्प्राणीकरण सम्भवत. पैशाची के प्रभाव के कारण हुआ है। भारतेन्दु युग के अन्य लेखको में निष्प्राणीकरण की यह प्रवृत्ति या तो मिलती ही नही या मिलती है तो बहुत ही कम।

फिर इनके शब्दो के कुछ प्रयोग भी विचित्र से हैं। उदाहरण के लिए देखिए :

इसकी पेचीली कहन से दर्पन की परछाई के समान अर्थ समझ में आता है, पर यह पकड में नहीं आती. (पृ० ८)

ये बातें मेरी राह में अच्छी हैं (पृ० १४)

अच्छा ! फिर आप खुलकर क्यों नहीं कहते आपके निकट लाला साहब को बहकानें वाला कौन कौन है . (पृ० १८६)

जो लोग असली बात निश्चय किए बिना केवल अफवा के भरोसे किसी के लिए मत बाँध लेते है वह उसके हक मै बडी बेइसाफी करते हैं . (पृ० ३२६)

ऐसे जीतब पर धिक्कार है . (पृ० ८४)

वह समझ्वार होकर मेरी अन्समझ क्यौं बन्ती हैं . (पृ० ३६५)

उपर्युक्त उदाहरणो में कहन (उक्ति) मेरी राह (मेरी राय), आपके निकट (आपकी समझ मे), मत बाध लेना (मत स्थिर कर लेना), हक मै, जीतब (जीवित रहने) समझवार आदि प्रयोग कुछ विचित्र हैं। फिर 'दोड' गए (दौड़ गए) 'नो' बजे (नौ बजे) नोकर (नौकर) मै (मे) सै (से) बलायत, महनत, महरबानी, रुपे (रुपए), खातर (खातिर) मोज (मौज) आदि प्रयोग भी आज की भाषा की दृष्टि से विचित्र जान पड़ेगे । कुछ अशुद्ध प्रयोग भी बीच बीच मे मिलते हैं जैसे अधीन के लिए आधीन, नीरोग के लिए नैरोग्य (पृ० १६६ नीचे), वाद विवाद के लिए वादा विवाद (पृ० २४२ मध्य) लावण्य के लिए लावण्यता, अज्ञान के लिए अज्ञानता, (पृ० २९४) आदि, परतु यह अशुद्धि केवल लाला श्रीनिवास दास ही की रचना मे मिलती हो ऐसी बात नही है उस युग के प्रायः सभी लेखक इस प्रकार की अशुद्धियाँ करते थे । लाला जी में ये अशुद्धियाँ अपेक्षाकृत कम है ।

लाला श्रीनिवास दास कई भाषाओं के विद्वान् थे, इसीलिए उनकी भाषा मे गति और शब्द-भडार मे विविधता मिलती है । उसमे तत्सम, तद्भव, देशी और विदेशी सभी प्रकार के शब्द और मुहावरो का प्रयोग हुआ है। केवल एक उदाहरण पर्याप्त होगा :

"इसमें कुछ सदेह नहीं" हरकिशोर हुजत करने लगा . "मै ठेठ से देखता आता हू कि आप मुझको देखकर जलते है, मेरी और मदनमोहन की मित्रता देखकर आपकी छाती पर साँप लोटता है, आपनें हमारा परस्पर बिगाड कराने के लिये कुछ थोड़े उपाय किये ? मदनमोहन के पिता को थोड़ा भडकाया ? जिस दिन मेरे लडके की बरात मै शहर के सब प्रतिष्ठित मनुष्य आए थे उन्को देखकर आपके जी मै कुछ थोडा दुःख हुआ ? शहर के सब प्रतिष्ठित मनुष्यों से मेरा मेल देखकर आप नही कुढ़ते ? आप मेरी तारीफ सुन्कर कभी अपनें मन मै प्रसन्न हुए ? (पृ० २६५–२६६)

लाला श्रीनिवास दास के उपन्यास और नाटको में बीच-बीच मे पद्य भी पर्याप्त मात्रा मे मिलते है। लाला जी कवि नहीं थे, परतु आवश्यकतानुसार प्राचीन सस्कृत के सुभाषितो तथा अंगरेजी की उक्तियो का अनुवाद अवश्य कर सकते थे । बायरन के 'चाइल्ड हेरोल्ड' के कई छदो का अनुवाद, शेक्सपीयर की विविध उक्तियो तथा विलियम कूपर के पद्यो का छदबद्ध अनुवाद 'परीक्षागुरु' मे स्थान स्थान पर मिलते है। प्राचीन छदो को भी उन्होने स्थान स्थान पर आवश्यकतानुसार उद्धृत किया है । राग, घनानद, तुलसीदास वृद, गिरिधर कविराय और अन्य कवियो का उनका अध्ययन उनके उद्धरणो से स्पष्ट है । सस्कृत से विदुर नीति, चाणक्य नीति, नीति और वैराग्य शतक, महाभारत, मनुस्मृति, हितोपदेश आदि के अनेक श्लोको का भावानुवाद ग्रथमे पर्याप्त मात्रामे मिलते है । भर्तृहरि का एक श्लोक है :

अम्भोजिनीवननिवासविलासमेव, हसस्य हति नितरा कुपितो विधाता ।
नत्वस्य दुग्धजलभेदविधौ प्रसिद्धा, वैदग्धकीर्तिमपहर्तुमसौ समर्थः ।

इसका भावानुवाद 'रणधीर और प्रेममोहिनी' मे इस प्रकार है ·

बिधना कोपै हस पर, हरै कमल बन बास ।
पै जल दुग्ध विभेद गुण, किहि बिधि करै बिनास ?

कही कही लेखक ने प्राचीन छदो को भी थोड़ा बहुत रूपांतरित कर

अपने काम का बना लिया है। सूरदास से बाँह छुड़ाकर जब उनके श्यामसुंदर भाग निकले थे तब सूरदास ने कहा था :

बाँह छुडाये जात हौ, निबल जानि कै मोहि।
हिरदै ते जब जाइहौ, मर्द बदौंगो तोहि॥

इसी को रूपांतरित कर प्रेममोहिनी रणधीर से कहती है :

कर छुटकाए जात हौ, मोहि निबल जिय जान।
पै हियरे से जाहु जब, तब जानौं बलवान॥

इसी प्रकार बीरबल के मरने का समाचार सुनकर, कहा जाता है कि सम्राट् अकबर ने अत्यत दुखी हो यह सोरठा पढ़ा था :

दीन देखि सब दीन, एक न दीन्हीं दुसह दुख।
सो अब हम कहँ दीन, कछुक न राख्यो बीरबर॥

इसी के स्वर मे स्वर मिलाकर पाटनपति ने रणधीर सिह की मृत्यु का समाचार पा रोकर यह सोरठा कहा .

सब काहू सुख दीन, दुख न दियो काहू कबहुँ।
सो मर मोकौं दीन, भजो करी रणधीरसिह॥

इसी प्रकार बहुत से पुराने भाव लेकर लाला श्रीनिवास दास ने उसे पद्य-बद्ध कर दिया है। लाला जी कवि नही थे परतु काव्य-रसिक अवश्य थे। उन्होने हिन्दी साहित्य की समृद्धि करने मे कुछ उठा नही रखा।

× × × × × ×

प्रस्तुत पुस्तक मे लाला श्रीनिवास दास की केवल दो पुस्तके संगृहीत हैं क्योंकि यही दोनों कृतियाँ स्थायी महत्व की हैं। शेष कृतियों का उल्लेख मात्र कर दिया गया है। लाला श्रीनिवास दास की पुस्तके अत्यत उपयोगी और शिक्षाप्रद है। यद्यपि उनकी उपयोगिता आज की दृष्टि से उतनी नही हैं, फिर भी उनका ऐतिहासिक महत्व है।

दुर्गाकुड, बनारस
२५-१२-१९५३

श्रीकृष्ण लाल

रणधीर

और

प्रेममोहिनी

DEDICATION

To

Colonel W.G. Davis C.S.I.
Commissioner and Superintendent,
Delhi Division,

Sir,

You have been Commissioner and Superintendent of the Delhi Division for about two years. During this period, you have done your best to promote good feelings and friendly intercourse not only among the different sections of the Native Community, but also between Europeons and our countrymen. Your efforts in both directions have been attended with the happiest results. If all Europeans out here followed your noble example and mixed familiarly with Natives, the gulf that unfortunately separates the rulers from the ruled in this country would be bridged over. I have much pleasure in dedicating this small volume to you as a token of respect and admiration and as an acknowledgment of the good work done by you.

Delhi
The 1st January, 1878.

Your sincere admirer,
Shri Niwas Dass

निवेदन

जगत मैं सबके बढ़ने का मूल विद्या है। माता की तरह रक्षा करनेवाली, पिता की तरह हित करनेवाली, गुरु की तरह उपदेश देनेवाली, स्त्री की तरह दुख हरनेवाली, मित्र की तरह सहायता करनेवाली, लक्ष्मी की तरह जस फैलानेवाली विद्या है। विद्या को चोर चुरा कर नहीं ले सक्ता, लुटेरा लूटकर नहीं ले सक्ता, हिस्सेदार बाँटकर नहीं ले सक्ता, राजा दबाकर नहीं ले सक्ता, विद्या बिना मनुष्य और पशु एक से हैं।

ईसवी संवत् के चौद्यवे (१४) शतक मैं इटली के बीच 'पीट्रार्क' नामी एक मनुष्य महाकवि हुआ है। ये कवि पहले 'लोरा' नाम स्त्री पर मोहित था परतु पीछे से ससार छोडकर 'स्विटजरलैंड' की जनीवा झील के किनारे 'वाईक्लूज' गाँव मैं रहने लगा। ये जगह झील और हरियाली के कारण बहुत सुहावनी है। 'पीट्रार्क' को रोमन कैथलिक मत के गुरु 'पोप' से महाकविराज की पदवी मिली और यूरुप के अनेक राजों ने इस्को अपना मंत्री बनाने के लिए बुलाया परतु इसने किसी के पास जाना मजूर न किया। एक बार इस्के एक मित्र ने गाँव छोडकर नगर मैं रहने वास्ते इस्को बहुत दबाकर लिखा था जिस्का इस्ने शुद्ध भाव से ये जवाब दिया कि "आप ससार की झूठी बातों को बडी वस्तु समझते हैं' उनका छोडना आपके विचार मै मुनासिब नहीं। यहाँ मेरे पास ऐसे सच्चे मित्र मौजूद हैं जिनका सत्सग मुझको बहुत प्यारा लगता है। ये लोग अनेक युगों मै पैदा हुए और अनेक देशों के रहनेवाले हैं। इनमै से कोई रणभूमि मै, कोई राजकाज मै, कोई प्रजा पालन मै और कोई अपने बुद्धि बल से विद्या की चर्चा फैलाने मैं बडाई पा चुका है। इनके मिलने मैं डोढ़ी पहरा नहीं लगता। ये हर घड़ी मेरे मिलने को तयार

रहते हैं जब चाहता हूँ इन्हें बुला लेता हूँ जब चाहता हूँ बिदा कर देता हूँ। ये मुझको कभी दुःख नहीं देते वरन् मेरे प्रश्नों का जवाब देकर मेरे मन का संतोष कर देते हैं। इनमें से कोई महात्मा मुझको पुराने इतिहास सुनाता है, कोई ईश्वर की माया का भेद बताता है, कोई सुख चैन से समय बिताने का रास्ता दिखाता है, कोई मुझको लोक मे सुयश और परलोक में सुख मिलने का उपाय बताता है, कोई अपने मीठे बचनों की रचना से मेरा मन प्रसन्न कर मेरी चिता मिटाता है, कोई संसार का दुख और पीडा झेलने के लिए मुझको धीर्य बँधाता है, कोई दूसरे का आसरा छोडकर अपने बाँह बल से जीविका करने की रुचि बढाता है, कोई गूढ विद्या और कलाओं का दर्शनालय (१) मेरी आँखों के साम्हने खोल देता है। इनके बचनों पर मुझको पूरा भरोसा है और ये मुझ से इन बड़े उपकारों के बदले कुटी के एक कोने सिवाय कुछ नहीं चाहते, जहाँ ये आनद से रहते हैं।" 'पीट्रार्क' के ये मित्र और कोई नहीं पर केवल पुस्तक ही पुस्तक थे।

(सदादर्श संमिलित क० व० सुधा)

पुस्तकों मे 'पीट्रार्क' के लेखानुसार 'जामे जमशेद' की तरह ससार की सब चीजें दिखाई देती हैं परतु जो लोग पुस्तक पढ़कर उसकी राह से उन चीजों का रूप अपने मन मे नहीं बना सक्ते उनके लिए नाटक की रीति बहुत हितकारी है। 'सर टाम्स ओबरबरी' लिखता है कि 'संसार मे पाठशाला की अपेक्षा (२) भी नाटकशाला ज्यादा जरूरी है क्योंकि पढ़ने की अपेक्षा अनुभव (३) से लोग ज्यादा सीखते हैं।' देखो नाटक में वर्तमान अथवा हजारों वर्ष पहले की चाहे जिस बात को इस समय अपनी आँखों से देख सक्ते हो।

---

(१) नुमायशगाह (२) निसबत (३) तजर्बे ।

"साहित्यदर्पण" में रचना दो तरह की लिखी है—एक श्रव्य (सुने की) दूसरी दृश्य (देखने की)। श्रव्य में सब तरह के काव्य और दृश्य में सब तरह के नाटक आ गए। दृश्य में दश तरह के रूपक और अठारह तरह के उपरूपक होते हैं।

रूपकों के नाम

"नाटकमथप्रकरणं व्यायोगसमवकारडिमाः
ईहामृगांकवीथ्यः प्रहसनमितिरूपकाणिदश।"

अर्थ—(१) नाटक (२) प्रकरण (३) भाण (४) व्यायोग (५) समवकार (६) डिम (७) ईहामृग (८) अंक (९) वीथी (१०) प्रहसन।

उपरूपकों के नाम

"नाटिकात्रोटकंगोष्ठीसट्टकंनाट्यरासकं
प्रस्थानोल्लाप्यकाव्यानिप्रेखणंरासकतथाः
सलापकश्रीगदितशिल्पकचविलासिका
दुर्म्मल्लिकाप्रकरणीहल्लीशोभाणिकेतिच।"

अर्थ—(१) नाटिका (२) त्रोटक (३) गोष्ठी (४) सट्टक (५) नाट्यरासक (६) प्रस्थान (७) उल्लाप्य (८) काव्य (९) प्रेंखण (१०) रासक (११) सलापक (१२) श्रीगदित (१३) शिल्पक (१४) विलासिका (१५) दुर्म्मल्लिका (१६) प्रकरणी (१७) हल्लिशो (१८) भाणिका।

जिस नाटक के अंत में सब बखेडा मिटकर आनद हो जाय उसे अंग्रेजी में कमेडी (Comedy) कहते हैं और जिसके अंत में करुणारस बना रहे वो ट्रेजडी (Tragedy) कहा जाता है। 'रणधीरसिंह और प्रेममोहिनी' का नाटक ट्रेजडी है और अंग्रेजी में 'ओथेलो', 'रोमियो-जुलियट', बगला में 'कृष्णाकुमारी', 'नील-

दर्पण', गुजराती मै 'जमशेद' और 'रुस्तमसोहोराब' वगैरे बहुत भाषाओं मै ट्रेज्डी नाटक मिलते हैं। नाटक का खेल पूरा हुए पीछै ट्रेज्डी का असर बहुत देर तक देखनेवालों के मन मै बना रहता है। नाटक करने वालों को देखनेवालों के मन पर पूरा असर करने के लिए पहले अपने मन पर असर पैदा करना चाहिए, और सभव (१) बातों को साधारण बोल चाल मै भाव सहित कर दिखाने सै देखनेवालों के मन पर पूरा असर होता है। परतु यै काम करने मै ऐसे सहज नहीं जैसे कहने मै जाने जाते हैं।

पहले तो सभव बात का निश्चै होना ही कठिन है। सभव बात क्या? जिसने जिन चीजों को देख कर समझ लिया, देखने वालों की बात पर भरोसा किया, अथवा और किसी तरह मान लिया उसको वे सभव, बाकी असभव मालुम होती हैं और सब लोग सब बातों के जान्ने वाले नहीं हो सक्ते। एक आदमी एक बात को सबसे अच्छी जान्ता है परतु दुसरी मे बच्चे सै भी गया बीता है। फिर सब लोगों के विचार सै क्योंकर कोई बात सभव वा असभव निश्चै हो सकै? हाँ जो चीजें दिखती हों, दिखने और समझ में आने के लायक हों अथवा जिनको उस विषय के जान्ने वाले अच्छे अच्छे आदमी मान्ते हों वे सभव बाकी असभव ठैर सक्ती हैं और इसी बात को मुख्य मानकर अब हम सभव, असभव बातों की चर्चा छेड़ते हैं। दो ढाई हज़ार वर्ष पहले सै देव और परियों के दिखाई देने, नाचने, मोहित होकर आदमियों को उडा लै जाने, अथवा जादूगरों के जादू सै देव हाजिर होने, मकान वगैरै के उडने की बात सब लोग झूठी जान्ते हैं परतु नाटक के सुधरे हुए खेल मै सै अब तक ये बातें दूर नहीं हुई। नाटक करने वाले इन बातों को अपना हुनर दिखाने के लिए, नाटक को सुहावना बनाने के लिए चाहे अलिफलैला (Arabian

---

(१) मुश्किल।

nights) वगैरे के किस्सों से सहायता लेने के लिए करते हों परतु इन बातों से देखने वालों के मन मे अच्छा असर नहीं होता। इनके बदले ये लोग स्वाभाविक (१) बातों (Naturalism) के दिखाने मे मेहनत करें तो सबके लिए अच्छा हो। 'रणधीरसिह और प्रेममोहिनी' के नाटक मे स्वयवर का मूल मात्र गुजराती 'राजवाडानीकथा' पर से लिया गया है परतु देव परियों के असभव रोग से ये बिलकुल बचा हुआ है। हाँ इसमें मेज़, कुरसी, लप, घडी, इक्का आदि इस समय के पदार्थों का विषय आ गया है परतु ये सब चीजे असभव पदार्थों की गिन्ती मे नहीं हैं।

अब साधारण बोलचाल का वार आया। इसका फैलाव भी ऐसा ही लबा चौडा है। हिदुस्थान मे हिदी, उर्दू, ब्रजभाषा, मारवाडी, मरहटी, गुजराती, बगाली, पजाबी, पूरबी, तैलगी, तामली, उडिया, मैथिली आदि अनेक भाषा बोली जाती है और उनमे भी एक, एक भाषा के अनेक, अनेक भेद हो गए हैं। इनमे की बहुत भाषा सस्कृत बिगड कर बनी हैं परतु अब इनमे ऐसा अतर पड गया कि एक देश के रहने वाले दूसरे देश की भाषा नहीं समझते, फिर नाटक किस भाषा मे लिखा जाय, सब भाषा मिलाकर तो लिखने से रहे। दिल्ली से बनारस के परे तक किरोडों आदमी हिदी बोलने वाले हैं और गुजरात, बगाल, पजाब वगैरे और देशों के लोग भी इस भाषा से अपना काम निकाल लेते है इसलिए 'रणधीरसिह और प्रेममोहिनी' के नाटक की निज भाषा हिदी रक्खी गई। इस देश मे हिदी के सिवाय कहीं उर्दू, कहीं ब्रजभाषा और कहीं मारवाडी बोली जाती है, इस कारण इस नाटक मे सुखबासी लाल (कारदे) की भाषा उर्दू, निरंजन चौबे की बोली ब्रजभाषा और नाथूराम (सेठ) के बचन मारवाडी बोली मे लिखे गए हैं, परतु इन इकट्ठी चार भाषाओं के समझने वाले भी इस देश मे बहुत कम दिखाई देते है। उर्दू बोलने-

(१) कुदरती।

वाले ब्रजभाषा और मारवाडी सुनकर, ब्रजभाषा बोलनेवाले मारवाडी और उर्दू सुनकर, मारवाडी बोलनेवाले उर्दू और ब्रजभाषा सुनकर मुँह देखते रह जाते हैं। इस कारण उर्दू, ब्रजभाषा और मारवाडी के कठिन वचनों का हिंदी भाषा मै तर्जुमा करके हर पन्ने के नीचे लिख दिया गया। अब नाटक करने वालों को अखतियार है कि सब नाटक हिंदी भाषा मै करें चाहे हिंदी, उर्दू, मारवाडी और ब्रजभाषा मै करें। यद्यपि हिंदी भाषा दिल्ली सै बनारस तक किरोडों आदमियों मै बोली जाती है परंतु ये भाषा ऐसी अधूरी है कि सस्कृत वा फारसी की सहायता लिए बिना इसका काम नहीं चलता। इस भाषा के लिखने वालों मै कितने ही सस्कृत और कितने ही फारसी की सहायता लेकर काम चलाते हैं परंतु 'रणधीर और प्रेममोहिनी' के नाटक में दोनों की तरफदारी छोडकर साधारण बोल चाल पर बरताव किया गया। हाँ, कहीं बहुत जरूरत पडी तो दूसरी भाषा का सहज सै सहज बचन लेकर काम चला लिया और उसमै जिस शब्द के समझने का धोका रहा उसका अर्थ उस सफे के नीचै वा उस शब्द के आगै ऐसे (　) गोलाकार (Parenthesis) मै लिख दिया, परतु फिर भी हिंदी भाषा के संकोच सै बहुत सै भाव सोच समझ कर छोडने पड़े। इस नाटक मै कहीं, कहीं कविता की लटक और अन्योक्ति (दूसरे पर धर कर बात जताने की) लपेट आ गई है पर उसको एक नज़र देखकर कोई सज्जन साधारण बोलचाल की रीति सै बाहर न बतावें। जिन लोगों के रूप सै ये बचन कहे जाते हैं (सब नाटक को आदि सै अंत तक पढ कर) उनके स्वरूप का विचार किया जायगा तो कदाचित ये कविता और अन्योक्ति उनकी साधारण बोलचाल सै बढ़कर न जचेगी।

भाव दिखाना नाटक करनेवालों के आधीन है, और सकोच विस्तार के कारण सै इसी को हाव, हेलादि भी कहते हैं। ये सगीत का एक अग है। सयोग, वियोग, हानि, लाभ वा सुख, दुःख को स्वाभाविक

रीति सै जता देने का नाम भाव है। हँसना, रोना, चकित होना, क्रोधित होना, उदास होना, व्याकुल होना, मतवाले होना, अचेत होना, बुलाना, भेजना, टैराना, याद करना, प्रणाम करना, धमकाना इत्यादि बचन के अनुसार कर दिखाने को भाव बतानेवालों का काम कहते हैं। स्वर, नेत्र, मुख के आकार और शरीर मै भाव बताया जाता है। स्वर से सुख दुःख आदि का जताना स्वर भाव है। नेत्रों सै सुख दुःख आदि जताना, बाकी शरीर को जैसे का तैसा रखना, नेत्र भाव है। मुख के आकार सै सुख दुःख आदिका जताना, बाकी भौ, नेत्र वगैरे को जैसे का तैसा रखना मुख के आकार का भाव है, और हात, पाव, कमर, छाती आदि सै जो भाव बताए जायँ उनको शरीर का भाव कहते हैं। शरीर का भाव पहले तीन भावों सै सहज है परतु भाव बतानेवाला जितना चतुर और अनुभवी(१) होगा उतना ही जैसे का तैसा रूप दरसा कर देखनेवालों के मन पर ज्यादा असर कर सकेगा। (रास्तगुफ्तार मुबई के एक प्रसिद्ध वर्तमान पत्र देखने सै मालुम होता है कि) थोड़े दिन पहले 'केमिंगटन पार्क' (लदन के एक विभाग) की नाट्यशाला मै गूगे बहरे का एक नया नाटक हुआ। ये नाटक एक गूगे बहरे का बनाया हुआ था और इस्के करनेवाले भी गूगे बहरे थे। इसै देखने के लिए बहुत सै गूगे बहरे इकट्ठे हुए थे। ये नाटक ऐसी अच्छी तरह किया गया कि देखनेवाले नाटककारोंके हात की अगुलिये, गर्दन को मरोड और शरीर की हलचल सै उनका भाव तुरत समझ गए !!!

जैसे हिंदुस्थान आश्चर्य की बातों का भडार है। इसमै एक तरफ को बर्फ के हिमालय पर्वत, तो दूसरी तरफ गर्म देश की फलदायक भूमि अपने हरे हरे वृक्षों से मन को हरा करने के लिए मौजूद है, एक तरफ को सैकडों कोस मै रेत के टोले, जल का सकोच, तो दूसरी तरफ को

(१) आजमूदःकार।

हजारों कोस मै कदम, कदम पर जल की सरसाई और खेती बाडी का धदा दिखाई देता है। एक तरफ को टूटी फूटी झोंपडी, फूस के छप्पर तो दूसरी तरफ को आगरे का ताजगज, मथुरा वृ दावन के मदिर, देवगढ (वा दौलताबाद) का किला, इलरू (वा इलेरा) के मकान मन हरनें को तयार हैं, एक तरफ को जगली रस्मै दक्षण मथुरा (वा मीनाक्षी) की तोतियार जाति के सब कुनबे का एक स्त्री सै ब्याहना, पलीवार, कल्लि-कोट, तेल्लिचेरी, मैं ब्याही स्त्री को स्वतत्र(१) करके बापके घर छोड देने की रीति है। तो दूसरी तरफ को यहाँ के बुद्धिमान, धर्मात्मा, पराक्रमी, एक पत्नीव्रत वाले पुरुष और पतिव्रता स्त्रियो का जस सारे भूमडल मैं विख्यात है। एक तरफ को यहाँ के लोग निरुद्यमी, कगाल और दुर्बल होते जाते हैं तो दूसरी तरफ को काश्मीर के दुशाले और बनारस के कमख्वाब वगैरे अब तक सब देशों मै प्रसिद्ध है। हिदुस्थान मे सब तरह की हवा, सब तरह के मोसम, सब तरह की बस्ती, सब तरह के आदमी, सब तरह के जानवर और सब तरह की जडी बूटी मौजूद है। बहुत क्या कहैं एक पर्वत के देखने मात्र सै तीनों ऋतु आँख के सामने आ जाती हैं एक पहाड को जड मे सै देखो तो गर्म देश के आम, इमली आदि पेड मौजूद हैं। बोच मे सै देखो तो सर्द देश के बान, बरास, चाल, देवदारू आदि दिखाई देते हैं और ऊपर बर्फ की हद के पास जाकर देखो तो भोजपत्र के सिवाय कुछ भी नहीं दिखाई देता। भावार्थ(२) ये कि जैसे हिदुस्थान आश्चर्य की बातों का भडार है इसी तरह इस हिंदुस्थानी नाटक मै भी अनेक आश्चर्य की बाते, अनेक तरह के सुख दुःख, अनेक तरह के चाल चलन, अनेक तरह के सुभाव और अनेक तरह सै सुभाव बदलने की रीति लिखी गई है, एक बात सै अनेक आदमियों के मन मै अनेक तरह के असर पैदा होने का रूप दरसाया है और अपनें बस पडते सर्व हितकारी (Public

---

(१) खुदमुखत्यार (२) खुलासा।

spirit) भाव सै ससार के चित्र दिखानें का मुख्य बिचार रक्खा है। 'रणधीरसिंह' और 'प्रेममोहिनी' बिना सब नाम कल्पित (१) हैं। इसके किसी लेख को कोई मनुष्य या जाति अपनें ऊपर न समझे, सब जातों मै सब तरह के आदमी होते हैं इस कारण इससै किसी खास मनुष्य या जाति को नीचे दिखाने या दुखी करने का हरगिज़ बिचार नहीं। हाँ अपने दोष (२) को इस नाटक मै दोष रूपो देखकर किसी का जी दुखी होय तो उसे बेन् जान्सन, जगत प्रसिद्ध नाटककार का ये बचन पढना चाहियै—

If any here chance to behold himself
Let him not dare to challenge me of wrong
For, if he shame to have his follies known,
First he should shame to act them.

अर्थ—जो कोई यहाँ (अर्थात् नाटकशाला मै आकर) अपना मुख आप देखे तो मेरे ऊपर बुरे काम करने का दोषारोप (३) न करना क्योंकि जो उस्को अपनें दोष प्रगट होने सै लाज आती हो तो उन दोषों के करने सै प्रथम लजाना चाहियै।

जैसे अब तक कोई पुस्तक और पुस्तकों की थोडी बहुत सहायता लिए बिना नहीं रची गई इसी तरह इस नाटक मै भी तुलसीकृत रामायण, रामकलेवा, भूगोल हस्तामलक, शकुतला नाटक, हरिश्चद्र नाटक, विद्यासुदर नाटक, बिहारी सतसई, स्त्रीबोध, विषवृक्ष, हरिश्चद्र मेगजीन और मनोरजक रत्न वगैरे अनेक पुस्तकों की छद वा आशय सै कहीं कहीं सहायता ली गई है और ग्रथकर्ता उन सबका सच्चे मन सै उपकार मान्ता है।

ये नाटक इस समय प्रसिद्ध, प्रसिद्ध वर्तमान पत्रों के सपादक और अनेक विद्वान, बुद्धिमानों के पास भेजा जाता है परतु इस्के पढने सै उन्का कुछ हित होगा ये बिचार कर नहीं भेजा जाता किंतु दर्पण के

(१) फर्जी (२) ऐब (३) इलजाम रखना।

सामने जाने से सबको अपना रूप दिखाई देता है इसी तरह उनके दिखाने से इस्का गुण दोष दिखाई देगा ये समझकर भेजा जाता है।

कवि दो तरह के होते हैं एक बचन का सिगार करनेवाले, दूसरे भाव मे चोज (१) रखनेवाले। वचनका सिगार करनेवाले अपने लेख को अनुप्रास (२) अलकारादि (३) से हर तरह विचित्र (४) बनाया चाहते हैं उनकी कविता बहुधा सयोग, वियोगादि एक, एक बात पर हुआ करती है और उनमे से कोई पुस्तक रचने का साहस करता है तो उस्की बुद्धि लौकिक चतुर (५) न होने से उस्के भाव बड़े बेढगे हो जाते हैं—जब उन्हें किसी की तारीफ करनी होती है तो राजा को इद्र, हाती को ऐरावत, घोड़े को उच्चैश्रवा, गौ को कामधेनु, स्त्री को अप्सरा, वृक्ष को कल्पवृक्षादि बना देते हैं। जब निदा करनी होती है तो राजा को यमराज, हाती को भैसा, घोड़े को गधा, गौ को बकरी, स्त्री को चुडैल, वृक्ष को बबूल आदि लिख देते हैं परतु इन बातों से पढनेवालों को कुछ फायदा नहीं होता। भाषा मे चोज रखने वाले केवल भाव पर दृष्टि रखते हैं उनकी रचना मे साधारण रीति से रूपक, उपमा, अनुप्रासादि आ जायँ तो भलेई आ जाओ पर वे अपने मन मे ससार की दशा दिखा कर लोगों को अनेक तरह के दुःख सुख का अनुभव कराया चाहते हैं, कोई मन पर असर होने की रीति, कोई मन बदलने का समय, कोई भले बुरे कामों का परिणाम, कोई खोटे खरे आदमियों का चाल चलन वगैरे दिखाता है। इस रचना से देखनेवालों के मन पर थोड़ा बहुत असर होना तो कवि की बुद्धि के आधीन रहा परतु भाव मे चोज रखनेवाले लौकिक चतुर होने के कारण पुस्तक आरभ करने से पहले परिणाम तक का पेच तो जरूर सोच लेते हैं। ये कविता रचनेवाले को कठिन पर पढनेवालों को बडी हितकारी है। इस रीति से भाव मे चोज

---

(१) सारश (२) काफियेबदी (३) शायरी की सनत (४) रगीन (५) मामलेफहम।

रखना नाटक रचने वालों का मुख्य काम है परतु मुझको इस नाटक मे अपने पार लगने की कुछ आस नहीं।

सब तरह के रचना करनेवालों सै प्राय (१) तीन तरह की भूल हुआ करती है—एक लिपि दोष (ककार की जगह खकार और बकार की जगह वकार आदि लिखना। ये मूल ग्र थ कर्त्ता के बदले लेखक सै बहुधा होती है)। दूसरा बचन दोष (पहले बचन को पीछे और पिछले बचन को पहले लिख कर उलट पलट कर देना अथवा एक बचन मै एक शब्द को अनेक बार लाकर बचन का रूप बिगाड देना अथवा साधारण बोलचाल मे कठिन, कठिन शब्द डालकर उसै पेचदार बना देना अथवा स्त्रीलिग की जगह पुल्लिग, एकबचन की जगह बहुबचन, और वर्तमान की जगह गत कालादि लिखकर व्याकरण की रीति सै बचन को अशुद्ध कर देना अथवा छद की रीति से विपरीत छद रचकर छद भग कर डालना।) तीसरा भाव दोष (हरेक बात की उठान का अत तक एक सा न निभना जैसे एक मनुष्य को आदि सै लोभी दिखाते चले आए हैं पर उसके सुभाव बदलने का कुछ कारण दिखाए बिना एक दम उसको उदार बना देना अथवा पहलै सै एक मनुष्य को विचारवान् बनाते चले आए हैं पर उसके सुभाव बदलने का कुछ कारण जताए बिना उसको अविचारी बना देना इत्यादि) पुस्तक रचनेवाले को अपने बस पडते इन सब दोषों सै बचना चाहियै परतु लिपि दोष अथवा बचन दोष की साधारण भूल सै इतना बिगाड नहीं होता जितना भाव दोष सै सहज मे हो जाता है। मुझको अपने अज्ञान सै 'रणधीर और प्रेममोहिनी' के नाटक मे ऐसी अनेक भूल होने का भय है इस कारण मै दीन होकर सब सज्जन पुरुषो सै अपनी भूल क्षमा कराता हूँ और ये निवेदन करता हूँ कि द्वेश वा वैर भाव सै निदा करने वालों के सिवाय जो सज्जन अपक्षपात(२) होकर इस विषय मै अपनी राय प्रगट करैगे मै उनका बड़ा उपकार मानूगा और जो लोग

(१) अकसर। (२) बेरूरिआयत।

प्रीतिभाव सै अपनी लिखी अथवा छपी हुई राय मेरे पास भेज देंगे उन्का मेरे ऊपर और भी ज्यादे उपकार होगा।

अंत मै ईश्वर के अगणित उपकारों को भूल कर केवल इस नाटक के निर्विघ्न पूरे होने का उपकार माना जाय तो बडी कृतघ्नता है इसलिए ईश्वर की अकारण कृपा का अमित उपकार मान कर "वररुचि" के इस बचन पर मै ये निवेदन समाप्त करता हूँ।

इतरकर्मफलानियदृच्छया विलिखितानिसहेचतुरानन
अरसिकेषुकवित्वनिवेदन शिरसि मालिख मालिख मालिख"

दिल्ली १ जून, १८७७ ईस्वी।

ग्रथकर्ता
श्रीनिवास दास

—:※:—

संकेत

इस देश मैं नाटक का प्रचार बहुत कम है और नाटक मैं ऐसे अनेक संकेत आते हैं जो साधारण बाचने को पुस्तकों मैं नहीं होते, इस कारण नाटक करने और पढने वालों की सुगमता (आसानी) के लिए उन संकेतों का कुछ मतलब यहाँ लिखा जाता है :

आदि मै किसी मनुष्य के नाम सै आगे ऐसा—चिन्ह हो तो इस चिन्ह सै अगले बचन को उस मनुष्य का बचन समझना और ये—चिन्ह बीच मैं आ जाय तो यहाँ रुक कर पढना। इसी तरह दो, तीन जगह एक, एक अक्षर के बीच मैं ये—चिन्ह आ जाय तो वहाँ बोलते, बोलते ऐसे रुक जाना जैसे कोई बात कहते, कहते किसी कारण सै अचानक रुक जाता है।

जो बात ( ) गोलाकार के भीतर लिखी गई वो किसी नाटककार की तरफ सै कहने की नहीं है किंतु नाटक करने और पढ़ने वालों को समझाने के लिए ग्रंथकार की तरफ सै है। जहाँ इस रीति सै (मन मै) लिखा हो उसके अगले बचन को नाटककार इस ढब सै कहै कि मानों अपने मन मै कह रहा है जहाँ (मन मै) अथवा (प्रगट) कुछ न लिखा हो उस वचन को भी प्रगट मै कहने का ही समझै। जहाँ इस रीति सै (गया) अथवा (आया) लिखा हो वहाँ उस नाटक पात्र का रंगभूमि से नेपथ्य मैं जाना अथवा नेपथ्य सै रगभूमि मै आना समझै, जहाँ इस तरह सै (नेपथ्य मै शब्द हुआ) लिखा है वहाँ परदे के भीतर की आवाज़ जानो, जहाँ इस रीति सै बैठना, उठना, हँसना, रोना आदि लिखा है वहाँ नाटक पात्र को उसी तरह का भाव दिखाना चाहिये और जहाँ इन-बातों के सिवाय किसी बचन के बीच मै गोलाकार के भीतर और कोई

शब्द आ जाय तो उस्को पहले शब्द का अर्थ समझना जैसे ऊपर "सुगमता" के आगे गोलाकार मै "आसानी" लिखी गई है।

और चिन्हों मै ऐसा, (कोमा) किंचित विश्राम, ऐसा, (सिमीकोलन) अथवा ऐसा : (कोलन) अर्ध विश्राम, ऐसा. (फुलिस्टोप) पूर्ण विश्राम, ऐसा ? (इट्रोगेशन) प्रष्ण की जगह, ऐसा ! (एक्सक्लमेशन) आश्चर्य अथवा सबोधन वगैरे के जो शब्द जोर देकर बोलनें चाहियें उनके आगे और ऐसे " "(इनवरटेड कोमा) दूसरी पुस्तक के लिखे हुए, अथवा दूसरे के कहे हुए बचन पर उसको अलग दिखाने के लिए लगाए जाते हैं।

रगभूमि, नाटक अथवा तमाशे होने की जगह, जवनिका, रगभूमि मैं स्थान का रूप दिखाने वाला परदा और नेपथ्य जवनिका सै पीछै रूप बन्नै वगैरे की जगह को कहते हैं।

प्यारे, सदादर्श सम्मिलित क० व० सुधा (१) के पढने वाले !

जब मै सदादर्श अपनी जन्मभूमि छोड कर काशी वास करने चला गया अथवा यों कहो कि सदादर्शनै कवि बचन सुधा सै मिल कर काशी को प्रयाग बना दिया तब मै आप लोगो का वियोग मेरे मन को बेचैन करता था, आपसै मिलने को हर घड़ी जी भटकता था पर खाली हात जाना अनुचित मालूम हुआ इस कारण ये "रणधीर और प्रेममोहिनी" का नाटक आपके पास लाया हूँ यदि इस्के देखने सै "सदादर्श सम्मिलित क० व० सुधा" मैं आप की कुछ प्रीति बढेगी तो मै ईश्वर की कृपा सै अपना परिश्रम सफल समझूँगा।

सदादर्श का प्रथम सम्पादक

श्री निवास दास

---

(१) कवि वचन सुधा—भारतेंदु बाबूहरिश्चद्र द्वारा स्थापित पत्रिका।

नाटक पात्रों के नाम ।

पुरुष	स्त्री
रणधीरसिह—नायक	प्रेममोहिनी—नायका
रिपुदमन—रणधीरसिह का मित्र	मालती—प्रेममोहिनी की सखी
सोमदत्त—रणधीरसिह का पडित	चपा—प्रेममोहिनी की सखी
सुखवासी लाल—रणधीरसिह का कारिदा	सरोजिनी—वेश्या ।
नाथूराम—रणधीरसिह का मोदी	
निरजन चौबे—विदूषक	
जीवन—रणधीरसिह का सेवक	
सूरत के महाराज अथवा सूरतपति	
पाटन के महाराज अथवा पाटनपति	

अनेक राजा, सूरत का मत्री, पाटन का मत्री, सूरत का सेनापति, पाटन का सेनापति, सेना, और सेवक इत्यादि ।

नगर सूरत ।

———

रणधीर और प्रेममोहिनी

नाटक

प्रथम अंक

प्रथम गर्भांक

स्थान—सूरत का राजमहल

[चंपा पान लगाकर पानदान में रखती है और मालती प्रेममोहिनी की रत्नजटित प्रतिमा लेकर आती है ।]

चपा—(देखकर) प्यारी ये क्या लाई ? क्या प्रेममोहिनी की प्रतिमा है ? आहा ! ये तो बडी सुदर ! इसका मुख देखो मानों अभी हँस पड़ेगी, देखें, इसको यहाँ लाना । (हाथ में लेकर) सखी ! इसका रचनेवाला ब्रह्मा से क्या कम है । इसकी लाज भरी चितवन, रस भरे होठ और हास्य भरे कपोल, कैसे सुहावने लगते हैं !!!

मालती—बस बहन ! क्षमा करो, तुम्हारी परख मैंने देख ली । तुम इसकी इतनी बडाई करती हो पर मुझको तो प्रेममोहिनी के आगे ये कुछ भी नहीं जँचती । उसको दैव ने अनुपम बनाया है । उसके सुभाव की

लायकी और चतुराई तो अलग रही, उसके मुख की ज्योति पल पल में, चंद्रकला सो बढ़ती है। उसके शरीरकी लावण्यता (१)से, एक एक गहने के, तीन तीन, चार चार रूप दिखायी देते हैं। उसकी शरीर की सुगधि से भौरे मतवाले होकर गूँजते हैं, सो इसमें कहाँ से आवेंगे ?

प्रेममोहिनी—(आकर, दूर से इनको देख मन में) सखी है तो क्या हुआ, दो जनों के बतलावन (२) के बीच जाना मुनासिब नहीं। (कुछ हटकर खडी हुई)

चंपा—भला प्यारी ! तू जीती, मैं हारी, पर ये तो बता, महाराज ने ये प्रतिमा किस लिए बनावायी है ?

मालती—बलिहारी ! अब तक यह नहीं मालूम ! प्रेममोहिनी के स्वयबर में शस्त्र विद्या की परीक्षा के बीच जो वीर रणधीर ठहरेगा उसको उसी समय ये प्रतिमा दी जायगी।

प्रेममोहिनी—(सुनकर मन में) यह तो मेरे स्वयवर की चर्चा कर रही हैं, इन बातों के सुनने में क्या डर है ! हाँ मैं इनके पास जाऊँगी तो ये चुप हो रहेंगी या मेरी मन सुहाती बातें करने लगेंगी, इसलिए छिप कर इनके मन की बातें सुनूँ। (एक किनारे खड़ी हो गई)

चपा—भला, परीक्षा में तो कोई न कोई अवश्य जीतेगा पर राजकुमारी के समान बर मिलना तो बहुत कठिन है।

मालती—सखी ! यह न कहो, परमेश्वर की माया अपरपार है, उसने चद्रमा को तारों से अधिक बनाया, पर सूरज से नहीं।

चपा—सखी ! राजकुमारी से अधिक रूपवान और गुणवान भी कोई होगा ?

मालती—क्यों नहीं। मेरा तेरा जी एक है, इसलिये कहती हूँ तू ने रणधीर कुमार को देखा है ? सखी ! उसको स्मरण करते ही शरीर के

---

(१) 'उसके शरीर के लावण्य से' होना चाहिए था। (२) बातचीत

रोम खड़े हो जाते हैं। उसका सब अग साचे ढाल बना है। मैंने तो ऐसी सजधज का ज्वान सब उमर में कभी नहीं देखा था। जिस समय वह अपने 'पवनवेग' घोड़े को किले के मैदान में फेरकर अपना कर्तब दिखाता है, उस समय, और राजकुमार उसकी फुर्ती देख, चकित हो, चित्र बन जाते हैं। उसके शरीर में चुस्त पोशाक ऐसी जमकर बैठती है कि बहुत से राजकुमार उसकी नकल करते हैं। जिस समय उसके मनोहर मुख की रसभरी मुसकान और झलकते नेत्रों की मदमाती चितवन मेरे ध्यान में आती है, मेरी तो सुध बुध ठिकाने नहीं रहती। मै उसकी अलबेली छबि कहाँ तक वर्णन करूँ, सब नगर उसकी मोहिनी मूरत देख मोहित हो रहा है।

चपा—इसमें सदेह नहीं, सब नगर निवासियों के मन में उसकी प्रेम छाप हो गयी, परतु राजकुल निश्चय हुए बिना तो वह राजकुमारी के लायक नहीं ठहर सकता।

प्रेममोहिनी—(मन में) यह बाते मैंने क्यों सुनी! मनुष्य का मन एक सरोवर के समान है, जैसे सरोवर में तारे, आकाश, चद्रमा, वृक्ष और पर्वतादिक की अनेक परछाँही पडती है, उसी तरह मनुष्य के मन में भी अनेक बातों का ध्यान बना रहता है और जैसे सरोवर में एक ककरी डालने से वह परछाँही बिगड जाती है इसी तरह मनुष्य के मन में भी किसी बात का नया विचार आने से पहले के सब विचारों में हलचल पड़ जाती है। हा! यह सब जानने का दुःख है, जो इस बात की भनक मेरे कान तक न पहुँची होती, तो मुझको इस पचायती से क्या काम था। (आगे बढ़कर प्रकट में) सखी, क्या कर रही हो?

मालती—तुम्हारी चर्चा।

प्रेममोहिनी—ठीक, 'मेरा तेरा जी एक' थोड़े ही है, जो तू मुझसे अपने मन की बात कहेगी।

मालती—(मन में) इसने हमारी बातें सुन ली या यों ही मेरी कहन इसके मुँह से निकल गयी। कुछ भी हो, अब इस ढब सें बात करनी चाहिए, जिसमें पीछे झूठा न होना पड़े। (प्रकट में) राजकुमारी हम तुम्हारे आधीन (१) हैं। तुम्हारे दुःख सुख से हमको दुःख सुख होता है, पर हमको 'एकजी' कहने का अधिकार नहीं, (मुस्कुराकर) हाँ, भगवान करेगा तो थोड़े दिन मे ही यह कहलाने वाला भी मिल जायगा!

प्रेममोहिनी—चल, हँसी में बात न डाल। सच कह तू किसकी "चर्चा" कर रही थी।

मालती—तुम्हारी और तुम्हारी प्रतिमा की।

प्रेममोहिनी—(मन में) प्रतिमा के बहाने से यह उसे जताती है पर सकोच के मारे खुलकर नहीं कहती, अच्छा अब इसे भुलावा देकर पूछना चाहिए। (प्रकट में) क्यों सखी! यहाँ इस समय कितने राजकुमार आए हैं?

मालती—क्या कहूँ? सैकडों (राजकुमार) आ चुके हैं, और अब तक आने के तार (२) में हैं।

प्रेममोहिनी—भला, इनमें कोई मेरे लायक भी है?

मालती—सो मै नहीं कह सकती। शोभा का एक आकार नहीं हो सकता, जो जिसको सुहावना लगता है, वह उसी को रूपवान समझता है।

प्रेममोहिनी—अच्छा, तुझको कौन सुहावना लगता है?

मालती—तुम।

प्रेममोहिनी—और रणधीर?

मालती—सो तो परीक्षा के दिन निश्चय होगा।

प्रेममोहिनी—(मन में) इसकी पेचीली कहन से दर्पन की परछाई के समान अर्थ समझ में आता है, पर यह पकड में नहीं आती।

---

(१) अधीन (२) न्योत।

(प्रकट में) सखी ! चद्रमा छिपाये से नहीं छिपता ? मै तेरे मुख से 'रणधीर' का सब हाल सुन चुकी हूँ ।

मालती—मुझको नहीं मालूम था कि तुम्हारे मन को भी उस चद्रमा ने 'चद्रकाति मणि' बना लिया ।

प्रेममोहिनी—(लजाकर) नहीं सखी, मै मोहित नहीं हुई, जैसे दूज के चंद्रमा को ससार 'पुण्य दर्शन' समझ कर देखता है, वैसे ही रणधीर को एक बार देखने की मेरे मन में इच्छा है । परतु मै सुभाव की परीक्षा किये बिना प्रीति नहीं किया चाहती, क्योंकि गुण को प्रीति के समान रूप की प्रीति मन में नहीं होती, केवल आँखों में रहती है, और रूप घटने अथवा उसके अधिक मिलने पर वो तत्काल घट जाती है ।

मालती—भगवान करें, यह इच्छा यों ही रहे ।

चपा—क्यों सखी क्यों ? तू क्या राजकुमारी की प्रसन्नता से दुःखी होती है ?

मालती—ना, दुःखी नहीं सुखी होती हूँ; पर सच्ची प्रसन्नता से सुखी होती हू । राजकुमारी रणधीर को देख कर मोहित हो जाय और महाराज किसी दूसरे राजकुमार का निश्चय करें तो अच्छा नही । रणधीर निःसदेह रणधीर है और उसकी फुर्ती से उसकी यह विद्या द्रोणाचार्य ने सिखायी हो ऐसा जाना जाता है । परतु जीत किसी के हात नहीं, यह बहुधा (१) नालायकों को मिल जाती है और लायक मुँह ताकते ही रह जाते हैं, इससे कोई बात निश्चय न हो तब तक राजकुमारी की इच्छा यों ही रहे तो अच्छी बात है ।

प्रेममोहिनी—हाँ मालती, सच कहती हो । भली बुरी दरसावे सो हो हितू गिना जाता है । इसने मुझे चेताया तो मुझको रणधीर की धीरता से क्या ? मै तो पराधीन हूँ ।

---

(१) अकसर ।

चपा—राजकुमारी ! पूजन का समय हो गया, चलो इसमें देर न होनी चाहिए। देवताओं की कृपा से तुम्हारी सब इच्छाएँ पूरी होंगी।

मालती—(घटे की टकोर सुनकर) देखो घटा भी गवाही देता है।

प्रेममोहिनी—(मन में) ऐसा ही हो। मै पिता की आज्ञा को उच्च मानती हू। पर मेरा मन भूल से एक बार रणधीर की तरफ जा चुका, इस कारण अब मुझको औरों से प्रीति करते लज्जा आती है।

(सब जाती हैं)

इति प्रथम गर्भांक।

———

द्वितीय गर्भांक।

स्थान, पर्वत की कंदरा

(रिपुदमन वीर वेश से आया।)

रिपुदमन—(मन में) इस सुहावने पर्वत में पक्षियों के कोलाहल से कान पडी आवाज़ भी नही सुनायी देती, और वृक्षों की हरियाली के बीच निर्मल झरनों का जल सूर्य की किरणों से मिलकर नई शोभा दिखाता है, चारों तरफ पशु-पक्षी आनद से किलोल कर रहे हैं, पर अब तक कोई सिह शिकार के लिए मेरे सन्मुख नहीं आया, (आगे सिह को सोते देख, पैर से पूँछ दबाकर) उठ गीदड, बैरी के आये पीछे निशक होकर क्या सोता है !

(सिंह क्रोध से उठकर रिपुदमन की तरफ झपटा, रिपुदमन ने फुर्ती से तलवार निकाल उस पर वार किया पर दो वार खाली गया और वह अपने जोर से आप धरती पर गिर पड़ा।)

रिपुदमन—(मन में शोक से) मुझे अपने मरने का कुछ भय नहीं, जिसने जन्म लिया है वह एक दिन अवश्य मरेगा, पर मनुष्य देह पाकर जो काम करना चाहिए सो मुझसे नहीं बन पड़ा, यह पछतावा मैं अपने सग ले जाता हू। अच्छा, अब तो केवल ईश्वर के स्मरण करने का समय है।

(सिंह ने पजा उठाया पर अचानक रणधीर ने एक कोने से निकल कर सिंह के पेट में ऐसी कटार मारी जिससे वह बेसुध होकर गिर पड़ा।)

रणधीर—(मन में) भगवान् की कृपा से इस वीर के प्राण बचे सो अच्छा हुआ। पर अब यह मुझको यहाँ देखकर वृथा लजावेगा।

(जाने लगा)

रिपुदमन—(आश्चर्य से मन में) मैंने कैसी अचरज की बात देखी। क्या अब तक मेरा मन ठिकाने था, इस वीर ने किस कारण अपने प्राण झोंक कर मेरी रक्षा की? और रक्षा भी की तो मुझसे बिना मिले क्यों चला? इस कलिकाल में किसी से कोई अच्छा काम बन जाता है, तो वह जन्म भर अपनी बड़ाई मारता है। फिर जो मनुष्य इतना बड़ा काम करके कुछ न जतावे, उसको साधारण आदमी कैसे समझूँ! मेरे मन में इस वीर से प्रीति करने की बड़ी चाहना है, पर ऐसे सज्जन खुशामद की बातों से कभी प्रसन्न नहीं होते। इस कारण पहले इनसे छेड़छाड़ की बातें करूँ, (प्रकट में रणधीर से) आपके काम से आप क्षत्री जाने जाते हो, पर आपने मेरे निशाने पर शस्त्र चलाया सो अच्छा नहीं किया।

रणधीर—(फिरकर मुसकुराते हुए) मेरा ध्यान इस बात पर न था।

रिपुदमन—तो इसके बदले में आप को अपना निशाना बनाऊँ ?

रणधीर—निःसदेह ।

रिपुदमन—अच्छा, तो मै आपके मन को अपना निशाना बनाकर प्रेमबाण छोडता हूँ ।

रणधीर—पर ये शिकार तो शिकारी के शिकार हुए बिना हात नहीं आती । **(अर्थात् दूसरे के मन में अपनी प्रीति उत्पन्न करने के पहले अपने मन में उसकी प्रीति करनी चाहिए ।)**

रिपुदमन—सो मै तो पहले ही अपने शिकार के साथ आपका शिकार हो चुका, पर आपके मन को अपना शिकार बनाने के लिये मेरी सामर्थ्य नहीं है ।

रणधीर—समर्थवानों के कहने की यही रीति होती है—

दोहा—गरजै सो बरसै नहीं, शरद जलद अनुमान ।
बरसै सो गरजै नहीं, वर्षा मेघ समान ॥ १ ॥

रिपुदमन—यह तो चदन की बडाई है जो अपने आस पास के वृक्षों को अपनी बराबर के (१) बना लेता है, भला यह सुखदाई चदन कौन से बाग की रमणीक भूमि में शोभायमान है । **(अर्थात् आप कहाँ रहते हैं ।)**

रणधीर—इसकी पोद (२) थोड़े दिन पहले एक मनोहर बाग से उखाड कर सूरत मे लगाई गई थी ।

रिपुदमन—अच्छा, उस बाग का नाम क्या है ?

रणधीर—(**मन में**) अब क्या जवाब दू, झूट बोलना मुनासिब नहीं और सच कहने मे बिगाड होता है, **(विचार कर प्रकट)** पाटल की पिछली तिहाई न होने से (३) उसका नाम आपको मालूम होगा ।

---

(१) का (२) पौध स० पोत (३) पाटन ।

रिपुदमन—(मन में) इनके इस वचन का अर्थ इस समय समझ में नहीं आता, कदाचित विचारने से आ जाय, पर न आवे तो भी इनसे पूछना तो मुनासिब नहीं, क्योंकि इनको समझाकर कहना होता तो पहले ही लपेट कर क्यों कहते, (प्रकट) मुनासिब हो तो कृपा करके आप अपना नाम और बता दें।

रणधीर—अच्छा, इस अगूठी से आपको मेरा नाम मालूम होगा। (अपनी अगुली से अंगूठी उतार दी।)

रिपुदमन—(अगूठी ले, रणधीर का नाम बांच हर्ष से) आहा! बडा अच्छा हुआ "यथा नामः तथा गुणः" के सिवाय इसमें आदि और अंत का एक सा आकार देख कर मेरा मन हर्ष से उछलता है, मै भी ऐसे ही सज्जन से प्रीति किया चाहता था। (अगूठी पहर ली)

रणधीर—और प्रीति हो भी गयी!

रिपुदमन—निःसदेह, जब आपने कृपा करके अपनी अगूठी मुझको दे दी, तो प्रीति करने में क्या सदेह रहा।

रणधीर—पर मै तो अब तक आपके नाम गाम से अजान हूँ।

रिपुदमन—अच्छा, ये मेरी अँगूठी आप लीजिए। (अपनी अँगूठी के बदले भूलकर रणधीर की अँगूठी उतार दी।)

रणधीर—(अपनी अँगूठी देखकर मन में) यह बडी अच्छी बात हुई जो इन्होंने भूलकर अपनी अँगूठी के बदले मेरी अँगूठी उतार दी, इनका नाम तो अब नहीं, दो घडी पीछे मालूम हो जायगा पर ये अँगूठी किसी समय बडे काम आवेगी; (प्रकट) किसी काम में जल्दी करनी अच्छी नहीं होती, देखो, जो लोग जल्दी कर कच्चा फल तोड़ लेते हैं, उनको फल का तो स्वाद मिलता ही नहीं पर बीज का नाश वृथा हो जाता है।

रिपुदमन—(उदास होकर) आप जानों आपका काम जाने मैंने तो अपने मन मे आपसे सच्ची प्रीति कर ली।

रणधीर—यही तो पेंच है, जबतक आपके मन में मेरी तरफ से कुछ सदेह रहे, अथवा आप मुझसे कठोर और कपटी रहे, तब तक मैं आप से अतर रक्खूँ, अपना भेद छिपाऊँ तो चिंता नहीं, पर आप मुझसे निरंतर प्रीति करें और मै आपसे अपने मन की बात न कहूँ, ये बातें मेरे स्वभाव से उल्टी है।

रिपुदमन—तो आप विश्वास रक्खे जो लोग बिना जानें पहचाने आपस में मिल बैठते हैं, उनसे मै ज्यादा सच्चा निकलूँगा।

रणधीर—ससार में किसी तरह के प्रयोजन बिना कोई किसी काम में प्रवृत्त नहीं होता, पर जो लोग लौकिक चतुर हैं, वे आदि में दूसरे से मिलते ही अपना कुछ प्रयोजन नहीं जनाते, प्रीति हुए बाद दूसरे पर सब तरह का बोझ डाल कर अपना प्रयोजन प्रकट करते हैं, उस समय सकोच में आकर या तो दूसरे को उनका प्रयोजन सिद्ध करना पडता है या दोनों में परस्पर बिगाड हो जाता है। ऐसे सकोच अथवा बिगाड होने के बदले आदि में प्रीति करने वाले का प्रयोजन समझ लिया जाय, और उसका काम हो सके तो उसके कहने से पहले कर दिया जाय, न हो सके तो उसको पीछे के लिए धोखे में न रखा जाय; ये बातें मेरी राय में अच्छी हैं। आप इस बात को कैसी समझते हैं?

रिपुदमन—आपका यह विचार बहुत अच्छा है परतु मैं इस समय तक आप की सच्ची प्रीति सिवाय और कुछ नहीं चाहता, आपने मेरी प्राण-रक्षा की और आप के स्वाभाविक गुण देखकर मन मोहित हो गया, इस कारण मैं आपसे केवल प्रीति चाहता हूँ।

रणधीर—निस्संदेह, आपको लायकी देख कर मेरे मन में भी प्रीति उत्पन्न होती है।

रिपुदमन—हँसी में कोई बात मेरे मुख से निकल जाय तो आप क्षमा करें।

रणधीर—यह विचार तो दोनों तरफ रहना चाहिये क्योंकि स्नेह (१) से भरे हुए दीपक को भी पवन से बुझने का डर रहता है।

रिपुदमन—आपका इस पर्वत पर आना कैसे हुआ था?

रणधीर—मुझको अवकाश होता है तब वृक्षावली में ईश्वर की रचना देखने के लिए मैं यहाँ चला आता हूँ। एक बीज से वृक्ष उत्पन्न होना, उसमें एक तरह के हजारों पत्तों का लगना, फूलों का खिलना, बीज का मिलना, कुछ थोड़े अचरज की बात नहीं है!

रिपुदमन—(एक गुलाब के पुष्प की तरफ देखकर) देखो! यह गुलाब का फूल अपने रूप रंग के अभिमान से ऐसा खिल रहा है मानों अपनी भेद (२) मुस्कान से बन के सब फूलों की हँसी सी करता हो!

रणधीर—यह तो इसकी जड बुद्धि है क्योंकि ईश्वर के बाग में एक से एक अच्छा फूल दिखायी देता है और इसी रंग के बहुत से गुलाब लग लग कर सूख चुके हैं, फिर इसकी सुगधि से पवन सुगधित न हुई तो इसने दो दिन की अनित्य शोभा पर वृथा अभिमान करके क्या किया?

रिपुदमन—आहा! बातों ही बातों में सध्या हो गई, देखो वह सामने का वृक्ष जो घडी भर पहले सूर्य के तेज से झलक रहा था, सूर्य के अस्त होने से अपने आप मलीन हो गया।

रणधीर—मनुष्य के उदय अस्त का भी यही हाल है वह सदा अपनी बढ़ती चाहता है पर उसका नफा नुकसान होनहार के अधीन रहता है, ओ हो! (मुख पर उदासी छा गयी)

रिपुदमन—देखो, ससार दुःख रूप है, इसमें कोई दुःख नहीं चाहता, परतु दुःख बारबार सबके ऊपर आ पड़ता है और दुःख का अभाव मात्र सुख समझा जाता है। होनहार किसी के रोके नहीं रुकती, इस कारण

---

१ तैल। २ भेद भरी

बुद्धिमान दुःख सुख को अनित्य समझ कर सदा एक से रहते हैं। चलिये अब साँझ हुई, मैं आपके स्थान पर होकर अपने मकान को जाऊँगा।

रणधीर—(मन में) हमारी मर्जी बमूजब तो इनका सत्कार यहाँ कहाँ बन पड़ेगा ? (प्रकट) अच्छा, चलिये मित्र को अपने घर जिमाने और आप उसके घर जीमने, अपने सुख दुःख की बात उससे कहने और उसके सुख दुःख की बात सुनने से सदा प्रीति बढ़ती है, (मन में) जब इनसे प्रीति करनी ठैरी (१) तो पहले इनका स्वभाव जानना चाहिये क्योंकि जिसमें जिसका स्वभाव मिलता है उससे उसको प्रीति होती है, आज इनके आगे हँसी चोहल (२) की बातें कर, गाने की चर्चा छेड, शास्त्र का प्रसग ला, इनके मन कीरुचि परख लें, (चलते हुए प्रकट) हमारे यहाँ एक चौबे हास्यरस में बड़े कुशल हैं उनकी बातें सुनकर आप हँसते हँसते लोट जाँयगे।

[दोनों गये]

इति द्वितीय गर्भाक

———

(१) ठहरी (२) चुहल—मनोरंजन।

तृतीय गर्भांक

स्थान, रणधीरसिंह का महल

(सुखवासी लाल और नाथूरामबैठे हैं)

सुखवासीलाल—सेठ जी ! तुम्हारे किन लोगों की रहटी हैं ? (१)

नाथूराम—(हात जोड़ कर) अन्दाता जी ! मै तो माल्यारी बली करूँ छूँ । (२)

सुखवासीलाल—ब्याज क्या लेते हो ?

नाथूराम—दस का बारा कर, रुपया महीना री खदी, लिया करांछा । (३)

सुखवासीलाल—लेकिन चार उतरे पीछे दो देकर दस के बारह कर लेते हो, इसके गायले की क्या हद !

नाथूराम—(सिटपिटा कर) हैं अन्दाता यो तो म्हरो धँदोई ठैरो । (४)

सुखवासीलाल—तुम्हारा यह धधा है कि भोले आदमियों को फुसलाकर दो के चार कर लो । (५)

नाथूराम—(मन में) आप तो मूडा मै मूँग घाल्या बैठा छै ।

---

(१) तुम्हारे किन लोगों का लेन देन है ?

(२) अन्नदाता ! मै मालियों का लेन देन करता हूँ ।

(३) दस के बारह करके रुपये महीने की किश्त लिया करते हैं ।

(४) अन्नदाता यह तो हमारा रोजगार ही ठैरा ।

(५) तुम्हारा यह रोजगार है कि भोले आदमियों को बहका कर दो के चार कर लो ।

(प्रकट) मै अन्दाता देसी स अपनी गरज सै देसी म्हारा कह्याँ कुण देवै छै। (१)

सुखवासीलाल—तुमको देश से आए कितने बरस हुए ?

नाथूराम—हणै कोई साढीक बारा वर्ष हुआ होशी। (२)

सुखवासीलाल—तुम्हारे बाल बच्चे कहाँ हैं ?

नाथूराम—देस मै, अठै ल्याऊँ तो उठारो रहवास छूट जाय। (३)

सुखवासीलाल—(मन मे) ये लोग भी एक किस्म के वहशी हैं, इनसे दुनियाँ के लोगों को किसी तरह का फायदा नहीं पहुँचता और ये दुनियाँ के लोगों से कुछ हज नहीं उठाते, नाशिस्त बरखास्त और खुरो नोश की इनको मुतलक तमीज नहीं, बस तमै की अधेरी चढाकर, तेली के बैल की तरह, तमाम उम्र गैर मुल्कों में फिरते हैं और हशरातुल अर्ज की तरह हर शहर व करबे में नजर आते हैं, सर्राफी, बजाजी, गुमश्तहगरी, दल्लाली, गल्ले फरोशी वगैरह हर किस्म के रोजगार में इनका कदम अड रहा है, मगर दुनियाँ के मुल्की व खानगी मामलात से ये महज नावाकिफ हैं और इल्म की रहनुमाई बगैर, गोहरे मुराद का दस्त-याब होना भी आसान नहीं, (प्रकट) तुम अपनी औलाद को बचपन में इल्म सिखाने की कोशिश क्यों नही करते ? (४)

(१) (मन में) आप ता मुँह में मूँग (इस तरफ वाले कहते हैं 'सोना') डाले बैठे हैं (प्रगट) नहीं अन्नदाता देगा सो अपनी गर्ज से देगा हमारे कहने से कौन देता है।

(२) अब तक कोई साढे बारह बरस हुए होंगे।

(३) देश में (हैं) यहाँ लाऊँ तो वहाँ का रहना छूट जाय।

(४) (मन में) ये लोग भी एक तरह के जगली है इनसे ससार के लोगों का कुछ हित नहीं होता और ये समार के लोगों से कुछ सुख नहीं उठाते, बैठने उठने और खाने पीने का इनको कुछ विचार नहीं, बस लालच की अँधेरी चढा कर तेली के बैल की तरह जन्म भर परदेश में

नाथूराम—कागद पत्तर, लेखो, जोखो, नकल जमा खर्च तो शग-लाई भणै छै, पिण जिकेरी बुद्ध तीखी हुवे सो तो गीता और सहस्सर नाव भी भण लेवै छै, इणसे बिसेस भणकर क्या करा ? टीपणो बाचणो नहीं, कथा सुनाणी नहीं, मौलवी बणनो नहीं, खत लिखणो नहीं, म्हारे भाणजारो सालो हिम्मतराम चौरटियो सैंस्कृत भण गयो, छोस रुजगार धन्दाइ से जातो रह्या (१)।

सुखवासीलाल—(मन में) ऐसे जाहिलों का खुदा हाफिज (२) (प्रकट) क्यों तुम्हारी तरह वह झूठे बही खाते तो न बनाता होगा ?

नाथूराम—(कुछ तेज होकर) अन्दाता जी ! या बात आप का फुर्माबा लायक नहीं छै, गाँव गोठारा बोरा मै कोई धरम हार, इश्यो काम भला ही कर लो, म्हे लोग मरता मरज्याश्या तो पण, म्हासै खोटो कागद कदे नहीं बणायो जासी। सोदो सही करा पीछै हजारा रुप्यारो घाटो होसी

फिरते है और चौमासे के जीव जन्तु की तरह हर एक नगर और गाँव में दिखायी देते हैं, सराफी, बजाजी, गुमास्तगीरी, दलाजी नाज की बिकरी आदि हर तरह के रूजगार में इनका पाव अड रहा है, परतु ससार मे देश और गृहस्थ के काम काज से ये लोग बिलकुल अजान है और विद्या के मार्ग बताये बिना कामना के मोती का हाथ लगना भी सहज नही (प्रकट) तुम अपनी सतान को बालकपन में विद्या ही पढाने का उद्योग क्यों नहीं करते।

(१) कागज पत्र, हिसाब किताब, नकल जमा खर्च तो सब पढते हैं, जिसकी बुद्धि तीक्ष्ण हो सो तो गीता और सहस्रनाम भी पढ लेता है, इसमें विशेष पढ कर क्या करे। पचाग बाचना नहीं, कथा सुनानी नहीं, मौलवी बनना नही, खत लिखना नही। हमारे भानजे का साला हिम्मत-राम चौरटिया सस्कृत पढ़ गया था, सो रोजगार धदे ही से जाता रहा।

(२) ऐसे मूर्खों का परमेश्वर रक्षक।

तोही कच्ची जबान कदी नहीं निकालागा, इश्यो काम करा तो म्हारी एक दिन मै साख जाती रहै। (१)

सुखवासीलाल—नहीं सेठ जी, खफा न हो, मैंने यह बात तो दिल्लगी के वास्ते कह दी थी, लेकिन आप यह बताइये कि आपके भाजे का साला रोजगार धंधे से क्यो जाता रहा ?

नाथूराम—उणनै पहली तो पोथी पानडासै ही मौसर नहीं, फिर मीनत मजूरीरा कामसू घबरावै, जिद रुजगार धदो काकर होय ? मै तो उणरो यो बिर्तात देख, अपना टाबरनै गुरू जी री पोशाल माही नहीं जाणै दीनो छै। (२)

सुखवासीलाल—(मन में) यह हमारे समझाने से समझने लायक नहीं है, (प्रकट) अच्छा, हमारी सरकार का हिसाब लाये हो ?

नाथूराम—हाँ अन्दाता लायो हूँ। (३)

सुखवासीलाल—कुल कितने रुपये जुड़े ?

नाथूराम—हणे घडो नहीं लगायो, (मन में) पहली ही घडो बता देस्यू तो पछै बडावारी गु जास कठै रहसी (४)।

---

(१) अन्नदाता ! यह बात आपके फर्माने लायक नहीं है, गाँव गवई के व्यवहारियों मे कोई बेईमान ऐसा काम भले ही कर ले, हम लोग मरते मर जायगे तो भी झूठा कागज कभी नही बनावेगे, सौदा सही किये पीछे हजारों रुपयों का नुकसान होगा तो भी कभी नहीं मुँह मोडेगे, ऐसा काम करें तो एक दिन मे हमारी साख जाती रहेगी।

(२) उसको प्रथम तो पुस्तक पत्रों के बाचने से ही अवकाश नहीं, फिर मिहनत मजदूरी के काम से घबरावे तब रोजगार धधा क्योंकर हो। मैंने तो उसका यह हाल देख, अपने लडके को गुरू की पाठशाला में ही नहीं जाने दिया है।

(३) हाँ अन्नदाता लाया हूँ।

(४) अब तक जोड नहीं लगाया (मन में) पहले ही जोड बता दूँगा तो फिर बडाने की गु जायश कहाँ रहेगी।

सुखबासीलाल—अच्छा चिट्ठियाँ लाओ, अव्वल मुकाबला कर लें।

नाथूराम—हाजर छै (**चिट्ठियाँ सुखबासीलाल को देता है**)

सुखबासीलाल—रोगन दर्ज कितना है ? (१)

नाथूराम—छम्मण, पान्सेर, पाच्छटाक। (२)

सुखबासीलाल—कैसे निर्ख लगाया ?

नाथूराम—अटैकी तोलसै सवा छः सेर, (**मन में**) दो एक चीज मै क्यूक मदो भाव लगा दू, आगानै भरोसो पड जासी, जिद बाकीरा सोदा मै मनमाएयो नफो ले लेस्यूँ। (३)

सुखबासीलाल—(**मन में**) इसने इसमे तो बाजार के निर्ख से पाव सेर ज्यादः दिया। (**प्रकट**) अच्छा, आटा ?

नाथूराम—छत्तीस मण, दो सेर, तेरो छटाक। (४)

सुखबासीलाल—इसका निर्ख ?

नाथूराम—येरो भाव दो मण पनरा सेर। (५)

सुखबासीलाल—(**मन में**) इसमे भी बाजार के निर्ख से पाँच सेर ज्यादः आया। (**प्रकट**) बाकी चीजों की कीमत एक मुश्त लिखा दो तुम्हारे हिसाब में हमको कुछ शक नहीं है। (६)

---

(१) घृत कितना है।

(२) छः मन, पाच सेर, पाच छटाक ?

(३) यहाँ की तोल से सवा छः सेर, (**मन में**) दो एक चीज में कुछ मदा भाव लगा दू आगे को भरोसा पड जायगा जब बाकी सौदे में मनमाना नफा ले लूँगा।

(४) छत्तीस मन, दो सेर, तेरह छटाक।

(५) इसका भाव दो मन, पद्रह सेर।

(६) (**प्रकट**) चीजो के दाम इकट्ठे लिखा दो तुम्हारे हिसाब से हमको कुछ सदेह नही है।

नाथूराम—(मन में) अब दाव लगाणोरो वखत आयो, (प्रकट) जिसी मर्जी मालकारी। (१) (सुखवासीलाल लिखता है)

नाथूराम—चारसो पैतीस रूपया, साढा पाँच आनारो सोदो, मे पनरा सै रूपया रोकडी (२)।

सुखवासीलाल—इसमें हमारी क्या नजर करोगे ?

नाथूराम—(मन में) गायलो तो घणोही छै, पिण पहलो ही देणो मजूर कर लेवा तो इयरे मन मै सक पड जासी, (प्रकट) हैं अन्दाता इयमे तो म्हारै उलटो घाटो जासी पिण। (३)

सुखवासीलाल—नहीं सेठ जी ! यह कुछ बात नहीं है, हमारा हक न दोगे तो तुम्हारे हिसाब मे झमेला पड जायगा।

नाथूराम—इसीई मर्जी होय तो शगलाई आप राखो, अठै तो आछो परताप आपरो छै। (४)

सुखवासीलाल—नहीं, हम सबका क्या करें, हमको तो हमारा हक मिलना चाहिये ।

नाथूराम—(उसकी मुट्ठी में कुछ देकर) आपरे लायक तो नही छे पिण अब के समझ लीजो। (५)

---

(१) (मन में) अब दाव लगाने का वक्त आया (जैसी मर्जी मालिकों की)

(२) चार सौ पैतीस रुपये, साढे पाच आने का सौदा और पद्रह सौ रुपये नकद।

(३) गु जायश तो बहुत है परतु पहले ही से देना मजूर कर ले तो इनके दिल में शक पड जायगा। (प्रकट) हैं अन्नदाता ! इसमें तो हमारे उलटा नुकसान पड़ेगा परतु

(४) ऐसे ही मर्जी होय सब (रुपये) आप रखो यहाँ तो अच्छा प्रताप आपका है।

(५) आपके लायक तो नहीं है परतु अबके समझ लेना।

मुखबासीलाल—अच्छा, लेकिन किसी से जिक्र न हो। रणधीरसिंह के मिजाज को तो तुम जानते ही हो, उनके आने का समय हो गया चलो अब तुम्हारे हिसाब का जमा खर्च करा दें।

(दोनों गये)

[इति तृतीय गर्भांक।]

—:※:—

अथ चतुर्थ गर्भांक।

स्थान, रणधीरसिंह का महल

(बीच में गोल मेज पर एक दर्पण रखा है, लप जल रहा है, चारों तरफ मखमली कुर्सियाँ रखी हैं, दर्पण के सन्मुख चौबे जी एक कुर्सी पर रज लगाये बैठे है।)

चौबे जी—(दर्पण में दूसरा चौबे समझ कर) चौबे जू तुम राजी हो, मधुपुरी ते आये किते दिन भये ? हमारे घरहू गये हे, हमारे छोरानैं तुमको अपनों बाबा तो नाय समझ लिओ, (डरकर मन में) इनको यहाँ रहवो अच्छो नाहि। (प्रकट) भैय्या यहा का तत है तुम कहो तो हमहूँ तुमारे सग परदेस चलैं, तुमनैं भागहू पोईके नाहि ? नाहिं पोई होइ तो हमारे पास लुगदी तय्यार है, खान डारें। (१)

(रणधीर और रिपुदमन का प्रवेश)

(१) चौबे जी तुम राजी हो, मथुरा से आए कितने दिन हुए ? हमारे घर भी गये थे। हमारे लडके ने तुमको अपना बाबा तो नहीं समझ लिया। (डरकर मन मे) इनका यहा रहना अच्छा नहीं। (प्रकट) भाई यहा क्या सार है, तुम कहो तो हम भी तुम्हारे साथ परदेश चलें,

रणधीर—(आते ही शीसे को पलटकर) चौबे जी किससे बात कर रहे थे ?

चौबे जी—(चोक कर) आपनै भलो संदेह मिटाइ दिओ मै तो जाकों दूसरो चोबे समझै हो ! (१)

रणधीर—कहो भंग बूटी छन गयी ?

चौबे—हा धर्म्मूरत ! मूजी के नाम फोक फैके बडी बेर भई । (२)

रणधीर—तो अब किस विचार में हो ?

चौबे जी—कछु नाय तूमको आइबे में अबेर भई तब मेरे मन मै जे सदेह भयो जो कहु अपने घर को रस्ता तो नाय भूल गये । (३)

रणधीर—नहीं चौबे जो, मैने क्या भग पी थी ?

चौबे जी—ना जिजमान, आपनै भाग तो नाहि पी पर मोकों भाग के चढाव मै जे सूझी कि ज्वानी और धन के मद लों आप कहू सरमदार को तमाशो देखवे तो नाहि चले गये ! (४)

रणधीर—आज तो आपने गहरे अमल पानी किये, कहिये इस समय आप मे और गऊ के जाये में कितना अतर है ?

तुमने भग भी पिया । नहीं, नहीं पिये हो तो हमारे पास नुगदी (अर्थात् धुटी घुटाई भग) तय्यार है छान डाले ।

(१) आपने अच्छा संदेह मिटा दिया मै तो इसको दूसरा चौबे समझा था ।

(२) हा धर्ममूति ! मूजी के नाम फोंक (भग छने पीछे का फोक) फेके बडी देर हुई ।

(३) कुछ नहीं तुम्हारे आने में देर हुई, इससे मुझको यह शक हुआ कि कहीं अपने घर का रस्ता तो नहीं भूल गये !

(४) नहीं जजमान, आपने भंग तो नहीं पी, परतु मुझको भग के चढाव में यह बिचार आया कि जवानी और दोलत के मद से आप कहीं शर्मदार का तमाशा देखने तो नहीं चले गये ।

चौबे जी—जित्तो आप के और मेरे बीच में। (१)

रिपुदमन—भला महराज शर्मदार के तमाशे का भेद तो बताइये ?

चौबे जी—जामें का भेद है, देखो एक लुगइय्या ससुरार मै लाज के मारे अपनों बोलहू काहू को नाहि सुनावै पर गारी गाइबे बैठै तब सास ससुर को सैकरन् गारी मोह की मोंपे सुनाइदे। (२)

रिपुदमन—महाराज ! आप का नाम क्या है ?

चौबे जी—(कुए की गूज के समान) महाराज ! आप का नाम क्या है ?

रिपुदमन—मेरा नाम प्रसन्न मन रिपुदमन।

चौबे जी—मेरा नाम लड्डुआ भजन, चौबे निरजन। (३)

रणधीर—चौबे जी, कुछ मेवा मिष्टान्न खाओगे ?

चौबे जी—भला भैय्या, ऐसो बातन को पूछबो का ! (४)

(जीवन ने अगूर के तीन गूच्छे लाकर रिपुदमन, रणधीर, और चौबे जी को दे दिये)

रणधीर—(अपने आगे के बीज चौबे जी के आगे खसका कर हसी से) चौबे जी, ऐसी क्या जल्दी पडी थी जो बीजों का इतना ढेर लगा दिया !

चौबे जी—तोहू आपकी भाति बीज समेत तो न खाये। (५)

(जीवन आकर स्थान शुद्ध कर गया)

(१) जितना आप के और मेरे बीच में।

(२) इसमे क्या भेद है, देखो एक स्त्री ससुराल में लज्जा की मारी अपना बचन भी किसी को नही सुनाती पर गीत गाने बैठती है तब सासु सुसर को सैकडों गाली मुह की मुह पर सुना देती है।

(३) मेरा नाम लड्डू भजन चौबे निरजन।

(४) भला भाई, ऐसी बातों का पूछना क्या ?

(५) तो भी आप की तरह बीज सुद्धा तो नही खाये।

रणधीर—(रिपुदमन से प्रीतिपूर्वक) अभी थोडी रात गई है मर्जी हो तो सितार से थाडी देर मन बहलावे ।

रिपुदमन—बहुत अच्छा, मै ताल देता जाऊ गा ।

रणधीर—(सितार लेकर)

राग कल्याण

देख्यो प्रेम को पथ जुदोही । टेक ।
जानैं प्रीति रीति रस चाख्यों, ताहि न भावत कोई,
दीपक की छवि लख पतगनै, पख आपनी खोई ।
वेधत मधुप काठ पर हित बस, कमल न छेदत सोई,
जाकी प्रीति लगी काहू सों, याकों जानत वोई ॥ देख्यो० ॥

(चौबे जी के नेत्रों में आसू भर आये)

रणधीर—(चौबे जी से) आज तो कुछ बडा प्रेम आया !

चौबे जी—ना जिजमान, प्रेम तो कछू भी नाँहि आयो, तुमारी नार हलती देख कर मोको अपने बकरा का सूध आइ गई ही, ताते आखन् में असुआ भर आये । (१)

रिपुदमन—चौबे जी ! तुम भी तो कुछ गाओ ।

चौबे जी—भैय्या हमपे का गाइबो बजाइबो आवै है पर तुम कहो हो तो ल्यो एक धुरपद सुनाई दै । (२)

ध्रुपद ।

पडितन काजै सीखे भागवत ज्ञान गीता,
श्रोता हेत साध्यो सार वेदन को बांचवो ।

---

(१) ना जजमान, प्रेम तो कुछ नहीं आया, तुमारी गर्दन हिलती देखकर मुझको अपने बकरे की याद आ गयी थी इससे आखों में आसू भर आये ।

(२) भाई हमे क्या गाना बजाना आता है परतु तुम कहते हो तो लो एक धुरपद सुना देते हैं ।

कविन के काजै सीखे पिंगल पुरान छंद
दोहा गाइ चौपाई कवित्तन कौं सांचवो ॥
कलाउन्त काजै भजन बारहमासी सीखलीनै
आय मुख गावैं राग रागिनी न राचवो ।
देवेके कांजै राजा इतने कसब सिखे
कसर रही है एक ताता थेई नाचवो ॥१॥

जीवन—(आकर) महाराज ! पंडित सोमदत्त जी आ गये क्या आज्ञा है ?

रणधीर—अच्छा उनको सत्कार मे ले आ । (उसके गये पीछे) देखो आज हँसी हँसी की बातों में इतना समय वृथा चला गया, इतनी देर विद्या पढने में मन लगाते तो कितना लाभ होता । कालिदास और भवभूत्यादि कवियों की आयु साधारण लोगों से अधिक न थी, परतु वे समय की महिमा जानते थे, इस कारण उनका नाम आज तक अमर है और असख्य मनुष्य प्रतिदिन जन्म लेकर मरते हैं जिनका नाम कोई नहीं जानता । हाँ, आठ पहर की महनत करने से बुद्धि शिथिल हो जाती है, इस कारण आठ पहर में घडी दो घडी मन बहलाने के वास्ते ऐसी भी चाहिये , परतु सब लोगों के आगे ऐसी बाते करने से तेज जाता रहता है ।

(पडित सोमदत्त को आते देख, सबने उठकर प्रणाम किया और रणधीरसिह ने सत्कार करके उनको बीच की कुर्सी पर बिठाया ।)

रणधीर—(पंडित जी से हात जोडकर) आज हमारे ये मित्र (रिपुदमन की तरफ देखकर) कृपा करके यहाँ आए हैं इस कारण बहुत चर्चा तो न हो सकेगी, परतु नित्य का नेम निबाहने के लिए थोड़े से प्रश्न करता हूँ ।

रिपुदमन—मेरे लिए आप कुछ सकोच न करें, विद्या तो मनुष्य की आत्मा का भूषण है इसकी बराबर आनद और कौन सी बात में होगा ।

रणधीर—(पडित जी से) ईश्वर के मिलने का मुख्य उपाय क्या ?

सोमदत्त—श्रद्धा ।

रणधीर—प्रधान धर्म कौन सा ?

सोमदत्त—स्वधर्म ।

रणधीर—अधर्म क्या है ?

सोमदत्त—प्राणीमात्र को पीडित करना ।

रणधीर—ससार क्या है ?

सोमदत्त—द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय, अभाव ।

रणधीर—सुखी कौन है ?

सोमदत्त—परोपकारी ।

रणधीर—दुःखी कौन है ?

सोमदत्त—अजानी

रणधीर—सम कौन है ?

सोमदत्त—ज्ञानी

रिपुदमन—(चौबे जी से) महाराज ! क्या बजा होगा ?

चौबे जी—मेरे गरे मे घटा बँध रह्यो होई तो देखल्यो । (१)

रणधीर—नहीं चौबे जी, भीतर जाकर देख आओ ।

चौबे जी—अब तो भाग के तार मे उठबोई परो । (२)

(चौबे जी भीतर जाकर घटा देख आए)

रिपुदमन—क्यों क्या देखा ?

चौबे जी—(भोजन की याद आने से) दस सेर मे पाच लडुआन् की कसर हैं भरोसो न होइ और कों भेज के दिखाइल्यो । (३) (सब हँस पड़े ।)

---

(१) मेरे गले में घटा बँध रहा होय तो देख लो ।

(२) अब तो भग के तार में उठना ही पडा ।

(३) दस सेर में पाँच लड्डुओं की कसर है । (अर्थात् दस बजने में पाँच मिनट की देर है ।) भरोसा न हो, तो और को भेजकर दिखा लो ।

रणधीर—जाओ मोमबत्ती का इक्का और घड़ी यहाँ उठा लाओ।

चौबे जी—(मन में) भाग के चढ़ाव में कहाँ को आफत आई है। (प्रकट) अच्छा जिजमान लाऊँ हूँ। (भीतर जाकर एक हात में इक्का और एक हात में जेब घड़ी ले आए पर नशे के कारण हात से इक्का गिर पड़ा और खटका सुन, सब लोग उधर देखने लगे।)

रणधीर—है! चौबे जी ये क्या किया, सम्हालकर क्यों नहीं लाये, इक्का कैसे गिर पड़ा?

चौबे जी—मैं तो सम्हार कैई लावै हो पर (हात से घड़ी छोड़कर) ऐसे अचानक चक्क गिर पड़ो तो मे क्या करूँ? (४)

(सब हँसने लगे।)

रिपुदमन—आपके मिलाप से, जी तो कभी नहीं भरेगा परतु रात बहुत गई और दूर जाना है।

रणधीर—मेरे कारण आपको बड़ा श्रम हुआ। (रिपुदमन जाने को तयार हुआ)

रणधीर—हाँ, कल सन्ध्या समय बसत की शोभा देखने के लिए केसर बाग में चलने का विचार है। आप उस समय आवेंगे?

रिपुदमन—कुशल रही तो निःसदेह। (जाते जाते मन में) इस चचल पुरुष की बुद्धि का प्रवेश तो सब बातों में एक सा पाया गया परतु मेरे नए आने पर आज यहाँ इतनी हँसी चोहल रही इसी से इनका सुभाव हसमुख मालूम होता है। (गया)

रणधीर—(मन में) इनके मन का भेद लेने वास्ते मैंने ये उपाय किये थे परतु इनको सब बातों में एक सा पाया। (चौबे जी से प्रकट) आपको नये आदमी के सामने जरा सोच समझ कर बात करनी

(४) मैं तो सम्हालकर ही लाता था पर (हाथ से घड़ी छोड़कर) इस तरह अचानक गिर पड़ा तो मैं क्या करूँ।

चाहिये, आज आप की बातें सुनकर रिपुदमन सिह ने अपने जी में क्या समझा होगा !

चौबे जी—अच्छी आगे से याद रक्खूँगो। पर भूलहू जाऊँ तो आप चेताय देवो करो। (१)

रणधीर—(पडित जी से) महाराज रात बहुत गई, सोने का समय हो गया आप शयन करें, मे भी जाऊँगा। दण्डोत महाराज !

(सब गये)

इति चतुर्थ गर्भाक

अथ पंचम गर्भांक।

स्थान राजमार्ग।

मुखवासीलाल—(आकर) रणधीरसिह खवाबगाह में तशरीफ ले गए, अब मै अपनी माशूक दिलरुबा के पास जाता हूँ, (कुछ ठैर कर) आज तो हमारे खुदावन्द न्यामत शिकारगाह से एक नया पछी लाये थे देखें इसका क्या ढग रहे। चौबे जी तो सवा पा घी के सोवे में निहाल हैं, लेकिन हमारे दिल की ख्वाहिश कभी पूरी न हुई। हमारी बिरादरी के लोग हजारों का फायदा उठाते हैं, मगर हमारी बदकिस्मती से हमको ऐसा मालिक मिला है जिसके सौदे सुलफ में दस्तूरी तक हाथ नहीं लगती। इजत बडी, खातिर बडी, देने लेने के नाम छदाम नहीं। हमारी महबूबा

---

(१) अच्छा आगे से याद रक्खूँगा, पर भूल भी जाऊँ तो आप जता दिया करें।

के वास्ते हर रोज जेवर चाहिये, अयालदारी का खर्च जुदा सिर पर घूमता है। रिश्तेदारों की ब्याह शादी में न शरीक हो तो यों नाक कटी। दो दिन पीछे लडकों का मक्तब करना, भाजी को भात देना, कर्ज मिलता था उस वक्त तक हमको कुछ फिक्र न था, लेकिन अब क्या करें? (विचार कर) हमने अब तक अपनी मतलब बरारी के वास्ते सदहा तदबीरें की, मगर कोई तीर-तदबीर निशाने पर न पहुँचा। असल तो ये है कि, जब तक इनके पीछे शराब और रण्डी की लत न लगेगी, हमारी मतलब बरारी निहायत दुशवार है। मगर इनको इस राह पर लाने के वास्ते कौन सी तदबीर अमल मे लाऊँ? क्या हम खुद इस मामले में इससे कुछ जिक्र करें, (विचार कर) हमको रूबरू तो इस मामले में कुछ तहरीक न करना चाहिये क्योंकि हमारे कहने से इनके दिल पर पूरा असर न हुआ, तो आयदः बडी खराबी की सूरत पैदा होगी। दिल पर असर होने का ये कायदा है कि आदमी का दिल बेहोशी की हालत सिवाय हर वक्त किसी बात के ख्याल मे मशगूल रहता है और उसका खास ये काम है कि वो अपने मुतल्लिकी तमाम बातों के वास्ते कुछ न कुछ राय कायम करे। जब ये राय कायम हो जाती है तो आदमी उसी के बमूजिब अमलदरामद करता है चूँकि कम्फहम आदमी की राय मुस्तहकिम नहीं होती। इस सब से उसकी कारवाई में अक्सर खलल वाकै होते रहते हैं। मगर हमको यहाँ इस बात से कुछ बहस नहीं है। जिस वक्त आदमी का दिल किसी बात के खयाल में महव हो, और वो उसकी निस्बत अपनी अकल से कुछ राय भी कायम कर चुका हो, उस वक्त उसका कोई मोतबिर आदमी उसके खयाल बमूजिब अपनी खास गर्ज बिना उसकी राय से मिलती हुई बात कहे तो उस बात का सुननेवाले के दिल मे पूरा असर होता है। मगर इन बातों मे जिस कदर तफर्का पडता जायगा सुननेवाले के दिल का असर बदलता चला जायगा। इस वास्ते हर शख्स को बात कहने से पहले इन तमाम बातों पर गौर करना

चाहिये, चुनाचे मै खुद गौर करता हूँ तो मुझे रणधीरसिह की तबियत शराब और रण्डी से निहायत मुतनफ्फिर मालूम देती है। पस मैं क्योंकर अपना दिली मशा उनके रूबरू जाहर करूँ। (बहुत विचार कर) अच्छा कल बाग में इस पेचीदा मामले की दुरुस्ती करने वास्ते मै अपनी माशूके दिलरुबा को बुलाता हूँ। मुझको यकीन है कि रणधीरसिह उसको देखते ही एक बार हिरन की तरह चोकन्ने होकर चौकडी भरेंगे। मुमकिन नहीं कि आखीर में इसका जादू उनपर असर न करे। हर काम के आगाज में चद दरचद नुक्सनुमायाँ होते हैं मगर कोशिश व तन्दिही करने से वह सब आसानी रफा हो सकती है—

बहरकारे कि हिम्मत बस्तः गर्दद।
अगर खारे बुवद गुल्दस्तः गर्दद॥

(सामने से जीवन को आते देख) ये कहा की आफत आई। इस वक्त ये मुझ से यहा आने का सबब दर्याफ्त करेगा तो मै इससे क्या जवाब दूगा। अच्छा देखो, इसे बातों में लगाता हूँ। (१)

---

(१) रणधीरसिह सोने के मकान में पधारे अब मैं अपनी प्यारी मनमोहिनी के पास जाता हूँ। (कुछ ठैर कर) आज तो हमारे स्वामी शिकार के मैदान से एक नया पछी (रिपुदमनसिह) लाये थे देखें इसका क्या ढंग रहे। चौबे जी तो सवा पा घृत के सीधे में भरपाई कर देते हैं, परतु हमारे मन की इच्छा कभी पूरी न हुई हमारी जात के लोग हजारों का लाभ उठाते हैं पर हमारे मद भाग्य से हमको ऐसा मालिक मिला है जिसकी चीज वस्तु में छूट तक नहीं लगती, आदर बहुत, सत्कार बहुत, देने लेने के नाम कौडी नहीं। हमारी प्यारी के वास्ते प्रति दिन आभूषण चाहिये, कुटुम्ब का खर्च जुदा सिर पर फिर रहा है। सबधियों के विवाह में न जाँय तो यों नाक कटी, दो दिन पीछे लडकों को पाठशाला में बिठाना, भाजी को भात देना, उधार

जीवन—(पास आकर) ये कौन ! लाला सुखवासीलाल जी !

सुखवासीलाल—हाँ भाई, मै तुमसे तखिलये में गुफ्तगू करने का

मिलता था जब तक हमको कुछ चिंता न थी परतु अब क्या करें (विचार कर) हमने अब तक अपना मतलब निकालने के लिए सैकडों उपाय किये परतु कोई उपाय का बाण निशाने पर न पहुँचा। सच तो ये है कि जब तक इनके पीछे मदिरा और वेश्या का रोग न लगेगा हमारा मतलब निकलना बहुत कठिन है, परतु इनको इस मार्ग में लाने के लिये क्या तजवीज करें क्या हम आप इस विषय मे इनसे कुछ चर्चा छेडें (विचार कर) हमको तो इस विषय में कुछ न कहना चाहिये क्योंकि हमारे कहने से इनके मन पर पूरा असर न हुआ तो आगे को बड़े बिगाड की सूरत पैदा होगी। मन पर असर होने की यह रीति है कि मनुष्य का मन अचेत दशा के सिवाय हर पल किसी न किसी बात के विचार में लगा रहता है और उसका मुख्य ये काम है कि अपने मे सबध रखनेवाली सब बातों के लिए कुछ न कुछ राह निश्चय करता रहे। जब राह निश्चय हो जाती है तो मनुष्य उसी के अनुसार बरताव करता है, जैसे कि मूखों की राह मजबूत नहीं होती, इस कारण उनके कामों में अकसर बखेडे रहते हैं, परतु यहा हमको इस बात के खूलासा करने से कुछ मतलब नहीं है, जिस समय मनुष्य का मन किसी बात के विचार में लगा हो और वो उसके लिए अपनी बुद्धि से किसी तरह की राह निश्चय कर चुका हो उस समय उसका कोई विश्वासपात्र मनुष्य उसके विचार में खास अपने मतलब बिना उसकी राह से मिलती हुई बात कहे तो उस बात के सुननेवाले के मन में पूरा असर होता है परतु इन बातों में जितना अतर पडता जायगा सुननेवाले के मन का असर बदलता चला जायगा। इस वास्ते सब मनुष्यों को बात कहने से पहले इन सब बातों का विचार करना चाहिये सो मै आप विचार करता हूँ तो मुझको रणधीरसिंह के मन में मदिरा और बेश्या की अत्यत

कई रोज से मौका देख रहा था अच्छा हुआ तुम यहाँ मिल गये। कहो तुम्हारा मिजाज तो खुश है ? (१)

जीवन—आप की दया से।

सुखवासीलाल—देखो जरा दूरदेशी को काम में लाओ। नौकरी की जड जमीन से सवा हाथ ऊची है, इसके ऊपर नाज करना दानिश्मद का काम नहीं। तुम नाहक महनत करके जान देते हो। मालिक के रोवरू कोशिश और तन्देही करके कारगुजारी दिखलाना, पीछे से दोस्त आश्नाओं में बैठ गुलछर्रे उडाना, बातों बातों में गैरकी कारगुजारी धूल करके अपनी खैरख्वाही जनाना! अरे मिया दौलत बडी चीज है इससे दुनियाँ के सारे काम निकलते हैं देखो जवानी का कमाया जईफी मे काम आयगा ? (२)

अरुाच मालूम होती है फिर मै किस तरह अपने मन का भाव प्रकट करूँ, (बहुत विचार कर) अच्छा कल बाग मं इस पेचदार बात की मिसल बैठाने के वास्ते मै अपनी प्यारा मनमोहिनी को बुलाता हूँ। मुझको विश्वास है कि रणधीरसिह उसको देखते ही एक बार चौकन्ने होकर हिरन् की तरह चौकडी भरेग परतु सभव नहीं जो अत में इसका मोहिनी मत्र उन पर असर न करे। हर काम के आरभ में अनेकानेक विघ्न होते है परतु उपाय और परिश्रम करने से वह सहज में दूर हो सकते हैं। जिस काम में साहस से कमर कसी जाय वह काटा होगा तो भी गुलदस्ता हो जायगा (सामने से जीवन को आते देख) ये कहाँ की आपत्ति आई। ये इस समय मुझसे यहाँ आने का कारण पूछेगा तो मै क्या उत्तर दू गा। अच्छा, देखो बातों मे तो लगाता हूँ।

(१) भाई मै तुमसे एकात में बातचीत करने का कई दिन से औसर देख रहा था। अच्छा हुआ तुम यहाँ मिल गये। कहो तुम्हारा मन तो प्रसन्न है।

(२) देखो कुछ दूर की बातों का विचार करो नौकरी की जड धरती से सवा हाथ ऊची है। इसके ऊपर भूले रहना बुद्धिमान का काम

जीवन—क्या मै रणधीरसिह से बेइमान हो जाऊँ, एक को मालिक बनाकर दूसरे की आस करूँ, झूठी महनत दिखाकर मालिक को धोखा दूँ, मुझसे तो यह नहीं हो सकता। मै तो सच्ची महनत भी नहीं जताया चाहता, जताऊँ क्या ? जिसके अन्न से इस देह का पालन होता है उसके काम में इस देह को लगाना चाहिये, उसके कोसने से मेरा सत्यानाश हो जायगा, आगे को मालिक का नौकरी म मन न लगेगा और य पाप मेरे सिर चढ़ेगा, ना भाई ना। ऐसा काम मुझसे तो नहीं हो सकता, धन की क्या ? जिसके हाथ गया, उसका हो गया, धन के लिए मै अपना धर्म कैसे छोड दूँ।

दांत न थे जब दूध दियो अब दांत दिये कहा अन्न न दैहैं,
जो जल मै थल मै पंछी पशु की सुध लेत सु तेरी हु लैहै।
काहे को सोच करै मन मूरख सोच करे कछु हाथ न ऐहै,
जान कूँ देत अजानकू देत जहान का देत सो तोकु हु दैहै॥१॥

सुखवासीलाल—(मन मे) ये तो उल्टी चाल पडी। (प्रकट) मैने तुम्हारा दिल देखने के वास्ते ये बात कही थी, तुम्हारी राय दुरुस्त है।

जीवन—अच्छा, आप इस अँधेरी में इतनी रात कहाँ चले गये ? आपका घर तो यहाँ नहीं है।

नहीं। तुम नाइक महनत करके जान देते हो। मालिक के आगे उपाय और महनत करके कारगुजारी दिखाना, पीछे से यार दोस्तों में बैठकर आनद करना, बातों बातों में दूसरे की कारगुजारी धूल करके अपनी खैरख्वाही (शुभचितकपना) दिखाना। साहब ! रुपया बडी चीज है इससे ससार के सब काम निकलते हैं, देखो जवानी की कमाई बुढापे में काम आती है।

सुखबासीलाल—आज इस महल्ले में एक जगह मशायरा होगा इस वास्ते दो घडी वहाँ जाने का इरादा है ।

जीवन—साहब, मशायरे में क्या होता है ?

सुखबासीलाल—शायर कवि लोग खड़े हो, अपने शेर औरों को सुनाते हैं ।

जीवन—तो मै भी आपके साथ चलूँगा ।

सुखबासीलाल—हमारे नजदीक तो वहाँ तुम्हारी दिल्लगी की कोई बात नहीं है ।

जीवन—कुछ गाठ का तो नही जाता ?

सुखबासीलाल—(मन में) अब इससे क्योंकर पीछा छुडाऊँ । (प्रकट) लेकिन भाई मै तो अभी कई यार दोस्तों से मिलता मिलता कोई रात के बारह एक बजे वहाँ पहुँचूँगा ।

जीवन—(मन में) बनावट की बात में कभी झोल पड़े बिना नहीं रहता । (प्रकट) अच्छा आप यार दोस्तों से मिलने जायँगे, तब तक मै उनके दरवाजे पर बैठा रहूगा ।

सुखबासीलाल—(मन में) अब जिद करने से राज अपशा होता है मगर क्या करें ? (१) (प्रकट) अब तो रात ज्यादा गई किसी रोज श्याम से ले चलकर तुमको वहाँ की सब सैर दिखायगे ।

जीवन—(मन में) ये इनकी आलाटाली है पर अपनी बात का प्रमाण देने के लिये मे इनसे पहले कोई चीज ले लूँ फिर इनके पीछे जाकर इनका सब हाल अपनी आँख से देख आऊगा । (प्रकट) बहुत अच्छा, आप सच कहते हैं, हम लोग मशायरे में क्या समझें । हमको

---

(१) (मन में) अब हट करने से गुप्त भेद प्रकट होता है परतु क्या करें ।

तो आपकी महर्बानी चाहिये। आप चाहें तो एक दिन में हमारा दलिद्दर दूर कर सकते हैं।

सुखबासीलाल—हम तेरी दानाई से निहायत खुश हुए। ले, ये दस रुपये तुझे इनाम तरीक देते है, मगर खबरदार किसी से कुछ जिक्र न हो। (१) (मन में) ये दस रुपये आज नाथूराम से आये थे सो यों चले गये।

जीवन—(रुपये लेकर) भगवान् आपका भला करे, हमारा तो आप पालन करते हो।

[आगे आगे सुखबासीलाल पीछे पीछे जीवन गया]

इति पचम गर्भांक।

प्रथम अंक समाप्त।

———

(१) हम तेरी बुद्धिमानी से बहुत प्रसन्न हुए, ले ये दश रुपये तुझको पारितोषक की भाँत देते है परतु सावचेत, किसी से कुछ चर्चा न हो।

अथ द्वितीय अंक

प्रथम गर्भांक ।

स्थान सूरत का राजमहल ।

(प्रेममोहिनी मालता और चपा का प्रवेश)

प्रेममोहिनी—सखी ! मैंने तेरे कहने से वहाँ जाकर वृथा परिश्रम उठाया, मैं गई जब तो वहाँ किसी का नाम भी नहीं था ।

चपा—मैं क्या करूँ, तुमने चलने मे देर कर दी ।

मालता—(जल्दी से आकर) क्यों राजकुमारी, हमारा वचन कैसा सफल हुआ ।

प्रेममोहिनी—(लजाकर) क्या ?

मालती—तुम्हारी "इच्छा यो हीं रही ।"

चपा—तेरे कहे ।

मालत—क्यों ?

चपा—आज से कल पास है ।

मालती—राजकुमारी के मन से भी पूछा ।

प्रेममोहिनी—(हँसकर) मेरा मन तेरा सा नहीं है ।

मालती—हाँ, मुझको तुम्हारी तरह अपने मन की बात छिपानी कहाँ आती है ।

प्रेममोहिनी—चल हमसे मत बोल, हमको तेरी हँसी अच्छी नहीं लगती ।

मालती—(**प्रेममोहिनी को सुनाकर चपा से**) वसत के आते ही अपनी सेना साथ ले, पाँचों शस्त्र सजा कर विरही जनों को जीतने के लिये कामदेव बडी सजधज से केसर बाग की ओर जाने लगा।

चपा—(**प्रेममोहिनी की तरफ देखकर**) पर मेरे जान तो रति बिना उसकी कोई कामना पूरी न होगी।

प्रेममोहिनी—तुम इन बातों को रहने दो, मैंने तो आज एक ऐसा सुपना देखा है जिसके कारण अब तक मेरी छाती धडक रही है।

मालती—क्या ? क्या ?

प्रेममोहिनी—सूर्यास्त से पीछे जाने से मै एक मनोहर बाग में गई। उसकी शोभा कहाँ तक वर्णन करूँ। उसकी हरियाली देखने से आँखों में तरी आती थी। तरह तरह के पक्षी किलोल कर रहे थे। बरहों में (१) चारो तरफ को जल बहता था। कहीं चद्दर, (२) कहीं फुआरे।

मालती—ऐसी शोभा तो हमने बहुत बार देखी है, आगे क्या हुआ ?

प्रेममोहिनी—(**मन में**) ये नही जानती दूसरे की बात के बीच मे बोलने से उसको कैसा बुरा लगता है। (**प्रकट**) मे ये शोभा देखती हुई आगे बढी तो निर्मल सरोवर के किनारे श्वेत रग का एक बहुत सुदर पक्षी दिखाई दिया। उसके पख चद्रमा से अधिक उज्जल थे। उसको देखते ही मेरा जी ललचाया पर वो दो घटे तक किसी तरह मेरे हाथ न आया। अतमे जब वो इश्कपेचे की बेल पर जाकर बैठा तब मुझको उसके पकडने का समय मिला और वो भी निडर हो मेरे हाथ पर आ बैठा।

---

(१) खेतों या बागों में सिचाई के लिए बने नालों में।

(२) तेज बहाव में वह अश जिस की सतह कभी २ बिल्कुल समतल हो जाती है।

चपा—तुम्हारे कमल से हाथ पर हस सरीखा वो पक्षी बहुत अच्छा दिखाई देता होगा।

मालती—भला फिर ?

प्रेममोहिनी—फिर मै उसे लेकर महल में चली आई पर उसने किसी तरह के चुगे (१) पर चोंच न डाली !

मालती—(हँसकर) वो भी रणधीर की तरह स्त्रियों से लजाता होगा।

प्रेममोहिनी—चल आगे सुन, जब उसने किसी तरह के चुगे पर चोंच न डाली तो मुझको उसका मोती सा रग देख, हसों के मोती चुगने की याद आई। मैने उसके आगे बहुत से मोतियों का ढेर लगा दिया और वो उनको चुगने लगा।

चपा—मोती चुगने से ही उसका रग मोती सा चमकता होगा।

मालती—सखी ! इनके कोमल हाथ से भोजन करने को किसका जी न ललचेगा।

प्रेममोहिनी—अब उसके ऊपर मेरी प्रीति बढने लगी। उसको पल भर न देखती तो मेरा जी व्याकुल हो जाता।

चपा—आगे ?

प्रेममोहिनी—एक दिन मैं उसको सीस महल में छोडकर स्नान करने गई थी पीछे से किसी दुष्ट ने उसकी सकल खोल दी और वो निर्मोही प्रेम का तिनका तोडकर उसी समय मानसरोवर को चला गया।

मालती—परदेशी की प्रीति का ये ही तो दुःख है।

प्रेममोहिनी—सखी ! मै उसके वियोग मे रोते रोते बेसुध हो गई पर वो फिर मेरे पास न आया, हा, इस दुःख से मेरी आँख खुल गई तो मुझको ये बात सुपने की मालूम हुई परतु उस (हस) का ध्यान मेरे मन से न हटा।

---

(१) चारे

मालती—राजकुमारी ! तुम उसकी याद भूल जाओ। सुपने की बात पर इतना मन लगाओगी तो काम कैसे चलेगा।

प्रेममोहिनी—सखी ! किसी बात की याद भूलना क्या अपने हाथ है ? जैसे सची प्रीति अलग रहने से बढ़ती है इसी तरह जिस बात को मनुष्य भूला चाहता है वो अधिक याद आती है और तुमने सुपने की बात जताकर मन समझाने के लिए कहा सो ससार भी तो एक स्वप्न है इसमें स्वप्न से अधिक तुमको क्या दिखाई देता है।

मालती—सखी ! तुम्हारी विद्या के आगे मेरी बुद्धि नहीं चलती पर तुम्हारा मन बहलाने के लिए मैंने ये बात कही थी।

चपा—चलो राजकुमारी सॉझ हो गई, आपके पिता महल में पधारे होंगे।

प्रेममोहिनी—अच्छा सखी चलती हूँ। (मन में) देखें इस सुपने का क्या फल होता है। (सब गईं)

इति प्रथम गर्भांक

———

द्वितीय गर्भांक

स्थान—केसरबाग

(बीच मे एक सरोवर है, उसके किनारे रणधीर, रिपुदमन, सोमदत्त, नाथूराम, सुखबासीलाल कुर्सियो पर बैठे हैं, जीवन रणधीरसिंह की कुर्सी के पीछे खड़ा है।)

रणधीर—देखो, वृक्षों में नई नई कोंपल आने लगी। इनके देखने मात्र से वसत का आरभ जाना जाता है।

रिपुदमन—जैसे इन वृक्षों के फूलने से बसत ऋतु जानी जाती है, वैसे ही मनुष्य की बुद्धि से उसका होनहार भी मालूम हो जाता है।

सुखबासीलाल—बेशक, अब से बारिश के आसार पाये जाते हैं, और गुल के बाद समर आता है।

रणधीर—देखो, इस सरोवर के निर्मल जल में रग रग के कमलों की झाँई कैसी सुदर दिखाई देती है।

चौबे जी—(जल्दी जल्दी आकर सोमदत्त से) आज हमे कौन सो चद्रमा है ?

रणधीर—क्यों, क्या हुआ ?

चौबे जी—(बैठकर) भयो का, मेरो माथो ! मैंने पहले बहुत से पेडन सों छत्ता तोर तोर के सहत खायो हो, वाही लालच से आजहू एक पेड पै चढ गयो पर न जानें वो कैसो नसा उतार सहत हो, जाइ मोमैं डारत ही मो चिपचिपावे लगो और जी मिचराइ कै उल्टी आई गई। (१)

रणधीर—हमने आती बार रास्ते में एक वृक्ष पर गोंद बहते देखा था, कहीं तुम उसको तो शहत नहीं समझे हो ?

चौबे जी—ठीक है, गोंदई होइगो।

रणधीर—तो तुमने विचार कर हाथ क्यों नहीं डाला ? रूप मिलने से सब चीज एक सी नहीं होती ! (२) देखो, पन्ना और हरे काँच का रूप एक सा है पर उनके मोल में बडा अतर है।

रिपुदमन—(चौबे जी से) आपने रास्ते में अपनी पोटली कधे पर क्यों डाल रखी थी ?

---

(१) हुआ क्या मेरा सिर ! मैंने पहले बहुत से वृक्षों से छत्ते तोड तोड कर शहत खाया था। इस लालच से आज भी एक वृक्ष पर चढ गया परतु न जाने वो कैसा नशा उतार शहत था जिसके मुँह में डालते ही मुँह चिपचिपाने लगा और जी मिचलकर उलटी आ गई।

(2) मिलाइये–Everything that glitters is not gold.

चौबे जी—टटूआ पै मेरे बैठे पीछे पुटरिआ को बोझ कैसे धरतो ?

सोमदत्त—महाराज ! इनकी जन्म पत्रिका में ही ऐसा जोग पडा है।

रणधीर—मुझको ज्योतिष में फलादेश के बदले गणित पर अधिक विश्वास है।

सोमदत्त—क्यों ?

रणधीर—फलादेश की विधि पूरी नहीं मिलती।

सोमदत्त—ये बताने वाले का दोष है।

रिपुदमन—बतानेवाले क्या करें ? इस देश में अच्छे गुण छिपाने की ऐसी चाल है कि गुरु मरते मरते मर जायँ पर अपनी निज विद्या अपने शिष्यों तक को न सिखावें। इसका मूल स्वार्थपरता है, इसी से यहाँ की विद्या नष्ट हो गई।

सोमदत्त—आप को ज्योतिष में कुछ सदेह हो तो मुझसे प्रश्न करिये।

रणधीर—आज यहाँ क्या होगा ?

सोमदत्त—(विचार कर मन में) इस समय के देश काल से तो इस प्रश्न का कुछ मेल नहीं मिलता परतु शास्त्र के अनुसार कहने में हमको क्या दोष है ? (प्रकट) महाराज ! लग्न की सधि से इस समय कुछ निश्चय तो नहीं हुआ पर इस प्रश्न में शुक्र पचमेश होकर लग्नमे लग्नेश से मिलता है इस कारण इसके अनुसार तो यहाँ आप का किसी वेश्या से मिलाप होना चाहिए।

सुखवासीलाल—(मन में) वाह ! नजूम भी मुफ्ताति-उलकजा है। (१)

रणधीर—इन बातों ने तो फलादेश से मेरा विश्वास उठा दिया।

चौबे जी—महाराज ! इनकी विधि तो मिल गई।

---

(१) वाह ! ज्योतिष भी होनहार की तालो है।

दोहा—गणिका गणिक समान है, निज पंचांग दिखाय।
जन मन मोहन धन हरण, बिधिने दिये बनाय॥

फिर आप बातें नाहि इनते मिला लिये। (सोमदत्त की तरफ देखकर) आप की बिध को तो भोरे बनियान को भलो भरोसो होइ है। (१)

सोमदत्त—अजी, उनकी कुछ मत कहो, वे अपने मतलब में बड़े पक्के होते हैं। हमारे मामा के एक बड़े साहूकार की जीविका थी पर उससे उनको जन्म भर में एक कपर्दिका भी नहीं मिली! और कहाँ तक कहें, एक बार सब घरकों ने महाभारत की कथा सुनी थी परतु भेंट पूजा का क्या काम। जब कथा पूरी हुई तो हमारे सामने उदास होकर बैठे सेठ जी से पूछा "आप इसका कुछ अर्थ समझे" सेट जी ने कहा "हाँ, मरते मर जाना पर एक कौडी न देनी।"

रिपुदमन—कचन के स्थान मे मूसा बिल ही ढूँढता है।

नाथूराम—ना, अन्नदाता! आपनै इणतरा फुर्माणो जोग नहीं। शगरी जाता मै शगरी तराका आदमी हुवै छै, इयाई म्हारी जात मैं भी कोई कुपातर निकल गयो तो काई एकरे कारण शगरो देश खोटो हो जासी। (२)

सुखवासीलाल—तुम्हारे फदे से खुदा बचावे।

---

(१) महाराज! इनकी विधि तो मिल गई। (दोहा) फिर आप उसमें नहीं इनसे मिला लिये (सोमदत्त की तरफ देखकर) आप की विधि का तो भोले बनियों को अच्छा भरोसा होता है।

(२) ना अन्नदाता, आप को इस तरह फर्माना मुनासिब नहीं। सब जातों में सब तरह के आदमी होते हैं, इसी तरह हमारी जात में भी कोई कुपात्र निकल गया तो क्या एक के कारण सब देश बुरा हो जायगा।

नाथूराम—म्हारो फदो काई छै ? (१)

सुखवासीलाल—कर्जदार, जो लोग इसमें फँस जाते हैं उनका दिल ही जानता होगा।

नाथूराम—म्हे काई कोई नै देवा जावा छा, इण फन्दारा पासा तो घणासा खोटा चाला अथवा खोटी बडाईरा लोभरो अणहूनो खर्च छै। (२)

रणधीर—तुम लोग और बातों में चाहे जैसे हो, परतु बिना विद्या नये रोजगार से दौलत पैदा करने की हिम्मत तुम्हारे साथ में किसी को नहीं होती ! इस कारण पुराने धंधे में बहुत लोगों को एक रीति होने से तुम लोगों का नफा तो प्रतिदिन निःसदेह घटता जाता है।

(सरोजनी वेश्या का प्रवेश)

रणधीर—(मन में) ये तो पडित जी के प्रश्न मिलाने को आ पहुंची। इस समय मुझको अपने विचार पर दृढ रहना चाहिये।

नाथूराम—(मन में) काई फुटरो रूप छै ! (३)

सुखवासीलाल—(मन में) इसको देखते ही मेरे जिस्म में ताजी जान आ गई। ओहो ! आज इसने क्या नफीस पोशाक पहनी है। इसकी पुरपेच जुल्फें दिल को बेताब किए डालती है, मगर ऐसा न हो कि बेहोशी की हालत में कहीं मेरी जुबान से कोई राज की (भेद) बात निकल जाय।

सरोजनी—(मन में) मै दूसरे के कहने से यहाँ आई हूँ। परतु इस गबरू जान को देखकर तो मेरा मन आप से आप इसके आधीन हुआ जाता है। (प्रकट में रणधीर से लज्जित होकर) राजकुमार—

---

(१) हमारा फदा क्या है !

(२) हम क्या किसी को देने जाते हैं। इस फदे के फाँसे तो बहुधा दुर्व्यसन अथवा झूठी बडाई के लालच को फिजूलखर्ची है।

(३) कैसा सुदर रूप है।

रणधीर—सुंदरी ! तुमको कहना हो सो डर छोडकर कह दो, परतु मेरा स्वभाव तो तुमने सुना होगा।

सरोजनी—मै कुछ धन दौलत नही चाहती। मै तो बहुत दिन से आ.. प ..प ..। (**आँख नीची कर ली**)

रणधीर—(**मन में**) ये इन लोगो के फुसलाने का ढग है। (**प्रकट**) नहीं ऐसो बातों की चर्चा यहाँ मत करो। म अपना स्वभाव तुमको पहले जता चुका हूँ।

सरोजनी—(**मन में**) अब दबाकर कहने से जिद बढेगी। (**प्रकट में पहले** वचन को पूरा करती हुई) मे बहुत दिन से आप को अपना गुण दिखाया चाहती हूँ।

सुखवासीलाल—(**मन में**) नए पछी को जाल में फँसाने के वास्ते इसने खूब ल्हासा लगाया।

रणधीर—(**मन में**) न मेरी इन बातों मे रुचि, न ये काम मेरे करने लायक, मे अब तक एकात के सहारे बचा हूँ। नहीं तो कुसग से बड़े बड़े तपस्वियों का तप भग हो गया तो मेरी क्या गिनती है। वेश्या की प्रीति धन के लालच से बताते है इस वास्ते ये कुछ ले तो कुछ देकर पीछा छुडाऊँ। (**प्रकट**) बस, सुदरी क्षमा करो। काजल की कोठरी में गये पीछे किसी के स्याही लगे बिना नहीं रहती। हाँ, तुमको कुछ धन का लालच हो तो कह दो।

सरोजनी—मै तो रूपरस की भूखी हूँ।

रणधीर—सो यहाँ न मिलेगा।

सरोजनी—हे राम !

सोमदत्त—स्वर्ग में अर्जुन ने उर्वशी का निरादर किया तब उर्वशी का भी ये ही हाल हो गया था !

सुखवासीलाल—(**धीरे से सुनाकर**) ए तेरी शान !

रणधीर—**क्या है** ?

सुखवासीलाल—कुछ नहीं। जिसके दरवाजे से आज तक कोई नाउम्मेद होकर नहीं गया, उसके दरवाजे से आज ये बदबख्त मायूस (निराश) होकर जायगी।

रणधीर—कोई जीते जी स्वर्ग जाने का मन करे तो कैसे जाय?

रिपुदमन—(मुसकुराकर) जैसे विश्वामित्र के बल से त्रिशकु गया।

रणधीर—(हँसकर) आपको सब सामर्थ्य है!

रिपुदमन—चतुर जनों को प्रमाण पाये बिना कोई बात मुख से नहीं निकालनी चाहिये।

रणधीर—(हँसकर) अच्छा, मेरी अंगूठी आप के पास थी सो कहाँ है?

रिपुदमन—ये रही। (अँगुली से अँगूठी उतारती बार रणधीर के बदले अपनी अँगूठी देख, देता रह गया।)

रणधीर—लाइये, लाइये।

रिपुदमन—आप मेरी अँगूठी दिखा दोगे तब मैं आप की अँगूठी दिखाऊँगा।

रणधीर—ऐसे बहानों से काम नहीं चलता। देखो आपने जिसको मेरी अँगूठी दी थी उससे मेरे पास आ गई (अपनी अँगूठी दिखाई)

रिपुदमन—(हँसकर) अच्छा, इससे तो उसके साथ आप की प्रीति भी पाई जाती है।

रणधीर—निःसंदेह।

रिपुदमन—तो फिर चिंता नहीं। "समानशीलेन सख्यित्वमस्ति"

सुखवासीलाल—(मन में) इन लोगों की दिल्लगी में मेरा मतलब फौत हुआ जाता है। (पंडित जी से धीरे धीरे) इसमें और तो कुछ नुक्स नहीं, लेकिन ये कम्बख्त खाली जायगी तो तमाम शहर में बदनामी फैलायगी।

रणधीर—(सुनकर) अच्छा, इसको कुछ दे दो।

सरोजनी—मै कुछ नहीं चाहती, मेरा एक मुजरा हो जाय।

सुखवासीलाल—(धीरे) जब आपको देना मजूर है तो इसकी राजी के वास्ते घडी भर गाना सुन लीजिये।

रणधीर—ना ना, मै अपने समय को कभी ऐसे कामों में नहीं खोया चाहता। बस, आग से घी का अलग रहना ही अच्छा है।

सुखवासीलाल—क्या साप के पास रहने से उसकी मणि को ऐब लगता है ?

सोमदत्त—कभी नहीं।

संग दोष ते साधु जन, परत न दूषण मांहि।
विषधर लिपटे रहत तउ, चदन मै विष नाहिं॥

चौबे जी—हाँ ब्यारते कहूँ पहार उडैं हैं। (१)

रणधीर—(मन में) ये खुशामद मेरे लिये मीठा विष है। इसी के भुलावे में आकर बहुत से धनवान नष्ट होते हैं, अपना निज रूप भूल जाते हैं और हितकारियों के बचन कडुए लगते हैं। मैं ऐसा रोग अपने पीछे नहीं लगाया चाहता। इससे जुए के नफे की भाँत कभी सुख नहीं मिलता। खोटे लोगों की सगति से तो एकात में रहना हर भात अच्छा है। (प्रकट) आज तुम बिना पूछे राह क्यों देते हो ?

सुखवासीलाल—(हात जोड़कर) कसूर माफ, जब हजूर अपने दिल को घडी भर के वास्ते कायम नहीं रख सकते तो ता हयात उसके मुस्तहकिम रहने की क्या उम्मेद ? (२)

रणधीर—जो मैं किसी के कहने से अपना विचार बदल डालूँ तो तुम्हारा कहना सच्चा हो।

---

(१) कहीं पवन से पर्वत उड़ते हैं।

(२) अपराध क्षमा, जब आप अपने मन को घडी भर स्थिर नहीं कर सकते तो जन्मभर उसके दृढ़ रहने की क्या आस।

रिपुदमन—इससे तो आप किसी की अच्छी बात भी न मानेंगे।

रणधीर—अच्छी बात जरूर मानेंगे, पर किसी के कहने सुनने से नहीं, हमारी राह में अच्छी होगी तो मानेंगे।

सरोजनी—(**आँखो में आँसू भर कर, दाहना हाथ छाती पर धर**) ससार में मेरे बराबर दुःखिया कौन होगा! मुझको अपनी मौत भी मागी नहीं मिलती। न जाने मैं कौन से पापों का फल भोगती हूँ। देखो! मैने पहले तो स्त्री का चोला पाया, फिर उसमें पति-सेवा का बडा धर्म था सो मेरे हाथ न रहा। जिस काम से मेरी जीविका हुई, इसमें कोई सज्जन मनरजन मुझको न मिला और दैवयोग से दशहरा के नील-कण्ठ की भाँत एक दिखाई भी दिया तो उसका मिलाप कठिन हो गया। मैंने अपनी लाज छोडकर अपने मुख से कहा तो भी उसने कुछ न सुना। हाय! दुःखिया को सब जगह दुःख है!

चौबेजी—(**भोले भाव से**) नीलकठ के लिए इत्ती फिकर मत करो। देखो, मैंने बडी कठिनाई सै एक पिडुकिया पकरी ही सोहु दो तीन दिन रहकै आप ते आप उड गई। अपन को पछी पखेरू ते लहनो नाय हैं। (१)

(**सब हँसने लगे**)

रणधीर—(**मन में**) वेश्या की बात का भरोसा न करना चाहिये पर इसके मन में कुछ न कुछ दर्द तो पाया जाता है। (**प्रकट**) ऐसी बातों में कुछ सार नहीं। आँसू डालकर धिक्कार सहना, दुर्लभ चीज के लालच से दुर्लभ देह को जोखों में डालना, तीस रात जग कर पल भर

---

(१) (**भोले भाव से**) नीलकंठ के लिए इतना फिकर मत करो। देखो, मैंने बड़ी कठिनता से एक गुरसल पकड़ी थी सो भी दो तीन दिन रह कर आप से आप उड गई। अपने को पक्षी, पखेरुओं से लहना ही नहीं है।

का सुख भोगना, जिसमें भी मिलाप हुआ तो थोथा लाभ, न मिलाप हुआ तो थोथी महनत। बुद्धि बेच कर मूर्खता खरीदनी, अथवा मूर्खता के आगे बुद्धि से पानी भराना, ऐसी प्रीति का फल है।

सुखवासीलाल—हजूर, इन जरा जरा सी बातों पर इतना माम्मुल करेंगे तो काम क्यों कर चलेगा? (१)

रणधीर—दोष छोटे से छोटा और गुप्त से गुप्त बनकर मन में प्रवेश करता है परतु प्रवेश पीछे दृढ़ हो जाता है इस कारण इसको कभी छोटा न गिनना चाहिये।

सोमदत्त—(रणधीर से) आप के मन मे इतनी अरुचि है, तो क्या घडी भर में आप का मन बदल जायगा?

रणधीर—जब आप भी ये बात कहने लगे तो मै लाचार हूँ पर और लोग सुनेंगे तो क्या कहेंगे?

रिपुदमन—किसी के भय वा प्रीति से धर्म छोडना अच्छा नहीं, क्योंकि वो भय और प्रीति घट जायगी, तब अपने मन को अधर्म से रोकने का कुछ हेतु न रहेगा इस कारण अपना धर्म विचार कर अपने मन को अधर्म से रोकना चाहिये।

सुखवासीलाल—(रिपुदमन से) ऐसी बातों का खयाल करें तो दुनियाँ में पैर रखने की जगह न मिले।

रणधीर—चलो, सब बखेड़े को दूर करो, विवाद करने से क्या लाभ।

सुखवासीलाल—(सरोजनी से) जल्हदी अपने सफरदाइयों को बुला। (मन में) आखिरकार पिगले, कहिये अब इनकी वो तेजी कहाँ है!

---

(१) प्रभु, इन जरा जरा सी बातों में इतना विचार करेंगे तो काम कैसे चलेगा।

(सरोजनी नाचकर ताल से गाने लगी)

"यद्यपि हम अबला नृप नंदन, नीच जाति सब भांति।
पै लग जाय प्रीति उर जासों हाथ बिकाति॥
अति निर्दई हृदय स्वारथ रत, सब दिन चलैं अनीती।
पै हिय कपट न राखैं तासों, बांधैं जासों प्रीती॥
हम तिय नीच मीच की मूरत, सदा असाचहि भाखैं।
पै लग प्रीति करैं हम जासों, तिहिं तन मन दे राखैं॥
पति, पितु, पुत्र, बधु, परकर जन, रहैं सबनते न्यारी।
पै कछु बीच न राखैं तासों, बांधें जासों यारी॥
हमते नीच न जग नृप नंदन, तुमते ऊँच न कोई।
पै हिय प्रीति तोल जो देखो, गरू हमारी होई॥"

नाथूराम—या तो बाट ताखडी लार म्हारोई काम खोसवा लागी, आच्छी आडै पालडै तोलश्या (१)।

दूसरा छंद।

जिन, जिन प्रेमिन केर जगत मैं, सुनियत बड़ी बड़ाई।
तिन, तिन मैं विचार जो देखो, सबमैं एक खुटाई॥
हिम तन दहै न कहै कबहुं कछु, पुनि तिहि लख सुख मानै।
ऐसी पीर कमल के मन की, कहो भानु कहा जानै॥
तरसत रहत दरस बिन पाए, नित ताकत तिन पांहीं।
अस चकोर की प्रीति चन्द्र के, नैक चुभी चित नाहीं॥
घुमड़ी घटा देख प्रीतम की, नाचत दादुर मोरा।
तिनकी ओर तनक नहिं ताकै, ऐसो मेघ कठोरा॥
पिउ, पिउ करत पपीहा अपनों, प्राण त्याग कर दीन्हों।
पिउ के जीव दया नहिं आई, बर पातक शिर लीन्हों॥

(१) ये तो बाट तराजू लाकर हमारा ही काम छीनने लगी, अच्छा खड़े पलक से तोलेंगे।

सर्बस त्याग परी तिहिं के बश, छांड़त नहिं दिन राती।
ऐसी प्रीति मीन की देखत, जल की फटी न छाती॥
जात पतङ्ग समीप दीप के, जरत परत तिहिं मांहीं।
ऐसी प्रीति निहार दीप कै, भई दया कछु नाहीं॥
ऐसी बहुत प्रीतिवालन की, देखी चाल अधीरा।
एकै प्राण देत तिहि ऊपर, एक न जानत पीरा॥"

चौबे जी—(सरोजनी से) तुम्हारो शरीर सिथलसो दिखाई देहै सो का तुमारो पाऊ भारी है ?

सरोजनी—(हसकर) हा बेटा, होगा।

नाथूराम—(सरोजनी से) थारी जोडी कठै छै ? (१)

सरोजनी—(रणधीर की तरफ देखकर) ये रही, पर आप की किसके पास है।

(सब हंसने लगे)

रणधीर—माफ हो गई, जिसको स्नान ध्यान करना हो, कर आओ। हम इतने रिपुदमन सिह के साथ बाग की सैर करते हैं। फिर यहा से भोजन करके मकान को चलेंगे।

(सब उठ खड़े हुए)

इति द्वितीय गर्भांक।

———

(१) (सरोजनी से) तम्हारी जोड़ी कहा है।

अथ तृतीय गर्भांक।

स्थान, केसरबाग का एक विभाग।

(अगूर की टट्टियों के ओझल, एक पुरुष सरोजनी की गलबाँही डाले खड़ा है।)

[रिपुदमन और रणधीर वहाँ आते हैं]

रणधीर—देखो साझ होते ही चकवे चकई का वियोग हो गया।

रिपुदमन—और सूर्य के विरह से कमलनी कुम्हला गई। पक्षी अपने अपने बसेरे को चले। कुमोदिनी वासकसय्या की तरह चद्रमा की बाट देखने लगी। और—

रणधीर—(**चौककर**) देखो तो, इन टट्टियों के पीछे से किसी मनुष्य की आवाज आती है!

रिपुदमन—हाँ, आती तो है, पर समझ मे नहीं आती। चलो पास चलकर सुने।

टट्टी की ओझल वाला पुरुष—(**इन्हे देख सरोजनी से**) हैं! रणधीर और रिपुदमन तो यहाँ आ पहुँचे। अब मै यहाँ ठहरूँगा तो ऐठे का चोर बन जाऊँगा। तुम इनके आगे मेरा नाम न लेना। अधेरे के पर्दे से ये मेरा मुँह नही देख सकते। **(नेपथ्य की तरफ दौड़ा)**

रणधार—(**उसे जाता देख**) ये तो अपने ही साथ का कोई आदमी है। इसने अपने यहाँ की वर्दी पहन रखी है, इसे जरूर पकडना चाहिये।

रिपुदमन—मै चला। (**उसके पीछे पीछे नेपथ्य में जाता है।**)

रणधीर—(**आगे बढ़ कर सरोजनी से**) ये कौन था?

सरोजनी—मैने नहीं पहचाना। इसने अभी आकर मुझसे कुछ कहा था पर मैंने उसकी बात पूरी नहीं सुनी। इतने में वो किसी की आवाज सुनकर इधर को दौड़ गया।

सोमदत्त—(आकर इनको बतलाते देख मन में) ये कौन ! रणधीर और सरोजनी ! तो क्या हमको दिखाने ही के लिए ब्रह्मचर्य था ! भला इनकी थोडी सी बातें सुन लें, किसी समय कहने के काम आवेंगी। (वृक्ष की ओट में बैठ गया)

रणधीर—क्या तुम इसी (बनावट रूपी) मोम के फूल पर (मेरे मन रूपी) ऐसे चचल भौरे को लुभाया चाहती हो ?

सरोजनी—ना ! इसके लिए तो मेरा हृदय कमल हाजिर है।

सोमदत्त—(मन में) अब हमको किसी तरह का सदेह नहीं रहा, पर बड़े आदमियों के दोष देखने में सदा प्राण का भय रहता है, इस कारण इस समय यहाँ से टल जाना चाहिये। (जाने को तैयार हुआ)

रिपुदमन—(आकर, हास्यपूर्वक रणधीर से) क्या इसी एकात मिलाप के लिए आपने मुझको भेजा था ? तो मेरी भूल हुई जो मै जल्दी आया।

रणधीर—हँसी की बात पीछे करना, पहले उस पुरुष का हाल कहो।

सोमदत्त—(मन में) इन दोनों की एक मट मालूम होती है।

रिपुदमन—मै गया जब वो बहुत दूर निकल गया था, इस कारण हाथ नहीं आया। पर मैंने बरछे की थोडी सी गीली मट्टी फेंककर उसके अगरखे मे दाग लगा दिया है। इसमें अब वो नहीं छिप सकता।

सोमदत्त—(मन में) इसमें तो कुछ और ही भेद मालूम होता है, क्या ये मतवाले हाथी की तरह इस समय जिसको देखेंगे, मार डालेंगे।

रणधीर—(सरोजनी से) तुम उसका पता बता दो तो सब सदेह मिट जाय।

सरोजनी—मैने पहचाना होता तो मैं आपसे कभी नहीं छिपाती।

सोमदत्त—(मन में) भला इन दोनों में से किसी ने उसको नहीं पहचाना तो सरोजनी कैसे पहचान लेती।

रिपुदमन—(रणधीर से) ये कहो चाहे न कहो, वो अंगरखे के दाग से जरूर पकडा जायगा।

रणधीर—तो चलो, उसका पता लगावें। (आगे बढ़े)

सरोजनी—(मन में) मेरे मन में बालकपन से सुख भोगने की बडी लालसा थी। इसी लालच से मैंने अनेक पुरुषों को रिझाया, बहुत सा धन इकट्ठा किया, अनेक तरह से इंद्रियों को सुख दिया पर अब तक मेरे मन की लालसा पूरी न हुई। मेरे मन को क्षण भर सुख न मिला, मेरे मन का लालच प्रति दिन बढ़ता रहा। मैं चाहूँ तो अब भी बहुत लोगों को रिझाकर धन इकट्ठा कर सकती हूँ पर करने से लाभ क्या? इनसे सुख होता तो अब तक क्यों न होता। जो सुख इन चीजों से स्वप्न में दुर्लभ था सो आज रणधीरसिंह के देखने से पलभर में मिल गया, निःसंदेह मिल गया। पर क्यों? रणधीरसिंह भी तो एक मनुष्य है—मनुष्य है परंतु मैं उसको मन से चाहती थी, मन का सुख ऊपर की बातों से कभी नहीं होता।

(गई)

रणधीर—(चलते चलते) इस समय मेरे मन में अनेक तरह के संदेह उठते हैं। कहीं चौबे जी को रास्ते में इसी कारण देर लगी हो, अथवा पंडित जी ने जान बूझ कर इसके आने की विघ्न मिलाई हो, अथवा सुखवासीलाल ने मुझको जाल में फँसाने के लिये ये चाल चली हो, अथवा इन सबने मिल मिलाकर ये करतूत रची हो कुछ नहीं जाना जाता। जब तक चोर न मिलेगा, मेरे चित्त की शांति न होगी।

रिपुदमन—जैसे दूध को आग पर रखते ही उफान आता है तैसे मनुष्य का मन ऐसी बात जानने से एक बार चंचल हो जाता है परंतु दूध के उफान की भाँत ये चंचलता थोडी देर की है। जो लोग इस (चंचलता) के बस होकर आपे से बाहर हो जाते हैं, दूध की तरह उनका पता नहीं लगता। इस कारण आप से बुद्धिमानों को वो चंचलता दूर हुए पीछे अपने हानि लाभ का विचार करना चाहिये। आप इस समय इस बात

को पी जाओ, सबके आए पीछे अचानक उनके अगरखे को देख कर निश्चय कर लेंगे।

(दोनों कुर्सियों पर बैठ गए)

सोमदत्त—(मन में) जो मै उस समय इनको पापी समझ कर चला जाता तो कैसी भूल होती ? मनुष्य को सब काम विचार कर करना चाहिये। (आगे बढ़ कर प्रकट) महाराज अब तक और लोग नहीं आए ?

रणधीर—(उदास भाव से) आते होंगे। (सोमदत्त बैठ गया)

चौबे जी—(झूमते झूमते आकर मन में) आज तो सरोवर में भले न्हाये ! भाग के जोर से जा समें सरीर सन्न सन्न कर रह्यो है। चलो लड्डुआ निधान के पास चलके भोजन की ठैरावे। का मोए भोजन के लिये कोऊ टेरे है ? अच्छी आयो। (रणधीर के पास जाकर) धरम्मूरत मैं तो आवैई हो। (१)

रणधीर—(अरुचि से) बैठ जाओ।

चौबे जी—(भोजन की आज्ञा समझकर) पातर कहाँ है।

रिपुदमन—(पातर का अर्थ वेश्या समझकर) आपका अब तक जी नहीं भरा ?

चौबे जी—कोरी बातन ते जी भरत होइगो ?

रिपुदमन—तो उसका क्या करोगे ?

चौबे जी—जो सब करत हैं। (बैठ गये)

रणधीर—(मन में) इन बातों से बढ़कर और क्या प्रमाण होगा।

(सुखबासीलाल और नाथूराम का प्रवेश)

---

(१) (झूमते झूमते आकर मन में) आज तो तालाब में अच्छे नहाए। भंग के जोर से इस समय शरीर में सन्नाटा हो रहा है। चलो लड्डुआ निधान के पास चलकर भोजन की ठैरायें। क्या मुझको भोजन के वास्ते कोई पुकारता है ? अच्छा, आया (रणधीर के पास जाकर) धर्ममूर्ति मै आता ही तो था।

रणधीर—(सदेह करके) तुम इतनी देर से कहाँ थे ?

सुखवासीलाल—सेठ जी ने चौबे जी की भग पी ली इस सबब से कई बार कै कर चुके हैं और अब तक बेहोसी बदस्तूर बन रही है।

रणधीर—(मन में) इन लोगों ने मुझको भुलावा देने के वास्ते ही ये भूलभुलैया बनाई हो तो क्या आश्चर्य !

रिपुदमन—(मन में) नशे से लोग इतना दुख पाते हैं, अचेत हो जाते हैं, पर न जानें क्यों इसका पीछा नहीं छोडते !

नाथूराम—(रोती सूरत बनाकर) बापजी हू तो मारियो गयो कुत्तारी मोत मारियो गयो। म्हारी शगरी उघराणी डूब जासी, नोकर जठारो जठै माल दबा बीमारी पैडी गैणा गाठारो, लेण देण, माल तालरो धदो, आढतियारो काम काज, कुण भुगतासी ? अजी और तो हुई स हुई, पिण म्हारा घरनैं कुण ढाबसी, टाबरानैं कुण परणासी, आबद सै थोडा खर्चरो बनोबस्त कर दियो होतो तो इण बखत काम आतो, पिण (रणधीर की तरफ देखकर) अब तो म्हारी शगरी लाज आपनैं छै। (१)

सोमदत्त—गवैया गिरा तो भी ताल सुर से।

सुखवासीलाल—गरीबपरवर ! चौबे जी ने तालाब में आज बड़े बड़े तमाशे किये।

---

(१) (रोती सूरत बनाकर) बाबा मै तो मारा गया, कुत्ते की मौत मारा गया मेरी सब उगाही डूब जायगी, नौकर जहाँ का तहाँ माल दबा बैठेंगे। बीमा (जोखों) की दूकान, गहने गाठे का लेन देन, माल-त्तुजा का रोजगार, आढतियों का काम काज कौन भुगतायगा ? अजी और तो हुई सो हुई, परतु मेरे घर को कौन सम्हालेगा, बालबच्चों का ब्याह कौन करेगा, आमदनी से कम खर्च का बदोबस्त कर दिया होता तो इस समय काम आता, परतु (रणधीर की तरफ देखकर) अब तो मेरी सब लाज आप को है।

चौबे जी—और अपनी न कहोगे जो पानी में पाव धरत ही कमल की नाल ते डर कर निकर भागे !

रणधीर—(रूखे होकर) क्यों थोथी बातें कहते हो ।

सुखबासीलाल—(मन में) जिस वक्त आदमी का दिल उछाट होता है उस वक्त उसको किसी की बात अच्छी नहीं लगती ।

चौबे जी—अच्छो, मै एक बात और कहलऊँ, फिर बस्स । (विचार कर) बखत पै राड याद ही नाय आवै । (सुखबासीलाल की तरफ देखकर) क्यों जी मै का कह्यो चाहै हो ? जाईबे द्यौ, नाय याद आवै तो न सही पर अब भोजन मै कित्ती देर है । (१)

रणधीर—जरा ठैरो !

चौबे जी—भोजन के लिए तो आप कहोगे जित्ती देर ठैरो रहोंगो पर बामै ते थोरो सो सरोजनी को जरूर दीजो नहि तो वाकी नजर लग जायगी । (२)

रणधीर—(तेज होकर) तुमसे नाहीं कर दी तो भी तुम अपनी दत-कथा नहीं छोडते ।

चौबे जी—अच्छी अच्छी, अब कछू न बोलोंगो पर यहाँ के मालिन को तो कछू न कछू जरूर दियो चाहिये ।

रणधीर—(सुनी बात अनसुनी करके) अच्छा, सब लोग एक एक करके हमारे आगे से निकल जाओ ।

(१) अच्छा, मैं एक बात और कह लूँ फिर बस । (विचार कर) समय पर राड याद ही नहीं आता । (सुखबासीलाल को तरफ देखकर) क्यों जी मै क्या कहा चाहता था ? जाने दो नहीं याद आती तो न सही, पर अब भोजन मे कितनी देर है ?

(२) भोजन के वास्ते तो आप कहोगे जितनी देर ठहरा रहूँगा परतु उसमें थोडा सा सरोजनी को जरूर देना, नहीं तो उसकी नजर लग जायगी ।

चौबे जी—(आश्चर्य से) जाते का होइगो ?

रणधीर—सो अपनी आँख से देख लेना।

(सुखबासीलाल, नाथूराम, सोमदत्त और चौबे जी आगे पीछे होकर चलते हैं)

रिपुदमन—(चौबे जी की पीठ पर मट्टी का दाग देखकर) आहा ! इस काम में भी आपने बहादुरी की।

चौबे जी—हाँ तो बहादर बिना बहादरी कौन करै ?

रणधीर—परतु अब तक तुम पुष्प में कीड़े की भात भले छिपे रहे।

चौबे जी—भला समदर की गहराई कौं ऊपर के फिरन हारे खेवट कहा जानैं। (१)

रणधीर—आज तो आप का सरोजनी से बडा गहरा मिलाप हुआ !

चौबे जी—चमक पत्थरते लोह्यो आप मिल जात है। (२)

रिपुदमन—तुम्हारे अँगरखे मे मिट्टी का दाग कैसे लगा ?

चौबे जी—(हँसकर) काहू छोरा छापरेने लगाय दियो होइगो, मै ऐसी बातन कौं का गिनौं हौं !

सुखबासीलाल—(मन में) ऐब करने को भी हुनर चाहिये।

रणधीर—(रिपुदमन से) देखो, पाप सिर पर चढकर अपने आप बोल दिया। (चौबे जी से) बस, अब आप यहाँ से अपने मकान को पधारिये।

चौबे जी—तो का बिना ही भोजन करे चलो जाऊँ ?

रिपुदमन—(रणधीर से) ब्राह्मण का ऐसा निरादर मत करो।

रणधीर—(चौबे जी से) अच्छा भोजन करके चले जाना।

चौबे जी—फिर तो सभी चलेंगे।

इति तृतीय गर्भांक।

---

(१) भला समुद्र की गभीरता को ऊपर के फिरनेवाले मल्लाह क्या जाने। (२) चुम्बक पत्थर से लोहा आप मिल जाता है।

अथ चतुर्थ गर्भांक

स्थान, रणधीर का महल

(बीच में गोल मेज पर लप जलता है, रणधीर और रिपु-
दमन कुर्सियो पर बैठे हैं)

रणधीर—इस समय मेरा मन बडा उदास हो रहा है। मेरे जान अच्छे आदमियों को कभी कोई काम छिपकर न करना चाहिये। जिस काम में कुछ पाप, डर, दगा, लिहाज वा सदेह रहता है उसको आदमी छिपकर किया चाहते हैं परतु जिन लोगो का मन साफ है, जिनकी नियत अच्छी है, जो किसी से बनावट की बात नहीं किया चाहते, जो परिणाम सोचकर काम करने वाले हैं, उनको कभी छिपकर कोई काम करने की जरूरत नहीं पडती। ससार में ऐसे आदमी बहुत कम हैं इस कारण उनकी बातें प्रकट में अनोखी सी लगती हैं परतु उनका मन छिप कर काम करनेवालों की अपेक्षा सदा प्रसन्न रहता है। उनको अपने वाजबी हक प्राप्त करने का पूरा अवकाश मिलता है। किसी मनुष्य को अपनी गर्ज बिना दूसरे की भलाई के लिए कोई बात किसी समय तक गुप्त रखना, अथवा किसी बात के तत्काल प्रकट करने में अकारण अपना नुकसान होता होय तो अपने बचाव का उपाय करने तक उस बात का स्पष्ट न कहना, अथवा किसी को कोई बुरी बात जान कर निश्चै होने तक निश्चे होने के विचार से छिपाना, अथवा किसी सच्ची बात को सुनने वालों के मन में असर पैदा करने के लिए चतुराई से कहना, अथवा किसी लज्जा की बात को ऐसे अक्षरों में जिनसे और का और मतलब समझा जाय कह देना, छिप कर काम करने की गिन्ती में नहीं है। परतु और सब तरह से छिप कर काम करने को अनीति की जड समझना चाहिये। वोई अनीति का बीज सरोजनी अपने हाव, भाव द्वारा

मेरे मन में डाला चाहती है। इस कारण सरोजनी का नाच देखने से आज मेरा मन बडा उदास हो गया। मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि अत में येही बातें मेरा सुभाव बिगाड छिपकर काम करनेवाली हो जायँगी। ऐसे मौकों पर बहुधा मनुष्य का सुभाव इस रीति से बदलता है कि उसको अपने सुभाव बदलने की आप खबर नहीं रहती, परतु बदले पीछे वो अपना हाल देखकर आप चकित रह जाता है। हमारे देश में एक बडा लायकीवाला, सीधा सच्चा आदमी तीन सौ रुपये महीने में नौकर हुआ था परतु नौकर होते ही खुशामदी उसके पीछे लगे, खर्च बढ़ गया रुपये की जरूरत हुई, तनखा से काम न चल सका, कर्ज काढने का समय आया, कर्ज उतारने के लिए रिशवत सिवाय कोई रस्ता न था अत में छिपकर रिशवत ली। रिशवत लेना साबत हुआ और वो अपनी पहली चाल को पिछली चाल से मिलाकर आप चौंक उठा, सब इजत धूल में मिल गई। उस दिन से मैंने सब बातों में अपना स्वरूप देखकर हद बाध रक्खी है और हर घडी अपने सुभाव को जाँचता रहता हू। आमदनी से कम खर्च रखने की प्रतिज्ञा है, परतु आज सरोजनी का नाच देखने से मेरा मन भग हो गया।

रिपुदमन—(मन में) रणधीरसिंह का मन हढ करने के लिए ये समय बहुत अच्छा है। क्योंकि लाख पिगले (१) बिना उस पर मोहर नहीं लगती। (प्रकट) निसन्देह मनुष्य मात्र के मन में काम, क्रोध, लोभ, मोह का सोत रहता है और समय पाकर वो अपना वेग प्रकट भी करता है। परतु ज्ञानी अपने विचार से उसका वेग रोक लेते हैं और अज्ञान (२) उसके भवर जाल में पडकर अपना विचार भूल जाते हैं, ज्ञानी को अपने विचार से उसका वेग रोकने में कुछ परिश्रम पडता है, परतु अज्ञान (२) उसकी कटीली धार में पड कर आप बह जाते हैं। काम, क्रोध का वेग रोकना मन की मजबूती के आधीन(३)

१ पिघले २ अज्ञानी ३ अधीन

है और वेग रोकने की रुचि उपदेश से उत्पन्न होती है। रुचि बिना मन की दृढ़ता कुछ काम नहीं आती। इस कारण काम क्रोध का वेग रोकने के लिए उपदेश मुख्य समझना चाहिये, परतु गुरु के उपदेश को ही उपदेश नहीं कहते; मन के लिए दुःख भोगना सबसे अच्छा उपदेश है। ये उपदेश कदाचित आपको हुआ होगा क्योंकि भगवान ने आपको सज्जन बनाया है। आप का सा सुंदर रूप, निरोगी देह, अलौकिक बुद्धि, अमित बल, उपस्थित विद्या, सदव्यवहार ससार में कम दिखाई देता है। आप में मिठाई के साथ सच बोलना, परोपकार के साथ इ साफ पर रहना, उदारता के साथ अदाज से खर्च करना, प्रीति के साथ धर्म पर दृढ रहना, पराक्रम के साथ नरमाई रखना, ससार में रहकर विरक्त रहना, दृष्टि आता है। आपके इन गुणों ने आप को दुःख से अवश्य बचाया होगा परतु आप से मनुष्यों के मन में केवल सुख भोगने से काम क्रोध के वेग बढ़ने का मुझको अब तक बडा भय रहता था सो आज आपकी अरुचि देखकर मिट गया। आपसे बुद्धिमानों को दूसरों के दुःख सुख से अपने दुःख का विचार करके काम क्रोध का वेग सदा रोकना चाहिये।

रणधीर—बहुत अच्छा, आपके कहने को मे अगीकार करता हूँ और मेरा पहले से यही विश्वास है पर अब दूसरे झगड़े का क्या करें? तहकीकात की राह से चौबे जी पर अपराध साबित हो गया परतु हमारा मन इस बात को नहीं मानता।

रिपुदमन—मनुष्य देह में और प्राणियों से अधिक क्या है?

रणधीर—बुद्धि।

रिपुदमन—और वो बुद्धि कैसी अच्छी होती है।

रणधीर—सारग्राहिणी।

रिपुदमन—तो आप को उसी बुद्धि के बल से इस बात का निर्णय करना चाहिये।

रणधीर—मेरी बुद्धि में इस गोरखधंदे के खोलने का अब तक कोई सुगम उपाय नही दिखाई दिया।

रिपुदमन—तो आप अपने किसी विश्वासपात्र से सम्मति करके इसको खोलिये।

रणधीर—(मन में) जैसे हर किसी की बातों में आकर उसके आगे अपने दुःख सुख की पसारठ खोल बैठना बुरा है तैसे ही सबको कपटी और मूर्ख समझकर किसी से बात न करना बुरा है। (प्रकट) आपसे बढ़कर भरोसेवाला और कौन मिलेगा।

रिपुदमन—तो मेरे विचार में आग बिना धुँआ नहीं होता।

रणधीर—इससे क्या ?

रिपुदमन—पापी पाप करके गुप्त रहने से भी सुख नहीं पाता। उसको सबसे अधिक दुःख अपने मन की व्याकुलता का है। इस लोक में पाप प्रकट होने से दुर्गति और परलोक का नर्कभोग प्रति पल उसकी दृष्टि के सन्मुख बना रहता है। वो अपनी प्रतिष्ठा जताने के लिये भले ही कुछ न कहे पर उसके मुख पर उसके भय की झलक प्रकट दिखाई देती ही है वो झलक उस समय सुखवासीलाल के मुख पर थी, उस समय की हर एक बात से सुखवासीलाल का रंग गिरगट की तरह बदलता था।

रणधीर—ऐसे मौके पर कलकी होने के डर से निर्दोष भी काँपने लगते हैं।

रिपुदमन—श्वेत रंग होने से कपूर, कपास एक भाव नहीं बिकता।

रणधीर—मुझको पहले सुखवासीलाल पर संदेह था परंतु चौबे जी के अंगरखे में दाग निकलने और उनके मंजूर करने से अब नहीं रहा।

रिपुदमन—हमारी नजर में दोनों एक से हैं परंतु ऐसे मामले में केवल अपराधी के कहने पर विश्वास न करना चाहिये क्योंकि बहुत से निरपराधी घबराहट, दबाव, दुख दर्द, दया अथवा नशे से बावले होकर

अपने आप मरने को तयार हो जाते हैं, इसी तरह चौबे जी ने भी हमारी कहन को अपनी बडाई समझ कर मजूर किया हो तो अचरज नहीं। मैने ऐसे बहुत अविचारी मनुष्य देखे हैं जो अपनी बडाई के लालच से ऐसे अनेक उपाय किया करते हैं। जिन चिलबिले लडकों से महनत नहीं होती वो अपने मा बाप को अपनी सुकुमारता का धोका देकर ठगते हैं और जिन मूर्खों को विद्या नही आती वो विद्यावान बन कर छोटे रुजगार में अपनी स्वरूप हानि बताते हैं जिन छिचोरों की तरफ कोई स्त्री प्रीति से नहीं देखती वो अपने सगातियों में बैठकर झूठी बातें बनाने में अपनी बडाई समझते हैं, जिन दरिद्रियों के पास धन नहीं होता वे धनवानों के पास बैठ कर झूठी दौलत दिखाने का रूप बनाते हैं।

रणधीर—आपकी कहन मेरे मन पर असर करती है और मै ये भी जानता हू कि बहुधा इस तरह की बनावट और चालाकी सुखबासीलाल सरीखे अधकचे मनुष्यों से होती है। जो लोग बिल्कुल अजान हैं उनको तो ऐसी बातें उपजती ही नहीं, जो पूरे हैं वे परिणाम सोचकर ऐसी बातों से बचते हैं पर अधूरे परिणाम तक तो पहुँच नहीं सकते और जीविका करने का साहस करते है इस कारण उनसे बहुधा ऐसी बनावट और चालाकी होती है परतु सुखबासीलाल के अपराध पर हरताल की तरह बरहे की मट्टी लग गई। (हंसकर) आप मेरे कहने का कुछ बुरा न मानें जिससे मेरी प्रीति होती है उससे मैं भीतर, बाहर एक सा रहता हूँ।

रिपुदमन—ये ही बात मेरे मन की बढ़ानेवाली है, मुझको बडा अचरज है कि आप से बुद्धिमान ऐसी मोटी बात में धोका खाते हैं पर अपने बचाव के लिए दूसरी बात नहीं सोचते !

रणधीर—अच्छा, आपके कहने मे मै फिर उखाड पछाड करता हू। सब काम क्रम से करने चाहिये। (पुकार कर) अरे जीवन यहाँ आना। (धीरे रिपुदमन से) इस पर मुझको बडा भरोसा है।

रिपुदमन—घर गृहस्थ के काम में तो ये लोग अकसर गडबड कर जाते हैं।

रणधीर—किसी थोक (१) के सब आदमी एक से नहीं होते !

(जीवन का प्रवेश)

रणधीर—(गभीर स्वर से) क्यों रे ! हमारे पास इतने दिन रहा तो भी तेरी चाल न सुधरी। कुत्ते की पूँछ को बारह बरस दबाकर रक्खा तो भी टेढ़ी की टेढी ही रही, जेवडी जल गई पर बल न गया। सच कह तेरी इस वेश्या से कितने दिन की जान पहचान है ?

जीवन—(मन में) लालाजी बुरा मानें तो भलेई मानें मै ये हकीकत कहने के लिए पहले से औसर देख रहा था परंतु जिस समय मुझसे कोई धमकाकर पूछता है उस समय डर के मारे मेरी घिग्गी (२) बँध जाती है (कँपकँपा कर, भयभीत स्वर से) ये दश रुपे आज सबेरे से मैं आपको दिया चाहता था पर एकात का समय नहीं मिला।

रणधीर—हमारी बात का जवाब दे, बीच में दूसरी बात क्यों मिलाता है ?

रिपुदमन—डर के मारे इसके मुख से कुछ का कुछ निकलता है। इसको धीरज से कहने दीजिए। (जीवन से) कह रे कह।

जीवन—आपने पूछा सोई कहता हूँ। हम लोगों को भरपेट अन्न नहीं मिलता। हम वेश्या राड को क्या जाने।

रणधीर—तेरी एक बात दूसरी बात से नहीं मिलती। क्या चौबे जी ने तुझको भंग पिला दी। बता ये दश रुपे कैसे हैं ?

जीवन—नहीं अन्नदाता, मैने भग नहीं पी। मै नौकर होकर भग कैसे पीता। ये दश रुपे आपके हैं मुझको ऐसी कौडी अपने अग नहीं लगानी।

---

(१) स्तोमक, समूह (२) घिग्घी

रणधीर—अच्छा, कहाँ से, किस बात के, कब आये ?

जीवन—(घबरा कर) क्या पूछा।

रिपुदमन—(धीरज से) बता ये दश रुपे कहाँ से आये ?

जीवन—लाला सुखबासीलाल जी से।

रिपुदमन—किस बात के ?

जीवन—इनाम के नाम से घूँस के।

रिपुदमन—कब ?

जीवन—कल रात को, वे वेश्या के जाते थे जब।

रणधीर—तैनें कैसे जाना कि वेश्या के जाते हैं ?

जीवन—मै उनके पीछे पीछे जाकर अपनी आँख से देख आया।

रणधीर—देख, झूट न हो ?

जीवन—झूट निकले तो मेरी नाक काट लेना !

रणधीर—अच्छा, जा सुखबासीलाल को बुला ला।

(जीवन गया)

रणधीर—यहाँ तो हाथ लगाने ही को देर थी।

रिपुदमन—पर अभी अँगरखे के धब्बे का धोखा बाकी है।

रणधीर—(विचार कर) ओहो ! न्हाने के समय छल करके सुखबासीलाल ने चौबे जी से अँगरखा बदल लिया होगा, नहीं तो उस समय सुखबासीलाल के न्हाने का क्या काम था ? और न्हाने गया तो कमलनाल से डरकर निकल भागने की कौन सी बात हुई।

रिपुदमन—(मन में) मनुष्य के हृदय में क्रोध का अधकार होते ही अपराधी के अगले पिछले सब अपराध तारागण की तरह क्रोधी की दृष्टि से साम्हने आ जाते हैं इस कारण बुद्धिमान को छोटी से छोटी बात के लिए भी उसी समय सफाई कर लेनी चाहिये।

रणधीर—ये आदमी पहले भी कई बार मुझको धोका दे चुका है, अपना असली सुभाव कोई नहीं छोडता। कोयल के बच्चों को पच्ची

समझ पालते हैं पर वे बड़े होकर अपनी जात में आप से मिल जाते हैं।

(सुखबासीलाल और जीवन का प्रवेश)

सुखबासीलाल—(धीरे जीवन से) तैनें ये बात अच्छी नहीं की, धी के बाप आपस मे सुलूक रखना चाहिये।

जीवन—(पुकार कर) मे अपनी भुगत लूंगा।

रणधीर—(सुखबासीलाल से रूखे होकर) कल रात को तुम सरोजनी के घर गए! आज अंगूर की टट्टियों में उससे बतलाए (१) तालाब में न्हाने का मिस करके चौबे जी से अंगरखा बदला ये सब हाल हमको अच्छी तरह मालुम हो चुका है। अब तुम अपनी भलाई चाहते हो तो एक दम अपनी भूल मंजूर करो।

सुखबासीलाल—(मन में) नौकरी की क्या? ये तो मजदूरी है। नान पारचे का काम हर तरह चला लेंगे मगर जब ये बात पोशीदा नहीं रह सकती तो थोड़ी जिंदगी के वास्ते कौन लग्वगोई करके दोजख में जाने का काम करे। (प्रकट) कसूर हुआ तो हुआ, न हुआ तो हुआ, इस वक्त में आप की नजर में बेशक कसूरवार हूं।

रणधीर—अच्छा, तुमको अपने बचाव के लिए कुछ कहना हो तो कह लो।

सुखबासीलाल—कुछ नहीं।

रणधीर—तो जाओ।

(सुखबासीलाल और जीवन गये)

रिपुदमन—अब इससे सब तरह सावचेत (२) रहना चाहिये, "बेदिल नौकर दुश्मन बराबर" होता है।

---

(१) बातचीत की (२) सचेत, सावधान

रणधीर—मै अब इसको घडी भर अपने पास नहीं रखना चाहता, परतु दूसरा आदमी न मिलेगा तब तक लाचारी से रखना पड़ेगा।

रिपुदमन—देखो, जिसकी प्रसन्नता और अप्रसन्नता का कुछ फल नहीं मिलता उसका काम कोई मन लगाकर नही करता। सब उससे निर्भय हो जाते हैं और वो सबकी नजर में हल्का जँचने लगता है।

रणधीर—ओहो! आज आप न होते तो कैसी बेइन्साफी हो जाती।

रिपुदमन—इन्साफ में सदा इसी तरह सोचना चाहिये। अपराधी पर दया करने की बहुत लोग सूचना करते हैं और अपराध निश्चय हुए बिना किसी को दड देना मेरे विचार में भी अनुचित है, परतु अपराध निश्चय हुए पीछे अपराधी पर दया करना निरपराधियों को दड देने से कम नहीं। अपराधी को यथायोग्य दड देना चाहिये, क्योंकि अपराधी पर दया करने से लोगों के मन में अपराध करने का साहस होता है। एक दो मनुष्य को दड देने से सब देश का उपकार हो तो दडकर्ता को निर्दय कैसे समझें! अजान कुछ कहो, मान की दृढता इतजाम की दृढ़ता का मूल है और इसाफ में दया करनेवालों के मन की दृढता सभव नहीं।

रणधीर—मै तो पहले ही सुखवासीलाल के निकालने का विचार कर चुका हूँ।

रिपुदमन—हमको सुखवासीलाल और चौबे जी से कुछ विशेष सबध नहीं है, परतु इस समय के इसाफ से हमारे मन को बडा सुख होता है।

रणधीर—शरीर के सुख से मन का सुख बिलकुल अलग है। मन के सुख बिना शरीर के सुख कुछ काम नहीं आते। शरीर के दुःख से मन व्याकुल हो तो शरीर के सुख से मन को सतोष आ जाता है, परंतु शरीर के सुख से मन सुखी नहीं होता। मन सब बातों में शरीर का सहायक है परतु मन की शक्ति से (जिसमें शरीर नाममात्र सहायक हो) आज के

इसाफ का सा अलौकिक काम बन जाता है तब मन को असली सुख होता है और इसके आगे शरीर का सुख कुछ नहीं जँचता।

रिपुदमन—अच्छा अब रात बहुत गई मुझको आज्ञा हो।

रणधीर—मैंने भी आज इस मामले को बड़े एकाग्रचित्त से विचारा था इस कारण इस समय नींद की गहल सी आ रही है।

रिपुदमन—(जाते जाते) कल आपको वहीं आना चाहिये।

[गया]

इति चतुर्थ गर्भांक।

द्वितीयांक समाप्त।

अथ तृतीयांक प्रारंभ

प्रथम गर्भांक

स्थान, राजमहल के पास रंगभूमि

(बीच में रत्न जटित चौकी पर प्रेममोहिनी की प्रतिमा रक्खी है और उसके सामने अनेक देश के राजा धनुषाकार बैठे हैं। प्रेममोहिनी अपने महलो में से ये उत्सव देख रही है और सूरत का सेनापति रंगभूमि के दरवाजे पर खडा है।)

(सूरत के महाराज और मंत्री का प्रवेश)

सूरत के महाराज—सब राजा आ गये ?

मत्री—हाँ महाराज ! इस समय उनके रत्नों की झलक से रगभूमि दिवाली की रात के समान जगमगा रही है।

× × ×

प्रेममोहिनी—(मालती से) क्यों सखी ! सब राजकुमार आ गये ?

मालती—हाँ, अभी मत्री ने महाराज मे कहा था।

प्रेममोहिनी—तो रणधीर क्यों नहीं आया ?

मालती—तुम क्या उसको पहचानती हो ?

प्रेममोहिनी—मैंने उसको देखा नहीं, पर उसकी छवि मेरे मन में बस रही है।

मालती—इन राजकुमारो में तुमको कोई सुहावना नहीं लगता ?

प्रेममोहिनी—क्या चद्रमा बिना कमोदनी को कोई खिला सकता है ?

मालती—भला मकरद (रस) के लालच से भौंरा उसके पास चला जाय तो ?

प्रेममोहिनी—कमोदनी को जल में डूबने सिवाय कुछ उपाय नहीं।

मालती—ये सब बातें पिता के आगे भूल जाओगी।

× × ×

(सूरत के महाराज कुछ आगे बढ़े और सेनापति ने झुककर राम राम की)

सूरत के महाराज—(सेनापति से) भीड का बदोबस्त अच्छी तरह कर दिया ?

सेनापति—आपके प्रताप से सब हो रहा है।

सूरतपति—(आगे बढ़कर, राजाओ से) आप लोगों ने यहाँ आकर मेरे ऊपर बडी कृपा की।

सब राजा—(खड़े होकर, एक स्वर से) ये आपकी बडाई है। फलदार वृक्ष सदा नवते हैं, अब हम आप की कौन सी आज्ञा पालन करें ?

सूरत के महाराज—आज आप अपनी शस्त्र - विद्या दिखाइये, जो वीर शस्त्र - विद्या में जीतेगा उसको बडा जस और (प्रेममोहिनी की मूर्ति दिखाकर) इस प्रतिमा की अधिष्ठाता (१) देवी (प्रेममोहिनी) आप से आप सिद्ध हो जायगी।

सब राजा—(आनद से) ऐसा ही होगा।

सूरत के महाराज—अच्छा, आप किस रीति से अपनी विद्या दिखायगे ?

नगर का राजा—कहने से क्या है जो कुछ करे अपनी आँख से देख लेना।

(रणधीर घोड़े पर सवार होकर आता है)

सेनापति—(रणधीर को रोककर) तुम कौन हो ?

---

(१) अधिष्ठात्री

रणधीर—रणधीर ।

सेनापति—(हँसकर) रणभीरु का यहाँ क्या काम ?

रणधीर—मालूम हुआ आप अंधे नहीं बहरे भी हो ।

सेनापति—तुम अपनी कुशल चाहते हो तो उल्टे फिर जाओ ।

रणधीर—हाथी के दाँत निकले पीछे भीतर नहीं जाते ।

सेनापति—तो लाचार उनको तोड़ना पड़ेगा परंतु तुमारा रूप देखकर मेरे मन में दया आती है ।

रणधीर—मेरे ऊपर नहीं अपने कुटुंब पर दया करो ।

सेनापति—तुमसे क्या लड़ें, लड़ाई बराबर वाले से होती है ।

रणधीर—सच कहा, मैं तुम्हारे लिए अपना नौकर बुला दूंगा ।

सेनापति—अब तुम मेरे आगे से हट जाओ ।

रणधीर—अपनी आँखें क्यों नहीं बंद कर लेते !

सेनापति—(खड्ग दिखाकर) देखो इसकी धार बड़ी तेज है ।

रणधीर—पर तुम्हारे वचनों से तो अधिक न होगी ।

सेनापति—तुम अभी बालक हो !

रणधीर—तो हम पूतना बध का अनुकरण करेंगे ।

सेनापति—(क्रोध से) मुख सम्हाल कर नहीं बोलते !

रणधीर—हमने क्या झूट कहा ?

सेनापति—(पैंतरे बदल कर) अच्छा तो आओ ।

(रणधीर ने बिना भाले का एक भाला मारकर सेनापति को पाँच सात गज ऊँचा उछाल दिया ।)

सूरत के महाराज—(देखकर जल्दी से) जो वीर हमारे सेनापति को बचावेगा वो ही आज की शस्त्र-विद्या में जीतनेवाला समझा जायगा ।

(सब राजा इधर उधर दौड़े पर किसी से कुछ न हो सका । रणधीर ने घोड़े समेत ऊँचे उछल कर सेनापति को गिरते गिरते रोक लिया और सूरतपति के आगे लाकर खड़ा कर दिया ।)

सूरतपति—(उसे देखकर मन में) इसके बदले तो सेनापति का मर जाना अच्छा था, हे देव ! तुझको ये क्या सूझी ? चन्द्रमा का मित्र चकोर ! कटेदार वृक्ष में गुलाब ! सूरत की महाराजकुमारी का पति एक साधारण परदेशी ! अब मैं अपने वचन से फिरता हूँ तो मेरा विश्वास जाता है और वचन पर रहता हूं तो कन्या जाती है ! क्या करूँ ? साप छुछूंदर की सी मेरी दशा हो रही है । (उदास भाव से सिर झुका लिया ।)

रणधीर—(सूरत के महाराज को उदास देखकर, मन में) तुम्हारे उदास होने से मेरा क्या नुकसान ? मैंने किसी तरह के लालच से ये काम नहीं किया मैं तो केवल जस चाहता हू—

मेघन कबई न जल चहौं, चातक सम तो पास ।
मैं मयूर मीठे बचन सुन, मन करत हुलास ॥

जो तुम बुरा मानो तो अपना नगर रक्खो मेरी विद्या नहीं छीन सकते ।—

बिधना कोपै हंस पर, हरै कमल बन बास ।
पै जल दुग्ध विभेद गुण, किहिं बिधि करै बिनास ?

(आगे को चल दिया)

× × ×

प्रेममोहिनी—(मालती से) आज समुद्र ने अपनी मर्जादा छोड दी, सूर्य चंद्रमा की चाल बदल गई, अग्नि में दाहक शक्ति नहीं रही, पवन की बाहक शक्ति जाती रही ।

मालती—कैसे ?

प्रेममोहिनी—मेरा मन इस पुरुष की तरफ गया ।

मालती—तो क्या तुम किसी से विवाह नहीं किया चाहती ?

प्रेममोहिनी—रणधीर के सिवाय मैं किसी को पुरुष नहीं समझती ।

मालती—और जो ये रणधीर ही हो ।

प्रेममोहिनी—सच कह, क्या ये रणधीर है ?

रणधीर—रणधीर ।

सेनापति—(हँसकर) रणभीरु का यहाँ क्या काम ?

रणधीर—मालूम हुआ आप अंधे नहीं बहरे भी हो ।

सेनापति—तुम अपनी कुशल चाहते हो तो उल्टे फिर जाओ !

रणधीर—हाथी के दाँत निकले पीछे भीतर नहीं जाते ।

सेनापति—तो लाचार उनको तोडना पड़ेगा परतु तुमारा रूप देखकर मेरे मन में दया आती है ।

रणधीर—मेरे ऊपर नहीं अपने कुटुंब पर दया करो ।

सेनापति—तुमसे क्या लडें, लडाई बराबर वाले से होती है ।

रणधीर—सच कहा, मै तुम्हारे लिए अपना नौकर बुला दूगा ।

सेनापति—अब तुम मेरे आगे से हट जाओ ।

रणधीर—अपनी आँखे क्यों नहीं बद कर लेते !

सेनापति—(खड्ग दिखाकर) देखो इसकी धार बडी तेज है ।

रणधीर—पर तुम्हारे बचनों से तो अधिक न होगी ।

सेनापति—तुम अभी बालक हो !

रणधीर—तो हम पूतना बध का अनुकरण करेंगे ।

सेनापति—(क्रोध से) मुख सम्हाल कर नहीं बोलते !

रणधीर—हमने क्या झूट कहा ?

सेनापति—(पैंतरे बदल कर) अच्छा तो आओ ।

(रणधीर ने बिना भाले का एक भाला मारकर सेनापति को पाँच सात गज ऊँचा उछाल दिया ।)

सूरत के महाराज—(देखकर जल्दी से) जो वीर हमारे सेनापति को बचावेगा वो ही आज की शस्त्र-विद्या में जीतनेवाला समझा जायगा ।

(सब राजा इधर उधर दौड़े पर किसी से कुछ न हो सका । रणधीर ने घोड़े समेत ऊँचे उछल कर सेनापति को गिरते गिरते रोक लिया और सूरतपति के आगे लाकर खड़ा कर दिया ।)

सूरतपति—(**उसे देखकर मन में**) इसके बदले तो सेनापति का मर जाना अच्छा था, हे देव ! तुझको ये क्या सूझी ? चद्रमा का मित्र चकोर ! काटेदार वृक्ष मे गुलाब ! सूरत की महाराजकुमारी का पति एक साधारण परदेशी ! अब मैं अपने वचन से फिरता हूँ तो मेरा विश्वास जाता है और वचन पर रहता हू तो कन्या जाती है ! क्या करूँ ? साप छुछूदर की सी मेरी दशा हो रही है । (**उदास भाव मे सिर झुका लिया** ।)

रणधीर—(**सूरत के महाराज को उदास देखकर, मन में**) तुम्हारे उदास होने से मेरा क्या नुकसान ? मैने किसी तरह के लालच से ये काम नहीं किया मैं तो केवल जस चाहता हू—

मेघन कबई न जल चहौ, चातक सम तो पास ।
मैं मयूर मीठे बचन सुन, मन करत हुलास ॥

जो तुम बुरा मानो तो अपना नगर रक्खो मेरी विद्या नहीं छीन सकते ।—

बिधना कोपै हंस पर, हरै कमल बन बास ।
पै जल दुग्ध विभेद गुण, किहि बिधि करै बिनास ?

(**आगे को चल दिया**)

× × ×

प्रेममोहिनी—(**मालती से**) आज समुद्र ने अपनी मर्जादा छोड दी, सूर्य चंद्रमा की चाल बदल गई, अग्नि में दाहक शक्ति नहीं रही, पवन की बाहक शक्ति जाती रही ।

मालती—कैसे ?

प्रेममोहिनी—मेरा मन इस पुरुष की तरफ गया ।

मालती—तो क्या तुम किसी से विवाह नहीं किया चाहती ?

प्रेममोहिनी—रणधीर के सिवाय मैं किसी को पुरुष नहीं समझती ।

मालती—और जो ये रणधीर ही हो ।

प्रेममोहिनी—सच कह, क्या ये रणधीर है ?

मालती—ना, मैंने एक बात कही कि जो ये वोही हो।

प्रेममोहिनी—तब तो कुछ कहने सुनने की बात ही नहीं रही।

मालती— (दोहा)

सज्जन प्रीति वियोग ते कबहु न होत विनाश।
चन्द ढक्यो घन से तदपि, करत कुमोद प्रकाश॥

प्रेममोहिनी—(आंसू भर कर, गद्गद स्वर से) सखी मेरे ऐसे भाग—

(नेत्र बंद कर बेसुध सी हो गई)

मालती—(महल के नीचे से रणधीर को जाते देख) राजकुमारी! इष्ट देव का ध्यान पीछे करना, पहले दूज के चद्रमा का दर्शन तो कर लो।

(प्रेममोहिनी ने नेत्र खोलकर रणधीर को जाते देखा। अचेत अवस्था में उसकी अंगूठी उसके हाथ से रणधीर पर गिर पड़ी। रणधीर ने अगूठी को हाथ में झेल कर प्रेममोहिनी की तरफ देखा। वो अगूठी अपनी अगुली में पहनकर वहां से चल दिया।)

प्रेममोहिनी—(रणधीर की तरफ देख कर) रणधीर! तुम सच्चे रणधीर हो! आज तुमने अपना नाम सच्चा कर दिखाया। तुम्हारा मुखचद्र देखकर मेरा मन समुद्र की तरह उमगता है। (झरोखे से नीचे की तरफ देखकर) हाय! वे तो चले गए। बिजली की चमक से भी थोडी देर उनका मनोहर रूप दिखाई दिया। अब क्या होगा।

मालती—धीरज धरो, ये समय घबराने का नहीं है।

× × ×

सूरतपति—(सिर ऊचा करके) वो मनुष्य कहा गया! (मंत्री से) तुम उसको पहचानते हो!

मत्री—मेरी उसकी बातचीत कभी नहीं हुई, पर मैंने सुना था कि कोई बडा गुणवान क्षत्री राजमहल के पीछे आकर ठैरा है।

सूरतपति—अच्छा वो यहा होता तो उसका हाल पूछा जाता। परंतु आज की जीत से वो प्रेममोहिनी के व्याहने लायक नहीं ठैरता। बिल्ली के भागों छीका टूट पडा तो क्या हुआ ? मैने ये प्रतिज्ञा राजाओं के लिये की थी। अब इस का फिर कुछ विचार किया जायगा। आज रात को महल में बसत पचमी का उत्सव है, सब राजा कृपा करके वहा पधारें।

सब राजा—हमको आप का कहना सब तरह मजूर है।

(सब गए)

इति प्रथम गर्भांक

अथ द्वितीय गर्भांक

स्थान, रणधीरसिंह का महल।

(रणधीर मखमली कोच पर सिरहाने हाथ लगाकर लेट रहा है और जीवन उसके चरण दाबता है।)

जीवन—(चरण दाबते दाबते) इस समय आप का मन बहुत उदास दिखाई देता है।

रणधीर—तैनें कैसे जाना ?

जीवन—आपके मुख देखने से प्रकट जाना जाता है।

रणधीर—(आश्चर्य से मन में) मेरे मन का भाव दूसरे ने पहचान लिया। (प्रकट) अच्छा, तू क्या अब तक इसका कारण नहीं जानता ? देख आज हमारे दुःख की आग में घी डाला गया। तू अच्छी

तरह जानता है कि हम केवल मान के भूखे है, हमारी जान में अपमान और मौत समान है।

जीवन—आपको दुःख देखकर घबराना उचित नहीं। आप महत् पुरुष हो—

बड़े बिपतहूँ मै पड़े तजत न पर उपकार।
राहु ग्रसित शशि जगत को पुण्य बढ़ावनहार ॥१॥
मलय करत निज गन्ध सों वृक्षन आप समान।
कहहु करत कछु मलय को वृक्ष बहुरि सन्मान ॥२॥

रणधीर—इस विचार में तू भूलता है, क्योंकि थोथे बासों का चदन से कुछ भी उपकार नहीं होता। उपकार तो उपकार योग्यों के साथ होता है पर (आँखों में आँसू भरकर) हम तेरी नौकरी का इस जन्म में क्या बदला देंगे ? हमको क्षमा कर, नहीं तो परलोक में हमको तेरा देनदार रहना पड़ेगा।

जीवन—ये आप क्या कहते हो। मैं किसका और नौकरी किसकी। जो मै सौ जन्म तक आठ पहर आपकी सेवा करूँ तो भी तो आप की कृपा से आगे कुछ गिन्ती में नहीं।

रणधीर—जीवन तेरी लायकी से मै तुझपर नौछावर हूँ।

जीवन—आप ऐसा बचन मत कहो।

रणधीर—विपत मनुष्य की कसौटी है, इसमें पीतल और सोने का भेद खुल जाता है। विपत्ति में मनुष्य को परमेश्वर से प्रीति होती है। देख, एक दिन ऐसा था कि बड़े बड़े धनवान आकर मेरी हाजरी साधते, मुझसे प्रीति बाँधते, मुझ पर प्राण नौछावर करते, मेरे सच्चे मित्र बनते। परतु आज वे सब कहाँ हैं, मेरी विपत्ति में मुझको कौन सहारा देता है, कौन याद करता है, कौन सेवा करता है ? कोई नहीं, हिरफिरकर तू ही तू दिखाई देता है। भाई है तो तू है, मित्र है तो तू है, नौकर है तो तू है।

जीवन—महाराज ! उस समय आपकी दया से मेरा घर बसा, आपके रुपै से मेरा पालन हुआ। आपकी कृपा से मैं जीआ, बडा हुआ, तो क्या ऐसे समय में आपको छोड जाऊँ ? भगवान आपको जीता रखे। जीवन जीते जी कभी आपके चरण-कमल से अलग होने वाला नहीं है।

रणधीर—ओ सच्चे मित्र ! सूखे वृक्ष की छाया में ठैरकर परदेशी क्या सुख पावेगा ? भला तू अब मेरी सेवा से क्या आस रखता है ? जब मुझसे तेरे कुटुब का पालन भी नहीं होना तो मेरे पास रहने से तेरा क्या भला होगा। तेरी इस मुफ्त की चाकरी का मै क्या बदला दूगा।

जीवन—महाराज आपने ये क्या कहा, मैं मुफ्त चाकरी नहीं करता। सब आदमी काम लेकर तनखा देते हैं, पर आपने तो मुझको पहले ही निहाल कर दिया।

रणधीर—(आँसू भरकर) जीवन ! तू अपनी सचाई से मुझको बड़े अचरज में डालता है। तू पहले मेरा सेवक था, परतु अब तो सहायक मित्र है। तेरे चाल चलन से गरीबों की सचाई का एक अच्छा प्रमाण मिलता है। मैने अपनी दौलत इन झूठे खुशामदियों की खातिरदारी में खोई, उसके बदले जो गरीबों की सहायता में लगाई होती तो कैसा अच्छा होता ? वे लोग कभी मेरी याद भी करते हैं ?

जीवन—(मन में) देखो मनुष्य का मन भी पवन की तरह सदा बदलता रहता है। ये रणधीरसिंह जो एक बार बड़े गभीर, रूखे, कठोर और बेपरवाह थे वे समय के फेरफार से आज कैसे नरम और सीधे हो गये ?

रणधीर—तू ये मत समझ कि, मै दुःख से घबराकर ये बात कहता हू। दुःख सुख तो दिन रात की तरह बदलते रहते हैं और मै ने श्री रामचद्र, हरिश्चद्र, नल, युधिष्ठिर आदि की कथा पढी, इस कारण मेरे मन में धीरज बना रहा है। मुझको मनुष्यों के स्वभाव का अच्छी तरह अनुभव है जैसे गरमी की रूत में प्रायः गरम और सरदी की रूत में सरद

चीज पैदा होती हैं। जैसे हवा का रुख पलटते ही सब झडियों का रुख अपने आप बदल जाता है, तैसे आदमी के होनहार से सब लोगों का मन भी उसकी तरफ को वैसा ही हो जाता है और उसके होनहार से ही लोगों के मन में उसका रूप हल्का भारी जचने लगता है। एक बार एक आदमी की बातें सुहावनी लगती हों, दूसरी बार बेसबब उससे मन हट जाय, उसकी बाते बुरी मालूम होने लगे अथवा जिससे अरुचि हो उसकी बातें सुहावनी मालूम हों तो ये उसके होनहार का कारण नहीं तो और क्या है ? बहुत कहाँ तक कहू ? होनहार के बल से खास उस आदमी के मन में भी वैसे ही विचार पैदा हो जाते हैं, जब हर्ष होने वाला हो, उस समय हर्ष की कोई बात न होगी तो भी पहली हर्ष की बातें याद आने अथवा आगे को आनद होने की उम्मीद से मन हर्षित हो जायगा। इसी तरह जब दुःख होने वाला होगा उस समय कोई दुःख की बात न होगी तो भी पहले दुःख याद आने अथवा आगे को अपने ऊपर किसी तरह के दुःख पडने का भय होने से चित्त उदास हो जायगा। जैसी होनहार होगी, तैसे काम करने को मन चाहेगा वैसा ही बानक बन जायगा। होनहार बातों का रूप मै अच्छी तरह जानता हूँ, होनहार किसी के अटकाए से नहीं अटकती, परतु जब मुझको इन झूठे खुशामदियों की बातें याद आती हैं तब मेरे शरीर में आग लग जाती है। बता, आज ही के अपमान में किसी ने मेरा साथ दिया ?

जीवन—आज आपका क्या अपमान हुआ ?

रणधीर—मुझको रगभूमि में जाने से रोका, इससे बढकर और क्या अपमान होगा ?

जीवन—ये तो आप को ऐसा ही भासता होगा। पित्तेदार मनुष्य के लिए कोई जरा सी बात हो जाती वो उसको खुर्दबीन की भात अपने मन ही मन में सोच सोच कर पहाड की बराबर बना लेता है, परतु सबके लिए सब एक से नहीं होते। एक मनुष्य एक का बडा दूसरे का छोटा, एक का गुरु दूसरे का शिष्य, एक का स्वामी दूसरे का

सेवक, एक का शत्रु दूसरे का मित्र, एक का पोषक दूसरे का नाशक होता है। एक ही वस्तु एक की लाभदायक और दूसरे की हानिकारक बन जाती है। देखिये, एक मनुष्य को फूलों जी सेज पर नींद नहीं आती, दूसरा मिट्टी के ढेलों पर पाव पसार कर सोता है। इसी तरह आप का विचार और लोगों से जुदा है। आप जिस काम से अपनी स्वरूप हानि बताते हो, उसी काम से आज आप का यश सारे नगर में फैल गया।

रणधीर—जगत की कोई बात गुण दोष से खाली नहीं पाई जाती, परतु जिस बात में गुण विशेष हो सो अच्छी और दोष विशेष हो सो बुरी समझी जाती है। इस कारण आज की बात मै तेरे वचनानुसार कुछ गुण हो तो उसको अच्छी नहीं मान सकता, क्योंकि उसमें दोष विशेष हैं।

जीवन—क्यों? आप क्या इसको छोटी बात समझते हैं? मेरे जानने मे तो आप को इस समय भी सूरत के महाराज को सभा में अवश्य पधारना चाहिये।

रणधीर—जीवन तैने क्या कहा? तू नहीं जानता कि मेरे मन में क्रोध की आग जल रही है, फिर तू उसमे घी डाल कर उसके भडकाने का क्यों उपाय करता है? न जाने ये आग किस किस को भस्म कर डालेगी।

जीवन—मै इस बात से निश्चित हूँ, क्योंकि आग को आग नहीं जला सकती। आप आनद से राजसभा में जाय। हाथी के चपेट मारे बिना सिह का बल नहीं जाना जाता और भाग्य पर बैठ रहना तो कायरों का काम है।

रणधीर—भला जीवन! बिना बुलाये जाना तो किसी तरह मुनासिब नहीं।

जीवन—सब राजों के बुलावे में आप का बुलावा आ गया फिर आप को यही विचार है तो बताइये बादलों को कौन बुलाने जाता है जो पानी बरसा कर सबकी ताप मिटाते हैं?

रणधीर—(मन में) इधर विश्वासी जीवन भी हठ करता है, उधर मेरे मन में भी वीररस भर रहा है इस कारण अब तो राज सभा में जायगे, होनी होय सो हो। (प्रकट) अच्छा, जीवन तेरा कहना माना, अब तू हमारे पाचों शस्त्र और बस्त्र ले आ।

जीवन—(जाते जाते) लाया, (जाकर सब सामान लाता है और रणधीर बस्त्र पहन, शस्त्र सज, दर्पण देख, जाने को तैयार होता है तब जीवन जल्दी से जल का भरा कलश ले सामने आ खड़ा होता है।)

रणधीर—ऐसे शकुन का फल नहीं होता, जो शकुन आप से आप हो उसकी विध मिलती है।

जीवन—तो भी नफे की हवा ही अच्छी।

(आगे आगे रणधीर और पीछे पीछे जीवन जाता है।)

इति द्वितीय गर्भांक।

———

अथ तृतीय गर्भांक।

स्थान, सूरत का राजमहल।

(सब राजा बराबर बराबर कुर्सियों पर बैठे हैं, सरोजनी नाचती है, मंत्री ने अतरदान ले रक्खा है, सूरतपति अतर लगाते हैं, रिपुदमन पान देता है।)

रिपुदमन—(मन में) रणधीरसिह अब तक क्यों नहीं आए। उनकी जीत का हाल सुनकर तो मुझको ऐसा आनद हुआ जैसा जनकपुर बासियों को श्री रामचन्द्र जी के धनुष तोडने से हुआ था। रणधीर निःसदेह इस बड़ाई के लायक है परतु पिता (सूरत के महाराज) ने परशुराम जी की भात नाहक हट पकड़ रक्खा है। मैं रणधीरसिंह का सब

भेद जानता हूँ, मेरा उनका कुछ अतर नहीं है। परतु मै उनकी आज्ञा बिना एक अक्षर नहीं कह सकता और कहने में अधिक बिगाड की सूरत मालूम होती है, इस कारण और भी मौन साध रक्खा है।

(रणधीर आया। उसे देखकर सब राजा चकित हो इधर उधर देखने लगे। वो निर्भयता से सभा के बीच में एक खाली कुर्सी पर जा बैठा और टकटकी बाँध कर सरोजनी की तरफ देखने लगा।)

सूरतपति—(मत्री से, धीरे) ये ढीट यहाँ बिना बुलाये क्योंकर चला आया ? इसको यहाँ तक पहरे वालों ने कैसे आने दिया ? जहाँ किसी बात में मालिक की तरफ से जरा सी भूल होती है, वहाँ अवेर मच जाता है, नौकर निर्भय हो जाते हैं। परतु हम क्या करें ? काम के फैलाव से हमको औसान नहीं आता। तुमने इसका बदोबस्त क्यों नहीं किया ?

सूरत का मंत्री—महाराज ! बदोबस्त तो अच्छी तरह कर दिया था परतु ये भीड में छिपकर आ गया होगा, टीडी की मौत आती है जब वो अपने परों से उडकर आग मे जा पडती है।

रिपुदमन—(धीरे) पिता जी ! ये आप के घर आया है, आपको अपना धर्म विचार कर काम करना चाहिये, आप क्या ऐसे सज्जन का निरादर करेंगे ? मै इसके गुण अच्छी तरह जानता हूँ। कहिये, इसने आप का क्या बिगाड किया। हट जुदी चीज है। आप इसाफ से विचार कर देखे तो ये सबसे अधिक सन्मान के लायक है। इसको आप ने साधारण आदमी कैसे जाना ? क्या इसके सब लक्षण चक्रवर्ती से नहीं मिलते ! इसका सुदर रूप प्रेममोहिनी से ब्याहने लायक नहीं है ? इसकी बाण-विद्या ने अर्जुन का गाडीव (धनुष) नहीं भुला दिया ? फिर आप क्यों जान बूझ कर सोते सिंह को जगाते है। थोड़े लालच से बहुत सा नुकसान करना नीति के विपरीत है।

(सरोजनी रणधीर के आगे जाकर कहरवा नांचने लगी)

कैसे लगे मेरी नाव खेवट तेरे रूठे पर?
भला कैसे लगे मेरी नाव खेवट तेरे रूठे पर।
नाव झर्झरी नदिया गहरी वल्लिके कर से छूटे पर॥
भला कैसे०—

उठत हिलोरैं पालकी रस्सी के टूटे पर॥ भला कैसे०॥
बीच धार मैं हात तजत कोउ तन मन धन के लूटे पर।
भला कैसे लगे मेरी नाव खेवट तेरे रूठे पर॥ १॥

रणधीर—(**मन में**) ये कल चौबे जी के बखेड़े से खाला रह गई थी इस कारण इसको इस समय कुछ देना चाहिये। (**अपने गले से मोतियो की माला उतार कर दे दी।**)

सूरत के महाराज—(**रिपुदमन से**) कहो ये इस काम से कलकी हुआ कि नहीं?

रिपुदमन—कलकी तो चद्रमा भी है, मे इतने अश में रणधीरसिह की बडाई नहीं करता। बहुत लोगों का सुभाव होता है कि जिससे प्रीति हो उसके गुण, और बैर हो उसके दोष प्रकट करते हैं। परतु ये रीति अच्छी नहीं। जो जितने अश में जैसा हो, तैसा कहना चाहिये। रणधीर के स्वाभाविक गुण क्या कम हैं, जो मैं झूठी बडाई करके उनमें दोष लगाऊ, मित्र के दोष छिपाने से छुडाना बहुत अच्छा है।

सब राजा—(**पुकार कर**) ये हमारा बडा अपमान हुआ, हम इसका बदला लिए बिना न रहेंगे।

रिपुदमन—घास की आग से लडाई क्या?

सूरतपति—(**क्रोध करके रिपुदमन से**) तू क्यों उसकी पक्ष करता है?

रिपुदमन—मैने आज तक आप की आज्ञा बिना कभी किसी काम का मनोर्थ भी नहीं किया और आगे को आप की आज्ञा पालन करने

का निश्चय विचारा है, परतु जिस विषय मे आज्ञा न निभ सके उसमें प्रथम ही आप को आज्ञा देनी मुनासिब नहीं। आप जानते हैं कि, मन अपनी पूर्ति हुए बिना किसी के भय अथवा लिहाज से नहीं बदल सकता।

सूरत के महाराज—(मन मे) ये तो बात बढ चली। जिसने जन्म भर सामने आख करके बात नही की थी, उसने आज एक दम जवाब दे दिया। अब ये मेरे पुण्य का अत नहीं तो और क्या है!

रणधीर—(रिपुदमन की तरफ देखकर) कहो मित्र! ये क्या बखेडा है?

रिपुदमन—कुछ नहीं बहुत से सर्प मिलकर गरुड से लडा चाहते हैं।

रणधीर—नही नही, ऐसा बचन मत कहो। हमसे तो ये सब बड़े है। परतु बड़े हों या बराबर के हो, लडाई की इच्छा होगी तो हम इनसे जरूर लडेंगे। क्षत्री शत्रु के हाथ से मर कर सीधा स्वर्ग को जाता है।

सूरत के महाराज—तुम क्षत्री के नाम से हमारी बराबर के बनते होगे।

रणधीर—जैसे आप के ऊचे ऊचे महलों पर सूर्य की धूप पडती है तैसे ही हमारी गरीब झोंपडी में भी सूर्य भगवान प्रकाश करते हैं। जैसे आप के कलशदार महलों पर घनघोर घटा जल बरसाती है तैसे हमारी गरीब झोपडी को भी अपनी अपार दया से सूखा नहीं रखती। हमारा आप का सब ससारी हाल एक सा है और हम तुम को ये झूठा झगडा छोड कर एक दिन अवश्य यहा से जाना पड़ेगा। परतु आप के मुकट में अभिमान का तुर्रा और लगा है, ये ही आप की बड़ाई है।

सूरतपति—चेटी की मौत आती है जब उसके पर निकलते हैं।

रणधीर—पर वो मरते मरते ईश्वर की दया से हाथी का प्राण लेने के लिये बहुत है।

सब राजा—तो अब हमको आज्ञा दीजिये।

सूरत के महाराज—(सब राजो से) आप इसकी तरफ न जाय। मेरा महमान समझकर आप इसको क्षमा करें। हस दूध और जल मे से दूध पी लेता है पर जल की तरफ दृष्टि नहीं करता।

रणधीर—मुझको अपने अपराध क्षमा कराने की जरूरत नहीं मालूम होती और बिना अपराध अपराधी बन कर क्षमा कराना क्षत्री कुल को लजाना है।

(खड़े होकर तलवार पर हाथ डाला)

नगर का राजा—(कटार निकाल कर) देख, ये कटार अभी तेरे शरीर को अपना म्यान बनावेगी।

सब राजा—(पुकार कर) ऐसे अभिमानी को ये ही दड मुनासिब था। (नगर के राजा के पास आते ही रणधीर ने उससे कटार छीन ली और अपने दुपट्टे से उसकी मुश्कें बांधकर सभा मे खडा कर दिया)

रिपुदमन—जाने बाज के पजे में कबूतर फस गया। देखें अब कौन सा वीर आता है। (सब राजो ने शिर झुका लिया)

रिपुदमन—(गभीर स्वर से) ऐसे जीतब पर धिक्कार है! आप बड़े निर्लज्ज हैं। आप को कुछ लाज नहीं आती! आप के बड़े ऐसे ही थे? इसी पराक्रम से महाराज महानद ने सिकदर का मार्ग रोका था? इसी पराक्रम से उदयपुर के राणा ने नोशेरवा की बेटी ब्याही थी? इसी पराक्रम से (बाबल के बादशाह) सिल्यूकस ने महाराज चद्रगुप्त को अपनी बेटी दी थी? इसी पराक्रम से सब विलायतों के बादशाह उनको कर देते थे? कभी नहीं! जो राजा मतवाले होकर आठ पहर रणवास में बैठे रहते हैं, जो राजा वेश्यागामी होकर उनके पीछे पीछे फिरते हैं, जो राजा अपनी प्रजा के दुःख सुख का कुछ विचार नही करते,

जो राजा अपने दफ्तर या खजाने, तोशेखाने को कभी नहीं सम्हालते, जो राजा अपने बड़ों की धरोहर शस्त्र विद्या को जड मूल से भूल गये, उनके जीतब पर धिक्कार है। ऐसे ही लोगों ने दिल्ली के बादशाह को डोला देकर अपने कुल को कलंक लगाया है। क्या प्राण यश से अधिक है? मरना एक दिन सबको है पर यश मिलने का समय बारबार नहीं आता। आप लोगों ने ये पांचों शस्त्र क्या भूषण समझ कर सजा रक्खे हैं? जो इनके रखने का कुछ और भी मतलब है तो उसके प्रकट करने का इससे अच्छा समय कौन सा आवेगा?

(किसी ने कुछ जवाब नहीं दिया।)

रिपुदमन—क्या सब लोग अड़ियल टट्टू की तरह अड़ गये। हे भारतभूमि! तू अपनी सतान का ये हाल देखकर क्यों नहीं फटती? हा! किसी नदी वा समुद्र में भी इतना जल नहीं आता जो हम लोग उसमे डूब जाय!

रणधीर—भाई, तुम तो चीते के से बढ़ावे देते हो, मै अब कहा तक टैरा रहूँ।

(नगर के राजा को छोड़कर चल दिया।)

सरोजनी—(रणधीर को जाता देख ये गजल गाने लगी।)

कुश्तए हसरते दीदार है या रब किसके,
नख्ल तावूत मे जो फूल लगे नरगिसके।
वह चला जान चली दोनों यहाँ से खिसके,
उसको थामू कि इसे पाँव पड़ूं किस किसके॥
पांव तुरबत पै मेरी देख सम्हल कर रखना,
चूर है शीशए दिल सगे सितम से पिसके!
मुझको मारा ये मेरे हाल तगैय्युर न कि है,
कुछ गुमां और ही धड़के से दिले मूनिसके॥

किस परीरूयसितमगर से मिला दिल अफसोस,
किस्पै दीवाना हुवा होश गए हैं किस्के।
बस्त परवाने से कुर्बान उदू हों यानी,
आग बन जाय है वह गिर्द फिरू हूं जिस्के॥
नालए रश्क न हो बायसे दरदे सरे मर्ग,
गैर के सर पै लगाता है वह सन्दल घिस्के।
लज्जते मर्ग से हिजरासे दुआ है कि खुदा,
ये मजा हो न नसीबों में किसी वेहिस के॥
क्यों न हम शमै की मानिन्द जलें दूर खड़े,
जब उदू बायसे गरमी हो तेरी मजलिस के।
यार मोमिन से भि हैं मुद्दए तवैरवां,
वाह अफगार तरा अदमगै या विस्के॥ (गई)

नगर का राजा—(रणधीर के जाते ही) ओ हो! रणधीर के आने से ये सभा ऐसी डिगमिगाने लगी थी जैसे हाथी के चढने से नाव डिगमिगाती है। क्या इतने राजों मे कोई उसको जवाब देनेवाला नहीं था? उसके आगे सबका रग ऐसा फीका पड गया, जैसे धूप मे रहने से पतग का रग फीका पड जाता है। एक रणधीर के आने से सब सभा की ऐसी दशा हो गई, जैसे एक सिह के आने से हाथियों का झुड चकित रह जाता है! क्या ये थोडी शर्म की बात है? जब अपने राज मे इस बात की चर्चा फैलेगी तो लोगों को कैसे मुख दिखाया जायगा! मै तो ऐसे जीने से मरने को अच्छा समझता हूँ। आप अपने मन में मेरी ज्यादा बेइजती समझते होंगे परतु असल में ये सबकी बेइज्जती है, क्योंकि मैंने सबकी मर्जी से ये काम किया था।

सूरतपति—मैं उसके अभिमान का किला तोड सकता था परतु अपने यहा का महमान समझकर न तोड सका। निःसदेह आप के वास्ते ये बडी शर्म की बात है। मै आप लोगों का मन बढाने के लिए

ये वचन देता हूं कि जो वीर रणधीर को पकड कर मेरे दरबार में लावेगा उसको मै प्रेममोहिनी समेत अपने देश का आधा राज्य दूगा।

सब राजा—(एक स्वर से) अच्छा, हम भी अपने प्राण का दाव लगाकर ये बाजी खेलने को तयार है, जो इसमें जातेंगे तो प्रेममोहिनी समेत आधा राज पावेंगे और मारे गये तो इस कलक से छूटे। (सूरत के महाराज से) अच्छा तो अब हमको आज्ञा हो?

सूरत के महाराज—आप को इस मार्ग में सुख मिले।

(रिपुदमन के सिवाय सब गये)

रिपुदमन—(मन में) ईश्वर ने इनको अच्छी बुद्धि दी। अब मुझको अपने जन्म सुफल करने का समय मिलेगा। मै बहुत दिन से चाहता था कि ये नाशवान शरीर किसी के काम आवे सो भगवान ने ऐसा बानक बना दिया कि जिस ने इस शरीर को बचाया था ये उसी के काम आया और जैसे उसने मेरी बिना जाने मेरी सहायता की थी उसी तरह मुझको उसके बिना जाने उसकी सहायता का रस्ता मिला चाहा! मेरी देह ऐसे सज्जन के काम आवेगी इससे मेरा अहोभाग्य है।

धन देके जी राखिये, जी दे रखिये लाज।
धन दे, जी दे, लाज दे, एक प्रीति के काज।

प्रीति! हे मित्रतारूपी पवित्र प्रीत! तू मेरे मन में सदा ऐसी ही दृढ़ रहियो। मुझको अपने प्राणघात की चिंता नहीं, पर विश्वासघात की बडी चिंता है। (गया)

इति तृतीय गर्भांक।

———

अथ चतुर्थ गर्भांक

स्थान, सूरत के महाराज का नजर बाग।

(प्रेममोहिनी और मालती का प्रवेश)

मालती—न जाने तुम्हारा हार कहाँ गिर पडा होगा। तुम इस अधेरी रात मे वृथा भटकती हो।

प्रेममोहिनी—मेरे जान तो वो यहा अवश्य मिल जायगा। तू जरा अच्छी तरह देख भाल कर।

मालती—राजकुमारी, बुरा न मानों तो एक बात कहू।

प्रेममोहिनी—सखी! मै तेरी कौन सी बात का बुरा मानती हू।

मालती—मेरे जान तो, तुम हार ढूढने का मिस करके रणधीर सिंह को ढूढने यहा आई हो।

प्रेममोहिनी—तैने ये बात कैसे जानी?

मालती—इस समय तुम पत्तों की आहट सुनकर चारों तरफ देखने लगती हो।

प्रेममोहिनी—(मन में) आग वस्त्र से नहीं ढकी जाती। (प्रकट) तेरी बात झूट है, पर उसको सच मान ले तो तेरे विचार में कैसी रहे?

मालती—मेरे विचार में ये बात अच्छी है पर ये रीति अच्छी नहीं।

प्रेममोहिनी—क्यों?

मालती—तुमसी राजकन्या का आधीरात के समय एकान्त में पर-पुरुष से मिलना तुम्हारे कुल और गुणों को कलक लगाता है।

प्रेममोहिनी—"पर" की जगह "निज" समझकर विचार कर।

मालती—जो वे इस समय न मिले?

प्रेममोहिनी—इस समय क्या? जन्मभर न मिलेगे तो भी मै उनकी हो चुकी! मैने ये प्रण करके यहा आने का साहस किया है।

मालती—तो मै तुम्हारे साथ हूँ, पर तुम अपने विचार पर दृढ रहना।

प्रेममोहिनी—मै दृढ़ हू। (मन में) मेरा सुभाव एक सग कैसे बदल गया ? प्रेम की वर्षा से अनुराग की "नदी" पल पल मे बढती है। तरह तरह के मनोर्थ "भवर" और मिलाप की तरगें "लहर" के समान उठ रही हैं, कुल मर्जाद के "वृक्ष" बिना परिश्रम बह गये, धीरज की नाव हाथ नहीं आती, इद्रिया "परदेशी" की भात दूर हुई जाती हैं। उस शोभा "समुद्र" से मिले बिना इस (नदी) के शात होने का कोई उपाय नहीं दिखाई देता। हाय ! ये नदी रुकने से पल पल में दुगनी होती है। (प्रकट) सखी ! मेरा मन इस समय बहुत व्याकुल है।

मालती—देखो चौमासे की नदी की तरह बढकर मत चलो। अति कोई बात अच्छी नहीं होती। (१) जो नदी बहुत बढकर चलती है उसका उतार थोड़े दिनों मे आ जाता है।

प्रेममोहिनी—(मन मे) मेरा सुभाव तो ऐसा कभी नहीं था। हे मन ! तू दुर्लभ मनुष्य के लालच से क्यों मोह जाल मे फसता है। हे निर्मोही ! तू जन्म से मेरा था सो पल भर मे पराया हो गया। मै जानती हूँ कि कामदेव के बाणों से डर कर तैनें ऐसा किया होगा ! हे भगवान कुसुमायुध ! (कामदेव) आप को भी तीन लोक के विजयी होकर अबलाओं पर बल करते लाज नहीं आती ! जिसने अपने रूप से आप का तिरस्कार किया उससे बदला नहीं ले सके ! मुझको अबला समझ कर मेरे ऊपर कोप करते हो। हा प्राणनाथ ! अब तो आप के बिना मेरा कोई साथी नहीं रहा। मै केवल आप के मिलाप की आशा से इस भयकर रात में सबको छोडकर यहाँ आई हूँ।

(रणधीर का प्रवेश)

---

(१) अति किसी बात की अच्छी नहीं होती।

रणधीर—(चलते चलते दूर से प्रेममोहिनी को देखकर) इस समय इस पुष्प - वाटिका में ये प्रकाश कैसा हो रहा है ! सूर्योदय का समय तो अभी नहीं हुआ, पर सूर्योदय का समय न होता तो कोयल की कुहुक कहा से सुनाई देती, कहीं कमलनी से मिलने को रूप बदल कर सूर्य तो यहा नहीं चले आये ? नहीं, वे आये होते तो ये मूर्ति प्रफुल्लित दिखाई देती। ये तो पवन के झोके से दीपक की जोत के समान थरथराती है अथवा जल के सकोच से सुवर्ण की लता मुर्झा गई हो, ऐसा इसका रूप दिखाई देता है। ये भी बड़े अचभे की बात है कि मै ज्यों ज्या इसके पास जाता हूँ, मुझको कुछ अधिक अचरज का सा रूप दिखाई देता है। आहा ! इस नागन सी अधेरी रात के सिर में ये मूर्ति नागमणि सी झलक रही है, इसके देखने मात्र से आखों में प्रकाश आता है ! मै पास जाकर इसकी शोभा निरखू ।

मालती—(प्रेममोहिनी से) तुम्हारे आये पहले रणधीरसिह चले गये होगे तो तुम कब तक उनकी बाट देखोगी ?

प्रेममोहिनी—मेरा मन साक्षी देता है कि रणधीरसिह अबतक नहीं गये और जो कवियो के वचनानुसार सच्चे प्रेम में कुछ भी आकर्षण शक्ति है तो वे आज इस मार्ग से अवश्य जायगे।

रणधीर—जिसको मै कोयल की कुहुक समझता था सो तो अब किसी मधुरालापी मनुष्य का सी वाणी मालूम होती है, परंतु कुछ समझ में नहीं आती। अच्छा, आगे बढकर सुनू। (आगे बढ़ा)

प्रेममोहिनी—(नेत्रो में जल भर कर) हे प्राणवल्लभ ! ये नेत्रों का जल आप के लिये अर्घ पाद्य है और आप के विराजने के लिए आखों का आसन बनाया है अब आप आने में क्यों देर करते हो ?

रणधीर—(सुनकर) आहा ! ये तो कोई पद्मिनी अपने प्यारे मित्र की बाट देख रही है। देखो प्रेम कैसी वस्तु है जिसके लिए ये

सुकुमारी इस समय यहा चली आई। इसके वचनों से ये उस पर अत्यत मोहित मालूम होती है पर अब मै आगे कैसे बढ़ूँ। (रुक गया)

मालती—(रणधीर को देखकर) भला मै रणधीर को यहा बुला दू तो मुझको क्या दो ? (रणधीर को दिखाकर) देखो वो सामने से कौन आता है ?

प्रेममोहिनी—(रणधीर को देख आश्चर्य से धीरे) क्या है ! रणधीरसिह ही मेरे सामने आ गए अथवा मेरे मन की कल्पना से मुझको ये प्रतिमा दिखाई देती है। मन की कल्पना ही होगी मिलाप लायक मेरा भाग कहा !

रणधीर—(मन मे) इसने तो ये ऐसा वचन कहा कि मानों मेरा ही मार्ग देख रही थी। भला ये कौन है ? मेरे जान तो इसके समान रूपवती पृथ्वी के किसी विभाग पर कोई न होगी। दैव की विचित्र रचना का ये एक प्रमाण है। अच्छा, उसके पास जाकर इसका हाल पूछू। (आगे बढ़कर प्रकट में) हे पद्मिनी ! तुम कौन हो, रति हो, देवागना हो नाग-कन्या हो, किवा अप्सरा हो ? जल्दी अपना हाल कहकर मेरा सदेह मिटाओ। तुमको देखकर मेरे मन में अनेक तरह की सभावना उठती है।

(प्रेममोहिनी ने लजाकर शिर झुका लिया)

मालती—(लाज से नीचे दृष्टि करके) प्रिय सज्जन ! ये न रति है, न देवागना, न नागकन्या, न अप्सरा। ये तो एक मानवी है। मानवी सिवा कोई नहीं। पर आप को ये आधी रात का समय देखकर ऐसा कुछ भ्रम हुआ होगा, नि.सदेह ये भयकर रात मनुष्यों के चलने फिरने लायक नहीं है। आप इस स्थान में चलकर थोडी देर आराम करें वहा आप को इसका सब हाल मालूम होगा।

रणधीर—न हमको किसी का डर, न किसी के चरित्र जानने की इच्छा। हम कभी स्त्री के वचन पर नहीं चले, हमको क्षमा करो।

(मन में) मेरे मन में टूटता जवाब देकर इनसे अलग होने की बहुत इच्छा है पर न जाने मेरे मुख से ऐसे नरम शब्द क्यों निकलते हैं ?

प्रेममोहिनी—(मन में) हे दैव ! क्या मेरी आशा के फूल, फल आने से पहले ही मुरझा जायगे ?

मालती—हे बडभागी ! आप के मुख से ये अक्षर अच्छे नही लगते । क्या आप को ऊखा अनिरुद्ध की कथा स्मर्ण नहीं है ?

प्रेममोहिनी—(धीरे मालती से) सखी ! तू मुझको यहा न ठैरने देगी ?

रणधीर—दोष हो चाहे न हो, हम किसी की देखादेखी काम नही करते, बडों के काम पर नहीं, आज्ञा पर दृष्टि देनी चाहिये, हमको दूसरों से क्या ? हमारे लिये ये बात अच्छी नही दिखाई देती ।

प्रेममोहिनी—अमृत तो सब के लिये अमृत ही है इससे किसी को मरते नहीं सुना और आप क्या— (लजाकर चुप हो गई ।)

मालती—(मन मे) मेरे आगे ये दोनों मन खोल कर बात न करेंगे (प्रकट) सखी ! मुझको एक बडा जरूरी काम याद आ गया इस कारण अब मै तो जाती हूँ ।

प्रेममोहिनी—तो क्या मुझको अकेली छोड जायगी ? (पल्ला पकड़ लिया)

मालती—अकेली क्यों ? तुम्हारा रखवाला तुम्हारे पास है । (पल्ला छुड़ाकर चली गई) ।

रणधीर—(उसके जाते जाते) क्यों झूठी आस बँधाती हो, पर्वत पर कुआ खोदने से कहीं जल निकला है ?

प्रेममोहिनी—वहाँ स्रोत नहीं, पर झरने का जल मिलेगा ।

रणधीर—परतु काले कवल पर दूसरा रग तो नहीं चढता !

प्रेममोहिनी—देखो, ममोरा के लगते ही उसका रग पलट जाता है ।

रणधीर—जैसे चकोर को चद्रमा देखे बिना मद नहीं आता तैसे अच्छे मनुष्य भी पराए धन से सदा बचते है।

प्रेममोहिनी—परतु चकोर चद्रमा को सूर्य समझकर दूर भागे तो दोष किसका?

रणधीर—चकोर का।

(प्रेममोहिनी ने हँसकर सिर नीचा कर लिया)

रणधीर—(मन मे) मैं अपने मन को बहुत सम्हालता हूँ पर इसके मिलाप से मेरा पत्थर सा हृदय आप ही मोम हुआ जाता है! (प्रकट) मै तुम्हारी पहेली का अर्थ समझ गया, पर इससे पहले मुझको तुम्हारी प्रीति का प्रमाण मिलना चाहिये।

प्रेममोहिनी—सहृदय मनुष्य को तो उसका हृदय ही प्रमाण था, पर आर इसके प्रमाण में अपनी अँगुली की अँगूठी देखिये।

रणधीर—(अँगूठी देखकर मन में) इस बात का कुछ जवाब नही बनता, परतु अभी धैर्य रखना चाहिये! (प्रकट) बात बनाने में पुरुषों की अपेक्षा स्त्री स्वभाव से चतुर होती है।

प्रेममोहिनी—(उदास होकर) क्यों जी! पारस लोहे को सोना बनाता है, पर लोहा पारस को छोड चमक पत्थर पे क्यों प्रीति करता है।

रणधीर—ये उसका सुभाव है।

प्रेममोहिनी—हाय! दैव ने सबके सुभाव उलटे बनाये हैं। देखो, सूर्य की गरम किरणों से कोमल कमल का खिलना और चद्रमा की कोमल किरणों से चद्रकात मणि का पिघलना सब तरह उलटा दिखाई देता है।

रणधीर—ये ईश्वर की शक्ति है।

प्रेममोहिनी—तो उसी शक्ति से सूर्यमुखी का सूर्य पर मोहित होना समझो।

रणधीर—(मन में) इसकी कल्पलता सी वाणी से प्रेम सुगधित पुष्प तो जरूर झड़ते हैं, परतु इसके आगे से हटकर इसकी परीक्षा लेनी चाहिये। (प्रकट) ऐसी बातों से तो कामी पुरुष मोहित होते है। मेरे ऊपर तुम्हारा मोहिनी मत्र नहीं चल सकता। (कुछ आगे बढ़कर एक वृक्ष की ओट में छिप गया।)

प्रेममोहिनी—(उदास भाव से) हा! ये तो चले। मेरी विरह की आग ने इनके कठोर मन को कुछ भी न पिघलाया। घनघोर घटा के देखने से अभी तो प्यासे पपहिये के नयनों की प्यास भी न बुझने पाई थी कि, इतने में दक्षण वायु ने सब काम बिगाड दिया। हाय! मित्र का वियोग भी कैसा दुखदाई होता है—

"भर भर आवैं नैन वियोगी, सूखत सकल शरीरा।
प्रीतिमान पहिचानें प्यारे, प्रीतिमान की पीरा॥
रह सबते निरास ह्वै जग मैं, सहै सकल दुख भोगू।
परम पुनीत विनीत मीत सों, दैव न देइ वियोगू॥
जो करतार सुनें मम विनती, देइ इती कर छोहू।
अति दिल्दार पियार यार सों, कबहु न होय विछोहू॥
परबस परै जाय वर सरबस, सब तज होय बिदेही।
सुपने मे विछुरे न विधाता, आपन यार सनेही॥
भोगे नर्क निकाय जन्मभर, रहे सदा बरतापी।
पै कबहूँ बिछुरे न विधाता, आपन मीत मिलापी॥
धर्म कर्म बर त्याग जगत मैं, फिरै प्रेम मतवारो।
पै कबहूँ विछुरे न बिधाता, आपन प्राण पियारो॥
बर जल भीतर बसै जन्म भर, तप कर तनहि झुरावै।
पै सुपनेहु अपने पीतम को, विध न वियोग करावै॥
बरु तन राख लगाय चाह भर, खाय घरन के टूका।
पै करतार पियार यार सों, कबहु परै नहिं चूका॥

जाति पाति बर गोय खोय कुल, सब तज होय भिखारी।
कबहुं न होय मोत की मूरति, इन नैनन ते न्यारी॥"

(गद्गद स्वर से) हे अधम शरीर! तैंने प्यारे मित्र का सग न दिया तो क्या हुआ? प्राण तो तेरा साथ छोडकर उसके सग जाता है। हा मित्र! आपके वियोग मे बहुत दिन जीने के बदले तत्काल प्राण छोड देना मेरे मन को अच्छा लगता है। हे प्यारे आप मुझको छोडकर चले गये, पर मै आपसे अलग होने की सामर्थ्य नहीं रखती। **(मूर्छित होकर गिरती थी, इतने में रणधीर ने जल्दी से आकर घुटने के सहारे हाथों पर रोक लिया।)**

रणधीर—मुझसे बडी भूल हुई जो इस अति कोमल प्रिया की प्रेम परीक्षा के लिये ऐसा कठोर विचार किया। ये लक्ष्मी मेरे नयनों में अमृत रूपी अजन की सलाई के समान लगती है और इसका शरीर मेरी देह को चदन के समान सुखदाई है, इसकी भुजा मेरे गले में मोतियों की माला के समान शोभायमान है। अहा! इसकी अचेत दशा भी मेरे मन को चैतन्य करने वाली है।

प्रेममोहिनी—**(उसी दशा में)** हे जीवितेश्वर! आपके वियोग से मै प्राण छोडती हूँ पर आपके चरण मुझसे नहीं छोडे जाते। मैने जब से आपका नाम सुना, मन, वचन, कर्म से आपको स्वामी समझा। आप के सिवाय कभी किसी पुरुष को पुरुष भी समझा हो तो सूर्य चद्रमा साक्षी हैं। आपने मुझको त्याग दिया परतु आपकी तरफ से मुझको कुछ खेद न हुआ क्योंकि पति को स्त्री पर सब तरह का अधिकार होता है। हा! इस अभागी देह से आप की कुछ सेवा न बनी ये बात मेरे मन में खटकती है। अच्छा, अब भगवान से प्रार्थना है कि जो मेरा दूसरा जन्म होय तो आपकी दासी होकर अपना जनम सफल।

(रुक गई)

रणधीर—ये मुझसे बडी भूल हुई। मै कमल के कोमल पत्तो को आग पर रख कर तपाया चाहता था। हाय! मेरी बुद्धि जाती रही। अब मेरा प्रीतिमान से प्रीति रखने का नेम कहाँ गया? देखो, जैसे तोता मीठे फलों को पहिचान पहिचान कर खाता है उसी तरह कामदेव अच्छे आदमियों को ताक ताक कर अपने बाणो से घायल करता है। (प्रकट) प्यारी क्षमा करो, क्षमा करो। इससे बढकर सुन्ने की सामर्थ्य नहीं है। मुझको तुम्हारे अगाध प्रेम की थाह नहीं मिली थी।

प्रेममोहिनी—(नेत्र खोलते ही लाज से अलग खड़ी होकर) मेरी तो यही इच्छा है कि आप प्रसन्न रहो। आप की प्रसन्नता में मेरी प्रसन्नता है, आपके सुख मे मेरा सौभाग्य है। आपकी इच्छा होय, घडी दो घडी महल मे चलकर आराम कीजिये। नहीं, जिसमें आपको प्रसन्नता होय सो करिये।

रणधीर—(आनंद से प्रेममोहिनी का हात पकड़कर) मै तुम्हारी प्रसन्नता करने के लिए मन से प्रसन्न हूँ। भला लक्ष्मी को कोई चाहे तो मिले वा न मिले पर लक्ष्मी जिससे मिलना चाहे उसे क्यों न मिले।

(दोनो गये)

इति चतुर्थ गर्भाक।

———

अथ पंचम गर्भांक।

स्थान, प्रेममोहिनी का महल सजा हुआ है।

(रणधीर मखमली कोच पर और प्रेममोहिनी दूसरी कुर्सी पर बैठी है।)

प्रेममोहिनी—(मुस्कराती हुई लाज से नीची आँख करके) प्यारे प्राणनाथ! मुझको अपने प्रिय मित्र के नाम एक प्रेम पत्रिका लिखानी है। आपको अवकाश हो तो कृपा करके लिख दीजिये। आप सा चतुर लिखनेवाला मुझको कहाँ मिलेगा।

रणधीर—(अचरज से मन में) इसने ये कैसी आश्चर्य की बात कही! मै इसकी मीठी बातों में आकर ठगा तो नहीं गया? घडी भर पहले ये मेरे बियोग से शरीर छोडती थी। अब ये मुझसे अपने मित्र के नाम चिट्ठी लिखाती है? ईश्वर जाने इसकी बातों मे क्या भेद होगा। (प्रकट) अच्छा तुम अपना प्रयोजन बता दो।

प्रेममोहिनी—प्रेम, स्वाभाविक प्रेम, सच्चा प्रेम, अचल प्रेम और कुछ नहीं।

रणधीर—हमको तुम्हारी तरह प्रेम जताना नहीं आता, पर तुम्हारे लिए पुस्तकों के बल से कुछ लिखते हैं।

(प्रेममोहिनी ने दवात, कलम, कागज ला दिया)

रणधीर—(लिखकर) सुनो—

"प्रेम जल की वर्षा से प्यासे पपहिए की प्यास हरनेवाले जलधर, प्रेम-प्रफुल्लित पुष्पों को सुगधि से ससार को सुगधित करनेवाले तरुवर, प्रेम भूमि मे बियोग की वायु झेलकर अचल रहनेवाले भूधर, प्रेम पियूष के सिचने से मुरझाई लता को हरे करनेवाले हिमकर! आपका मुखचंद्र निहारने को मेरे नयन चकोरों को बान पड गई है, इस कारण पल भर के बियोग से ये व्याकुल हो जाते हैं। आपको ऐसा चुबक कहाँ मिला

जिसके बल से आप दूर बैठकर मेरा मन खैचते हो ? कोई प्राणी बधन में रहने से प्रसन्न नहीं होता पर मै आपके प्रीति-जाल में प्रसन्न हूँ। आपने ये विद्या कहाँ से सीखी ? जो हमको सिखा दो तो हम भी आपके ऊपर अजमावें। ससार के विषवृक्ष में एक प्रीति ही अमृत फल है। ससार सागर के पैरने वालों में थके हुओं को एक प्रीति ही सहारा देने-वाली नवका हैं। ससार की पुष्प वाटिका में ये ही फूल सज्जनों के सुगध लेने लायक है। बहुत क्या लिखें, विचार कर देखो तो ससार के सब कामों का ये ही मूल कारण ठैरता है।"

प्रेममोहिनी—आपने मेरे कहने से इतना श्रम किया इसलिए मै आपका बहुत उपकार मानती हूँ।

रणधीर—मै तुम्हारे मित्र को नहीं जानता इस कारण ये चिट्ठी अच्छी तरह नहीं लिखी गई।

प्रेममोहिनी—आप ऐसी बात मत कहो ? आपसे मेरा कौन सी बात का अतर है। आपने ये चिट्ठी बहुत अच्छी लिखी। अब मेरे कहने से आप ही इसको अपने पास रक्खो।

रणधीर—क्यों ! क्या ये तुमको अच्छी नहीं लगी ?

प्रेममोहिनी—अच्छी लगी, जब तो आपको देती हू !

रणधीर—ये तुम्हारी है।

प्रेममोहिनी—ना ना आपकी है। मेरे कहने से आपने लिखी इस वास्ते आपका बडा उपकार हुआ पर कुछ और भी प्रेम भाव से लिखी गई होती तो अच्छा था।

रणधीर—कहो तो दूसरी लिख दूँ।

प्रेममोहिनी—अच्छा, जब आपकी इच्छानुसार लिख जाय तो आप मेरी तरफ से एक बार पढ़कर अपने पास रखना, मेरे ऊपर आपका बड़ा उपकार होगा।

रणधीर—(हँसकर) मैंने अब तुम्हारा भाव समझा, तुम मेरे हाथ से मेरे ही ऊपर तीर छुड़ाया चाहती हो !!!

(प्रेममोहिनी ने हँसकर सिर झुका लिया)

रणधीर—अच्छा, हँसी चोहल की बातें तो हो चुकीं। अब कुछ मेरे मन को धीर्य देने का भी तो उपाय करो।

(प्रेममोहिनी ने फूलों का गजरा उसके गले मे पहरा दिया)

रणधीर—मेरे घायल मन पर कामदेव के बाणों की वर्षा करनी तुमको मुनासिब नहीं थी। अब ये चद्रमा के अमृत बरसाये बिना कैसे अच्छा होगा।

प्रेममोहिनी—क्या चद्रमा के अमृत बरसाने का भी कोई उपाय है ?

रणधीर—(हँसकर) जो चद्रमा ही अपने मुख से ये बात पूछे तो मै क्या जवाब दूँ।

(प्रेममोहिनी लजाकर कुछ नही बोली)

रणधीर—बादल से बिजली को अलग होते कभी नहीं देखा फिर तुम अलग बैठकर ये नई रीति क्यों करती हो !

प्रेममोहिनी—देखो, दीन चकोरी तो चद्रमा के दर्शनमात्र से प्रसन्न हो जाती है।

रणधीर—हृदय को तपाने के लिए लालच बुरी आग है।

प्रेममोहिनी—पर सोना आग पर रखने से नहीं छीजता।

रणधीर—हाँ, नहीं छीजता, परतु सुहागे से मिलकर पिघल जाता है।

प्रेममोहिनी—(लजाकर) आप बड़े रसिक हैं, मै आपको जवाब नहीं दे सकती।

रणधीर—तो अब हम जीत की लूट करें।

(प्रेममोहिनी का हाथ पकड़कर अपने पास बैठा लिया)

प्रेममोहिनी—हे सज्जन ! मेरा हाथ छोड दो, मुझको इसमें बडी लाज आती है !

रणधीर—(हँसकर) इसमें लाज की क्या बात है। मेरे जान तो ये हाथ ऐसा नहीं मिला जो जन्म भर छुट जाय।

प्रेममोहिनी—मुझसे आपकी इस कृपा का क्या बदला दिया जायगा ?

रणधीर—इसके बदले मे तुमसे केवल प्रीति चाहता हूँ, परतु ये बड़े अचरज की बात है कि मन सजीवनी औषध का नाम अब तक नहीं जाना।

प्रेममोहिनी—हे प्राणनाथ ! मेरा नाम प्रेममोहिनी है और मै सूरत के महाराज की कन्या हू ।

रणधीर—तब तो तुमने मेरे हृदय का समझकर घायल किया। पानी ठण्डा हो चाहे गरम हो, आग बुझाने के लिये एक सा है।

प्रेममोहिनी—(आश्चर्य से) आपने कैसा वचन कहा ?

रणधीर—मै सच कहता हूँ। देखो, मोर और साँप का वैर है, परतु मोर पख का निकला हुआ तावा भी साप के विष उतारने में काम आता है।

प्रेममोहिनी—(घबराकर) स्वामी आप कौन हैं ?

रणधीर—प्यारी मै पाटन के महाराज का पुत्र हूँ।

प्रेममोहिनी—(आँसू भर कर) आप मेरे मन से तो अलभ्य रत्न है। ससार में दुलभ वस्तु की चाह विशेष होती है सो मेरे लिये आप से अधिक और क्या दुर्लभ होगा ? हाय ! मेरे भाग में क्या ये ही लिखा है कि मै रत्न उठाने को हाथ डालूँ तो वो मेरा हाथ लगते ही अगार हो जाय।

रणधीर—ना प्यारी तुम ऐसा वचन मत कहो। देखो, जहाँ तुम्हारे नयनों की झलक जाकर पडती है तहाँ कमल पत्र के आकार फूल बन जाते हैं।

प्रेममोहिनी—बस प्राणनाथ, मेरी भी यही इच्छा है। मुझको विश्वास है कि ऐसे सज्जन हाथ पकड़े पीछे अधर धार मे नहीं छोड़ते।

धारत विष हर कण्ठ मैं, कमठ पीठ भू भार।
उदधि सहत पावक प्रबल अंगीकृत चितधार ॥१॥
कुटिल कलकी मित्र रिपु, निशिकर निज शिर धारि।
अंगीकृत प्रतिपाल विध, प्रगट करत त्रिपुरारि ॥२॥

रणधीर—विश्वास रखो, मै जैसे किसी की प्रेम-परीक्षा लिए बिना उसको नहीं अपनाता तैसे ही अपनाये पीछे उसकी तरफ का अपराध निश्चै हुए बिना उसको परित्याग भी नही करता। जिसने प्रीति करके छोड दी उसे प्रीति का रस नही मिलेगा।

रुकै न काहू जतन ते, जाहि प्रीति की बान।
भौंर न छोड़ै केतकी, तीखे कटक जान। १॥

प्रेममोहिनी—हे प्रीतम! अपने चातक की भी यही दशा समझो, वो सब नदी नालों को छोड कर केवल स्वाति बूद के भरोसे प्राण रखता है।

रणधीर—(आकाश की तरफ देखकर) हे प्रिये! देखो सूर्योदय का समय हो गया, दीपक की जोत मद पड गई, हार के मोती शीतल हो गए, पक्षी चहचहाने लगे और कमल के चिकने चिकने पत्तों से ओस की बूँद मोतियों की लडी के समान ढलकने लगी। अब तुम आज्ञा दो तो मै भी जाकर स्नान करूँ।

प्रेममोहिनी—ना प्राणप्यारे, अभी सूर्योदय का समय नही हुआ। आपके तेज से दीपक की जोत मद पड गई और पुष्पों की शीतलता से मोती ठडे हो गए। पक्षी नही चहचहाते, रात्रि के कारण मीठे मीठे सुरों से कोयल बोलती है, कमल के पत्तों पर ओस की बूँद नहीं ढलकती, मेरे कपोलों पर आँसू बह आए हैं।

रणधीर—देखो पद्मिनी, ये सूर्य अपनी किरणों से बादलों को रंग रग के बनाता है और कमल के खिलने से भौंरे उड उड कर अपनी भौरियों के पास जाते हैं। देखो, भैरव के मीठे मीठे सुर कहीं दूर से आकर कान में पडते हैं और सप्तऋषि मानो स्नान सध्या करने के लिए आकाश मार्ग से मानसरोवर के किनारों पर उतरते हैं, धान के हरे खेत को तरह तोतों का झुड उडा जाता है।

प्रेममोहिनी—तो क्या सत्य ही मेरी सौत बन कर पूर्व दिशा से सूर्य की किरणें निकल आईं। हा दैव! अब यह पहाड सा दिन कैसे कटेगा। प्यारे रणधीर! मै ऊपर से हरी भरी हूँ पर महदी की लाली के समान आपका रूप मेरे रोम रोम में समा गया है। हा प्राणनाथ! प्राण बिना ये शरीर कैसे रहेगा!

रणबीर—प्यारी! ऐसा बचन मत कहो। मेरे मन की बेल में तुम्हारी प्रीति का पैवद ऐसा नहीं लगा जो कभी अलग हो जाय।

प्रेममोहिनी—भला, जिन नयनों को आप की अलबेली छबि निहारे बिन कल नहीं पडती और जो नयन अपनी टकटकी के बीच में पलक पडने से दुःखी होते हैं उन नयनों से आप के पीछे किसकी ओर दृष्टि उठाकर देखूँगी और ये दुखिया रो रो कर कैसे दिन पूरा करेगी।

पहलै अपनाय सुजान सनेह सों क्यौं तुम नेह को तोरिये जू।
निरधार दै धार मझार दई गहि बांहन नाहन बोरिये जू॥
घन आनद आपने चातक को गुन बांधले मान न छोरिये जू।
रस प्यास जिवाय बढ़ायकै आस विसास मैं क्यौं विष घोरियेजू।

रणबीर—ऐसे बचनों से इस समय कलेजा फटता है, इस कारण ऐसे मर्मबेधी बचन मत कहो। सूर्य अपनी लाज लूटे। पहले मुझको प्रीतिपूर्वक मिलकर जाने दो। (हाथ छोड़ने की इच्छा करके) ये कैसा

अचरज है कि हाथ अलग नहीं होता ! क्या तुम्हारी बिजली की सी देह में बिजली को सी आकर्षण शक्ति है !

प्रेममोहिनी—जब आपने बादल से बिजली को कभी अलग होते नहीं देखा तो अब आप ये नई रीति क्यों चलाते हो।

रणधीर—(हाथ छोड़कर खड़े होते हुए नेत्रों में जल भर कर) मैं क्या करूँ, दैव को यही रुचता है। जैसे जल में काई तैसे सयोग में वियोग उसने बना दिया है।

प्रेममोहिनी—**कर छुटकाए जात हो, मोहि निबल जिय जान।**
पै हियरे सै जाहु जब, तब जानों बलवान॥

रणधीर—ना प्यारी, मै ऐसा बलवान नहीं हूँ। मै तो आप ही अपना मन तुम्हारे पास छोड चला हूँ। (जाती बार फिर फिर कर देखने लगा।)

प्रेममोहिनी—(पुकार कर सजल नयन से) प्राणनाथ ! ठैरो, क्षण एक ठैरो, मुझको अपनी मोहिनी मूर्ति मन भर कर एक बार और देखने दो !

रणधीर—(प्रेममोहिनी की तरफ देखकर) इसी मिस मुझको अपनी जीवन मूल के निरखने का कुछ समय मिलेगा। (ठैर कर) प्यारी, इससे तो प्रेम की गाठ और घुलती है। अब मुझे जाने दो।

(जाने लगा)

प्रेममोहिनी—(पुकार कर) प्राणवल्लभ ! ठैरो, कुछ देर और ठैरो, मुझको एक बात आपसे कहनी है।

(रणधीर फिर कर खड़ा हुआ)

प्रेममोहिनी—आपने रात के आने का समय निश्चय कर लिया।

रणधीर—सो तो पहले ही हो चुका है।

प्रेममोहिनी—(राग विहाग)

मो मन पिय गुन रह्यो भुलाय।

कबहुं रैन रस रंग सुरत करि अंग सुरत बिसराय।
कबहुंक पिय बियोग सुध आवत सुध बुध सकल हिराय!
॥ मो मन०

वह सुख सदन मदन की मूरति नयनन रही समाय।
नयन खोल चहुं ओर निहारत पुन वह छवि न लखाय।
॥ मो मन०

मिलत प्रात चकई प्रीतम सों दारुण बिरह विहाय!
होत प्रात मोकों बियोग पिय ताते हिय अकुलाय।
॥ मो मन०

प्रथम समान धाम धन परिजन सुहृद सखी समुदाय।
पै बिन प्राणनाथ प्रीतम वर मो हिय कछु न सुहाय!॥
मो मन पिय गुन रह्यो लुभाय ॥१॥

इति पचम गर्भांक।

तृतीयाक समाप्त।

———

अथ चतुर्थांक प्रारंभ

प्रथम गर्भांक

स्थान—राजमार्ग

(रिपुदमन की सेना धीरी चाल से चलती है। नेपथ्य में बड़ा कोलाहल हो रहा है। रिपुदमन केसरिया बागा पहन, शस्त्र सजा, घोडे पर सवार हो पीछे से अपनी सेना के पास आता है और सेना के लोग खड़े होकर उसकी सलामी उतारते हैं।)

रिपुदमन—मै माता पिता से प्रणाम कर स्वस्ति वाचन के लिए टैर गया था, परतु आप लोग अब तक रणभूमि में कैसे नहीं पहुँचे? देखो, ये रण समुद्र के (१) तरगों की घोर ध्वनि सुनाई देती है और मै नाव बनकर इस (समुद्र) से प्यारे रणधीर के (२) पार उतारने का प्रण कर चुका हूँ, फिर क्या अब देर करने का समय है?

(नेपथ्य में फिर हल्ला हुआ और लडाई के बाजे सुनाई दिए।)

रिपुदमन—जैसे बादल के गर्जन से सिंह को मद चढता है तैसे लडाई के बाजे सुनकर मुझसे यहाँ नहीं ठैरा (३) जाता। इसमें तो कुछ सदेह नहीं कि नेकनीयती और परोपकार के विचार से लडनेवालों की ईश्वर ने कभी जय की हो अथवा निराधार मनुष्यों की तरफ सहारा देनेवालों को कभी सहारा दिया हो अथवा नीति और धर्म के मार्ग मे

---

(१) की (२) को (३) ठहरा।

चलनेवालों पर कभी दया की हो तो आज हम उसकी दया से अवश्य जीतेंगे। वो परम दयालु ईश्वर ऐसे अभिमानी, अधर्मी और लालची पुरुषों के बदले हम पर जरूर दया करेगा बल्कि हमारी तरफ से आप लड़ेगा। हमारा विचार ऐसा तो निर्मल और स्वच्छ है कि उसको चाहे ससार की रीति से, चाहे धर्म की रीती से जाँच कर देखो, उसमें पाप का छींटा कहीं नाम को नहीं दिखाई देता। भला, अपने बैरी कौन हैं? वे हो ना जो धर्म और नीति का मार्ग छोड पराये माल पर मन दौडाते हैं, जो पापी कौरवों की भाँति बहुत आदमी इकट्ठे होकर अकेले अभिमन्यु की तरह रणधीर के प्राण हरने को चिता कर रहे है।

(नेपथ्य में)—हे देश देशातर के राजा महाराजों! आगे बढ़ो, आगे बढ़ो। दो दो पाँव चलकर रुक क्यों जाते हो? धीरज से आगे बढकर बैरी के दरवाजे की सकल (१) को खडखडाओ! जब आप को सोते सिह की गुफा का दरवाजा देखने से इतना डर होता है तो वो गर्ज (२) कर आपके सामने आवेगा तब आपका क्या हाल होगा?

रिपुदमन—अब तो बैरियों का हाल तुमने अपने कान से सुन लिया। जीत का आधार सेना की गिनती के बदले मन की दृढ़ता पर अधिक होता है और जितनी थोडी सेना से जीत हो उतना ही जस अधिक फैलता है। देखो, अब तुम सब एक मन होकर ऐसा प्रण करो कि आज के दिन मरना या मारना, आज की लडाई में हार कर जीते रहने के बदले बैरी के हाथ से मरना हर तरह अच्छा है। जब इस शरीर के पलभर ठैरने का भरोसा नहीं तो इसके लिए अपना धर्म क्यों छोडना चाहिये? ऐसा समय बारबार नहीं मिलता। शूरवीर ऐसे समय की बाट देखते हैं। वीरों को अपनी वीरता जताने का ये सबसे अच्छा मौका है। इस समय हाथ में तरवार लेकर ऐसी लडाई करो जिससे रुधिर की नदी बह जाय।

---

(१) साँकल (२) जब वह गरज।

जो मन खोलकर लड़ोगे तो जीत कुछ दूर नहीं है। हारोगे तो दास बन कर रहना पड़ेगा।

(नेपथ्य में)—सब लोग खुशी से आगे बढ़ो। डरने का क्या काम है ? रणधीर इकल्ला है और अपने पास इतनी सेना है, जो हम सब इकट्ठे होकर एक एक करके मारेंगे तो उसको मार लेंगे।

रिपुदमन—हे बकवादी ! बेशर्म ! झूठे ! झूठा बढावा देकर सेना का मन बढाते तुमको लाज नहीं आती। जिस समय रणधीर की बिजली की सी तलवार तुम्हारी सेना पर पड़ेगी उस समय रणधीर का बल तुमको मालूम होगा। तुम्हारी क्या सामर्थ्य जो रणधीर की छाया पर भी हाथ चला सको। रणधीर मेरा मित्र है और उसने अपने प्राण झोंककर मेरे प्राण बचाये थे, फिर क्या मै उसके लिए अपने प्राण न दूँ ? प्रीति की कसौटी विपत्ति है और उपकारियों को बदला देने का ये समय आया है। जो लोग प्रयोजन की प्रीति करते हैं, उनका जीतब धिक्कार है। उनका मुख देखने से पाप होता है। जो लोग झूठी प्रीति जताकर दूसरे को ठगते हैं, उनके मा बाप को कलक लगता है। मेरा राजपाट जाय तो भले ही जावे, परलोक बिगड़े तो भले ही बिगडे ! मै स्वर्ग नहीं नर्कवास करने में प्रसन्न हूँ, परतु रणधीर का सग कभी न छोडूँगा। जब तक मेरा सिर धड से अलग न होगा, जब तक मेरे शरीर की एक हड्डी साबूत रहेगी मै रणधीर का बाल बाँका न होने दूँगा। जब मैने मौत का डर छोड दिया तो मुझको किसका डर है ? जीत हार तो ईश्वर के हाथ रही पर मै तलवार हाथ में लेकर आज ऐसी लडाई किया चाहता हूँ जिससे सब भूमडल रुडमुडमय हो जाय।

(नेपथ्य में)—हे हे विकट सुभट वीर लोगों ! जो आपने सब तरफ की नाकेबदी कर ली है तो अब यहाँ आकर इस छिपे हुए साप को बिल से बाहर निकालने का उपाय करो। ये दुष्ट अपनी मौत के डर से छिप कर धरती पकड़ बैठा है।

रिपुदमन—रे रे पापी ! नीच ! झूठे पाखडियो ! रणधीर की निंदा करने से तुम्हारी जीव (१) के टुकड़े नहीं होते ? होंगे जरूर होंगे। तुम्हारी मैंडक की सी टर टर उसके कान तक न पहुंचे इसी में तुम्हारे लिए अच्छा है, नहीं तो भला भूखे साप के क्रोध में भरे पीछे दीन मेंडकों का कहाँ पता लगेगा ! रे अधर्मियों, तुम किस नाक से अपनी बडाई करते हो ? कल रगभूमि में हार होने से तुमको कुछ लाज नहीं आई और रात की हँसी होने पर भी तुम्हारा मन ढीला न हुआ। सच है, चिकने घड़े पर पानी नहीं ठैरता। तुम्हारे मन में चुभती हुई बातें न लगेंगी पर चुभते हुए बाण लगेंगे। मनुष्य को मौत आती है, जब उसके शरीर में वायु भडक उठती है। इस कारण मै तुम्हारे बचनों का कुछ बुरा नहीं मानता परतु तुम्हारी बुद्धि ठिकाने लाने का उपाय करता हूँ। जब तक मेरे शरीर मे स्वास बाकी रहेगा मै अपने बैरियों को घोड़े की पीठ पर जमकर कभी न बैठने दूगा। (अपनी सेना की तरफ देखकर) मेरे बहादुर लडवैय्ये वीरो ! हुशियार हो ! अपनी तरवार म्यान से बाहर निकाल लो ! और परमेश्वर का नाम लेकर आज ऐसी बहादुरी करो जिससे अपना नाश हो जाय तो भी अपना नाम भूमडल पर सदा अमर रहे।

धरहु धरहु चहुं ओर ते, करहु करहु बल घोर।
लरहु लरहु यश कारणैं, हरहु हरहु रिपु धीर॥

(सब सेना ने म्यान से तरवारें निकालकर ऊँचो उठा ली और रिपुदमन की कहन से अपनी प्रसन्नता जताकर तरवार चमकाते हुए रिपुदमन के सग नेपथ्य में चले गये।)

इति प्रथम गर्भाक।

---

(१) जीभ

अथ द्वितीय गर्भांक

स्थान, रणधीर का महल।

(रणधीर पलग पर सोता है)

जीवन—(रणधीर को जगाकर) उठो, महाराज ! उठो, ये समय आप से क्षत्री वीरों के सोने का नहीं है। आप क्या नींद से प्रीति करके मित्र की प्रीति भूलते हो ? आप की इच्छा पूरी होने का समय आया। आप के लिए रिपुदमन सिह ने अपने प्राण का दाव लगाया है, बैरियों की सेना सागर में इस समय आप का महल जहाज सा दिखाई देता है। आप अपने यश की रक्षा करने के लिए जल्दी उठो !

रणधीर—(चौंककर उठ बैठा और जीवन की तरफ देखकर अचरज से) क्या कहा ? तैनें अभी रिपुदमन का नाम लेकर क्या कहा ? रिपुदमन से किसकी लडाई हो रही है ? किसने सिंह की डाढ़ से मास निकालने का विचार किया ? कौन मेरे मन की दबीदबाई आग को भडकाने का उपाय करता है ? मेरा केसरिया बागा ला ?

जीवन—रिपुदमन की वीरता देख कर मैं तो चकित हो गया ! आप के लिए वो वीर अपने मरने का डर छोडकर लडता है। उसके हाथ से कितनेक राजा और सेनापति मारे गए। उसके वेग से बैरी की सेना काई सी फटती चली जाती है। पहाड से हाथियों पर उसकी तरवार बिजली सी गिरती—

रणधीर—बस जीवन बस, तू अपनी बात को इसी जगह पूरी कर। मुझको इस समय इन बातों के सुनने का अवकाश नहीं है।

जीवन—तो क्या रिपुदमन के लिए अपने प्राण दोगे ?

रणधीर—प्राण तो पहले ही दे चुके अब इसमें नई बात क्या कहते हैं।

जीवन—भला इससे आप के बधू जनों का क्या होगा ?

रणधीर—कुछ हो, सब लोग मतलब की प्रीति करते हैं। जिसका जिसमें जितना मतलब निकलता है उसकी उससे उतनी प्रीति होती है और वो मतलब बहुधा द्रव्य सबधी पाया जाता है। जैसे मीठे के लिए चैटिये दौडती हैं तैसे रुपये के लिए मनुष्य फिरते हैं। रुपया ससारी मनुष्यों के नाच नचाने की एक कल है फिर ऐसी मतलब की प्रीति के वास्ते मै मित्र की प्रीति कैसे भूल जाऊ। मेरे शस्त्र जल्दी ला। मित्र के दुःख दूर किये बिना मुझको एक एक पल बरस बरस की बराबर बीतता है।

जीवन—आप सरीखे कुलवानों को तो ऐसा ही करना चाहिये, परतु मै मारा गया। हाय ! मेरा क्या हाल होगा ?

रणधीर—जीवन ! ओ जीवन ! तू क्या कहता है, आज तुझको क्या हो गया ? मै मरते मर जाऊँगा पर तेरा उपकार कभी नहीं भूलूगा।

सेवत सकल जन नाथ कों धन हेतु प्रीति बढ़ाय कै।
मालक निधन तो धन भए धन मिलन हित चित चाय कै॥
पै बिकल सपत छीन आस बिहीन निज पति पाय कै।
पूजत न तो सम धन्य कौ जन अवनि तल मैं आयके॥

तेरे उपकार का बदला तो मै इस समय कुछ नहीं दे सकता। परंतु मेरी प्रसन्नता के लिये तू मेरा मालमता ले।

जीवन—(**आँसू भर कर**) मेरे स्वामी ! मेरे छत्र ! मेरे मुकुट-मणि ! आप ऐसा बचन मत कहो। आप के मुख से ये बचन अच्छा नहीं लगता। मै क्या धन दौलत का भूखा हूँ ? मै तो केवल आप के मन का भूखा हूँ। मेरी तो जन्म भर की कमाई आप हो, आप ही मेरे नयनों का प्रकाश हो, आप ही मेरे पूज्य हो, आप ही मेरे प्राण हो,

आप ही मेरे सर्वस्व हो। मै दुःखिया आप के वियोग में किसके सहारे अपने प्राण रक्खूँगा।

रणधीर—जीवन ! तू मुझे कृतघ्न मत समझ, मै कृतज्ञ हू। मेरे हृदय में क्रोध की आग दहकती है, मेरे मन में मित्र की प्रीति महकती है, मै बैरियों को तिनके बराबर जानता हूँ। मै जगत के अपयश को मौत से बढ़ कर मानता हूँ। ये लडाई का बाजा मेरे मन की उमग को चौगुना बढ़ाता है। लड़ाई से विमुख होना हमारे कुल को कलक लगाता है, तौ भी तेरे लिये, तेरी प्रसन्नता के लिये, तू कहे तो मै इन सब बातों को पानी दू ! मै अपने प्राणों से बढ़कर जस और जस से बढ़कर धर्म को समझता हूँ तौ भी तेरे लिये मेरा धर्म जाय तो जावे, तेरी मर्जी बिना कभी कोई काम न करूँगा। जिस दिन मेरी छाया भी मेरा साथ छोडकर अलग हो गई थी उस दिन तैने अपनी जान झोंककर मेरा साथ दिया, तो क्या अब मै तुझको उदास करके तेरी मर्जी बिना कोई काम करूँ ? जो मेरे रोकने में तेरी प्रसन्नता होय, जो इस दशा में मेरे जीने का तुझको भरोसा होय, तो तू मन खोलकर कह दे, मै तेरा बचन कभी नहीं टालूगा।

जीवन—(**आंसू पोछकर**) ना। मै आप को रिपुदमन की सहायता करने से नहीं रोकता। मेरी चाहे जैसी दुर्दशा हो, मै बन में कदमूल खाकर अपनी घटती के दिन पूरे करूगा, परतु मुझसे नीच आदमी के लिये आप के निर्मल जस में धब्बा लगे सो अच्छा नहीं। मै अभी जाकर आप के शस्त्र लाता हूँ। (**गया**)

रणधीर—किस उपाय से जीवन के उपकार का बदला दूँ ! मैंने उसको सब तरह ललचाया पर वो कुछ नहीं चाहता। जब से मेरी जन्मभूमि अथवा यों कहो कि माता की गोद छुडाई गई तब से ये जीवन मेरा जीवन है। मेरे पीछे न जाने इसका क्या हाल होगा। ओहो ! मेरी इतनी आयु पवन की भात निकल गई ! मुझको सबसे अधिक दुःख

अपने समय व्यर्थ जाने का है। पानी की पोल के समान समय में अवकाश भर रहा है परंतु सब लोग आलस्य कर अपना समय व्यर्थ खोते हैं। काम की बहुतायत नाम मात्र समझनी चाहिये, क्योंकि सब लोगों को उनके मामूली काम सिवाय कोई आवश्यक काम आ जाता है तब वो उसके लिये उतने ही काल में अवकाश निकाल लेते हैं जो ऐसा अवकाश हर बार उपयोग में आता रहे तो कितना लाभ हो! अच्छा, अब भी जीवन आवे जितने मै पिता की चरण सनिधि में एक पत्र लिखता हूँ। (लिखने लगा)

(नेपथ्य में)—हे हे रथी, महारथी, सेनापति, सेना के मुखिया लोग! बचाओ। रिपुदमन सिह का रुड क्रोधित काल की तरह सब सेना का नाश किये डालता है। इसकी बाण वर्षा से आप लोग छत्र बनकर हमको बचाओ।

रणधीर—(चौंक कर) मेरे जीवन पर धिक्कार है! मेरी वीरता पर धिक्कार है! रिपुदमनसिंह तो मेरे पीछे भी मेरे लिए लड़ता है और मैं जीते जी ही उसकी सहायता से जी छिपाकर यहाँ बैठ रहा जो मेरे पाषाण हृदय में कुछ भी प्रीति का अश होता तो ये दारुण वचन सुने पीछे वो कैसे स्थिर रहता! अब शस्त्रों के लिए टैरना वृथा है। अब तो रिपुदमन सिंह का धनुष उठाकर मै भी उसी के पीछे जाऊँगा।

(जीवन का प्रवेश)

रणधीर—(उसकी तरफ देखकर) अब शस्त्रों से क्या है! रिपुदमन सिह वीर लोक को गये! मै भी उसका धनुष उठाकर उसी के पीछे जाता हूँ। भाई जीवन! तू अपने चित्त को किसी तरह उदास मत करना। और ये विनयपत्र पिता के चरण कमलों में पहुँचा देना। मुझको देर होगी तो रिपुदमन सिंह आगे निकल जायगा।

(चल दिया)

जीवन—(नेत्रों में जल भर कर रणधीर के पीछे जाते, जाते) महाराज ! आपने अपने प्यारे मित्र रिपुदमन सिंह का साथ दिया, मुझ निराधार सेवक का नहीं। (गया)

इति द्वितीय गर्भांक

अथ तृतीय गर्भांक

स्थान, सूरत का राजमहल

(प्रेममोहिनी और चपा बैठी हैं)

चपा—(प्रेममोहिनी से हँसकर) देखो भौंरे की चचलता से कमल के हृदय की सब केसर झड गईं। (प्रेममोहिनी ने लजाकर नेत्र नीचे कर लिये।)

चपा—(मुस्कुराकर) क्यों सखी, मुझसे क्यों बुरा मानती हो? मैं न भौंरा हूँ, न भौंरे का आदर करनेवाली मालती हूँ !

मालती—(जल्दी से आकर) मेरा नाम लेकर क्या कहा ?

चंपा—कुछ नहीं राजकुमारी से एक बात थी।

मालती—(प्रेममोहिनी की तरफ देखकर) राजकुमारी, आज का तुमने कुछ नया हाल भी सुना। कहते हैं कि आम की उस लहलही लता का मौर गिराने के लिये चारों तरफ से दल बादल उमडे चले जाते हैं जिसपर बैठकर कोयल अपने मीठे सुरों से सबका मन प्रसन्न करती थी।

प्रेममोहिनी—(घबराकर) क्यों ?

मालती—इन्द्र कोप के सिवाय इसका और क्या कारण होगा ?

प्रेममोहिनी—क्यों सखी इसकी सोंधी सुगंध तो सबको प्यारी लगती है फिर इन्द्र ने इसपर क्यों कोप किया ?

मालती— दोहा

"कहूँ कहूँ गुण के परस उपजत पीर शरीर।
जैसे मीठी बोल कै परत पींजरा कीर॥"

प्रेममोहिनी—होनी बलवान है। (उदास हो, धरती की तरफ देख) सखी! मन के सुख बिना तन के सब सुख वृथा हैं।

सूरत के महाराज—(जल्दी से आकर) मोहिनी किस विचार में बैठी हो? तुम्हारा मुख क्यों उदास हो गया? हैं, तुम्हारी आँखों में आँसू का क्या काम? रणधीर का बखेडा पड़ने से तो तुम उदास नही हो?

प्रेममोहिनी—(खड़ी होकर दाहने हाथ से अपने सिर के पल्ले को नीचा सरकाती हुई धरती की तरफ देखकर) पिता जी! आप मेरे लिये कुछ चिंता न करें, मुझको राजा रक सब बराबर हैं। इस कठिन समय में सब राजा राजी खुशी अपने घर जायँ, ऐसा उपाय करो जिसमें आपकी बात रहे। आप बड़े हो और बडों को बहुत क्षमा करनी चाहिये। देखो, पहाड जितना ऊँचा होता है उतनी ही वर्षा उसको अधिक सहनी पडती है।

सूरत के महाराज—जिसने मेरी आज्ञा न मानी, जिसने मेरी राज-सभा में बखेडा फैलाया, जिसके कारण मुझको सबके आगे नीचा देखना पड़ा, क्या मैं उसको दंड न दू? क्या मैं सोने के सुहावने दाने को काले मुँह की चिर्मिठी के साथ तोल दू?

प्रेममोहिनी—मेरी राह में तो बाप दादों के नाम से बडाई पानेवालों के बदले अपनी मिहनत और बुद्धि से इज्जत पैदा करनेवाले हजार दर्जे अच्छे हैं। जो लोग बाप दादों के नाम से बडाई पाते हैं उनके बड़े भी कभी न कभी गरीबों से बड़े आदमी हुए होंगे। परतु मै इस विषय में आपसे कुछ नहीं कहती। मेरी तो यही कहन है कि मेरे लिए आपका बचन झूठा न हो, आपको किसी तरह का दुःख न उठाना पड़े, मेरे भाग

में अपना बैरी लिखा है पर मैं उसी को प्राणनाथ समझूँगी। मेरे लिये आप अपनी प्रजा का नाश मत करो, सिंह से बन और बन से सिंह की रक्षा होती है। देखो, महाराज रामचद्र ने प्रजा के प्यार से निर्दोष जानकी जी का परित्याग कर दिया।

सूरतपति—बेटी! तैंने क्या कहा? फिर समझाकर कह। क्या तू रग में भग पडने से उदास होकर ऐसे बचन कहती है?

प्रेममोहिनी—हाँ महाराज! इन वीरों की चढ़ाई मेरे जीव पर है। सूरत में परदेसियों की सिरोही (तरवार) अच्छी नही लगती। आप इस लडाई को जल्दी रोकिये। इकल्ले मनुष्य की कुछ गिनती है जिसपर बड़े बड़े राजा अपनी सेना साज कर चढ़ाई करें! सब लोग कहेंगे कि एक निरपराधी सूरवीर सूरत के महाराज से नहीं जीता गया तब सूरत के महाराज ने अपनी बेटी और राज का लालच देकर परदेसियों से वो काटा निकलवाया, ये बात आपके नाम को धब्बा लगानेवाली है। आप जल्दी जाकर इस बखेड़े को दूर करो नही तो सदा के लिये ये कलक का टीका आपके सिर पर लगा रहेगा।

सूरत के महाराज—(मन में) इस समय मेरा क्या हाल है? मै सोता हूँ कि जागता हूँ! किसी ने मुझसे ये बाते कही सुनी या यों ही मैंने अपने मन से बना ली। निस्सदेह ये बाते मेरे गले उतरती हैं, परतु मै अपना बचन कैसे फेरूँ?

प्रेममोहिनी—मै आपका सारा विचार अच्छी तरह सब समझती हूँ। अपनी पुरानी रीति पलटने में सब झिझकते हैं। वो रीति बुरी होय तो भी उसके छोडने में आनाकानी करते हैं, परतु आपको ये मुनासिब नही। जब क्रोध का कारण नही रहा तो क्रोध क्यों बाकी रहे? आप क्या बुरी बात को जान बूझकर छोड़ने में लजाते हो? माथे तक पानी पहुँचने पीछे तैरने का कुछ उपाय नही रहता। मै आप से स्पष्ट कहती हूँ कि आप अपनी जिद्द छोड दो, न छोडोगे तो पीछे से आप को बहुत पछताना पड़ेगा।

सूरत के महाराज—बेटी ! तेरा बचन मेरे मन पर असर करता है, परंतु, मेरा बचन आज तक खाली नही गया ।

प्रेममोहिनी—महाराज ! आपने उस दिन भाई (रिपुदमन) से ये बचन कहा था कि "बेटा ! राज पाकर कभी अभिमान न करना । राजा कुछ ईश्वर नही, देवता नही वो सब प्रजा की तरफ से एक अधिकारी मात्र है । उसको प्रजा की रक्षा और भलाई के लिये प्रजा से धरती की उपज का छठा हिस्सा मिलता है । उसको देश की रक्षा और प्रजा की भलाई के लिये सब तरह का अधिकार है, परतु उसको प्रजा पर किसी तरह की अनीति करना अथवा प्रजा के रुपये को अपने ऐश आराम के कामों में खर्च करना उचित नही । जो राजा अपने स्वार्थ अथवा पक्षपात से प्रजा को दुःख देता है उसका कभी भला नही होता ।" ये बचन आपने अपने मुख से कहे थे । फिर इस समय अब का बचन निभावेंगे तो ये बचन कैसे निभेंगे ? घबराहट, जल्दी अथवा क्रोध से बिना बिचारे कोई बात मुख से निकल जाय तो उसके तत्काल सुधारने में इतना दोष नहीं गिना जाता जितना जान बूझकर धर्म छोड अधर्म करने में होता है ।

सूरतपति—अच्छा बेटी, अच्छा, मै तेरा बचन मानकर यहाँ से जाता हू परतु इस समय मेरी सुध बुध ठिकाने नही है । (गया)

प्रेममोहिनी—सखी ! जब तक कोई बात निश्चय नही होती उस समय तक मुझको तो दुःख है क्योंकि जब कोई बात निश्चय हो जायगी तब तो मैं इस लोक या परलोक में स्वामी के चरण समीप जाकर तत्काल सुखी हो जाऊँगी ।

इति तृतीय गर्भांक ।

अथ चतुर्थ गर्भांक

स्थान, रणधीर का महल

(सुखवासीलाल और नाथूराम सूती गलीचे पर बैठे हैं)

नाथूराम—क्यूँजी या लडाई किणतरै हुई ? काल तो इणरी बात भी नही छी ! (१)

सुखवासीलाल—सेठजी ! क्या पूछते हो ? एक मछली सारे दर्या को गदा कर डालती है, एक गुनहगार के बैठने से किश्ती दर्या बुर्द हो जाती है, आतिश की एक चिङ्गारी रुई के अबारे कसीर को खाक कर डालती है ; अलाहाजुलकयास एक चुग़लखोर बडी से बडी रियासत तबाह करने के वास्ते काफी है । (२)

नाथूराम—काई फुरमाई ? मै तो क्यू बी कोनै समझ्यो । (३)

सुखवासीलाल—समझने समझाने का वक्त नहीं रहा, खामोशी बहर हाल बेहतर है ।

नाथूराम—क्यू तो फुरमाणी चाहिये ? (४)

---

(१) क्यों जी ये लड़ाई किस तरह हुई ! कल तो इसकी चर्चा भी न थी ।

(२) सेठ जी ! क्या पूछते हो ? एक मच्छी सारे जल को बिगाडती है, एक पापी के बैठने से नाव डूब जाती है, आग की चिंगारी रुई के बड़े ढेर को राख कर डालती है, इसी तरह एक चुगलखोर बडी से बड़ी रियासत को बिगाड़ने के लिये बहुत है ।

(३) क्या कहा ? मै तो कुछ भी न समझा ।

(४) कुछ तो कहना चाहिये ?

सुखवासीलाल—जिस रियासत में नक्काल मुसाहिब हों, खिदमतगार मशीर हों, उस रियासत में बजुज बर्बादी और क्या अखीर होगा ? (१)

नथूराम—आदमी परखबा मै तो रणधीरसिह जी री भारी सोभा सुणी छै। (२)

सुखवासीलाल—खाक, जो इनको आदमी की ही शनाख्त होती तो नुख्स क्या था ? हर शख्श का दिल किसी न किसी कार की तरफ रुजू होता है। अगर उसकी तबियत के मुआफिक उससे काम लिया जाय तो निहायत उमदा कारवाई जहूर में आवे। इन्तजामें मुल्की का ये एक जुज है, मगर हर किसी को आदमी की शनाख्त नहीं होती ! रणधीरसिह आदमी की कदर क्या जाने ? कोहिस्तान की सरसब्जी दूर से यक्सा नजर आती है लेकिन कोई उसके करीब जाकर देखे तो उसका नशेबो फराज मालूम हो। आप की क्या ? घडी दो घडी के वास्ते आए अपना काम करके चले गए। देखो, इनके दिमाग में जवानी की बू समा रही है। इनका मिजाज निहायत शक्की है, ये सबको बेवफा समझते है, इनकी कल तो चुगलखोरों के हात है। (३)

---

(१) जिस रियासत में भाड मुसाहब हों, खिदमतगार सलाह देनेवाले हों उस रियासत में सिवाय सत्यानाश के क्या परिणाम होगा ?

(२) आदमी परखने में तो रणधीरसिह की बडी बडाई सुनी है।

(३) धूल, जो इनको मनुष्य की ही पहचान होती तो कसर क्या थी ? हर मनुष्य के मन का लगाव किसी न किसी काम की तरफ होता है जो उसके मनमूजब काम उससे लिया जाय तो काम बहुत अच्छा चले, देश के प्रबंध का ये भाग है, परतु सबको मनुष्य की पहचान नहीं होती। रणधीरसिह मनुष्य की परख क्या जाने ? पर्वत की हरियाली दूर से एक सी दिखाई देती है पर कोई पास जा कर देखे तो उसका ऊच नीच मालूम हो। आप की क्या ? घडी दो घडी के वास्ते आए अपना काम

नाथूराम—आपने इशी काई बात देखी ? (१)

सुखवासीलाल—देखी क्या आजमाई। परसों शबको फितनेपर्दाज के फरेब में आकर हजरत ने मुझसे चक्कर लाए थे ! मगर मै भला कब दाव में आने वाला हूँ, मैने ऐसा जवाब दिया कि हजरत अपना सा मुह लेकर खामोश रह गये। (२)

नाथूराम—आपरी बात तो आपरे साथ रही, पण मै रणधीरसिंहजीरी इसी नहीं जाणी छी ? (३)

सुखवासीलाल—अपने अपने दिल में सब दानिशमद होते हैं, मगर गैर तारीफ करे जब अकलमंदी समझी जाय। देखो दुश्मन की लाइतहा फौज के मुकाबिल एक इन्सान जईफुल बुनियान का ताकत आजमाई करना किस जी शऊर को पसद आयगा ! (४)

(चौबे जी का प्रवेश।)

करके चले गए। देखो, इनके सिर मे जवानी की बास बस रही है। इनका सुभाव बडा बहमी है, ये सबको निर्मोही समझते हैं, इनकी कल तो चुगलखोरों के हाथ है।

(१) आपने ऐसी क्या बात देखी ?

(२) देखी क्या अजमाई। परसों रात को किसी बखेडिये के दाव में आकर महात्मा ने मुझसे चक्कर लाए थे ! परतु मै भला कब दाव में आनेवाला हूँ। मैने ऐसा जवाब दिया कि वो आप अपना सा मुह लेकर चुप रह गये।

(३) आप की बात तो आप के साथ रही परतु मैने रणधीरसिह की ऐसी नहीं जानी थी।

(४) अपने अपने मन में सब चतुर होते हैं परतु दूसरे बडाई करें जब चतुराई समझी जाय। देखो बैरी की अगणित सेना के आगे एक तुच्छ मनुष्य का बल करना किस बुद्धिमान को अच्छा लगेगा !

चौबे जी—आज सबेरे काऊ भले भागमान को मोंडो देख के उठेहे जो भोर ही लछमी ते भेट भई। (जेब से नौरत्न को जोड़ी निकालकर) भय्या जी (रणधीरसिंह) की सदा जय बनी रहै। हमारे लिये तो ए दूसरो राजा करन है। आहा! जाको देख कै हमारे घर के कैसे राजी होयगे! (१)

सुखबासीलाल—क्या ये नौरतन हमारे आकाय नामदार ने आप को इनायत किया? (२)

चौबे जी—हा भय्या! आज मै बगीची से कागाबासी (भग) छान के आवै हो तब वे मोको पौरी मैं मिले। भुजबंध की जोरी दीनी और कहबे लगे कि "कही सुनी छिमा करियो।" (३)

सुखबासीलाल—(मन में) इन बातो से खुद उनके दिल की मायूसी जाहिर होती है। बस, अब माल खुर्द बुर्द करने की कोई तदबीर करनी चाहिये (४)

नाथूराम—(मन में) रणधीरसिह जी उठासै पाछा नहीं वाह्वळ्या

---

(१) आज सबेरे किसी अच्छे भाग्यवान का मुख देखकर उठे थे जो सबेरे ही लक्ष्मी से मिलाप हुआ। (जेब से नौरत्न की जोड़ी निकालकर) भैया जी (रणधीरसिह) की सदा जय बनी रहे। हमारे लिए तो ये दूसरा राजा कर्ण है। आहा, इस नौरत्न को देखकर हमारे घर के कैसे राजी होंगे!

(२) क्या ये नौरत्न हमारे मालिक ने आप को दिया?

(३) हा भाई! आज सबेरे मैं बगीचे से प्रातःकाल की (भग) छानकर आता था तब वे मुझको पौली में मिले। ये भुजबध की जोड़ी दी और कहने लगे कि "कहा सुना क्षमा करना।"

(४) (मन में) इन बातों से खास उनके मन की उदासी जानी जाती है। बस, अब माल चपत करने का कोई उपाय करना चाहिये।

तो शगरी धरोड म्हानै पचसी जो या धरोड म्हानै पचजाय तो बालाजीरै सोनारो छत्तर चढ़ाऊ। (१) **(जीवन का प्रवेश)**

जीवन—हे निर्दई बिधाता ! तेरी यही इच्छा थी। जैसे सूर्य दिनभर अपना प्रकाश करके साझ को अस्त हो जाता है तैसे आज—(**नेत्रों में जलभर, मुंह पुल्का चुप हो गया।**)

चौबे जी—भय्या ! तू इतनो उदास क्यों होत है ? जब ताई हमारे माथे पै हमारी छत्र रहैगी तब ताई हमको काहू को डर नाहिनै। (२)

जीवन—भाई ! मुझको उसी का सदेह है।

सुखबासीलाल—(**मन में**) अब माल तीर करने का वक्त आया। (**प्रकट**) क्या दर हक़ीक़त इस वाकै जा काह का वकूअ हुआ ? इस ख़बर बहशत असर के सुनने से दिल पारह, पारह हुआ जाता है ! मगर ये वक्त दिल मजबूत रखने का है। ऐसा न हो कि हम दर्याय गम में गोतेज़न रहैं जब तक दुश्मन जान की तरह माल पर हाथ साफ करे। इस वक्त माल की हिफाजत मुकद्दम है और जब तक वो माल इस मकान से अलहदा न किया जाय उसके महफूज रहने की कोई सूरत नज़र नहीं आती। (३)

---

(१) (**मन में**) रणधीरसिह वहा से न फिरे तो सब धरोहड हमको पचेगी। जो ये धरोहड हमको पच जाय तो बाला जी को सोने का छत्र चढाऊ।

(२) भाई तू इतना उदास क्यों होता है, जब तक हमारे सिरपर हमारा छत्र रहेगा तब तक हमको किसी का डर नहीं।

(३) (**मन में**) अब माल उडाने का समय आया। (**प्रकट**) क्या निश्चय ये प्राणहारी प्रसग हुआ ? इस बावले बनानेवाली खबर के सुनने से मन के टुकड़े २ हुए जाते हैं। पर ये समय मन दृढ़ रखने का है। ऐसा न हो कि हम शोक सागर में डूबे रहें जब तक बैरी

जीवन—अब इस माल की रखवाली करके क्या करेंगे ? जब इसका भोगनेवाला कोई न रहा तो इसका होना न होना बराबर है। भला, जिन शस्त्रों को रणधीरसिंह बाँधते थे अब उन शस्त्रों का बाँधनेवाला कोई दिखाई देता है ? इसी तरह जिन लोगों ने रणधीरसिंह की सेवा की, उनसे कभी दूसरे की नौकरी हो सकती है ? हम लोग बन मे रहकर अपनी उमर पूरी कर देंगे पर रणधीरसिंह के सेवक होकर दूसरे की झूटन कभी न खायँगे।

सुखवासीलाल—(मन में) अगर इस ने अपने कौल की ताईद की तो बेशक ये कुल माल मेरे कब्जे तसर्रुफ में आयगा। अच्छा, अब मै इसको जिद पर चढ़ाने की तद्बीर करूं क्योंकि गुल जाए होने से समर और समर जाए होने से तुखम हासिल होता है। (प्रकट) बस, आप ज्यादे चबे जबानी न करें, मै आपके कौल फैल से बखूबी वाकिफ हूँ। आप अपनी वफादारी वो जाँनिसारी जाहिर करने के वास्ते ये चाल डाल्ते हैं, मगर महज फजूल। बगैर आग राख से मोम कभी नहीं पिगलता। (१)

जीवन—भाई ! मै कारगुजारी नहीं दिखाता। उनकी कृपा के आगे

जान की तरह माल पर हाथ बढ़ावे। इस समय माल की रक्षा करना मुख्य काम है, और जब तक वो माल इस मकान से अलग न किया जाय उसके बचने की कोई सूरत नजर नहीं आती।

(१) (मन में) जो इसने अपने बचन को निभाया तो ये सब माल मेरे अधिकार और बर्ताव में आवेगा। अच्छा, अब मैं इसको जिद पर चढाने का उपाय करूँ, क्योंकि फूल के नष्ट होने से फल और फूल के विनाश से बीज प्राप्त होता है। (प्रकट) बस, आप ज्यादा बातें न बनावे, मैं आपकी जबान और कर्तबारी से अच्छी तरह वाकिफ हूँ। आप (उनके) अपनी प्रीत और जिम्मारी जताने के लिये ये चाल डालते हैं, परंतु वृथा। बे आग राख से मोम कभी नहीं पिगलता।

मेरी सेवा किस गिनती में है। मै सौ जन्म तक मुफ्त में उनकी सेवा करूँ तो भी बराबर नहीं हो सकता। तुम्हारी बातों का मतलब मै अच्छी तरह समझता हूँ। देखो, रणधीरसिह अपने सब नौकरों पर एक सी दया रखते थे पर तुम उनकी दया को अपनी कारगुजारी का फल समझते हो। इस कारण तुम्हारे मन में उपकार का उभास नहीं होता और मै अपनी जीविका को केवल उनकी कृपा का फल समझता हू। इस कारण लाज से मेरी आँख नीची हुई जाती है। बस, इतना ही तुम्हारे मेरे सुभाव में अतर है।

सुखवासीलाल—अच्छा, मै बेवफा, अहसान फरामोश सही तुम तो बड़े वफादार हो। देखें इस वफादारी और खैरख्वाही के जज्बे में आकर आज क्या बहादुरी करोगे? (१)

जीवन—अब मै क्या बहादुरी करूँगा! डोर कटते ही पतग तो कट चुका, उसके ढाँच को कहीं लिये फिरो, जब तक घटती के दिन पूरे न होंगे इसका यही हाल रहेगा।

सुखवासीलाल—तुम तो अभी दुनियाँ को तर्क करते थे? "तर्के दुनिया शहवतस्तो हविस्। पारसाई न तर्के जामेओबस।" (२)

जीवन—मै अभी ससार को छोडता हूँ। रणधीरसिह बिना मुझको ये मकान डरावना लगता है। परतु तुम कभी खोटा लालच न करना। अच्छे लोग महनत और धर्म की कमाई पर दृष्टि रखते हैं, और जिनको मुफ्त के माल खाने की बान पड जाती है वे किसी काम के नहीं रहते,

---

(१) अच्छा, मै निर्मोही और कृतघ्न सही। तुम तो बड़े प्रीतिमान हो, देखें इस प्रीति और शुभचिंतकता के आधीन होकर आज क्या बहादुरी करोगे?

(२) तुम तो अभी ससार को छोडते थे? ससार का छोड़ना काम और लालच छोडने से है। वैराग्य वस्त्र के छोड़ने से नहीं। और बस।

उनको सब निर्लज्ज बताते हैं, उनसे देश का बडा अहित होता है। मैने महाभारत में महात्मा विदुर का ये वचन सुना था कि "पापी (मनुष्य) पहले फलते फूलते हैं परतु पीछे जड़ मूल से नाश हो जाते हैं।" रण-धीरसिंह तपस्वी था। उसका माल कचे पारे की तरह तुमको कभी नहीं पचेगा। (गया)

नाथूराम—(मन में) म्हे काई चोरी करवा गया छा, म्हेतो हात का दिया लिया छै म्हानैं क्यू नहीं पचसी ? (१)

सुखवासीलाल—(मन में) रेशम की कीमत के रूपे मुलायम नहीं होते। इल्म और दौलत जहाँ से मिले हासिल करनी चाहिये। जिस शख्स को अपनी अकल के जोर से सच झूँठ की तमीज नहीं होती वो अव्वल हर किस्म की बातों में शक व शुबह रखता है। मगर जब उसको किसी की तरफ से एतकाद आ जाता है तो वो उसके कलाम को कला-मुल्लाह समझता है, उसको खिदमत को खुदा की इबादत जानता है, उनके वास्ते हतेली पर जान लिये फिरता है, मगर ये बात हमारे वास्ते मुफीद है, क्योंकि इसकी अलहदगी से हमको किसी तरह का खौफ बाकी न रहेगा। अच्छा, अब माल खुर्द बुर्द करने की तदबीर करें। (प्रकट) जिस कमरुतबे, पुस्तहिम्मत (आदमी) को किसी तरह के काम करने का हौसला नहीं होता वह हमेशे इसी किस्म की वाहियात बातें बना-कर काम से जी छिपाया करता है मगर हम ऐसे नादान नहीं जो इस नाआकबतअंदेश की बातों में आकर अपना फर्ज भूल जाँय। (२)

---

(१) (मन में) हम क्या चोरी करने गए थे, हमने तो हाथ के दिये लिए हैं, हमको क्यों न पचेगे।

(२) (मन में) रेशम की कीमत के रुपये नरम नहीं होते। विद्या और धन जहाँ से मिले, प्राप्त करना चाहिये। जिस मनुष्य को अपनी बुद्धि के बल से सच झूठ की परख नहीं होती वो पहले हर तरह

नाथूराम—ईश्याई बखत में तो आदमीरी तोल पड़ै। (१)

सुखबासीलाल—(मन में) अब इस दौलते बेअंदाज को ऐसी हिकमत से गायब करना चाहिये जिसमें पीछे कुछ सुराग न लग सके। (प्रकट) हमारा काबू लगेगा जहाँ तक हम इस माल के अलहदा करने की जरूर कोशिश करेंगे मगर इस बात में पूरे कामयाब न हुए तो बाकी कुल असबाब को बत्ती दिखा देंगे। इल्ला अपने आकाय नामदर का माल दुश्मन के तहतः तसर्रुफ में कभी नहीं जाने देंगे। (२)

को बातों में सशय और सदेह रखता है परतु जब उसको किसी की तरफ से भरोसा आ जाता है तो वो उसके बचन को ईश्वर का बचन समझता है। उसकी चाकरी को परमेश्वर की सेवा जानता है, उसकी दया को ईश्वर की कृपा गिनता है। इसी तरह इस निर्बुद्ध खिदमतगार का हाल देखने में आया। इस मूर्ख के मन में रणधीरसिंह का विश्वास बैठ गया। इस कारण ये उनको ईश्वर से अधिक समझता है, उनके लिए अपनी जान हतेली पर लिए फिरता है परतु ये बात हमारे फायदे की है। क्योंकि उसके अलग होने से हमको किसी तरह का डर न रहेगा। अच्छा, अब इस माल के पचाने का उपाय करें। (प्रकट) जिस मंदभाग, बे हिम्मत (मनुष्य) को किसी तरह के काम करने की हिम्मत नहीं होती वो सदा इसी तरह की थोथी बात बनाकर काम से जी छिपाया करता है परंतु हम ऐसे बावले नहीं जो इस मूर्ख की बातों में आकर अपने जुम्मे का काम भूल जाय।

(१) ऐसे ही समय में तो आदमी का हाल मालूम होता है।

(२) (मन में) अब इस असख्य द्रव्य को ऐसी हिकमत से उडाना चाहिए जिसमें पीछे कुछ पता न लग सके। (प्रकट) हमारा बस चलेगा जब तक हम इस माल के अलग करने का अवश्य उपाय करेंगे परतु ये उपाय पार न पड़ा तो बाकी सब असबाब में आग लगा देंगे पर अपने मालिक का माल बैरी के अधिकार में कभी न जाने देंगे।

चौबे जी—भय्या ! जो आग लगाओ तो पहले मोकों अपनों कूडी सोंटा उठाय लैवे दीजो ।

नाथूराम—यो बखत इण तरै गुमावारी नहीं छै, ढोलकियाँ सारा काम बिगड़ जासी । (१)

सुखवासीलाल—अच्छा, हम अभी इसकी तदबीर करते हैं लेकिन आप इस तरह खोफनाक जगह से अपने दौलतखाने को तशरीफ ले जाँए । (२)

नाथूराम—ठीक छै, हूँ तो जाऊँ छू । (३)

(जाने को तयार हुआ)

चौबे जी—भय्या ! मोहूँ को सग लेत चलियो ।(४)

(सब गये)

इति चतुर्थ गर्भांक

चौथा अंक समाप्त ।

———

---

(१) ये समय इस तरह खोने का नहीं है, देर करने से अब काम बिगड जायगा ।

(२) अच्छा, हम अभी इसका उपाय करते हैं परतु आप इस भयानक जगह से अपने मकान को पधारें ।

(३) ठीक है, मैं तो जाता हूँ ।

(४) भाई मुझको भी साथ लेते चलना ।

अथ पंचम अंक प्रारंभ

अथ प्रथम गर्भांक

स्थान, राजमहल और उसके पास मैदान।

(प्रेममोहिनी मालती समेत राजमहल में बैठी है।)

प्रेममोहिनी—सखी! इस भयकर लडाई का क्या परिणाम होगा? पिता इसको बद करने गये हैं परतु अब तक भूमि में बिजली की तरह तरवारों की झलक बारबार दिखाई देती हैं। मै अबला, इस समय प्यारे प्राणनाथ की सहायता का क्या उपाय करूँ? ईश्वर ने मुझको पुरुष क्यों न बनाया? जो मै पुरुष होती तो आज प्राणपति के साथ जाकर अपना जन्म सफल करती।

मालती—रणधीरसिंह की बीरता में किसी तरह का सदेह नहीं, पर बैरियों का बिस्तार देख मेरी छाती धडकती है।

प्रेममोहिनी—सखी! रणधीरसिंह मेरे सर्वस्व हैं, चंद्रमा और चादनी की तरह मैं अपना प्राण उनके आधीन समझती हूँ परतु रण से बिमुख होकर प्राण प्यारे फूलों की सेज पर सोवें तो उसके बदले रण में बैरी के हाथ उनका शरशय्या पर सोना मुझको अच्छा लगता है, मै तत्काल तन तज कर प्यारे प्राणपति की चरण सेवा में चली जाऊँगी।

मालती—राजनदिनी! कभी ऐसा सदेह मत करो, रणधीरसिंह का रण बिमुख होना किसी तरह सभव नहीं। उनका बल तुम अपने नेत्रों से अच्छी तरह देख चुकी हो। नदी की प्रवाह की भांति सारे भूमडल में उनके बल का बेग रोकनेवाला तुमको कौन दिखाई देता है?

प्रेममोहिनी—सखी ! ये तो मैं भी समझती हूँ, पर अत्यत प्रीति के कारण मेरा चित्त ठिकाने नहीं रहता। जब से मेरे नयनों ने उनका रूपरस पीया, मुझको उनकी माधुरी मूर्ति के सिवाय कुछ नहीं दिखाई देता।

मालती—(मन में) प्रेममोहिनी की प्रेम कली खिल कर पुष्प के आकार हो गई, अब इसकी सुगधि का छिपना बहुत कठिन है। (प्रकट) राजकुमारी ! चेत करो, अदाज सिरकी सब बातें अच्छी नहीं लगती।

प्रेममोहिनी—सखी ! दूसरों के उपदेश करने को बहुत लोग चतुर होते हैं परतु अपने ऊपर बीते जब मालूम हो।

मालती—स्त्री का भूषण लाज है।

प्रेममोहिनी—जो ये लाज महाराजकुमार की प्रीति रोकनेवाली होय तो इसको भूषण नहीं दूषण कहना चाहिये, स्त्री का भूषण तो पति है।

(झरोखे में चपा का प्रवेश)

चपा—जैसे कमल बन को रूंधकर मतवाला हाथी आता हो, तैसे रणधीरसिह इस समय रणभूमि से इस तरफ चले आते हैं ! क्रोध के कारण उनका मुख प्रातःकाल के सूर्य की तरह लाल हो रहा है, उनके नेत्रों से ज्वालामुखी पर्वत की तरह झल निकलती है। उनके तेज की चमक से इस समय उनकी तरफ दृष्टि बाधकर नहीं देखा जाता।

(रणधीर का राजमहल के नीचे, मैदान में प्रवेश)

प्रेममोहिनी—(रणधीर को देख कर) रणधीरसिंह के मनोहर मुख कमल पर रुधिर के छींटे और पसीने की बूँद मोती के समान बडी सुंदर दिखाई देती हैं ! और टेढ़े टेढ़े बालों की घूँघरवाली जुल्फों पर रज पड़ने से ऐसा रूप हो गया है मानो काले भौंरे कोमल कमल का रस पीने के लिए चारों तरफ से उमड़े चले आते हैं।

रणधीर—(**प्रेममोहिनी की तरफ देख कर, मन में**) जिस बात के लिए मैं यहाँ आया था वो बात हो गई, अब मै सब तरह सुखी होकर संसार छोड़ूँगा। (**प्रेममोहिनी से आँख मिला, निरास हो, धीर स्वर से, प्रकट**) आनद की रात के साथ दीपक का तेल पूरा हो गया, इस कारण अब ये (दीपक) बुझता है, पर अंधेरे को जड मूल से मिटाकर बुझता है। इसके लिए पतंग कुछ चिंता न करे। उसको इससे अच्छे, अच्छे दीपक संसार में मिलेंगे। **(मूर्छित होकर गिर पड़ा) (सखियो समेत प्रेममोहिनी गुलाबपास लेकर जल्दी से रणधीर के निकट आती है)**

प्रेममोहिनी—(**रणधीर का सिर गोद में ले, उसके मुख पर गुलाब छिडक, मालती से**) सखी ये जहाज क्या बडी बडी आधियों से बच कर किनारे पर आए पीछे डूब जायगा !

मालती—राजकुमार के लिए बैरी के बाणों से तुम्हारे नेत्र अधिक पैने निकले। देखो, तुमसे आँख मिलते ही राजकुमार का रुधिर जोश खाकर रोम रोम में झलक आया, देह की सुध बुध जाती रही।

प्रेममोहिनी—सखी ! तैने राजकुमार के बचन भी सुने, तलवार का घाव औषधि से भर जाता है पर बचन का घाव किसी तरह नहीं मिटता। क्या संसार में ऐसे भी लोग हैं जो एक से प्रीति करके दूसरे की इच्छा रक्खें ? सुख के साथी बन, दुख में अलग हो जायँ ? क्या पखहीन पतंग दूसरे दीपक के पास जा सकता है ? अथवा मणि बिना सर्प और जल बिना मीन के जीने की आस है ? (**आँसू डाले**)

रणधीर—(**सचेत हो, प्रेममोहिनी की तरफ देख, धीरी आवाज से**) जब एक फूल वृक्ष से झड गया तो फिर हजार उपाय किये वृक्ष में फूल नहीं लगता। उसके वास्ते भौंरे का सोच करना वृथा है। भौंरे को चाहिए कि उनकी प्रीति छोड कर और फूल का रस ले। (**कुछ नेत्र बंद होते हैं**)

प्रेममोहिनी—(**आँसू पोछकर, गद्गद स्वर से**) हा प्राणनाथ ! मेरे कल्पते हृदय को ऐसे ऐसे बचन कहकर क्यों अचेत करते हो ! प्राण गये पीछे शून्य शरीर से क्या हो सकेगा ? क्या शब्द से अर्थ जुदा है, जो आप मुझको अपनी देह से अलग समझकर ऐसे बचन कहते हो ! क्या आप के बिना ये देह पल भर ठैर सकती है ? आप नहीं, तो इस देह पर कुछ बीते, चाहे इसका एक एक रोम साप बनकर डसे, चाहे आकाश से बिजली गिरकर इसको भस्म कर डाले। नदी का समुद्र से मिलाप हुए पीछे कभी वियोग नहीं होता।

रणधीर—(**थोड़े से नेत्र खोलकर, टूटती सी बाणी से**) प्यारी मुझको तुम्हारी सच्ची प्रीति देखकर बड़ा सतोष हुआ। ससार में अब तक पतिव्रता (स्त्री) हैं ! अच्छा, तुम प्रसन्न रहो, यह हंस तो अब जग जंजाल से निकलकर मानसरोवर को (हरिचरणों में) जाता है। (**नेत्र बंद हो गए**)

प्रेममोहिनी—(**आंखो में आंसू भरकर**) प्यारे रणधीर। तुम्हारा ये क्या हाल हुआ ? तुम्हारा मनोहर मुख गुलाब के फूल की तरह पल भर मे कैसे कुम्हला गया ! हा ! चद्रमा की पूरी कला हुए बिना राहु उसको कैसे ग्रसने लगा ! बिना बादल ये बिजली कहाँ से टूट पड़ी ! हे जीवते श्वर , इस अबला अनाथ की ओर एक बार आँख उठा कर तो देखो ! हाय ! धरती फट जाय तो मैं उसमें समा जाऊ !

हा ! मम प्राण महोप सुत कहां रहे मुख मोर।
बांह गहे की लाज तज चले प्रेम तृण तोर॥

हे प्राणेश्वर ! आप की यह दशा देख मेरा कलेजा फटता है। हाय ! जल बिन नदी, कमल बिन सरोवर, पुष्प बिन बाग, सुगधि बिन पुष्प, व्यर्थ हैं।

रणधीर—(नेत्र खोलकर, बहुत धीरे स्वर से) प्रेम–प्रेम–प्रे—(नेत्र बद कर प्राण त्याग दिये)।

प्रेममोहिनी—"प्रेम"—हा ! "प्रेम"—प्राणनाथ के मुख से इस समय भी "प्रेम" निकलता है ! इस अथाह "प्रेम" की महिमा कौन कहि सकै ? ऐसे प्रेमी बिन प्रेममोहिनी के जीवन पर धिक्कार है ! ये दासी आप के चरण कमलों से अलग नहीं रह सकती ! (रणधीर के चरणो पर सिर रखकर शरीर तज दिया)।

मालती—(चपा से) सखी ! इन दोनों की प्रीति का ये परिणाम हुआ ! हाय ! निर्दई विधाता ने दोनों को एक बाण से वेध लिया !

चपा—जैसे सूर्य चद्रमा के मिलने से (अमावस को) अधिक अधेरी होती है, तैसे आज इन दोनों के मिलने से दशा हुई। ये दोनों क्या इस लायक थे ?

मालती—सखी ? ये दुःख देखकर हमारा तो कलेजा फटता है ! हाय ! दुष्ट दैव ने हमको इससे पहले क्यों न उठा लिया !

चपा—हमारे जाने तो आज प्रलय हो गई, ससार मे अब हमारा कौन है ? हमसे तो ये दुःख नहीं सहा जाता।

(सूरत के महाराज आते हैं)

सूरतपति—(देखकर करुणा से) ये क्या ! रणधीर और प्रेममोहिनी को ईश्वर ने सोने से सुगधि मिला दी थी, पर हाय ! (आंखो में आंसू भर कर गद्‌गद स्वर से)मालती—(मुख से कुछ नहीं बोला गया, संकेत से वृत्तांत पूछने लगे)

मालती—(रोकर करुणा से) महाराज ! ये हृदय विदारक बचन कहने को मेरी जीभ नही उथलती। मै क्या कहूँ ? (फूट फूटकर रोने लगी)

सूरतपति—(**कातर स्वर से**) रणधीर और प्रेममोहिनी का मिलाप कैसे हुआ ?

मालती—कल रात्रि के समय रणधीर को राजनदिनी ने अपने मन से बरा था। आज उनकी यह दशा देख हमको अनाथकर··· (**रोने लगी**)

सूरतपति—हाय !!! (**मूर्छित होकर गिर पड़े**)।

(**मालती ने गुलाब छिड़का,**) चंपा वस्त्र से पवन करने लगी)

सूरतपति—(**सचेत होकर**) बेटी यह क्या होता है ? इस स्वयवर का ये अत हुआ ! हाय ! मेरी जन्म भर की कमाई पल भर में लुट गई ! ये विवाह का सामान इनके क्रिया-कर्म में काम आवेगा ! मोहिनी ! तू अपने दुखिया बाप से एक बात कहे बिन उसको दुखसागर में छोडकर कहाँ चली गई ? हाय ! हमने ऐसा क्या पाप किया होगा, जिसका यह फल है ! हे पापी प्राण ! तू इस अधम शरीर को अब तक क्यों नहीं छोडता ! अरे जब ऐसा बिकराल दुख सह लिया तो कौन सा दुख भोगकर छोड़ेगा ? (**बिलख बिलखकर रोने लगा**)।

(**सूरत के मंत्री का प्रवेश**)

मालती—(**चंपा से रोकर**) सखी ! हमारे भाग में क्या दुष्ट दैव ने यही लिख दिया था कि रणधीर और प्रेममोहिनी के लिए फूलों की सेज के बदले चदन की चिता बनाय ! (**चिता बनाने लगी**)।

मत्री—(**बहुत रोकर**) हाय ! हमारा नसीब फूट गया, हमारा सर्वस्व लुट गया हमारी सब आस टूट गई, हमारे नेत्रों का प्रकाश जाता रहा ! हे कठोर दैव ! तुझको हम पर कुछ दया न आई। हाय ! हम अधों के टटोलकर चलने की लकड़ी छीन कर तू क्या सुखी होगा ? हे धर्मराज, हमारी विनय सुन कर हमको जल्दी इस दुख सागर से निकालो।

सूरत के महाराज—मंत्री ! ऐसे ऐसे बचन कह कर क्यों मेरे व्याकुल मन को अचेत करते हो ! धीरज धरो, ससार के सब दुखों को पहले पापों का फल समझना चाहिये ।

मन्त्री—महाराज ! राजकुमार रिपुदमनसिंह के कुसमय ससार छोडने का दुखदाई वचन आपसे कौन कह सके।

सूरत के महाराज—(आँसू भर कर) हा ! ये वचन बर्छी की तरह मेरे कलेजे मे पार हो गया ! मन्त्री तुम क्या कहते हो ? हमारे दोनों नयनों का प्रकाश एक सग जाता रहा ! रिपुदमनसिह परलोक गये ! हा ! रिपुदमन प्राणाधार, हा वीर, हा ! क्षत्री कुलभूषण ! हा ! आज्ञाकारी प्यारे पुत्र ! मुझसे बिना आज्ञा लिये कोई काम न करते थे सो आज मुझसे बिना पूछे किस कारण इतनी जात्रा की, मुझको उत्तर दो !

मन्त्री—हाय ! इस दु.खसागर का किनारा कहीं दूर तक नहीं दिखाई देता, इसमें डूबना ही हमारे लिए पार लगना है।

सूरत के महाराज—क्यो मन्त्री, हमारे दु.खी हृदय को जलाने के लिये ये आग कहाँ से प्रकट हुई ?

मन्त्री—कहते है कि रणधीरसिह की मित्रता से राजकुमार ने ऐसा किया।

सूरत के महाराज—मित्र के लिए प्राण देने की तो हमारे वश में परपग से चाल है, परतु मै बीच धार में डूब गया, मुझको इस बुढापे में रास्ता दिखानेवाला कौन है ? ससार में पुत्र शोक की बराबर कौन सा दुख होता है ? जब कोई राजा बिना सतान मरता है तो उसका राज यों ही औरों के राज मे मिल जाता है। हाय ! यही हाल अब हमारे राज का होगा ! हमारा राज अब तक तो बडों के पुण्य से हरा भरा रहा परतु अब हमारे बडों को वस्त्र का पल्ला निचोड कर जल देनेवाला भी कोई न रहेगा।

मन्त्री—महाराज क्या करिएगा, दैव कोप प्रबल है !

सूरत के महाराज—(करुणा करके) मन्त्री ! मुझको दैव कोप से किसी बात का भरोसा नही रहा ! हमारे कुल पर दैव विमुख है ! हाय !

हमारे कुल का इस तरह अत आया ! इसी दिन के लिए हम सतान की चाहना करते थे ! ओ रिपुदमन ! ओ प्रेममोहिनी ! मेरे प्राणाधार ! मेरे जीवन ! मै फिर कब तुमको अपनी छाती से लगाऊँगा, कौन से जन्म में तुम्हारा मुख चद्र देखूँगा, तुम्हारा मुख स्मरण करने से कलेजा फटता है । हाय ! तुम कहाँ चले गये ! तुमने मुझको छोड़ दिया, तुमको मेरे बुढापे पर कुछ दया न आई, मेरी एक बात का जवाब तो दो, मेरी तरफ आँख उठाकर तो देखो । तुमको एक समय फूलों की सेज पर नींद नहीं आती थी अब तुम कठोर भूमि में सदा के लिए ऐसी गहरी नींद सोते हो । हाय ! तुम्हारा यह हाल देख कर धरती माता की छाती भी न फटी । पर्वत, आकाश और नदी नाले भी वैसे ही बने रहे, तुम्हारा यह हाल हो, और मै जीता रहूँ ! मेरी छाती बोझ से दबी जाती है, मेरे हाथ पाँव गिरे पडते हैं, मुझको आँखों से कुछ नही दिखाई देता, कानों से सुनाई नहीं देता, मेरे प्राण जाते हैं । मुझको प्यारी सतान के पास ले चल ! अरे मुझको प्यारी सतान के पास ले चल ! प्राण चले मुझको–

(मूर्छित होकर गिरता था सो मत्री ने रोक लिया ।)

मत्री—महाराज ! महल में महारानी जी अचेत पडी हैं, यहाँ आप ऐसे अधीर हो रहे है, इस दशा में हम लोगों को कैसे धीर्य रहे ।

(बीरवेश से कवच और शस्त्र सजाकर एक योधा आता है)

योधा—आज इस नगर में किस कारण हाहाकार हो रहा है ? बहुत से मनुष्य मूर्छित, मृतक, अग भग, दर्द से व्याकुल, रुधिर में डूबे हुये, धरती पर लोटते हैं, तरह तरह के कपड़े और गहने बिखरे पडे हैं, कितनेक मुर्दों की छाती से बाण निकलते हैं, कितनेक घायल अपने घाव पर बिना पट्टी बाँधे खाली घोड़े को देख बिसूरत (बिसूरते) हैं, बहुत से वीर धरती की तरफ देख कर बिलख रहे हैं, कितनेक क्षत्री रणभूमि में पड़े हुए कातर स्वर से जल जल पुकारते हैं, कही किसी वीर की स्त्री अपने मरे हुए पति का सिर गोद में ले सती होती है, कही किसी वीर की माता अपने बेटे के लिए रो रोकर प्राण खोती है । इस

लड़ाई का क्या कारण होगा ? कुछ हो। मुझको एक बार सूरतपति से, अवश्य मिलना है। मैंने बहुत से लोगों से उनका हाल पूछा, पर किसी ने मेरी बात का जवाब न दिया। अच्छा, अब मै आप ढूंढता हूँ। **(कुछ आगे बढ़ा)**

सूरत के महाराज—**(कुछ चेतना पाकर)** मन्त्री ! मैं अपना शरीर छोड़कर प्यारी सतान से मिलने जाता हूँ परतु न जाने शरीर छोड़े पीछे भी मुझ आत्मघाती से उनका मिलाप होगा या नहीं !

योधा—**(आगे बढ़कर)** आगे ऐसा कौन मनुष्य खडा है जिसके गहने की झलक सूर्य की किरणों से मिलती है। मेरे जान तो ये सूरत के महाराज होगे ! **(आगे बढ़कर एक पत्र देने लगा)**

सूरत के महाराज—किसका पत्र है ?

योधा—आप पढ़ लीजिये।

सूरत के महाराज—मत्री इसे पढो, मेरी आखों में जल छा रहा है।

मत्री—**(पत्र लेकर पढ़ने लगा)**

"श्री सूरतपति राय !

हमारे आप के बीच में पीढियों से बैर है और बैरी से बैर लेने की सबके मन में चाहना होती है, परतु बन में जागते सिह के मारने की बडाई है। बधन में निरुत्साही सिंह के मारने से जस नहीं मिलता। एक वीर पर अनेक वीरों का चढाई करना पाप है, इसी तरह सहायता मागनेवालों की सहाय न करना भी महापाप है। मित्र का उपकार सब करते हैं परतु बैरी का उपकार करने में उससे अधिक जस मिलता है:—

करै बुराई पै भली सो साधू अवरेख।
करै भलाई पै भली तामैं कहा बिशेष॥

क्षत्री अपनी हार को मौत से बढकर समझते हैं परतु रणधीर के लिए हमने हार मानी। राजकुमार कुछ दिन से अपना देश छोड़कर

आप की राजधानी में जा बसे हैं जो आप उनको समझाकर हमारे पास भेज देंगे तो आप का ये उपकार हम कभी न भूलेंगे। रणधीरसिह को लडाई में वीर रस का औतार कहना चाहिये। वो वीर एकाएकी बैरी की बडी सेना से दब जाय ऐसा नही है, तो भी पुत्र की प्रीति से हमारा कलेजा धडकता है। हमको निश्चय है कि आप ऐसे समय में खोटा लालच कभी न करोगे।

सज्जन तजत न नीति पथ यदपि प्राण तज देत।
भूखो रहत मृगेन्द्र तउ तृण न कबहुं मुख लेत॥

सज्जन से सब तरह की आस होती है।

सुजन कठिन तउ हेम सम पिगलत औसर पाय।
तृण सम छोटे मनुज को पिगलन को न उपाय॥

परोपकार से कीर्ति मिलती है और कीर्ति ही आत्मा का भूषण है।

मूरत से कीरत बड़ी विना पख उड़ जाय।
मूरत कबहुं न थिर रहै कीरत कबहुं न जाय॥

अब जो आप को सच्चो कीर्ति का लालच होय तो अपना स्वार्थ छोड़कर परोपकार करो।

सरिता वारि न पियत कहुं तरु न कबहुं फल खांहि।
वारिद भखत न अन्न कहुं सज्जन पर हित मांहि॥

हमारी कामना साधारण मनुष्य से पूरी होने लायक नहीं थी इस कारण आपको लिखा गया।

ऊँचे जन की कामना नीचन ते न पुराय।
हरत ताप गिरि को जलद सरिता रहत लजाय॥

आगे आप को अपने काम का अधिकार है। आप नीति से हमारे लेख को अगीकार करोगे तो हम आपकी श्री हरैंगे और आप

अनीति से हमारे लेख को न अगीकार करोगे तो हम आप की श्री न हरेंगे।" (१)

श्रीपाटनपति राय का जुहार।

(सूरत के महाराज चकित हो कभी पत्र, कभी जोधा, कभी रणधीर, कभी प्रेममोहिनी की तरफ देखने लगे, परतु मुख से एक अक्षर न निकला। आंखो में आसू भरकर चुप रह गए।)

मत्री—(जोधा से) इस समय महाराज का चित्त ठिकाने नहीं है। तुमको पत्र का जवाब पीछे से मिलेगा।

(जोधा जाता है)

(सूरत के महाराज का एक नौकर आता है)

नौकर—(घबराहट से) महाराज! पाटनपति राय की सेना टीडी दल के समान उमडी चली आती है।

सूरतपति—(निराश हो कर) हम तो इस खेत मे खेत रहे, अब इस अभागे नगर का कुछ हो! चाहे इस पर ओले गिरे, चाहे टीडी दल टूट पड़े, हमको इन बातों से क्या काम?

मत्री—महाराज जब तक आपके शरीर मे प्राण है, आपको प्रजा की रक्षा करनी चाहिये। बड़े लोग विपत्ति पडने से कभी अपनी रीति नहीं बदलते।

वड़े लहत सुख सपदा, वड़े सहत दुख द्वद।
उडगण घटत न वढ़त कहुँ, वढ़त घटत नित चद॥

---

(१) आपने नीति से हमारे लेख को मजूर किया तो बैरी को पत्र मे चार श्री लिखते हैं, उसके बदले हम आपको एक श्री हर कर मित्र भाव से आपको तीन श्री लिखा करेंगे और आपने हमारे लेख को नामजूर किया तो हम आप पर चढ़ाई करके आपकी राजश्री हरेंगे।

(मालती से) जल्दी रणधीर और प्रेममोहिनी को चिता पर विराजमान कर।

(सूरत के महाराज बेसुध हो गये)

मालती—हाय ! राजकुमारी से सदा के लिए वियोग होता है ! एक बार प्रेममोहिनी की मोहिनी मूर्ति तो मन भर कर देख लूँ !!!

(प्रेममोहिनी के मुख की तरफ टकटकी बाँध कर देखने लगी)

चपा—सखी ! रणधीर और प्रेममोहिनी के प्राण चद चकोर की तरह अब तक इनकी मृत देह के आसपास फिरते हैं !

(नेपथ्य में घोडो की टाप सुनाई दी।)

मत्री—मालती ! जल्दी कर, देर करने में सब बात बिगड जायगी।

(मालती और चपा ने रोते रोते रणधीर और प्रेममोहिनी की मृत देह को चिता पर रख कर अग्नि - सस्कार किया।)

मत्री—(सूरतपति को वस्त्र से पवन करके) महाराज ! चेत करिये, बैरी सनमुख आता है !

सूरतपति—(सचेत होकर, करुणा से) इससे अधिक बैरी हमारा क्या करेगा ! हमारा तो होना था सो हो चुका !!! (चिता की तरफ देख कर) हाय ! ये चिता नही जलती, मेरा हृदय जलता है।

मालती—सखी ! हमसे ये दुख नहीं देखा जाता। हाय ! हमारी मौत कहाँ छिप रही ! (रोती हुई दोनो जाती हैं।)

सूरतपति—(अत्यत करुणापूर्वक गद्‌गद स्वर से) हे दैव ! तुमने अत समय भी मेरी मोहिनी का मुख मुझको मन भर कर नही देखने दिया ! हाय ! मेरे जीतव को धिक्कार है !!! (शोक से व्याकुल हो खड़े रह गये)

(दो मंत्री और सेनापति समेत पाटन के महाराज का प्रवेश)

पाटनपति—मन्त्री ! मैं पत्र के जवाब की बाट देखे बिना रणधीर से मिलने की उमंग में यहाँ चला आया, परतु अपनी करतूत विचार कर मेरे पाँव पीछे को हटते हैं। मेरा कलेजा धड़कता है। मेरे आने की चर्चा सुन कर कहीं रणधीर यहाँ से चला न जाय। मैं कौन सा मुँह लेकर उससे बात करूँगा। हाय ! वो घडी कब आवेगी जब मै अपने लाल को अपने गले लगाऊँगा।

पाटन का सेनापति—(चारो तरफ देख कर) हमारे आने से पहले यह बडा भारी खेत पडा है, न जाने इस लड़ाई का क्या कारण होगा !

पाटन का मन्त्री—सामने सूरतपति खड़े हैं, इनके मिलने से सब भेद खुल जायगा।

सूरतपति—(आँसू बहाते हुए आप ही पास आकर) पाटनपतिराय को सूरतपति राय का जुहार।

पाटनपति—आप प्रसन्न है ?

सूरतपति—जिनके भाग्य मे केवल दुःख लिखा है उनकी प्रसन्नता क्या ?

पाटनपति—क्यों ?

सूरतपति—(रोकर) मेरे बहते हुए आसू आप को उत्तर देगे।

पाटनपति—आप के इतने विलाप का क्या कारण है ?

सूरतपति—रणधीरसिह !

पाटनपति—इतने वीरों के खेत पड़ने का क्या कारण ?

सूरतपति—रणधीरसिह !

पाटनपति—सामने इस अग्नि के प्रज्वलित होने का क्या कारण ?

सूरतपति—रणधीरसिंह !

पाटनपति—आप क्या कहते हो ?

सूरतपति—क्या कहूँ ? अपने वीर बेटे का पराक्रम देखो। ससार में इसका जोड़ मिलना बहुत कठिन है, जैसे जलती हुई अग्नि सूखे बन को जला कर आप बुझ जाती है, तैसे ही वीर रणधीरसिंह ने सब बैरियों का अत लेकर अपना प्राण दिया !

सूरतपति का मत्री—हमारे राजकुमार रिपुदमन सिह ने पवन की तरह उनका बल बढाया और प्रेममोहिनी उनके संग इस चिता में विराजमान है। (चिता दिखाई)

(सूरत के महाराज मूर्छित हो गए और मत्री उनको पवन करने लगा)

पाटनपति—हा रणधीर, हा ! प्राणाधार, हा ! लाल, हा ! वत्स ! (मूर्छित हो गया)।

पाटन का मत्री—(वस्त्र से पवन करके) महाराज धीरज धरो, धीरज धरो।

सूरतपति—(होश में आकर) हाय ! रणधीरसिह का ये हाल देख कर हमारा कलेजा फटता है तो उनके पिता को कैसा दुःख होगा !

पाटनपति—(होश में आकर) देखो, पृथ्वी कपायमान नही हुई, आकाश मे महाप्रलय के बादल नही छाये, चारो तरफ से प्रबल पवन नही चलने लगी, पृथ्वी को भस्म करने के लिए सूर्य से अग्नि नहीं प्रकट हुई, फिर रणधीरसिह की मृत्यु किस प्रकार बताते हो ! (चिता के पास जाकर) मुझको एक विमान में गधर्व समेत अप्सरा दिखाई देती है। हाय ! अब मेरा मिलाप कैसे होगा !

सूरतपति—आपको ऐसे ज्ञानवान होकर धीरज छोडना उचित नही।

पाटनपति—(रोकर)—

सोरठा।

"सब काहू सुख दीन दुख न दियो काहू कबहुँ।
सो मर मोकों दीन भली करी रणधीरसिह"।

हा, रणधीर ! प्राण जीवन ! आज्ञाकारी ! शीलसिंधु बेटा ! ऐसे अमोघ बली होकर सदा मेरी आज्ञा में रहते थे, मेरे डर से थर थर कापते थे, तुम्हारी सौतेली मा के बहकाने से मैने लाज और प्रीति छोडकर तुम्हारा अपमान किया, तुमको प्रबल शत्रु के राज्य में रहने की आज्ञा दी। हा ! केसर की कोमल पोद को कश्मीर से उखाडकर रेत के थड मे लगाने का विचार किया तो भी तुम मेरी आज्ञा से प्रसन्न होते थे, अपना जन्म सुफल समझते थे, अपनी सौतेली माँ को निज माता से बढ़कर मानते थे, फिर बेटा ! अब हमने ऐसा क्या अपराध किया जो हमको दूर से आते देख, अजान की तरह जाते हो, एक बेर मुख मोडकर तो देखो ! (मूर्छित होकर गिरता है ।)

पाटन का मंत्री—महाराज धीरज धरो, धीरज धरो ! ससार में जिसने जन्म लिया वो एक दिन अवश्य मरेगा। ससार की कोई चीज थिर नहीं, ईश्वर का नियम अमिट है। उसने अब तक जो चाहा किया, आगे को जो चाहे करेगा, हमको उसकी इच्छा पर सतोष रखना चाहिए।

पाटन के महाराज—(विशेष रोकर) हमको सबसे अधिक दुख उसके इस समय परलोक जाने का है। कोई बात समय बिन अच्छी नहीं लगती। फिर उदय होने के समय सूर्य अस्त हो जाय तो धीर्य कैसे रहे ? (रणधीर का ध्यान करके) हे बेटा ! तुम्हारी थोडी उमर में मैने बहुत से गुण देखे, तुमने बैरियों के विनाश से प्रजा को सब तरह का सुख दिया, मेरी सेवा करने मे कोई बात बाकी न छोडी, जिस पर तुम अपनी लायकी से सदा नीची आँख रखते थे, समुद्र की तरह गंभीर रहकर कभी किसी का जी दुखने वाली कठोर बात मुख से नहीं निकालते थे, ये सब लक्षण तुम्हारे शीघ्र मरने के थे, क्योंकि जो मनुष्य थोड़े दिन जीते हैं उनमें भलाई और बडाई के गुण बहुत पाये जाते हैं। हाय ! मेरे जीतब पर धिक्कार है ! मुझको तुम्हारे आगे अपने पछतावे से मन खोल कर रोने का समय भी न मिला ! देखो ! सब ससार में माता पिता से संतान

का पालन होता है परंतु मै उल्टा दुखदाई हुआ ! संसार में प्राप्त सुख को सुख कोई नहीं समझता परतु वो (सुख) नाश हो जाता है तब उसका वैभव मालूम होता है। हाय ! तुम सरीके रत्न को मैने काच समझकर फेंक दिया, अब मणि बिना साँप का जीना वृथा है !!!

सूरतपति—आप क्यों इतना विलाप करके अपने प्राण को खोते हो।

पाटनपति—देखो, मेरा प्राणप्यारा पुत्र मुझको सदा के लिए छोड कर चला गया। उसके देखे बिना मुझे स्वास लेने में दुःख होता है, धीरज कहाँ से आवे ? मुझसे बढ़कर आज तक संसार में कोई दुखिया न जन्मा होगा ! हाय ! मै रणधीरसिह का ये हाल देखने के लिए यहाँ आया था ! जब मै यहाँ से खाली रथ में बैठकर जाऊँगा तो मुझको देखकर नगर वासियों की क्या दशा होगी। परिवार वाले गद्‌गद स्वर से रणधीरसिह की कुशल पूछेंगे तब मैं क्या जवाब दूगा। रणधीरसिह की माता गऊ की तरह दौडकर अपने बछड़े से मिलने आवेगी तो मेरा चित्त स्थिर रहेगा। वो अपने लाल का हाल सुनते ही हाय मार कर मर जायगी तब मै कैसे जीता रहूँगा ! (मूर्छित हो गये)

पाटन का मत्री—(आँसू भर कर) क्या महाराज ने सब प्रजा के अनाथ करने का बिचार किया है !

पाटनपति—(कुछ सुध में आकर) मैं क्या अनाथ करूँगा दैव ने ही अनाथ कर दिया। जैसे अमृत बिन चद्रमा और पखहीन पक्षी की दशा होती है तैसे रणधीर बिना मेरा हाल है ! देखो, दुखिया मीन तो जल से वियोग होते ही प्राण छोड़ देती है पर मैं उससे भी कठोर हूँ जो रणधीर के वियोग मे अब तक जीता रहा। (आँसू डाल दिए)

(एक बैरागी ने आकर पाटनपति को पत्र दिया)

पाटनपति—ये किसका पत्र है ?

बैरागी—जिसको याद करके मेरे मुख से एक अक्षर नहीं निकलता (आँसू भर आये)।

पाटनपति—(पत्र खोलकर पढ़ने लगे)

"स्वस्ति श्री राजराजेन्द्र महाराज मुकुटमणि श्रीमान् महाराजाधिराज पाटनपतिराय के चरणारविद में ये आज्ञाकारी दास आँसू भरकर ये निवेदन करता है कि दास ने अब तक आपकी आज्ञा से यहाँ वास किया पर अब बहुत दूर की यात्रा का समय आ गया है। कदाचित आगे को कभी अपने नयन जल से आपके चरण सरोज धोने का समय न मिले। आपकी अकारण दया मुझको हर घडी याद आती है। जब मैं बाल बुद्धि से धूल धूसरित अग होकर आप की गोद मैली करता अथवा किसी अनमिल वस्तु के वास्ते हट करके आपको खिजाता तब आप क्रोध के बदले प्यार करते थे। आपने बड़े परिश्रम से मेरे मन में विद्या का बीज बोया। पर हाय! इस ऊसर भूमि से आप को कुछ फल न मिला। जिस देह से माता पिता की सेवा न बनी उसने ससार में जन्म लेकर क्या किया! मुझको यहाँ रणधीरसिह कुँवर, रणधीरसिह कहने वाले अनेक मिलते हैं पर आपकी तरह प्यार से रणधीर कहनेवाला कोई न मिला। मुझको आज की लडाई में आपके चरण पर मस्तक रख कर जाने की लालसा थी, परतु अब इस लालसा को मै अपने सग ले जाता हूँ। आपने जन्म से अब तक मेरे सग जो उपकार किये है उनका बदला मै किसी तरह नहीं दे सकता। ससार में किसी करजदार को करज उतारने की सामर्थ्य नहीं होती तो वो साहूकार की दृष्टि बचा कर परदेश जाने का विचार करता है। आपने अपनी प्रसन्नता से मुझको यहाँ आने की आज्ञा दी। मेरे प्राणप्यारे भाई को युवराज बनाया, मेरी माता की कामना पूरी की। आपसे माता पिता पाकर मै अपना अहोभाग्य समझता हूँ। मै अब तक कछुए के अंडे की तरह आपकी असीस से यहाँ प्रसन्न रहा और जीवन ने जीवन के अत तक मेरा साथ दिया। अब अत समय बड़ी दीनता से

मैं ये माँगता हूँ कि आज की लड़ाई में मेरे प्राण जायँ तो आप मुझ तुच्छ मनुष्य के लिए कुछ चिंता न करें, ईश्वर आपको मेरी दोनों माता और प्यारे भ्राता समेत सदा सुखी रखे। अब प्यारे भाई को असीस देकर दोनों माताओं समेत आपके चरण कमलों में अत की प्रणाम करता हूँ।

मै आप का चरणानुरागी दास
रणधीर—सूरत।"

पाटनपति—(**पत्र को हृदय से लगाकर बड़ी करुणा से**) जैसे शीत पड़ने से कमल मुरझा जाता है तैसे रणधीर के शीतल बचनों से मेरा हृदय अचेत होता है। मेरे कुटिल हृदय में रणधीरसिंह की सीधी वाणी बाण की तरह पार होती है। हाय! मुझ कपटी मे रणधीरसिंह की ऐसी प्रीति क्यों हुई? रणधीरसिंह के एक एक गुण याद आने से मेरा कलेजा फटता है! मेरी रसना ऐंठी जाती है, मेरे नयनों से दिखाई नही देता, मेरे शरीर का फिरता रुधिर एक सग बद हो गया। अब ये पक्षी पिंजरे से उडता है। मत्री मेरी अंत समय की विनय सुन—

(**नेपथ्य में बड़ा प्रकाश दिखाई दिया**)

पाटनपति—(**चौंक कर**) अरे ये क्या! मुझको भस्म करने के लिए आग प्रगट हुई! अथवा आकाश से बिजली गिरी! हे दैव! तेरा कैसा उपकार।

बैरागी—(**रोकर**) दुष्ट सुखबासीलाल आदि ने रणधीरसिंह के महल में आग लगा दी। हाय! प्रतापी रणधीरसिंह का माल यों धूल में मिला! ससार में लोभ सब खोटे कामों की जड़ है।

सूरत के महाराज—इन दुष्टों को न्याय सभा में बुलाकर भली भाँति दंड दिया जायगा।

पाटन के महाराज—हाय! हमारे नेत्र शीतल होने के लिए दुष्ट दैव ने रणधीरसिंह की कोई चीज़ बाकी न छोड़ी। (**बैरागी की तरफ**

देख कर) तू कौन ? जीवन ! तैने रणधीरसिंह का अच्छा साथ दिया। तेरा मेरे ऊपर बड़ा उपकार हुआ। तू मुझको प्राण से अधिक प्यारा है। बेटा ! आ, मेरे गले लग। मन्त्री ! प्यारे जीवन को अपने राज में से दस गाँव देकर सब तरह सुखी करना।

बैरागी—(रोकर) महाराज ! मुझको कुछ नहीं चाहिये। मेरी सब संपत लुट गई। अब ये पापी प्राण रणधीरसिंह का वियोग सहकर बचेगा तो परबत की किसी कदरा में घटती के दिन पूरे करेगा।

पाटन की मन्त्री—धन्य जीवन, धन्य ! तू और तेरे माता पिता धन्य हैं।

सूरतपति—प्रेममोहिनी की प्रतिमा के सग रणधीरसिंह की रत्न-जटित मूर्ति बनवाकर यहाँ रखने की मेरे मन में इच्छा है।

पाटनपति—(करुणा करके गद्‌गद स्वर से) रणधीर ! बेटा रणधीर !! भर जवानी में ये तेरा क्या हाल हुआ ? ऐसी घडी अपने घर से पाँव निकाला कि फिर घरना ही नसीब न हुआ ! मेरे बदले जमराज ने तुझको क्यों बुला लिया, और तू अपने बूढे बाप को छोड कर कहाँ चला गया ? हाय ! मेरे अधर्म से मेरा लाल बैरी के देश में इस तरह इकल्ला मारा गया ! (विलाप करने लगे)

सूरत के महाराज—(आँसू भर) क्या आप मुझको अब तक अपना बैरी समझते हो ? मै आप का सच्चा मित्र हूँ। प्रेममोहिनी की पहरावनी में मैने ये राज आपको दिया। जब रिपुदमन से रणधीरसिंह की मित्रता हुई, जब प्रेममोहिनी से रणधीरसिंह का ब्याह हुआ, तब हमारा आपका बैर कहाँ रहा ? जिनसे रिपुदमन और प्रेममोहिनी की प्रीति थी वे हमारे सदा के मित्र हैं। प्यारे पाटनपति राय ! रिपुदमन और प्रेममोहिनी की मै क्या बडाई करूँ ? ये दोनों मेरे प्राणाधार थे। इनके देखने से मेरी आँखों में प्रकाश आता था, इनको देख कर मै फूला न समाता

था। हाय! जब ये दोनों सूर्य चद्रमा अस्त हो गए, जब हमारे नयनों का प्रकाश जाता रहा, जब हमारे उत्तम कुल का इस तरह अत आया तब हम जीकर क्या करेंगे? ऐसे जीतब पर धिक्कार है! हम अपनी प्यारी सतान के पास जाते हैं। (मूर्छित होकर गिर पड़ा और सूरत का मंत्री वस्त्र से पवन करने लगा।)

पाटनपति—(विलाप करके गद्‌गद स्वर से) जब प्यारा रणधीर न रहा तब मुझको इस राजपाट से क्या काम? (बैरागी की तरफ देख कर) जीवन मुझको प्यारे रणधीर के पास ले चल, उसके बिना मेरे प्राण जाते हैं, मेरा कठ रुक गया। हा! रणधीर! बेटा रणधीर! मुझ दुखिया को छोड कर तुम स्त्री और मित्र के सग चले गये! तुमको मेरी दशा पर कुछ दया न आई। अच्छा, पल भर ठैरो मै अभी आकर तुमको गले लगाता हूँ। मत्री! हमारे कुल की नदी का राजहस, हमारे विपत्ति की ढाल, हमारे शरीर का चदन, हमारे नेत्रों का चद्रमा अस्त हो गया! हम उसके वियोग में प्राण छोडते हैं। हमारा राजपाट तुम्हारे आधीन है। हमारा अज्ञान बालक तुम्हारी गोद है। तुम पदवी में छोटे पर बुद्धि में बड़े हो। इस कारण हम हाथ जोड कर अत समय तुमसे ये माँगते हैं कि हमारे स्नेह से अपने व्याकुल मन को धीर्य देकर हमारे अनाथ कुल की रक्षा करो। हमारे नष्ट कुल में ये एक अंकुर बचा है इससे हमारा वश चलेगा और ये ही बडा होकर हमारा निपुत्री कुल में पानी (पिंड) देनेवाला होगा। देखो, यह कहीं हमारी याद करके मर न जाय। इसको अपना समझ कर अच्छी तरह रक्षा करना। इसको सुमार्ग में डालना (आँसू भर कर) और ये बड़ा हो! हमारी प्यारी प्रजा को प्राण से अधिक रखना। भैया! तुम ज्ञानवान हो। हमारे अत समय के वचन को भूल मत जाना, तुम्हारे काम से हमको परलोक में सुख मिले ऐसा उपाय करना। (मत्री को छाती से लगा कर) हमारा सर्वस्व तुम्हारे आधीन है। अब हमसे कुछ नहीं बोला जाता। अब हम तुमको अत की असीस देकर बिदा होते हैं।

हाय ! प्यारे रणधीर बिना जगत अंधेरा लगता है !!! (**मूर्छित होकर गिर पड़े**)

पाटन का मन्त्री—(**आँसू भर कर चरण दाबते दाबते**) महाराज ! आपने ये क्या विचारा ? आप कभी ऐसा वचन न कहें । क्या सब संसार डबोने की आपके मन में है ! रणधीरसिंह के वियोग रूपी अथाह समुद्र मे पाटन को जहाज बना कर सब नगर निवासी चढ चुके अब आप खेवट होकर खेवेंगे तो बेडा पार लग जायगा, नहीं तो ससार के डूबने का समय है । आपके नाम से जो काम होता है हमारे उपाय से नहीं हो सकता । हा ! आपके बिना हम क्या करेंगे ? हे जगदीश ! हमारा दुख और सब ससार का दुःख दूर कर !!!

(**धीरे धीरे परदा गिरता है**)

इति प्रथम गर्भाकः ।

पचम अक समाप्त ।

समाप्त ।

———

परीक्षागुरु

अर्थात्

अनुभव द्वारा उपदेश मिलने की एक संसारी वार्ता ।

"ऐश्वर्य मद पापिष्ठा मदाः पान मदादयः ।
ऐश्वर्य मदमत्तो हि नापतित्वा विबुध्यते ॥"

भावार्थ

और मदन ते विभव मद अति पापिष्ठ लखाय ।
वह उतरैं अपने समय यह बिन बिपति न जाय ॥

विदुर प्रजागरे ।

Dedication

To

Lala Sri Ram M. A.
Ufwar

My dear friend,

I dedicate this book, my humble attempt at novel writing to you as a token of sincere friendship which has existed between us for many years and as a tribute of the esteem I have always felt for you, the deep interest you take in everything connected with the weal of the People of India by showing them by your own example the best means of civilizing the Country.

Delhi
The 25 November 1884

yours sincerely
Sri Newas Das

निवेदन

अब तक नागरी और उर्दू भाषा में अनेक तरह की अच्छी, अच्छी पुस्तकें तैयार हो चुकी हैं परंतु मेरे जान इस रीति से कोई नहीं लिखी गई इसलिये अपनी भाषा मे यह नई चाल की पुस्तक होगी, परंतु नई चाल होने से ही कोई चीज अच्छी नहीं हो सक्ती बल्कि साधारण रीति से तो नई चाल मे तरह, तरह की भूल होने की सभावना रहती है और मुझको अपनी मद बुद्धि से और भी अधिक भूल होने का भरोसा है इसलिये मै अपनी अनेक तरह की भूलों से क्षमा मिलने का आधार केवल सज्जनों की कृपा दृष्टि पर रखता हूँ .

यह सच है कि नई चाल की चीज देखनें को सबका जी ललचाता है परंतु पुरानी रीति के मन मे समाये रहने और नई रीति को मन लगाकर समझनें मे थोडी महनत होनें से पहले पहल पढनेवाले का जी कुछ उलझने लगता है और मन उछट जाता है इससे इस्का हाल समझ मे आनें के लिये मै अपनी तरफ से यहाँ कुछ खुलासा किया चाहता हूँ—

पहले तो पढनेंवाले इस पुस्तक मे सौदागर की दुकान का हाल पढते ही चकरावेंगे क्योंकि अपनी भाषा मे अब तक वार्तारूपी जो पुस्तकें लिखी गई हैं उन्मे अक्सर नायक, नायका वगैरे का हाल ठेटसे सिलसिले-वार (यथाक्रम) लिखा गया है जैसे "कोई राजा, बादशाह, सेठ साहू-कार का लडका था उस्के मन मे इस बात से यह रुचि हुई और उस्का यह परिणाम निकला" ऐसा सिलसिला इस्मे कुछ भी नहीं मालूम होता . "लाला मदनमोहन एक अंग्रेजी सौदागर की दुकान मे अस्बाब देख रहे हैं लाला ब्रजकिशोर, मुशी चुन्नीलाल और मास्टर शिभूदयाल उनके साथ हैं ." इन्में मदनमोहन कौन, ब्रजकिशोर कौन, चुन्नीलाल कौन और शिभूदयाल

कौन है ? इन्का स्वभाव कैसा है ? परस्पर सबध कैसा है ? हरेक की हालत क्या है ? यहाँ इस्समय किस लिए इकट्ठे हुए हैं ? यह बातें पहलै सै कुछ भी नहीं जताई गई ! हाँ पढनें वाले धैर्य सै सब पुस्तक पढ लेंगे तो अपनें, अपनें मौके पर सब भेद खुल्ता चला जायगा और आदि सै अंत तक सब मेल मिल जायगा परंतु जो साहब इतना धैर्य न रक्खेंगे वह इस्का मतलब भी नहीं समझ सकेंगे .

अलबत्ता किसी, किसी नाटक मैं यह रीति पहलै से पाई जाती है परतु उस्की इस्की लिखने की रीति जुदी जुदी है . नाटकों मैं जिस्का बचन होता है उस्का नाम आदि मैं लिख देते हैं और वह पैरेग्राफ (१) उस्का बचन समझा जाता है परतु इस्मै ऐसा नहीं होता इस्मै ऐसे "....." चिन्ह (अर्थात् इन्वरटेडकोमा या कुटेशन) के भीतर कहनें वाले का बचन लिखा जाता है और कहनेंवाले का नाम बचन के बीच मै या अत मैं जहाँ पुस्तक रचनेवाले को जगह मिल्ती है, वह लिख देता है अथवा नाम लिखे बिना पढनेंवाले को कहनेंवाले का बचन मालूम हो सके तो नही भी लिखता . एक आदमी का बचन बहुत करके एक पैरेग्राफ मै पूरा होता है परतु कहीं, कहीं किसी, किसी के बचन मै और और विषय आ जाते है तो ऐसे "चिन्ह (इन्वरटेडकोमा) सै पहला बचन पूरा किए बिना दूसरे पैरेग्राफ के आदि सै ऐसे "चिन्ह लगाकर उसी का बचन जारी रक्खा जाता है, और बचन के बीच मै दूसरे का बचन आ जाता है तो वहाँ उस बचन को अलग दिखानें के लिए उस्पर भी अक्सर इन्वरटेडकोमा लगा दिये जाते हैं, परतु जो बचन

---

(१) पैरेग्राफ के प्रारभ मै हर जगह नए सिरसै जरा सी लकीर छोडकर लिखा जाता है और वह पूरा होता है वहाँ बाकी लकीर खाली छोड़ दी जाती है, जैसे यह पैरेग्राफ "अलबत्ता" सै प्रारभ होकर "होते हैं" पर समाप्ति हुआ है .

ऐसे " " चिन्हों के भीतर नहीं होते वह पुस्तक रचनेंवाले की तरफ से होते हैं.

और चिन्हों मैं ऐसा, (कोमा) किंचित् विश्राम, ऐसा; (सिमीकालेन) अथवा : (कोलन) अर्धविश्राम, ऐसा. (फूलिस्टोप) पूर्ण विश्राम, ऐसा ? (इट्रोगेशन) प्रश्न की जगह, ऐसा ! (एक्स क्लेमेशन) आश्चर्य अथवा सम्बोधन वगैरै के जो शब्द जोर देकर बोलनें चाहियें उन्के आगे ऐसा—चिन्ह बात अधूरी छोडने के समय लगाया जाता है और ऐसे ( ) चिन्हों (पेरेनथिसेस) के भीतर पहले पद का खुलासा अर्थ या चल्ते प्रसग मैं कोई दूतरफी अथवा विशेष बात जतानी होती है वह लिख देते हैं.

इस पुस्तक मै दिल्ली के एक कल्पित (फर्जी) रईस का चित्र उतारा गया है और उस्को जैसे का तैसा (अर्थात् स्वाभाविक) दिखानें के लिए सस्कृत अथवा फारसी अरबी के कठिन, कठिन शब्दों की बनाई हुई भाषा के बदले दिल्ली के रहनेवालों की साधारण बोलचाल पर ज्यादः दृष्टि रक्खी गई है. अलबत्ता जहाँ कुछ विद्या विषय आ गया है वहाँ विवस होकर कुछ, कुछ शब्द सस्कृत आदि के लेने पड़े हैं परतु जिनको ऐसी बातो के समझने मै कुछ झमेल मालूम हो उन्की सुगमता के लिये ऐसे प्रकरणों पर ऐसा × चिन्ह लगा दिया गया है जिस्से उन प्रकरणों को छोडकर हरेक मनुष्य सिलसिलेवार वृत्तात पढ सक्ता है.

इस पुस्तक मै संस्कृत, फारसी, अग्रेजी की कविता का तर्जुमा अपनी भाषा के छदों मै हुआ है परतु छदों के नियम और दूसरे देशों का चाल चलन जुदा होने की कठिनाई से पूरा तर्जुमा करने के बदले कहीं, कहीं भावार्थ ले लिया गया है.

अब इस पुस्तक के गुण दोषों पर विशेष विचार करने का काम बुद्धिमानों की बुद्धि पर छोडकर मै केवल इतनी बात निवेदन किया चाहता हूँ कि कृपा करके कोई महाशय पूरी पुस्तक बाँचे बिना अपना बिचार

प्रगट करने की जल्दी न करैं और जो सज्जन इस विषय मै अपना विचार प्रगट करै वह कृपा करके उस्की एक नकल मेरे पास भी भेज दे (यदि कोई अखबारवाला उस अक को कीमत चाहेगा तो वह तत्काल उस्के पास भेज दी जायगी) जो सज्जन तरफदारी (पक्षपात) छोडकर इस विषय मै स्वतत्रता सै अपना विचार प्रगट करैगे मै उन्का बहुत उपकार मानूँगा .

इस पुस्तक के रचने मैं मुझको महाभारतादि सस्कृत, गुलिस्तां वगैरे फारसी, स्पेक्टेटर, लार्डबेकन, गोल्डस्मिथ, विलियम कूपर आदि के पुरानें लेखों और स्त्री बोध आदि के वर्तमान रिसालों सै बडी सहायता मिली है इसलिये इन् सबका मै बहुत उपकार मान्ता हूँ और दीनदयालु परमेश्वर की निर्हेतुक कृपा का सच्चे मन सै अमित उपकार मान कर लेख समाप्त करता हूँ .

सज्जनों का कृपाभिलाषी

श्रीनिवासदास, दिल्ली .

परीक्षागुरु

प्रकरण १

सौदागर की दुकान.

चतुर मनुष्य को जितनें खर्च मैं अच्छी प्रतिष्ठा अथवा धन मिल सक्ता है मूर्ख को उस्सै अधिक खर्चनें पर भी कुछ नहीं मिल्ता.

लार्ड चेस्टरफील्ड.

लाला मदनमोहन एक अंग्रेजो सौदागर की दुकान मै नई, नई फाशन का अंग्रेजी अस्बाब देख रहे हैं लाला ब्रजकिशोर, मुशी चुन्नीलाल, और मास्टर शिभूदयाल उन्के साथ है .

"मिस्टर ब्राइट ! यह बडी काच की जोडी हमको पसंद है इस्की कीमत क्या है ?" लाला मदनमोहन ने सौदागर सै पूछा .

"इस साथ की जोडी अभी तीन हजार रुपे मैं हमने एक हिंदुस्थानी रईस को दी है लेकिन आप हमारे दोस्त हैं आप को हम चार सौ रुपे कम कर देंगे ."

"निस्सदेह ये काच आप के कमरे के लायक़ हैं इन्के लगनें सै उस्की शोभा दुगुनी हो जायगी" शिभूदयाल बोले .

"आहा ! मै तो इन्के चोखटों की कारीगरी देखकर चकित हूँ ! ऐसे अच्छे फूल पत्ते बनाये हैं कि सच्चे बेल बूटों को मात करते हैं, जी चाहता है कि कारीगर के हाथ चूम लूं" मुशी चुन्नीलाल नें कहा .

"इन्के बिना आप का इस्समय कौन्सा काम अटक रहा है ?" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे "खेल तमाशे की चीजों सै भोले भाले आदमियों का जो ललचाता है वह सौदागर की सब दुकान को अपने घर ले जाया

चाहते हैं परतु बुद्धिमान अपनी ज़रूरी चीजों के सिवाय किसी पर दिल नहीं दौडाते" लाला ब्रजकिशोर बोले .

"ज़रूरत भी तो अपनी, अपना रुचि के समान अलग, अलग होती है" मुशी चुन्नीलाल नें कहा .

"और जब दरिद्रियो की तरह धनवान भी अपनी रुचि के समान काम न कर सकै तो फिर धनी और दरिद्रियों मे अतर ही क्या रहा ?" मास्टर शिभूदयाल नें पूछा .

"नामुनासिब काम करके कोई नुसकान सै नहीं बच सक्ता—

"धनी दरिद्री सकल जन हैं जग के आधीन ।
चाहत धनी विशेष कछु तासो ते अति दीन ।"

लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे . "मुनासिब रीति सै थोड़े खर्च मे सब तरह का सुख मिल सक्ता है परतु इन्तजाम और काम के सिल्सिले बिना बड़ी सै बडी दौलत भी ज़रूरी खर्चों को पूरी नही हो सक्ती . जब थोथी बातों मैं बहुत सा रुपया खर्च हो जाता है तो जरूरी कामों के लिये पीछे सै ज़रूर तकलीफ़ उठानी पडती है ."

"चित्त की प्रसन्नता के लिये मनुष्य सब काम करते है फिर जिन चीजों के देखने सै चित्त प्रसन्न हो उन्का खरीदना थोथी बातों में कैसे समझा जाय ?" मुशी चुन्नीलाल ने कहा .

"चित्त प्रसन्न रखने की यह रीति नही है चित्त तो उचित व्यवहार सै प्रसन्न रहता है" लाला ब्रजकिशोर ने जवाब दिया .

"परतु निरी फिलासफी की बातों सै भी तो दुनियादारी का काम नही चल सक्ता" लाला मदनमोहन ने दुनियादार बन कर कहा .

"बलायत की सब उन्नति का मूल लार्ड बेकन की यह नीति है कि "केवल बिचार ही बिचार मैं मकडी के जाले न बनाओ आप परीक्षा करके हरेक पदार्थ का स्वभाव जानो" मिस्टर ब्राइट ने कहा .

"क्यौं साहब ! ये काच कहाँ के बने हुए हैं ?" मुंशी चुन्नीलाल नें सौदागर सै पूछा .

"फ्रांस के सिवाय ऐसी सुडोल चीज कहीं नही बन सक्ती. जब सै ये काच यहा आए हैं हर वक्त देखनेंवालो की भीड लगी रहती है और कई कारीगर तो इन्का नक्शा भी खींच ले गए है."

"अच्छा जी! इन्की क़ीमत हमारे हिसाब मैं लिखो और ये हमारे यहा भेज दो."

"मैने एक हिदुस्थानी सौदागर की दुकान मै इसी मेल के काच देखे हैं उन्के चौखटों मै निस्सदेह ऐसी कारीगरी नही है परतु कीमत मै वह इन्सै बहुत ही सस्ते हैं" लाला ब्रजकिशोर बोले.

"मै तो अच्छी चीज़ का गाहक हूँ चीज़ पसद आये पीछे मुझको क़ीमत की कुछ परवा नही रहती."

"अंग्रेजों की भी यही चाल है" मास्टर शिभूदयाल ने कहा.

"परतु सब बातों मै अग्रेजों की नकल करनी क्या ज़रूर है?" लाला ब्रजकिशोर नें जवाब दिया.

"देखिये! जब सै लाला साहब यह अमीरी चाल रखने लगे हैं लोगों मैं इन्की इज्जत कितनी बढ़ती जाती है!" मास्टर शिंभूदयाल नें कहा.

"सर सामान सै सची इज्ज़त नही मिल सक्ती सची इज्जत तो सची लियाकत सै मिल्ती है" लाला ब्रजकिशोर कहने लगे "और जब कोई मनुष्य बुद्धि के विपरीत इस रीति सै इज्जत चाहता है तो उस्का परिणाम बडा ही भयकर होता है."

"साहब! इतनी बात तो मै हिम्मत सै कहता हूँ कि जो इस साथ की जोडी इस शहर मै दूसरी जगह निकल आवेगी तो मै ये काच मुफ्त नज़र करूँगा" मिस्टर ब्राइट ने जोर देकर कहा

"कदाचित इस साथ की जोडी दिल्ली भर मैं न होगी परतु कीमत की कम्ती बढती भी तो चीज़ की हैसियत के बमूजिब होनी चाहिये" लाला ब्रजकिशोर नें जवाब दिया.

"जिस तरह मोतियों के हिसाब मैं किसी दाने की तोल ज़रा ज्यादः होनें सै चौ बहुत ज्यादः बढ़ जाती है इसी तरह इन शीशों की कीमत का भी हाल है मुझको लाला साहब सै ज्यादः नफ़ा लेना मजूर न था इस वास्तै मैने पहले ही असली कीमत मै चार सौ रुपे कम कर दिये इस पर भी आप को कुछ सदेह हो तो आप तीसरे पहर मास्टर साहब को यहाँ भेज दें मै बीजक दिखलाकर इन्सै कीमत ठैरा लूँगा ."

"अच्छा ! मास्टर शिभूदयाल मदरसे सै लोटती बार आप के पास आयँगे पर ये काच हमसै पूछे बिना आप और किसी को न दें" लाला मदनमोहन नें कहा .

इस बात सै सब अपनें, अपने जी मै राजी हुए . ब्रजकिशोर नें इतना अवकाश बहुत समझा मदनमोहन के मन मै हाथ सै चीज़ निकल जाने का खटका न रहा, चुन्नीलाल और शिभूदयाल को अपनें कमीशन सही करनें का समय हाथ आया और मिस्टर ब्राइट को लाला मदनमोहन की असली हालत जान्नें के लिये फुरसत मिली .

"बहुत अच्छा" मिस्टर ब्राइट ने जवाब दिया "लेकिन आप को फुरसत हो तो आप एक बार यहाँ फिर भी तशरीफ लायँ हाल मै नई नई तरह की बहुत सी चीजें बलायत सै ऐसी उम्दा आई हैं जिन्को देख कर आप बहुत खुश होंगे परतु अभी वह खोली नहीं गई हैं और इस्समय मुझको रुपे की कुछ ज़रूरत है इन चीजों की कीमत के बिल का रुपया देना है आप महरबानी करके अपनें हिसाब मै सै थोडा रुपया मुझको इस्समय भेज दें तो बडी इनायत हो ."

इस बचन मैं मिस्टर ब्राइट अपने अस्बाब की खरीदारी के लिये लाला मदनमोहन को ललचाता है परतु अपनें रुपे के वास्तै मीठा तकाज़ा भी करता है . चुन्नीलाल और शिभूदयाल के कारण उस्को मदन-मोहन के लेन देन मै बहुत कुछ फायदा हुआ परंतु उस्के पचास हज़ार रुपे इस्समय मदनमोहन की तरफ बाक़ी हैं और शहर मैं मदनमोहन की बाबत

तरह तरह की चर्चा फैल रही हैं बहुत लोग मदनमोहन को फिजूल खर्च, दिवालिया बताते हैं और हकीकत मैं मदनमोहन का खर्च दिन पर दिन बढता जाता है इस्सै मिस्टर ब्राइट को अपनी रकम का खटका है इसीलिये उस्ने इन काचों का सौदा इस समय अटकाया है और तीसरे पहर मास्टर शिंभूदयाल को अपनें पास बुलाया है.

"रुपया ! ऐसी जल्दी !" लाला ब्रजकिशोर ने मिस्टर ब्राइट को वहम मैं डालने के लिये आश्चर्य सै इतनी बात कहकर मन मैं कहा "हाय ! इन् कारीगरी की निरर्थक चीज़ों के बदले हिंदुस्थानी अपनी दौलत वृथा खोये देते हैं."

"सच है पहले आप अपना हिसाब तैयार करायँ, उस्को देखकर अंदाज सै रुपे भेजे जायगे" मुंशी चुन्नीलाल ने बात बनाकर कहा.

"और बहुत जल्दी हो तो बिल करके काम चला लीजिए, जब तक कागज के घोड़े दौडते हैं रुपे की क्या कमी है ?" ब्रजकिशोर बीच मै बोल उठे.

"अच्छा ! मैं हिसाब अभी उतरवाकर भेजता हू मुझको इस्समय रुपे की बहुत जरूरत है" मिस्टर ब्राइट नें कहा.

"आपनें साढे नो बजे मिस्टर रसल को मुलाकात के लिये बुलाया है इस वास्तै अब वहा चलना चाहिये" मास्टर शिंभूदयाल नें याद दिवाई.

"अच्छा मिस्टर ब्राइट ! इन् काचों की याद रखना और नया अस्बाब खुलै जब हमको जरूर बुला लेना" कहकर लाला मदनमोहन नें मिस्टर ब्राइट सै हाथ मिलाया और अपनें साथियों समेत जोडी की एक निहायत उम्दा बलायती फिटन मै सवार होकर रवाने हुए.

जब बग्गी कपनी बाग मै पहुंची तो सबेरे का सुहावना समय देखकर सब का जी हरा हो गया. उस्समय की शीतल, मद, सुगंधित हवा बहुत प्यारी लगती थी, वृक्षों पर हर तरह के पक्षी मीठे मीठे सुरों सै चहचहा रहे थे ! नहर के पानी की धीरी, धीरी आवाज़ कान को बहुत

अच्छी मालूम होती थी ! पन्ने सी हरी घास की भूमि पर मोती सी ओस की बूंदें बिखर रही थीं ! और तरह, तरह की फुलवाड़ी हरी मखमल मै रंग रग के बूंटों की तरह बडी बहार दिखा रही थी, इस स्वाभाविक शोभा को देखकर लाला ब्रजकिशोर नें मदनमोहन सै थोड़ी देर वहा ठैरनें के वास्ते कहा .

इस्समय मुंशी चुन्नीलाल नें जेब सै निकालकर घडी मै चाबी दी और घडी देखकर घबराट सै कहा "ओ ! हो ! नो पर बीस मिनिट चले गए तो अब मकान को जल्दी चलना चाहिये ."

निदान लाला मदनमोहन की बग्गी मकानपर पहुची और ब्रजकिशोर उन्सै रुखसत होकर अपनें घर गए .

———

प्रकरण २

अकाल मैं अधिक मास ।

अग्रापति के दिनन मैं ख़र्च होत अबिचार ।
घर आवत है पाहुनो बणिज न लाभ लगार ॥ वृंद ।

"हैं अभी तो यहाँ के घटे मैं पोनें नो ही बजे हैं तो क्या मेरी घड़ी आध घटे आगे थी ?" मुंशी चुन्नीलाल नें मकान पर पहुँचते ही बड़े घटे की तरफ़ देखकर कहा. परंतु ये उस्की चालाकी थी उसनें ब्रजकिशोर सै पीछा छुडानें के लिये अपनी घड़ी चाबी देनें के बहानें सै आध घंटे आगे कर दी थी !

"कदाचित ये घंटा आध घंटे पीछे हो" मास्टर शिभूदयाल नें बात साध कर कहा.

"नहीं, नहीं ये घंटा तोप से मिला हुआ है" लाला मदनमोहन बोले.

"तो लाला ब्रजकिशोर साहब की लच्छेदार बातें नाहक अधूरी रह गईं ?" मुंशी चुन्नीलाल नें कहा.

"लाला ब्रजकिशोर की बातें क्या है चकाबू का जाल है वह चाहते हैं कि कोई उन्के चक्कर सै बाहर न निकलनें पाय" मास्टर शिंभूदयाल नें कहा.

"मै यों तो ये काच लेता या न लेता पर अब उन्की ज़िद सै अदबद कर लूँगा."

"निस्सदेह जब वे अपनी ज़िद नहीं छोडते तो आप को अपनी बात हारनी क्या जरूर है ?" मुंशी चुन्नीलाल नें छीटा दिया.

"हितोपदेश मैं कहा है

"आज्ञालोपी सुतहु को क्षमैं न नृपति विनीत ।
को विशेष नृप, चित्र मैं जो न गहे यह रीति" ॥*

पडित पुरुषोत्तमदास नें मिल्ती मैं मिलाकर कहा.

"बहुत पढ़नें लिखनें सै भी आदमी की बुद्धि कुछ ऐसी निर्बल हो जाती है कि बड़े बड़े फिलासफर छोटी, छोटी बातों मैं चक्कर खाने लगते हैं" मास्टर शिंभूदयाल कहने लगे. "सर आइजक न्यूटन कितनी ही बार खाना खाकर भूल जाते थे, जरमन का प्रसिद्ध विद्वान लेसिंग एक बार बहुत रात गए अपनें घर आया और कुंदा खडकाने लगा, नोकर नें ग़ैर आदमी समझ कर भीतर सै कहा कि "मालिक घर मैं नहीं हैं कल आना" इस्पर लेसिंग सचमुच लौट चला !!! इटली का मारीनी नामी कवि एक दिन कविता बनानें मै ऐसा मग्न हुआ कि अंगीठी सै उस्का पैर जल गया तो भी उसै कुछ खबर न हुई !"

---

* आज्ञा भंगकरान् राजा न क्षमेत सुतानपि ।
विशेषः कोनु राज्ञश्च राज्ञश्चित्रगतस्य च ॥

"लाला ब्रजकिशोर साहब का भी कुछ, कुछ ऐसा ही हाल है यह सीधी, सीधी बातों को बिचार ही बिचार मैं खेंच तान कर ऐसी पेचीदा बना लेते हैं कि उन्का सुलझाना मुश्किल पड जाता है" मुशी चुन्नीलाल बोले.

"मैनें तो मिस्टर ब्राइट के रोबरू ही कह दिया था कि कोरी फिलासोफी की बातों सै दुनियादारी का काम नहीं चलता" लाला मदनमोहन नें अपनी अकलमदी ज़ाहर की.

इतनें मैं मिस्टर रसल की गाडी कमरे के नीचे आ पहुँची और मिस्टर रसल खट खट करते हुए कमरे मै दाखिल हुए, लाला मदनमोहन ने मिस्टर रसल सै शेकिंग्हैंड करके उन्हें कुर्सी पर बिठाया और मिज़ाज की खैरोआफियत पूछी.

मिस्टर रसल नील का एक होसलेमद सोदागर है परतु इस्के पास रुपया नहीं है, यह नील के सिवाय रुई और सन वग़ैरे का भी कुछ कुछ व्यापार कर लिया करता है इस्का लेन देन डेढ़, पौने दो बरस सै एक दोस्त की सिफारश पर लाला मदनमोहन के यहाँ हुआ है पहले बरस मै इस्के माल पर लाला मदनमोहन का जितना रुपया लगा था माल की बिक्री सै ब्याज समेत वसूल हो गया, परतु दूसरे साल रुई की भरती की जिस्मैं सात आठ हज़ार रुपे टूटते रहे इस्का घाटा भरनें के लिये पहले सै दुगनी नील बनवाई जिस्मैं एक तो परता कम बैठा दूसरे माल कलकत्ते पहुँचा उस्समय भाव मंदा रह गया जिस्सै नफे के बदले दस, बारह हजार इस्मैं टूटते रहे. लाला मदनमोहन के लेन देन सै पहले मिस्टर रसल का लेन देन रामप्रसाद बनारसीदास सै था उन्के आठ हजार रुपे अब तक इस्की तरफ बाकी थे; जब उन्की मयाद जाने लगी तो उन्होंनें नालिश करके साढे ग्यारह हजार की डिक्री इस्पर करा ली अब उन्की इजराय डिक्री मै इस्का सब कारखाना नीलाम पर चढ़ रहा

है और नीलाम की तारीख मैं केवल चार दिन बाकी हैं इस लिये यह बड़े घबराट मै रुपे का बदोबस्त करनें के लिये मदनमोहन के पास आया है.

"मेरे मिज़ाज का तो इस्समय कोसों पता नही लगता परतु उस्को ठिकाने लाना आपके हाथ है" मिस्टर रसल नें मदनमोहन के कुशल प्रश्न (मिज़ाजपुर्सी) पर कहा "जो आफत एकाएक इस्समय मेरे सिर पर आ पडी है उस्को आप अच्छी तरह जान्ते हैं. इस कठिन समय मैं आपके सिवाय मेरा सहायक कोई नहीं है आप चाहैं तो दम भर मैं मेरा बेडा पार लगा सक्ते हैं नही तो मै तो इस तूफान मैं ग़ारत हो चुका."

"आप इतने क्यों घबराते हैं ? जरा धीरज रखिये" मुशी चुन्नीलाल ने पहले की मिलावट के अनुसार सहारा लगाकर कहा "लाला साहब के स्वभाव को आप अच्छी तरह जान्ते हैं जहाँ तक हो सकेगा यह आप की सहायता मै कभी कसर न करेंगे."

"पहले आप मुझे यह तो बताइये कि आप मुझसै किस तरह की सहायता चाहते हैं ?" लाला मदनमोहन ने पूछा.

"मै इस्समय सिर्फ इतनी सहायता चाहता हूँ कि आप रामप्रसाद बनारसीदास की डिक्री का रुपया चुका दें मुझसै हो सकेगा जहाँ तक मै आपका सब कर्ज़ा एक बरस के भीतर चुका दूगा" मिस्टर रसल नें कहा "मुझको अपनी बरबादी का इतना खयाल नही है जितनी आपके कर्जे की चिन्ता है. रामप्रसाद बनारसीदास की डिक्री मै मेरी जायदाद बिक गई तो और लेनदार कोरे रह जायँगे और मैनें इसालवन्ट होने की दरख्वास्त की तो आप लोगों के पल्ले रुपे मै चार आनें भी न पडेंगे."

"अफ्सोस ! आप की यह हकीकत सुन्कर मेरा दिल आप सै आप उम्डा आता है" लाला मदनमोहन बोले.

"सच है महाकवि शेक्सपीअर ने कहा है" मास्टर शिंभूदयाल कहने लगे :—

"कोमल मन होत न किये होत प्रकृति अनुसार।
जो पृथवी हित गगन ते वारिद द्रवति फुहार॥
वारिद द्रवति फुहार द्रवहि मन कोमलताई।
लेत, देत- शुभ हेत दोउन को मन हरषाई॥
सब गुन ते उतकृष्ट सकल वैभव को भूषन।
राजहु ते कछु अधिक देत शोभा कोमल मन॥"*

"हज़रत सादी कहते हैं कि "दुर्बल तपस्वी से कठिन समय मै उस्के दुःख का हाल न पूछ और पूछै तो उस्के दुःख की दवा कर†" मुशी चुन्नीलाल ने कहा.

"अच्छा इस रुपे के लिये ये हमारी दिलजमई क्या कर देंगे?" लाला मदनमोहन ने बडी गभीरता से पूछा.

"हाँ हाँ लाला साहब सच कहते हैं आप इस रुपे के लिये हमारी दिलजमई क्या कर देगे?" मुशी चुन्नीलाल ने दिलजमई की चर्चा हुए पीछे अपनी सफाई जतानें के लिए मिस्टर रसल से पूछा

---

* The quality of mercy is not strained,
It droppeth, as the gentle rain from heaven
Upon the place beneath; it is twice blessed
It blesseth him that gives, and him that takes.
'Tis mightiest in the mightiest, it becomes
The throned monarch better than his crown.
William Shakespeare.

† दरवेशज़ईफे हालरा दरखुशकी तगेसाल मपुर्सके चुनी इल्ला बशत आकि मरहमे बरँशनिहा.

"मै थोड़े दिन मै शीशे बरतन का एक कारखाना यहाँ बनाया चाहता हूँ अब तक शीशे बरतन की सब चीज़े बलायत सै आती हैं इस लिये खर्च और टूट फूट के कारण उन्की लागत बहुत बढ जाती है, जो वह सब चीज़े यहाँ तैयार की जायँगी तो उन्मै ज़रूर फायदा रहेगा और खुदा नें चाहा तो एक बरस के भीतर भीतर आप की सब रकम जमा हो जायगी परतु आपको इस समय इस बात पर पूरा भरोसा न हो तो मेरा नील का कारखाना आपकी दिलजमई के वास्तै हाज़िर है" मिस्टर रसल ने जवाब दिया.

"हिंदुस्थान मै अब तक कलों के कारखाने नहीं हैं इस्सै हिंदुस्थानियों को बड़ा नुक्सान उठाना पड़ता है मैं जान्ता हू कि इस्समय हिम्मत करके जो कलों के कारखानें पहले जारी करेगा उस्को जरूर फायदा रहेगा" मास्टर शिंभूदयाल ने कहा.

"आपको रामप्रसाद बनारसीदास के सिवाय किसी और का रुपया तो नहीं देना !" मुंशी चुन्नीलाल नें पूछा.

"रामप्रसाद बनारसीदास की डिक्री का रुपया चुके पीछै मुझको लाला साहब के सिवाय किसी की फूटी कौडी नहीं देनी रहैगी" मिस्टर रसल ने जवाब दिया।

परतु काच का कारखाना बनाने के लिये रुपे कहाँ सै आँयगे ? और लाला मदनमोहन के कर्ज़े लायक नील के कारखाने की हैसियत कहाँ है ? इसालवट होने सै लेनदारों के पल्ले चार आने भी न पड़ेंगे यह बात मिस्टर रसल अपनें मुँह सै अभी कह चुका है पर यहाँ इन् बातों की याद कौन दिलावै ?

"इस सूरत मै रामप्रसाद बनारसीदास की डिक्री का रुपया न दिया जायगा तो उन्की डिक्री मै इस्का कारखाना बिक जायगा और अपनी रकम वसूल होनें की कोई सूरत न रहैगी" मुंशी चुन्नीलाल नें लाला मदनमोहन के कान मैं झुक कर कहा.

परतु इस्समय इस्को देने के लिये अपने पास नकद रुपया कहाँ है ?" लाला मदनमोहन ने धीरे से जवाब दिया.

"अब मेरी शर्म आपको है 'वक्त निकल जाता है बात रह जाती है' जो आप इस्समय मुझको सहारा देकर उभार लोगे तो मै आपका अहसान जन्म भर नहीं भूलूँगा" मिस्टर रसल ने गिड़गिडा कर कहा.

"मै मन से तुम्हारी सहायता किया चाहता हू परतु मेरा रुपया इस्समय और कामों मै लग रहा है इस्मे मैं कुछ नहीं कर सक्ता" लाला मदनमोहन ने शर्माते, शर्माते कहा.

'अजी हुज़ूर ! आप यह क्या कहते है ? आपके वास्ते रुपे की क्या कमी है ? आप कहें जितना रुपया इसी समय हाज़िर हो" मास्टर शिंभूदयाल बोले.

"अच्छा ! मुझसे हो सकेगा जिस तरह दस हजार रुपे का बंदोबस्त करके मै कल तक आपके पास भेज दूगा आप किसी तरह की चिन्ता न करें" लाला मदनमोहन ने कहा.

"आपने बडी महरबानी की मै आपकी इनायत से जी गया अब मैं आपके भरोसे बिल्कुल निश्चिंत रहूगा" मिस्टर रसल ने जाते, जाते बडी खुशी से हाथ मिलाकर कहा. और मिस्टर रसल के जाते ही लाला मदनमोहन भी भोजन करने चले गए

प्रकरण ३

संगति का फल

सहबासी बस होत नृप गुण कुल रीति विहाय ।
नृप युवती अरु तरुलता मिलत प्राय सग पाय ॥*
हितोपदेशे ।

लाला मदनमोहन भोजन करके आए उस्समय सब मुसाहब कमरे मै मौजूद थे. मदनमोहन कुर्सी पर बैठकर पान खाने लगे और इन् लोगों नें अपनी, अपनी बात छेड़ी .

हरगोविंद (पसारी के लडके) ने अपनी बगल सै लखनऊ की बनी हुई टोपियें निकाल कर कहा "हुजूर ये टोपियें अभी लखनऊ सै एक बज़ाज के यहाँ आई हैं सोगात मै भेजने के लिए अच्छी हैं पसंद हों तो दो, चार ले आऊँ ?"

"कीमत क्या है ?"

"वह तो पचीस, पचीस रुपे कहता है परतु मै वाजबी ठैरा लूँगा"

"बीस, बीस रुपे मै आवे तो ये चार टोपियें ले आना "

"अच्छा ! मै जाता हूँ अपने बस पडते तोड़ जोड मै कसर नहीं रक्खूँगा" यह कहकर हरगोविद वहाँ सै चल दिया .

"हुज़ूर ! यह हिना का अतर अजमेर सै एक गधी लाया है वह कहता है कि मै हुजूर की तारीफ़ सुनकर तरह, तरह का निहायत उम्दा

---

* आसन्नमेव नृपतिर्भजते मनुष्य विद्याविहीनमकुलीनमसङ्गत वा ।
प्रायेण भूमिपतयः प्रमदा लताश्च, यः पार्श्वतो बसति तं परिवेष्टयन्ति ॥

अतर अजमेर सै लाता था परंतु रास्ते मै चोरी हो गई सब माल असबाब जाता रहा सिर्फ यह शीशी बची है वह आपकी नज़र करता हूँ" यह कह कर अहमद हुसैन हकीम नें वह शीशी लाला साहब के आगे रख दी.

"जो लाला साहब को मज़ूर करने मैं कुछ चारा बिचार हो तो हमारी नज़र करो हम इसको मज़ूर करके उसकी इच्छा पूरी करेंगे." पडित पुरुषोत्तमदास ने बडी वजेदारी सै कहा.

"आपकी नज़र तो सिवाय करेले के और कुछ नही हो सक्ता मरज़ी हो, मगवाँय ?" हकीम जी ने जवाब दिया.

"करेले तुम खाओ, तुम्हारे घर के खाय हमको मुँह कडवा करने की क्या जरूरत है ? हम तो लाला साहब के कारण नित्य लड्डू उडाते हैं और चैन करते हैं" पडित जी ने कहा.

"लड्डू ही लड्डुओं की बातें करनी आती हैं या कुछ और भी सीखे हो ?" मास्टर शिभूदयाल नें छेड की.

"तुम सरीखे छोकरे मदरसे मै दो एक किताबें पढ़कर अपनें को अरस्तातालीस समझने लगते है परतु हमारी बिद्या ऐसी नहीं है तुमको परीक्षा करनी हो तो लो इस कागज़ पर अपने मन की बात लिखकर अपनें पास रहनें दो जो तुमने लिखा होगा हम अपनी बिद्या सै बता देंगे" यह कहकर पडित जी नें अपने अगोछे मै सै काग़ज़ पेनसिल और पुष्टीपत्र निकाल दिया.

मास्टर शिभूदयाल नें उस कागज पर कुछ लिखकर अपने पास रख लिया और पडित जी अपना पुष्टीपत्र लेकर थोडी देर कुडली खेंचते रहे फिर बोले "बच्चा तुमको हर बात मैं हँसी सूझती है तुमनें कागज़ मैं 'करेला' लिखा है परतु ऐसी हँसी अच्छी नहीं"

लाला मदनमोहन के कहनें सै मास्टर शिभूदयाल नें काग़ज़ खोलकर दिखाया तो हकीकत मै 'करेला' लिखा पाया अब तो पडित जी की खूब चढ़ बनी मूछों पर ताव दे, देकर खखारने लगे.

परंतु पडित जी नें ये 'करेला' कैसे बता दिया ? लाला मदनमोहन के रोबरू आपस की मिलावट सै बकरी का कुत्ता बना देना सहज सी बात थी परंतु पडित जी का चुन्नीलाल और शिभूदयाल सै ऐसा मेल न था और न पडित जी को इतनी विद्या थी कि उस्के बल सै करेला बता देते. असल बात यह थी कि पंडित जी ने एक कागज़ पर काजल लगाकर पुष्टीपत्र मै रख छोडा था जिस्समय पुष्टीपत्र पर कागज रखकर कोई कुछ लिखता था कलम के दबाव सै काजल के अक्षर दूसरे कागज़ पर उतर आते थे फिर पडित जी कुडली खेंचती बार किसी ढब सै उस्को देखकर थोडी देर पीछे बता देते थे.

"तो हुज़ूर ! उस गधी के वास्तै क्या हुक्म है ?" हकीम जी ने फिर याद दिवाई".

"अतर मै चदन के तैल की मिलावट मालूम होती है और मिलावट की चीज बेचने का सरकार सै हुक्म नहीं है इस वास्तै कह दो शीशी जप्त हुई वह अपना रस्ता ले" पडित जो शीशी सूघकर बीच मै बोल उठे.

"हाँ हकीम जी ! आपकी राय मै उस गधी का कहना सच है ?" लाला मदनमोहन नें पूछा.

"बेशक, अदाज सै तो ऐसा ही मालूम होता है आगे खुदा जाने" हकीम जी बोले

"तो लो यह पचीस रुपे के नोट इस्समय उस्को खर्च के वास्तै दे दो बिदा पीछे सै सामने बुलाकर की जायगी" लाला मदनमोहन नें पचीस रुपे के नोट पाकट सै निकाल दिये.

"उदारता इस्का नाम है" "दयालुता इसे कहते हैं" "सच्चे यश मिलनें की यह राह है" "परमेश्वर इस्सै प्रसन्न होता है" चारों तरफ सै वाह वाह की बोछार होनें लगी.

ये बहियाँ मुलाहजे के वास्तै हाज़िर हैं और बहुत सी रकमों का जमा-खर्च आपके हुक्म के बिना अटक रहा है जो अवकाश हो तो इस्समय

कुछ अर्ज़ करूँ ?" लाला जवाहर लाल ने आते ही बस्ता आगे रख कर डरते, डरते कहा .

"लाला जवाहर लाल इतनें बरस सै काम करते हैं परतु लाला साहब की तबियत, और कागज़ दिखाने का मोका अब तक नहीं पहचान्ते" लाला मदनमोहन को सुना कर चुन्नीलाल और शिभूदयाल आपस मै काना-फूसी करने लगे .

"भला इस्समय इन् बातों का कौन प्रसंग है ? और मुझको बार, बार दिक करने सै क्या फायदा है ? मै पहले कह चुका हूँ कि तुम्हारी समझ मै आवै जैसै जमाखर्च कर लो मेरा मन ऐसे कामों मै नहीं लगता" लाला मदनमोहन नें झिडक कर कहा और जवाहर लाल वहाँ सै उठकर चुपचाप अपने रस्ते लगे .

"चलो अच्छा हुआ ! थोड़े ही मै टल गई मै तो बहियों का अटंबार देख कर घबरा गया था कि आज उस्ताद जी घेरे बिना न रहैंगे" जवाहर लाल के जाते ही लाला मदनमोहन खुश हो, हो कर कहनें लगे .

"इन्का तो इतना होसला नही है परतु ब्रजकिशोर होते तो वे थोड़े बहुत उलझे बिना कभी न रहते" मास्टर शिभूदयाल ने कहा .

"जब तक लाला साहब लिहाज करते हैं तब ही तक उन्का उलझना उलझाना बन रहा है नही तो घडी भर मै अकल ठिकानें आ जायगी" मुशी चुन्नीलाल बोले .

"हुजूर ! मैं लाला हरदयाल साहब के पास हो आया उन्होंनें बहुत, बहुत करकै आप को खैरोआफियत पूछी है और आज शाम को आप सै बाग मै मिलनें का करार किया है" हरकिसन दलाल ने आकर कहा .

"तुम गए जब वो क्या कर रहे थे ?" लाला मदनमोहन नें खुश होकर पूछा .

"भोजन करके पलग पर लेटे ही थे आप का नाम सुनकर तुर्त उठ आए और बड़े जोश सै आप की खैरोआफियत पूछनें लगे ."

"मैं अच्छी तरह जान्ता हूँ वे मुझको प्राण सै भी अधिक समझते हैं" लाला मदनमोहन ने पुलकित होकर कहा.

"आप की चाल ही ऐसी है जो एक बार मिल्ता है हमेशे के लिये चेला बन् जाता है" मुंशी चुन्नीलाल नें बढावा देकर कहा.

"परंतु कानूनीबदे इस्सै अलग हैं" मास्टर शिंभूदयाल ब्रजकिशोर की तरफ इशारा करके बोले.

"लीजिये ये टोपियाँ अठारह, अठारह रुपे मै ठैरा लाया हू" हरगोविंद नें लाला मदनमोहन के आगे चारों टोपियें रखकर कहा.

"तुमने तो उस्की आँखों मैं धूल डाल दी! अठारह अठारह रुपे मै कैसे ठैरा लाये? मुझको तो ये बाईस, बाईस रुपे सै कम की किसी तरह नहीं जचती" लाला मदनमोहन नें हरगोविंद का हाथ पकडकर कहा.

"मैंने उस्को आगे का फायदा दिखाकर ललचाया और बडी, बडी पट्टियें पढाईं तब उस्ने लागत मै दो, दो रुपे कम लेकर आपके नाम से ये टोपिये दी हैं"

"अच्छा! यह लाला हरकिशोर आते हैं इन्सै तो पूछिये ऐसी टोपी कितने, कितनें मै ला देंगे?" दूर सै हरकिशोर बज़ाज को आते देखकर पडित पुरुषोत्तम ने कहा.

"ये टोपियें हरनारायण बजाज़ के हाँ कल लखनऊ सै आई हैं और बाज़ार मै बारह, बारह रुपे को बिकी हैं पर यहाँ तो तेरह तेरह मै आई होंगी" हरकिशोर नें जबाब दिया.

"तुम हमें पंदरह, पंदरह रुपे मै ला दो" हरगोविंद ने झुँझला कर कहा.

"मै अभी लाता हूँ तुम्हारे मन मै आवे जितनी ले लेना".

"ला चुके, ला चुके लाने की यही सूरत है?" हरगोविंद नें बात उड़ानें के वास्ते कहा.

"क्यों ? मेरी सूरत को क्या हुआ ? मैं अभी टोपियाँ लाकर तुम्हारे सामने रख देता हूँ". हरकिशोर नें हिम्मत से जवाब दिया।

"तुम टोपियें क्या लाओगे ? तुम्हारी सूरत पर खिसियानपन अभी से छा गया !" हरगोविंद नें मुस्करा कर कहा.

"मुझको नही मालूम था कि मेरी सूरत मैं दर्पण की खासियत है" हरकिशोर ने हँसकर जवाब दिया

"चलो चुप रहो क्यों थोथी बातें बनाते हो ?" मुंशी चुन्नीलाल रोकनें के वास्तै भरम मैं बोले.

"बहुत अच्छा ! अब मै टोपी लाये पीछे ही बात करूँगा" यह कह कर हरकिशोर वहाँ से चल दिये.

"यहाँ के दुकानदारों मे यह बडा ऐब है कि जलन के मारे दूसरे के माल को बारह आने का जाच देते है" मुंशी चुन्नीलाल ने कहा.

"और किसी समय मुकाबला आ पड़े तो अपनी गिरह से घाटा भी दे बैठते हैं" मास्टर शिंभूदयाल बोले

"न जानें लोगों को अपनी नाक कटा कर औरों की बदशगूनी करने मैं क्या मज़ा आता है" हकीम जी ने कहा.

"और जो हरगोविंद कुछ ठगा आया होगा तो क्या मै इन्के पीछे उस्का मन बिगाडूँगा" लाला मदनमोहन बोले.

"आप की ये ही बातें तो लोगों को बेदाम गुलाम बना लेती हैं" मुंशी चुन्नीलाल नें कहा.

"कुछ दिन से यहाँ ग्वालियर के दो गवैये निहायत अच्छे आए हैं मरज़ी हो दो घड़ी के वास्तै आज की मजलिस मैं उन्हें बुला लिया जाय" हरकिसन दलाल नें पूछा.

"अच्छा ! बुला लो तुम्हारी पसद हैं तो ज़रूर अच्छे होंगे" मदनमोहन नें कहा.

"लखनऊ की अमीरजान भी इन दिनों यही है इसके गाने की बडी तारीफ सुनी गई है पर मैने अपने कान सै अब तक उसका गाना नहीं सुना" हकीम जी बोले.

"अच्छा ! आपके सुन्ने को हम उसे भी यहाँ बुलाये लेते है पर उसके गाने मै समा न बधा तो उसके बदले आपको गाना पड़ेगा !" लाला मदनमोहन ने हँस कर कहा.

"सच तो ये है कि आपके सबब सै दिल्ली की बात बन रही है जो गुणी यहाँ आता है कुछ न कुछ जरूर ले जाता है आप न होते तो उन बिचारों को यहाँ कौन पूछता ? आपकी इस उदारता सै आप का नाम बिक्रम और हातम की तरह दूर, दूर तक फैल गया है और बहुत लोग आप के दर्शनों की अभिलाषा रखते हैं" मुशी चुन्नीलाल नें छींटा दिया.

इतने मै हरकिशोर टोपी लेकर आ पहुँचे और बारह, बारह रुपे मै खुशी सै देनें लगे.

"सच कहो तुमने इसमैं अपनी गिरह का पलोथन क्या लगाया है ?" शिभूदयाल नें पूछा.

"पलोथन लगाने की क्या जरूरत थी मै तो इसमैं लाला साहब सै कुछ इनाम लिया चाहता हू" हरकिशोर ने जवाब दिया.

"मुझको टोपिये लेनी होती तो मै किसी न किसी तरह सै आप ही तुम्हारा घाटा निकालता पर मै तो अपनी जरूरत के लायक पहले ले चुका" लाला मदनमोहन ने रुखाई सै कहा.

"आपको इन्की कीमत मै कुछ सदेह हो तो मै असल मालिक को रोबरू कर सक्ता हूँ ?"

"जिस गाँव नहीं जाना उसका रस्ता पूछना क्या जरूर"

"तो मै इन्हैं ले जाउँ ?"

"मैंने मगाई कब थी जो मुझसै पूछते हो" यह कह कर लाला मदनमोहन नें कुछ ऐसी त्योरी बदली कि हरकिशोर का दिल खट्टा हो गया और लोग तरह, तरह की नकलें करके उस्का ठट्ठा उडाने लगे.

हरकिशोर उस्समय वहाँ सै उठ कर सीधा अपने घर चला गया पर उस्के मन मै इन् बातों का बडा खेद रहा.

प्रकरण ४

मित्र-मिलाप

दूरहिसो कर बढ़ाय, नयननते जल बहाय,
आदर सों ढिग बुलाय अर्धासन देत सो।
हित सों हिय मै लगाय, रुचि सम बाणी बनाय,
कहत सुनत अति सुभाय, आनंद भरि लेत जो।
ऊपर सों मधु समान, भीतर हलाहल जान,
छल मैं पंडित महान, कपटको निकेत वो।
ऐसो नाटक विचित्र, देख्यो ना कबहु मित्र,
दुष्टन कों यह चरित्र, सिखवे को हेत को? *

हितोपदेश.

---

* दूरा दुश्छितपाणिरार्द्रनयनः प्रात्सारितार्द्धासनो।
गाढालिङ्गनतत्परः प्रियकथाप्रश्नेषु दत्तादरः॥
अन्तर्भूतविषो बहिर्मधुमयश्चातीव मायापटुः।
कोनामायमपूर्वनाटकविधिर्यः शिक्षितोदुर्जनैः॥१॥

लाला मदनमोहन को हरदयाल सै मिलनें की लालसा मैं दिन पूरा करना कठिन हो गया वह घड़ी, घडी घटे की तरफ़ देखते थे और उखताते थे. जब ठीक चार बजे अपने मकान सै सवार होकर मिस्तरीखानें मै पहुँचे यहाँ तीन बग्गियें लाला मदनमोहन की फ़र्मायश सै नई चाल की बन रही थीं उन्के लिये बहुत सा सामान बलायत सै मँगाया गया था और मुबई के दो कारीगरों की राह सै वह बनाई जाती थीं. लाला मदनमोहन नें कह रक्खा था "कि चीज अच्छी बने खर्च की कुछ नहीं अटकी जो होगा हम करेंगे" निदान लाला मदनमोहन इन बग्गियों को देख भाल कर वहाँ सै आगा हसन जान के तबेले मै गये और वहाँ तीन घोड़े पाँच हजार, पाँच सो रुपे मै लेनें करके वहाँ सै सीधे अपनें बाग़ 'दिलपसद' को चले गये.

यह बाग सब्ज़ी मडी सै आगै बढ़ कर नहर की पटड़ी के किनारे पर था इस्की रविशों के दोनों तरफ रेखिया की क़तार, सुहावनी क्यारियों मै रंग, रग के फूलों की बहार, कहीं हरी, हरी घास का सुहावना फर्श, कहीं घनघोर वृक्षों की गहरी छाया, कहीं बनावट के झरनें, और बेट, कहीं पेड़ और टट्टियों पर बेलों की लपेट एक तरफ को चिडियाखाने मै तरह, तरह के पक्षी चहचहा रहे थे दूसरी तरफ को सगमरमर के एक कुड मैं तरह, तरह के जलचर अपना रंग ढग दिखा रहे थे बाग के बीच मै एक बडा कमरा हवादार बहुत अच्छा बना हुआ था उस्के चारों तरफ सगमरमर का साईवान और साईवान के गिर्द फव्वारों की क़तार लगी थी जिस समय ये फव्वारे छूटते थे जेठ बैसाख को सावन भादों समझकर मोर नाच उठते थे बीच के कमरे मै रेशमी गलीचे को बड़ी उम्दा बिछायत थी और बढिया साठन की मढी हुई सुनहरी कौच, कुर्सियें जगह, जगह मौके सै रक्खी थीं. दीवार के सहारे सगमरमर की मेज़ों पर बड़े, बड़े आठ काच आम्नें साम्ने लगे हुए थे. छत मै बहुमूल्य झाड लटक रहे थे. गोल, बैज़ई और चोखूँटी मेज़ों पर फूलों के गुलदस्ते, हाथी

दात, चदन, आबनूस, चीनी, सीप और काच वग़ैरे के उम्दा उम्दा खिलोनें मिसल सै रक्खे थे, चादी की रकेबियों मैं इलायची, सुपारी चुनी हुई थी . समय, तारीख, वार, महीना बताने की घड़ी, हारमोनियम बाजा, अटा खेलनें की मेज़, अलबम्, सैरबीन, सितार और शतरज वगैरे मन बहलानें का सब सामान अपने, अपनें ठिकाने पर रक्खा हुआ था . दीवारों पर गच के फूल पत्तों का सादा काम अबरख की चमक सै चादी के डले की तरह चमक रहा था और इसी मकान के लिये हजारों रुपे का सामान हर महीनें नया खरीदा जाता था .

इस्समय लाला मदनमोहन को कमरे मैं पाव रखते ही विचार आया कि इस्के दरवाज़ो पर बढ़िया साठन के पर्दे अवश्य होने चाहियें उसी समय हरकिशोर के नाम हुक्म गया कि तरह, तरह की बढिया साठन लेकर अभी चले आओ . हरकिशोर (नें) समझा कि "अब पिछली बातों के याद आनें सै अपनें जी मै कुछ लज्जित हुए होंगे चलो सबेरे का भूला साँझ को घर आ जाय तो भूला नहीं बाजता" यह विचार कर हरकिशोर साठन इकट्ठी करनें लगा पर यहाँ इन्बातों की चर्चा भी न थी . यहाँ तो लाला मदनमोहन को लाला हरदयाल की लौ लग रही थी . निदान रोशनी हुए पीछै बड़ी देर बाट दिखाकर लाला हरदयाल आए उन्को देखकर मदनमोहन की खुशी की कुछ हद नहीं रही बग्गी के आने की आवाज़ सुन्ते ही लाला मदनमोहन बाहर जाकर उन्को लिवा लाए और दोनों कौच पर बैठकर बड़ी प्रीति सै बातें करनें लगे .

"मित्र ! तुम बड़े निठुर हो मै इतनें दिन सै तुम्हारी मोहनी मूर्ति देखनें के लिए तरस रहा हूँ पर तुम याद भी नहीं करते" लाला मदनमोहन नें सच्चे मन सै कहा .

"मुझको एक पल आपके बिना कल नही पड़ती पर क्या करूँ ? चुगलखोरों के हाथ सै तग हूँ जब कोई बहाना निकाल कर आनें का उपाय करता हूँ वे लोग तत्काल जाकर लाला जी (अर्थात् पिता) सै

कह देते हैं और लाला जी खुलकर तो कुछ नहीं कहते पर बातों ही बातों मै ऐसा झँझोडते हैं कि जी जलकर राख हो जाता है आज तो मैने उन्सै भी साफ कह दिया कि आप राज़ी हों, या नाराज़ हों मुझसै लाला मदनमोहन की दोस्ती नहीं छूट सक्ती" लाला हरदयाल नें यह बात ऐसी गर्मा गर्मी सै कही कि लाला मदनमोहन के मन पर लकीर हो गई पर यह सब बनावट थी उस्नें ऐसी बातें बना, बना कर लाला मदनमोहन सै "तोफा तहायफ़" मैं बहुत कुछ फायदा उठाया था इसलिये इस सोने की चिडिया को जाल मै फसाने के लिये भीतर पेटे सब घर के शामिल थे और मदनमोहन के मन मै मिलनें की चाह बढानें के लिये उसने अब की बार आनें मैं जान बूझ कर देर की थी .

"भाई ! लोग तो मुझे भी बहुत बहकाते हैं कोई कहता है "ये रुपे के दोस्त हैं" कोई कहता है "ये मतलब के दोस्त हैं" पर मैं उन्को ज़रा भी मुँह नहीं लगाता क्योंकि मुझको ओथेलो की बरबादी का हाल अच्छी तरह मालूम है" लाला मदनमोहन ने साफ मन सै कहा पर हरदयाल के पापी मन को इतनी ही बात सै खटका हो गया .

'दुनिया के लोगों का ढग सदा अनोखा देखने मै आता है उन्मैं सै कोई अपना मतलब इशारात और कहावतों के द्वारा कह जाता है, कोई अपना भाव दिल्लगी और हँसी की बातों मैं जता जाता है, कोई अपना प्रयोजन औरों पर रख कर सुना जाता है, कोई अपना आशय जता कर फिर पलट जानें का पहलू बनायें रखता है, पर मुझको ये बातें नहीं आतीं मैं तो सच्चा आदमी हूँ जो मन मैं होती है वह ज़बान सै कहता हू जो ज़बान सै कहता हू वह पूरी करता हूँ " लाला हरदयाल नें भरमा भरमी अपना संदेह प्रगट करके अंत मै अपनी सचाई जताई .

"तो क्या आप को इस्समय यह सदेह हुआ कि मैंने बहकानें वालों पर रख कर अपनी तरफ़ सै आपको "रुपे का दोस्त" और "मतलब का

दोस्त" ठैराया है ?" लाला मदनमोहन गिडगिडा कर कहनें लगे "हाय ! आपनें मुझको अब तक नहीं पहचाना मै अपनें प्राण सै अधिक आपको सदा समझता रहा हूँ इस ससार मैं आप सै बढकर मेरा कोई मित्र नही है जिस्पर आपको मेरी तरफ सै अब तक इतना सदेह बन रहा है मुझको आप इतना नादान समझते हैं . क्या मै अपने मित्र और शत्रु को भी नहीं पहचान्ता ? क्या आप सै अधिक मुझको ससार मै कोई मनुष्य प्यारा है ? मै अपना कलेजा चीर कर दिखाऊँ तो आपको मालूम हो कि आप की प्रीति मेरे हृदय मै कैसी अकित हो रही है !"

"आप वृथा खेद करते हैं मै आप की सच्ची प्रीति को अच्छी तरह जान्ता हू और मुझको भी इस ससार मै आप सै बढकर कोई प्यारा नहीं है, मैने दुनिया का यह ढग केवल चालाक आदमियों की चालाकी जतानें के लिए आप सै कहा था आप वृथा अपने ऊपर ले दोड़े मुझको तो आपकी प्रीति का यहाँ तक विश्वास है कि सूर्य चद्रमा की चाल बदल जायगी तो भी आपकी प्रीति मैं कभी अंतर न आयगा" लाला हरदयाल नें मदनमोहन के गले मै हाथ डाल कर कहा .

"प्रीति के बराबर ससार मैं कौन्सा पदार्थ है ?" लाला मदनमोहन कहनें लगे "और सब तरह के सुख मनुष्य को द्रव्य सै मिल सक्ते हैं पर प्रीति का सुख सच्चे मित्र बिना किसी तरह नही मिल्ता जिस्ने संसार मैं जन्म लेकर प्रीति का रस नहीं लिया उस्का जन्म लेना वृथा है इसी तरह जो लोग प्रीति करके उस्पर दृढ़ नहीं रहते वह उस्के रस सै नावाकिफ़ हैं ."

"निस्सदेह ! प्रीति का सुख ऐसा ही अलौकिक है . ससार मैं जिन लोगों को भोजन के लिये अन्न और पहन्ने के लिये वस्त्र तक नहीं मिल्ता उन्को भी अपनें दुःख सुख के साथी प्राणोपम मित्र के आगे अपना दुःख रोकर छाती का बोझ हल्का करनें पर, अपनें दुःखों को सुन सुन कर उस्के जी भर आनें पर, उस्के धैर्य देने पर, उस्के हाथ सै

अपनी डबडबाई हुई आँखों के आँसू पुछ जानें पर, जो संतोष होता है वह किसी बड़े राजा को लाखों रुपे खर्च करनें सै भी नहीं हो सक्ता" लाला हरदयाल नें कहा.

"निस्सदेह! मित्रता ऐसी ही चीज़ है पर जो लोग प्रीति का सुख नहीं जान्ते वह किसी तरह इस्का भेद नहीं समझ सक्ते" लाला मदनमोहन कहनें लगे.

"दुनियाँ के लोग बहुत करके रुपे के नफे नुक्सान पर प्रीति का आधार समझते हैं आज हरगोविंद नें लखनऊ की चार टोपियाँ मुझको अठारह रुपे मैं ला दी थीं इस्पर हरकिशोर जल गये और मेरी प्रीति बढानें के लिये बारह, बारह रुपे मैं वैसी ही टोपियाँ मुझको देनें लगे इन्के निकट प्रीति और मित्रता कोई ऐसी चीज़ है जो दस पाँच रुपे की कसर खाने सै बातों मै हाथ आ सक्ती है!"

"हरकिशोर ने हरगोविंद की तरफ सै आपका मन उछाटनें के लिए यह तद्बीर की हो तो भी कुछ आश्चर्य नहीं." हरदयाल बोले "मै जान्ता हूँ कि हरकिशोर एक बडा—"

इतनें मै एकाएक कमरे का दरवाजा खुला और हरकिशोर भीतर दाखल हुआ उसको देखते ही हरदयाल की जबान बद हो गई और दोनों नें लजाकर सिर झुका लिया.

"पहलै आप अपनें शुभचिन्तकों के लिये सजा तजवीज कर लीजिये फिर मैं साठन मुलाहज़ै कराऊँगा ऐसे वाहियात कामों के वास्ते इस ज़रूरी काम मै हर्ज करना मुनासिब नहीं. हाँ लाला हरदयाल साहब क्या फ़रमा रहे थे "हरकिशोर एक बडा—" क्या है!" हरकिशोर नें कमरे मैं पाँव रखते ही कहा

"चल्लो दिल्लगी की बातैं रहने दो लाओ, दिखलाओ तुम कैसी साठन लाए हो? हम अपनी निज की सलाह के वास्ते औरों का काम हर्ज नहीं किया चाहते" लाला हरदयाल नें पहली बात उड़ा कर कहा.

"मै और नहीं हूँ पर अब आप चाहे जो बना दें मुझको अपना माल दिखानें मैं कोई उज्र नहीं पर इतना बिचार है कि आज कल सच्चे माल की निस्बत नकली या झूटे माल पर ज्यादः चमक दमक मालूम होती है, मोतियों को देखिये चाहे मणियों को देखिये, कपडों को देखिये चाहे गोटे किनारी को देखिये जो सफ़ाई झूटे पर होगी सच्चे पर हरगिज़ न होगी इसलिये मैं डरता हूँ कि शायद मेरा माल पसंद न आय" हरकिशोर नें मुस्करा कर कहा .

"तुम कपडा दिखाने आए हो या बातों की दुकानदारी लगानें आए हो ! जो कपडा दिखाना हो तो झटपट दिखा दो नहीं तो अपना रस्ता लो हमको थोथी बातों के लिये इस्समय अवकाश नहीं है" लाला मदनमोहन नें भौं चढ़ा कर कहा .

"यह तो मैंने पहले ही कहा था अच्छा ! अब मैं जाता हूँ फिर किसी वक्त हाज़िर होऊँगा ."

"तो तुम कल नो, दस बजे मकान पर आना" यह कह कर लाला मदनमोहन नें उसै रुखसत किया .

"आपस मैं क्या मज़े की बातें हो रही थीं न जानें यह हत्या बीच मै कहाँ सै आ गई" लाला हरदयाल बोले .

"ख़ैर अब कुछ दिल्लगी की बात छेडिये !" लाला मदनमोहन ने फ़रमायश की . निदान बहुत देर तक अच्छी तरह मिल भेट कर लाला हरदयाल अपनें मकान को गए और लाला मदनमोहन अपने मकान को गए ।

*

प्रकरण ५.

विषयासक्त

इच्छा फल के लाभ सों कबहुँ न पूरहि आश।
जैसे पावक घृत मिले बहु बिधि करत प्रकाश ॥*
(हरिवंश)

लाला मदनमोहन बाग़ से आए पीछे ब्यालू करके अपने कमरे में आए उस्समय लाला ब्रजकिशोर, मुशी चुन्नीलाल, मास्टर शिंभूदयाल, बाबू बैजनाथ, पंडित पुरुषोत्तम दास, हकीम अहमद हुसैन वग़ैरे सब दरबारी लोग मौजूद थे. लाला साहब के आते ही ग्वालियर के गवैयों का गाना होने लगा.

"मैं जान्ता हूँ कि आप इस निर्दोष दिल्लगी को तो अवश्य पसंद करते होंगे देखिये इस्से दिन भर की थकान उतर जाती है और चित्त प्रसन्न हो जाता है" लाला मदनमोहन नें थोड़ी देर पीछे लाला ब्रजकिशोर से कहा.

"सब बातें काम के पीछे अच्छी लगती हैं जो सब तरह का प्रबध बध रहा हो, काम के उसूलों पर दृष्टि हो, भले बुरे काम और भले बुरे आदमियों की पहचान हो, तो अपना काम किये पीछे घडी, दो घडी की दिल्लगी मैं कुछ बिगाड़ नहीं है पर उस्समय भी इस्का व्यसन न होना चाहिये" लाला ब्रजकिशोर नें जवाब दिया.

"अमीरों को ऐश के सिवाय और क्या काम है!" मास्टर शिंभूदयाल नें कहा.

---

* नजातु कामः कामानामुपभोगेन शाम्यति।
हविषा कृष्णवर्त्मैव भूय एवाभिवर्द्धते ॥

"राजनीति मैं कहा है

"राजा सुख भोगहि सदा मत्री करहि सम्हार ।
राजकाज बिगरे कछू तो मत्री सिर भार ॥"*

पडित पुरुषोत्तम दास बोले.

"हाँ यहाँ के अमीरों का ढग तो यही है पर यह ढग दुनियाँ से निराला है जो बात सब ससार के लिए अनुचित गिनी जाती है वही उन्के लिए उचित समझी जाती है ! उन्की एक, एक बात पर सुन्नेवाले लोट-पोट हो जाते हैं ! उन्की कोई बात हिकमत से खाली नहीं ठैरती ! जिन बातों को सब लोग बुरी जान्ते हैं, जिन बातों के करने मैं कमीने भी लजाते हैं, जिन बातों के प्रगट होने से बदचलन भी शर्माते हैं उन्का करना यहाँ के धनवानों के लिए कुछ अनुचित नहीं है ! इन लोगों को न किसी काम के प्रारभ की चिंता होती है ! न किसी काम के परिणाम का बिचार होता है ! यहाँ के धनपति तो अपनें को लक्ष्मीपति समझते है परतु ईश्वर के हाँ का यह नियम नहीं है उस्नें अपनी सृष्टि मै सब गरीब अमीरों को एक सा बनाया है" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे "जो मनुष्य ईश्वर का नियम तोडेगा उस्को अपने पाप का अवश्य दड मिलैगा . जो लोग सुख भोग मैं पडकर अपने शरीर या मन को कुछ परिश्रम नही देते प्रथम तो असावधान्ता के कारण उन्का वह वैभव ही नहीं रहता और रहा भी तो कुदरती कायदे के मूजिब उन्का शरीर और मन क्रम से दुर्बल होकर किसी काम का नहीं रहता . पाचन शक्ति के घटनें से तरह तरह के रोग उत्पन्न होते हैं और मानसिक शक्ति के घटनें से चित्त की बिकलता, बुद्धि की अस्थिरता और काम करने की अरुचि उत्पन्न हो जाती है जिस्से थोडे दिन मैं संसार दुःख रूप मालूम होने लगता है .

---

* भोगस्य भाजन राजा मन्त्री कार्य्यस्य भाजनम् ।
राजकार्य्यपरिध्वसी मत्री दोषेण लिप्यते ॥

"परंतु अत्यत महनत करनें सै भी तो शिथिलता हो जाती है" बाबू बैजनाथ नें कहा .

"इस्सै यह बात नहीं निकल्ती कि बिलकुल महंनत न करो सब काम अदाज सिर करने चाहिये" लाला ब्रजकिशोर कहने लगे "लिडिया का बादशाह कारून साईरस सै हार उस्समय साईरस उस्की प्रजा को दास बनाने लगा तब क़ारून ने कहा "हमको दास किसलिये बनाते हो ? हमारे नाश करने का सीधा उपाय यह है कि हमारे शस्त्र ले लो, हमको उत्तमोत्तम वस्त्र भूषण पहनने दो, नाच रग देखने दो, शृगार रस का अनुभव करने दो, फिर थोड़े दिन मैं देखोगे कि हमारे शूर वीर अबला बन जायँगे और सर्वथा तुमसै युद्ध न कर सकेंगे" निदान ऐसा ही हुआ . पृथ्वीराज का सयोगता सै विवाह हुए पीछै वह इसी सुख मैं लिपटकर हिंदुस्थान का राज खो बैठा और मुसल्मानों का राज भी अत मै इसी भोग विलास के कारण नष्ट हुआ ."

"आप तो जिस्बात को कहते हैं हद्द के दरजे पर पहुँचा देते हैं, भला ! पृथ्वीराज और मुसल्मानों की बादशाहत का लाला साहब के काम काज सै क्या सबध है ? उन्का द्रव्य बहुत करके अपनें भोग विलास मैं खर्च होता था परतु लाला साहब का तो परोपकार मै होता है" मास्टर शिंभूदयाल नें कहा .

"देखिये लाला साहब का मन पहले नाच तमाशे मैं बिल्कुल नही लगता था पर इन्होंनें चार मित्रों का मेल मिलाप बढ़ाने के लिये अपना मन रोक कर उन्की प्रसन्नता की" . पंडित पुरुषोत्तम दास बोले .

"बुरे कामों के प्रसंग मात्र सै मनुष्य के मन मै पाप की ग्लानि घटती जाती है पहले लाला साहब को नाच रग अच्छा नहीं लगता था पर अब देखते, देखते व्यसन हो गया फिर जिन् लोगों की सोहबत सै यह व्यसन हुआ उन्को मैं लाला साहब का मित्र कैसे समझूँ ? मित्रता का काम करे

वह मित्र समझा जाता है अपनें मतलब के लिए लंबी लंबी बातें बनानें से कोई मित्र नहीं हो सक्ता" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे. सादी नें कहा है .

"एक दिवस मैं मनुज की विद्या जानी जाय !
पै न भूल, मन को कपट बरसन लग न लखाय ॥"*

"तो क्या आप इन् सब को स्वार्थपर ठैरा कर इन्का अपमान करते हैं !" लाला मदनमोहन नें जरा तेज होकर कहा.

"नहीं, मैं सबको एक सा नहीं ठैराता परंतु परीक्षा हुए बिना किसी को सच्चा मित्र भी नहीं कह सक्ता" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे . "केलीप्स नामी एक एथीनियन से साइराक्यूस के बादशाह डिओन की बडी मित्रता थी . डिओन बहुधा केलीप्स के मकान पर जाकर महीनों रहा करता था एक बार डिओन को मालूम हुआ कि केलीप्स उसका राज छीन्ने के लिये कुछ उद्योग कर रहा है. डिओन ने केलीप्स से इस्का वृत्तांत पूछा तब वह डिओन के पाव पकड़ कर रोनें लगा और देवमंदिर मैं जाकर अपनी सच्ची मित्रता के लिए कठिन से कठिन सौगंध खा गया पर असल मैं यह बात झूटी न थी अंत मैं केलीप्स नें साइराक्यूस पर चढाई की और डिओन को महल ही मैं मरवा डाला ! इसलिए मैं कहता हूँ कि दूसरे की बातों मैं आकर अपना कर्तव्य भूलना बडी भूल की बात है" .

"अच्छा ! फिर आप खुलकर क्यों नहीं कहते आपके निकट लाला साहब को बहकाने वाला कौन, कौन है ?" पंडित जी नें जुगत से पूछा .

"मैं यह नहीं कह सक्ता जो बहकाते होंगे, अपने जी मैं आप समझते होंगे मुझको लाला साहब के फायदे से काम है और लोगों के जी दुखाने से कुछ काम नहीं है . मनुस्मृति मैं कहा है—

---

* तवा शनाख्त बयकरोज़ दर शमायल मरद
किता कुजाश रसीदस्त पायगाह उलूम ।
वले ज़ बातिनश ए मन मवाशो गर्रा मशो
के खुन्स नफ्स नगदर्द बसालहा मालूम ।

सत्य कहहु अरु प्रिय कहहु अप्रिय सत्य न भाख।
प्रियहु असत्य न बोलिये धर्म सनातन राख॥" *

"इसलिए मैं इस्समय इतना ही कहना उचित समझता हूँ" लाला जकिशोर नें जवाब दिया.

और इस्पर थोडी देर सब चुप रहे.

प्रकरण ६.

भले बुरे की पहचान.

धर्म्म, अर्थ शुभ कहत कोउ काम, अर्थ कहि आन।
कहत धर्म्म कोउ अर्थ कोउ, तीनहुँ मिल शुभ जान॥†
(मनुस्मृति)

"आप के कहने मूजब किसी आदमी की बातों सै उस्का स्वभाव हीं जाना जाता फिर उस्का स्वभाव पहचान्नें के लिये क्या उपाय करैं?" ाला मदनमोहन ने तर्क की.

"उपाय करनें की कुछ जरूरत नहीं है, समय पाकर सब भेद अपनें ाप खुल जाता है" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे "मनुष्य के मन मै श्वर ने अनेक प्रकार की वृत्ति उत्पन्न की है जिन्मैं परोपकार की इच्छा,

---

* सत्य ब्रूयात् प्रियं ब्रूयान् न ब्रयात् सत्यमप्रियम्।
प्रियं च नानृतं ब्रूयादेषधर्मस्सनातनः॥

† धर्म्मार्थावुच्यते श्रेयः कामार्थौ धर्म एव च।
अर्थ एवेह वा श्रेयस्त्रिवर्ग इति तु स्थितिः॥

भक्ति और न्यायपरता धर्मप्रवृत्ति मैं गिनी जाती हैं, दृष्टांत और अनुमानादि के द्वारा उचित अनुचित कामों की विवेचना, पदार्थ ज्ञान, और विचार शक्ति का नाम बुद्धि वृत्ति है . बिना बिचारे अनेक बार के देखने, सुन्नें आदि सै जिस काम मै मन की प्रवृत्ति हो, उसै आनुसगिक प्रवृत्ति कहते हैं काम, संतान-स्नेह, सग्रह करनें की लालसा, जिघासा और आत्मसुख की अभिरुचि इत्यादि निकृष्ट प्रवृत्ति मैं शामिल हैं और इन सब के अविरोध सै जो काम किया जाय वह ईश्वर के नियमानुसार समझा जाता है परंतु किसी काम मै दो बृत्तियों का विरोध किसी तरह न मिट सके तो वहाँ जरूरत के लायक आनुसगिक प्रवृत्ति और निकृष्ट प्रवृत्ति को धर्म्मप्रवृत्ति सै दबा देना चाहिये जैसे श्री रामचंद्र जी ने राज पाट छोड़ कर बन मैं जाने सै धर्मप्रवृत्ति को उत्तेजित किया था."

"यह तो सवाल और जवाब और हुआ मैनें आपसै मनुष्य का स्वभाव पहिचान्ने की राह पूछी थी आप बीच मैं मन की बृत्तियों का हाल कहनें लगे" लाला मदनमोहन ने कहा .

"इसी सै आगे चलकर मनुष्य के स्वभाव पहचान्नें की रीति मालूम होगी—"

"पर आप तो काम, सतान-स्नेह आदि के अविरोध सै भक्ति और परोपकारादि करने के लिये कहते हैं और शास्त्रों मै काम, क्रोध, लोभ मोहादिक की बारबार निंदा की है फिर आप का कहना ईश्वर के नियमानुसार कैसे हो सक्ता है ?" पडित पुरुषोत्तम दास बीच मै बोल उठे .

"मै पहले कह चुका हूँ कि धर्म्मप्रवृत्ति और निकृष्ट प्रवृत्ति मैं विरोध हो वहाँ जरूरत के लायक धर्म्मप्रवृत्ति को प्रबल मान्ना चाहिये परतु धर्म्मप्रवृत्ति और बुद्धि प्रवृत्ति का बचाव किये पीछै भी निकृष्ट प्रवृत्ति का त्याग किया जायगा तो ईश्वर की यह रचना सर्वथा निरर्थक ठैरेगी पर ईश्वर का कोई काम निरर्थक नहीं है मनुष्य निकृष्ट प्रवृत्ति के बस होकर धर्म्म प्रवृत्ति और बुद्धि वृत्ति की रोक नहीं मान्ता इसी सै शास्त्र मैं

बारंबार उस्का निषेध किया है परतु धर्म्मप्रवृत्ति और बुद्धि को मुख्य मानें पीछै उचित रीति सै निकृष्ट प्रवृत्ति का आचरण किया जाय तो गृहस्थ के लिए दूषित नही हो सक्ता हाँ उस्का नियम उल्लघन कर किसी एक वृत्ति को प्रबलता सै और और वृत्तियों के विपरीत आचरण कर कोई दुःख पावै तो इस्मै किसी का बस नहीं . सब सै मुख्य धर्म्मप्रवृत्ति है परतु उस्मैं भी जब तक और वृत्तियों के हक की रक्षा न की जायगी अनेक तरह के बिगाड होने की संभावना बनी रहैगी ."

"मुझको आप की यह बात बिल्कुल अनोखी मालूम होती है भला परोपकारादि शुभ कामों का परिणाम कैसे बुरा हो सक्ता है ?" पडित पुरुषोत्तम दास ने कहा .

"जैसे अन्न प्राणाधार है परतु अति भोजन सै रोग उत्पन्न होता है" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे "देखिये परोपकार की इच्छा ही अत्यत उपकारी है परतु हद्द सै आगे बढ़ने पर वह भी फिजूलखर्ची समझी जायगी और अपनें कुटुब परवारादि का सुख नष्ट हो जायगा जो आलसी अथवा अधर्मियों की सहायता की तो उस्सै ससार मै आलस्य और पाप की वृद्धि होगी इसी तरह कुपात्र मैं भक्ति होने सै लोक, परलोक दोनों नष्ट हो जायंगे . न्यायपरता यद्यपि सब वृत्तियों को समान रखने वाली है परंतु इस्की अधिकता सै भी मनुष्य के स्वभाव मै मिलनसारी नही रहती, क्षमा नहीं रहती . जब बुद्धि वृत्ति के कारण किसी वस्तु के विचार मै मन अत्यंत लग जायगा तो और जान्ने लायक पदार्थों की अज्ञानता बनी रहैगी मन को अत्यत परिश्रम होने सै वह निर्बल हो जायगा और शरीर का परिश्रम बिल्कुल न होने के कारण शरीर भी बलहीन हो जायगा . आनुसगिक प्रवृत्ति के प्रबल होनें सै जैसा सग होगा वैसा रग तुरत लग जाया करेगा . काम की प्रबलता सै समय, असमय और स्वस्त्री परस्त्री आदि का कुछ विचार न रहैगा . सतान-स्नेह की वृत्ति बढ़ गई तो उस्के लिये अार अधर्म्म करनें लगेगा, उस्को लाड, प्यार मै रखकर उस्के लिये जुदे

काटे बोयेगा . सग्रह करनें की लालसा प्रबल हुई तो जोरी सै, चोरी सै, छल सै, खुशामद सै, कमाने की डिव्या पड़ेगी और खाने, खर्चने के नाम सै जान निकल जायगी . जिघासा वृत्ति प्रबल हुई तो छोटी, छोटी सी बातों पर अथवा खाली संदेह पर ही दूसरों का सत्यानाश करने की इच्छा होगी और दूसरे को दंड देती बार आप दड योग्य बन जायगा . आत्मसुख की अभिरुचि हद सै आगै बढ गई तो मन को परिश्रम के कामों सै बचाने के लिये गानें बजाने की इच्छा होगी, अथवा तरह, तरह के खेल तमाशे, हंसी चुहलकी बाते, नशेबाजी, और खुशामद मैं मन लगैगा , द्रव्य के बल सै बिना धर्म किये धर्मात्मा बना चाहैंगे, दिन रात बनाव सिगार मै लगे रहैंगे . अपनी मानसिक उन्नति करनें के बदले उन्नति करनेवालो सै द्रोह करैंगे अपनी झूँटी जिद निबाहनें मै सब बडाई समझैंगे, अपने फायदे की बातों मैं औरों के हक़ का कुछ विचार न करैंगे, अपनें काम निकालने के समय आप खुशामदी बन जायँगे, द्रव्य की चाहना हुई तो उचित उपायों सै पैदा करने के बदले जुआ, बदनी, घरोहड, रसायन या घरी ढकी दोलत ढूँडते फिरैंगे—"

"आप तो फिर वोही मन की वृत्तियों का झगड़ा ले बैठे . मेरे सवाल का जवाब दीजिये या हार मानिये" लाला मदनमोहन उखता कर कहनें लगे .

"जब आप पूरी बात ही न सुनें तो मैं क्या जवाब दू ! मेरा मतलब इतने बिस्तार सै यह था कि सब वृत्तियों का संबध मिला कर अपना कर्तव्य कर्म निश्चय करना चाहिये किसी एक वृत्ति की प्रबलता सै और वृत्तियों का विचार न किया जायगा तो उस्में बहुत नुक्सान होगा" लाला ब्रज-किशोर कहनें लगे :—

"वाल्मीकि रामायण मैं भरत सै रामचंद्र नें और महाभारत मैं नारद मुनि नें राजा युधिष्ठिर सै ये प्रश्न किया है

"धर्महि धन, अर्थहि धरम, बाधक तो कहुँ नाहि ?
काम न करत बिगार कछु पुन इन दोउन माहिं ? १ "

"विदुरप्रजागर मैं विदुर जी राजा धृतराष्ट्र सै कहते हैं

"धर्म अर्थ अरु काम, यथा समय सेवत जु नर ॥
मिल तीनहुँ अभिराम, ताहि देत दुहुँ लोक सुख ॥२"

"विष्णुपुराण मैं कहा है

"धर्म बिचारै प्रथम पुनि अर्थ, धर्म अबिरोधि ।
धर्म अर्थ बाधा रहित सेवै काम सुसोधि ॥३"

"रघुवश मै अतिथि की प्रशसा करती बार महाकवि कालिदास ने कहा है

"निरी नीति कायरपनो, केवल बल पशुधर्म्म ।
तासो उभय मिलाय इन सिद्ध किये सब कर्म्म ॥ ४ ॥
हीन निकम्मे होत है बली उपद्रववान ।
तासो कीन्हें मित्र तिन मध्यम बल अनुमान ॥ ५ ॥

१—कच्चिदर्थेन वा धर्म धर्मेणार्थं मया पिवा ।
उभौ वा प्रीतिसारेण न कामेन प्रबाधसे ॥
२—यो धर्ममर्थं काम च यथा कालं निषेवते ।
धर्मार्थकामसयोग सो मुत्रेह च विन्दति ॥
३—विबुद्धश्चिन्तयेद्धर्ममर्थं चास्या विरोधिनम् ।
अपीडया तयोः काममुभयोरपि चिन्तयेत् ॥
४—कातर्य केवलानीतिः शौर्यंश्वापदचेष्टितम् ।
अतः सिद्धिसमेताभ्यामुभाभ्यामन्वियेष सः ॥
५—हीनान्यनुप कर्तृणि प्रबृद्धानि विकुर्वते ।
तेन मध्यमशक्तिनी मित्राणि स्थापितान्यतः ॥

"चाणक्य नें लिखा है—

"बहुत दान ते बलि बँध्यो मान मरो कुरुराज।
लंपटपन रावण हत्यो अति वर्जित सब काज॥"*

"फ्रीजिया के मशहूर हकीम एपिक्टेट्स की सब नीति इन दो वचनों मे समाई हुई है कि "धैर्य सै सहना" और "मयध्म भाव सै रहना" चाहिये."

"कुरान मै कहा है कि" अय (लोगों)! खाओ, पीओ परतु फिजूलखर्ची न करो" †

"वृंद कहता है

'कारज सोई सुघर है जो करिवे समझाय।
अति बरसे बरसे बिना जो खेती कुम्हलाय॥"

"अच्छा ससार मै किसी मनुष्य का इस रीति पर पूरा बरताव भी आज तक हुआ है?" बाबू बैजनाथ नें पूछा.

"क्यों नहीं देखिये' पाईसिस्ट्रेट्रस नामी एथीनियन का नाम इसी कारण इतिहास मैं चमक रहा है वह उदार होनें पर फिजूलखर्च न था और किसी के साथ उपकार करके प्रत्युपकार नहीं चाहता था बल्कि अपनी नामवरी की भी चाह न रखता था वह किसी दरिद्री के मरनें की खबर पाता तो उस्को क्रिया कर्म के लिए तत्काल अपने पास सै खर्च भेज देता. किसी दरिद्र को विपद्ग्रस्त देखता तो अपनें पास सै सहायता करके उस्के दुःख दूर करनें का उपाय करता पर कभी किसी मनुष्य को उस्की आवश्यकता सै अधिक देकर आलसी और निरुद्यमी नहीं होनें देता था. हाँ सब मनुष्यों की प्रकृति ऐसी नहीं हो सक्ती, बहुधा जिस मनुष्य के मन मै जो वृत्ति प्रबल होती है वह उस्को खींच खाँच कर अपनी ही राह पर ले जाती है जैसे एक मनुष्य को जगल मैं रुपों की

---

* अति दानाद् बलिबद्धो नष्टो मानात् सुयोधनः।
विनष्टो रावणो लौल्यादति सर्वत्र वर्जयेत्॥

† कुलू वश्रबू व ला तुस्रिफू।

थैली पड़ी पावै और उस्समय उस्के आस पास कोई न हो तब सग्रह करने की लालसा कहती है कि "इसै उठा लो" संतान स्नेह और आत्म-सुख की अभिरुचि सम्मति देती है कि "इस काम सै हमको भी सहायता मिलेगी" न्यायपरता कहती है कि "न अपनी प्रसन्नता सै यह किसी नें हमको दी न हमनें परिश्रम करके यह किसी सै पाई फिर इस्पर हमारा क्या हक है? और इस्का लेना चोरी सै क्या कम है? इसै पर धन समझ कर छोड चलो" परोपकार की इच्छा कहती है कि "केवल इस्का छोड जाना उचित नहीं, जहाँ तक हो सके उचित रीति सै इस्को इस्के मालिक के पास पहुँचानें का उपाय करो" अब इन् वृत्तियों मैं सै जिस वृत्ति के अनुसार मनुष्य काम करे वह उसी मेल मैं गिना जाता है यदि धर्म प्रवृत्ति प्रबल रही तो वह मनुष्य अच्छा समझा जायगा और निकृष्ट प्रवृत्ति प्रबल रही तो वह मनुष्य नीच गिना जायगा, और इस रीति सै भले बुरे मनुष्यों की परीक्षा समय पाकर अपने आप हो जायगी बल्कि अपनी वृत्तियों को पहचान कर मनुष्य अपनी परीक्षा भी आप कर सकेगा. राज-पाट, धन-दौलत, विद्या, स्वरूप, वश, मर्यादा सै भले बुरे मनुष्य की परीक्षा नहीं हो सक्ती. बिदुर जी नें कहा है—

'उत्तम कुल आचार बिनकरे प्रमाण न कोइ।
कुलहीनो आचार युत लहे बडाई सोइ॥"*

---

* न कुलं वृत्तहीनस्य प्रमाणमिति मे मतिः।
अन्तेष्वपि हि जाताना वृत्तमेव विशिष्यते॥

प्रकरण ७

सावधानी (होशयारी)

सब भूतन तो तत्व लख कर्म योग पहिचान।
मनुजन के यलहि लखहि सो पडित गुणवान ॥*
(विदुर प्रजागरे)

"यहाँ तो आप अपनें कहने पर खुद ही पक्के न रहे. आपनें केलीप्स और डिओन का दृष्टात देकर यह बात साबित की थी कि किसी की जाहिरी बातों से उस्की परीक्षा नहीं हो सक्ती परतु अत में आपनें उसी के कामों सै उस्को पहचान्ने की राह बतलाई" बाबू बैजनाथ ने कहा.

"मैंने केलीप्स के दृष्टात में पिछले कामों सै पहली बातों का भेद खोलकर उस्का निज स्वभाव बता दिया था इसी तरह समय पाकर हर आदमी के कामों सै मन की वृत्तियों पर निगाह करकै उस्की भलाई बुराई पहचान्नें की राह बतलाई तो इस्सै पहली बातों सै क्या विरोध हुआ?" लाला ब्रजकिशोर पूछने लगे.

"अच्छा! जब आपके निकट मनुष्य की परीक्षा बहुत दिनों में उस्के कामों सै हो सक्ती है तो पहले कैसा बरताव रक्खै? क्या उस्की परीक्षा न हो जब तक उस्को अपनें पास न आने दे?" लाला मदनमोहन ने पूछा.

"नहीं, केवल सदेह सै किसी को बुरा समझना, अथवा किसी का अपमान करना सर्वथा अनुचित है परतु किसी की झूटी बातों में आकर

---

* तत्वज्ञः सर्वभूतानां योगज्ञः सर्वकर्मणाम्।
उपायज्ञो मनुष्याणां नरः पडित उच्यते ॥

ठगा जाना भी मूर्खता सै खाली नहीं" . लाला ब्रजकिशोर कहने लगे "महाभारत मैं कहा है—

मन न भरे पतियाहु जिन, पतियायेहु अति नाहि ।
भेदी सो भय होत ही, जर उखरे छिन माहि ॥"*

इस्कारण जब तक मनुष्य की परीक्षा न हो साधारण बातों मैं उन्के जाहिरी बरताव पर दृष्टि रखनी चाहिये परंतु जोखों के काम मैं उस्सै सावधान रहना चाहिये उस्का दोष प्रगट होनें पर उस्को छोड़नें मैं सकोच न हो इसलिए अपना भेदी बनाकर, उस्का अहसान उठाकर, अथवा किसी तरह की लिखावट और ज़बान सै उस्कै बसवर्ती होकर अपनी स्वतन्त्रता न खोवै यद्यपि किसी, किसी के बिचार मैं छल, बल की प्रतिज्ञाओं का निबाहना आवश्यक नहीं है परंतु प्रतिज्ञा भंग करनें की अपेक्षा पहले बिचार कर प्रतिज्ञा करना हर भात अच्छा है."

"ऐसी सावधानी तो केवल आप लोगों ही सै हो सक्ती है जो दिन रात इन्ही बातों के चारा बिचार मैं लगे रहैं" लाला मदनमोहन ने हसकर कहा .

"मैं ऐसा सावधान नही हूँ परतु हर काम के लिये सावधानी की बहुत ज़रूरत है" लाला ब्रजकिशोर कहने लगे "मैं अभी मन की बृत्तियों का हाल कह कर अच्छे बुरे मनुष्यों की पहचान बता चुका हूँ परतु उनमैं सै धर्म प्रवृत्ति की प्रबलता रखनें वाले अच्छे आदमी भी सावधानी बिना किसी काम के नहीं है क्योंकि वे बुरी बातों को अच्छा समझकर धोका खा जाते हैं. आप ने सुना होगा कि हीरा और कोयला दोनों कार्बोन हैं और उन्के बन्ने की रसायनिक क्रिया भी एक सी है दोनों मैं कार्बोन रहता है केवल इतना अतर है हीरे मैं निरा कार्बोन जमा रहता है और

---

* न विश्वसेदविश्वस्ते विश्वस्ते नाति विश्वसेत् ।
विश्वासाद् भयमुत्पन्न मूलान्यपि निकृन्तति ॥

कोयले में उस्की कोई खास सूरत नहीं होती; जो कार्बोन जमा हुआ, इद रहने से बहुत कठोर, स्वच्छ, स्वेत और चमकदार होकर हीरा कहलाता है वही कार्बोन परमाणुओं के फैल फुट और उलट पुलट होने के कारण काला, झिर्झिरा, बोदा और एक सूरत में रह कर कोयला कहलाता है ! ये ही भेद अच्छे मनुष्यों में और अच्छी प्रकृति वाले सावधान मनुष्यों में है कोयला बहुत सी ज़हरीली और दुर्गंधित हवाओं को सोख लेता है अपने पास की चीजों को गलने सडने की हानि से बचाता है . और आमोनिया इत्यादि के द्वारा बनस्पति को फ़ायदा पहुँचाता है इसी तरह अच्छे आदमी दुष्कर्मों से बचते हैं परतु सावधानी का योग मिले बिना हीरे की तरह कीमती नहीं हो सक्ते ."

"मुझे तो यह बातें मनः कल्पित मालूम होती हैं क्योंकि ससार के बरताव से इन्की कुछ विध नहीं मिल्ती ससार में धनवान कुपढ़, दरिद्री पडित, पापी सुखी, धर्मात्मा दुखी, असावधान अधिकारी, सावधान आज्ञाकारी, भी देखने मे आते हैं" मास्टर शिभूदयाल ने कहा .

"इस्के कई कारण हैं" लाला ब्रजकिशोर कहने लगे "मैं पहले कह चुका हूँ कि ईश्वर के नियमानुसार मनुष्य जिस विषय में भूल करता है बहुधा उस्को उसी विषय में दड मिल्ता है . जो विद्वान दरिद्री मालूम होते हैं वह अपनी विद्या मे निपुण हैं परंतु सासारिक व्यवहार नहीं जान्ते अथवा जान बूझ कर उस्के अनुसार नहीं बरतते . इसी तरह जो कुपढ़ धनवान दिखाई देते हैं वह विद्या नहीं पढ़े परतु द्रव्योपार्जन करनें और उस्के रक्षा करने की रीति जान्ते हैं । बहुधा धनवान रोगी होते हैं और ग़रीब नैरोग्य रहते हैं इस्का यह कारण है कि धनवान द्रव्योपार्जन करने की रीति जान्ते हैं परतु शरीर की रक्षा उचित रीति से नहीं करते और ग़रीबों की शरीर रक्षा उचित रीति से बन जाती है परतु वे धनवान होनें की रीति नहीं जान्ते . इसी तरह जहाँ जिस बात की कसर होती है वहाँ उसी चीज की कमी दिखाई देती है . परंतु

कहीं, कहीं प्रकृति के विपरीत पापी सुखी, धर्मात्मा दुखी, असावधान अधिकारी, सावधान आज्ञाकारी दिखाई देते हैं इस्के दो कारण हैं. एक यह कि ससार की बर्तमान दशा के साथ मनुष्य का बड़ा दृढ़ सबंध रहता है इसलिये कभी, कभी औरों के हेतु उस्का विपरीत भाव हो जाता है जैसे मा बाप के विरसे सै द्रव्य, अधिकार या ऋण रोगादि मिल्ते हैं, अथवा किसी और की धरी हुई दौलत किसी और के हाथ लग जानें सै वह उस्का मालिक बन बैठता है, अथवा किसी अमीर की उदारता सै कोई नालायक धनवान बन जाता है, अथवा किसी पास पडोसी की ग़फ़लत सै अपना सामान जल जाता है, अथवा किसी दयालु विद्वान के हितकारी उपदेशों सै कुपढ़ मनुष्य बिद्या का लाभ ले सक्ते हैं, अथवा किसी बलवान लुटेरे की लूट मार सै कोई गृहस्थ बेसबब धन और तदुरुस्ती खो बैठता है और ये सब बातें लोगों के हक मै अनायास होती रहती हैं इसलिये इनको सब लोग प्रारब्ध फल मान्ते हैं परंतु ऐसे प्रारब्धी लोगों मै जिस्को कोई वस्तु अनायास मिल गई पर उस्के स्थिर रखने के लिये उस्के लायक कोई वृत्ति अथवा सब वृत्तियों की सहायता स्वरूप सावधानी ईश्वर नें नही दी तो वह उस चीज को अंत मै अपनी स्वाभाविक वृत्तियों के बस होकर बहुधा खो बैठता है अथवा विपरीत वृत्तियों की प्रबलता सै वह वस्तु अधिक हुई तो उस्मै उन वृत्तियों का नुक्सान गुप्त रह कर समय पर ऐसे प्रगट होता है जैसे बचपन की बे मालूम चोट बड़ी अवस्था मैं शरीर को निर्बल पाकर अचानक कसक उठे, या शतरंज मैं किसी चाल की भूल का असर दस बीस चाल पीछै मालूम हो. पर ईश्वर की कृपा सै किसी को कोई वस्तु मिलती है तो उस्के साथ ही उस्के लायक बुद्धि भी मिल जाती है या ईश्वर की कृपा सै किसी क़ायम मुकाम (प्रतिनिधि) वगैरे की सहायता पाकर उस्के ठीक ठीक काम चलनें का बानक बन जाता है जिस्सै वह नियम निभे जाते हैं परंतु ईश्वर के नियम मनुष्य सै किसी तरह नहीं टूट सक्ते."

"मनुष्य क्या मै तो जान्ता हूँ ईश्वर से भी नहीं टूट सक्ते" बाबू बैजनाथ नें कहा .

"ऐसा बिचारना अनुचित है ईश्वर को सब सामर्थ्य है देखो प्रकृति का यह नियम सब जगह एक सा देखा जाता है कि गर्म होनें सै हरेक चीज फैलती है और ठडी होने सै सिमट जाती है यही नियम २१२ डिक्री तक जल के लिए भी है परतु जब जल बहुत ठंडा होकर ३२ डिक्री पर बर्फ बन्नें लगता है तो वह ठंड सै सिमटने के बदले फैलता जाता है और हल्का होने के कारण पानी के ऊपर तैरता रहता है इसमैं जल जतुओं की प्राण रक्षा के लिये यह साधारण नियम बदल दिया गया ऐसी ऐसी बातों सै उस्की अपरमित शक्ति का पूरा प्रमाण मिलता है, उसनें मनुष्य के मानसिक भावादि सै ससार के बहुत सै कामों का गुप्त सबध इस तरह मिला रक्खा है कि जिस्के आभास मात्र सै अपना चित्त चकित हो जाता है . यद्यपि ईश्वर के ऐसे बहुत से कामों की पूरी थाह मनुष्य की तुच्छ बुद्धि को नहीं मिली तथापि उसने मनुष्य को बुद्धि दी है इसलिये यथाशक्ति उसके नियमों का विचार करना, उन्के अनुसार बरतना और विपरीत भाव का कारण ढूढना उस्को उचित है सो मैं अपनी तुच्छ बुद्धि के अनुसार एक कारण पहले कह चुका हूँ . दूसरा यह मालूम होता है कि जैसे तारों की छाह चद्रमा की चाँदनी मैं और चंद्रमा की चाँदनी सूर्य की धूप मै मिलकर अपनें आप उस्का तेज बढाने लगती है इसी तरह बहुत उन्नति मैं साधारण उन्नति अपने आप मिल जाती है . जब तक दो मनुष्यों का अथवा दो देशों का बल बराबर रहता है कोई किसी को नहीं हरा सक्ता, परतु जब एक उन्नतिशाली होता है, आकर्षण शक्ति के नियमानुसार दूसरे की समृद्धि अपनें आप उस्की तरफ को खिचनें लगती है देखिये जब तक हिंदुस्थान मैं और देशों सै बढ़कर मनुष्य के लिये वस्त्र और सब तरह के सख की सामग्री तैयार होती थीं रक्षा के उपाय ठीक. ठीक बन रहे

थे, हिंदुस्थान का वैभव प्रतिदिन बढता जाता था परंतु जब सै हिंदुस्थान का एका टूटा, और देशों मैं उन्नति हुई भाफ और बिजली आदि कलों के द्वारा हिंदुस्थान की अपेक्षा थोड़े खर्च, थोडी महनत और थोड़े समय मै सब काम होने लगा हिंदुस्थान की घटती के दिन आ गए, जब तक हिंदुस्थान इन बातों मै और देशों की बराबर उन्नति न करेगा यह घाटा कभी पूरा न होगा. हिंदुस्थान की भूमि मैं ईश्वर की कृपा सै उन्नति करनें के लायक सब सामान बहुतायत सै मौजूद हैं केवल नदियों के पानी ही सै बहुत तरह की कलैं चल सक्ती हैं परंतु हाथ हिलाये बिना अपने आप ग्रास मुख मै नहीं जाता, नई नई युक्तियों का उपयोग किये बिना काम नही चलता. पर इन बातों सै मेरा यह मतलब हरगिज़ नही है कि पुरानी, पुरानी सब बातैं बुरी और नई, नई सब बातैं एक दम अच्छी समझ ली जायँ. मैनें यह दृष्टांत केवल इस विचार सै दिया है कि अधिकार और व्यापारादि के कामों मै कोई, कोई युक्ति किसी समय काम की होती है वह भी कालांतर मै पुरानी रीति भात पलट जाने पर अथवा किसी और तरह की सूधी राह के निकल आने पर अपनें आप निरर्थक हो जाती है और ससार के सब कामों का सबंध परस्पर ऐसा मिला रहता है कि एक की उन्नति अवनति का असर दूसरों पर तत्काल हो जाता है इस कारण एक सावधानी बिना मन की वृत्तियों के ठीक होने पर भी ज़मानें के पीछै रह जानें सै कभी, कभी अपने आप अवनति हो जाती है और इन ही कारणों सै कहीं, कही प्रकृति के विपरीत भाव दिखाई देता है."

"इस्सै तो यह बात निकली कि हिंदुस्थान मै इस्समय कोई सावधान नहीं है" मुंशी चुन्नीलाल ने कहा.

नहीं यह बात हरगिज नहीं है, परतु सावधानी का फल प्रसग के अनुसार अलग अलग होता है" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे "तुम अच्छी तरह विचार कर देखोगे तो मालूम हो जायगा कि हरेक समाज का मुखिया

कोई निरा विद्वान अथवा धनवान नहीं होता, बल्कि बहुधा सावधान मनुष्य होता है और जो खुशी बड़े, बड़े राजाओं को अपने बराबरवालों में प्रतिष्ठा लाभ सै होती है वही एक गरीब सै गरीब लकड़हारे को भी अपने बराबर वालों मै इज्जत मिलनें सै होती है और उन्नति का प्रसंग हो तो वह धीरै, धीरै उन्नति भी करता जाता है परंतु इन दोनों की उन्नति का फल बराबर नहीं होता क्योंकि दोनों को उन्नति करने के साधन एक से नहीं मिलते . मनुष्य जिन कामों मै सदैव लगा रहता है अथवा जिन बातों का बारबार अनुभव करता है बहुधा उन्हीं कामों मै उस्की बुद्धि दौड़ती है और किसी सावधान मनुष्य की बुद्धि किसी अनूठे काम मै दोडी भी तो उसै काम मै लाने के लिए बहुत कर कै मौका नहीं मिल्ता . देश की उन्नति अवनति का आधार वहाँ के निवासियों की प्रकृति पर है . सब देशों में सावधान और असावधान मनुष्य रहते हैं परंतु जिस देश के बहुत मनुष्य सावधान और उद्योगी होते हैं उस्की उन्नति होती जाती है और जिस देश में असावधान और कमकस विशेष होते हैं उस्की अवनति होती जाती है . हिंदुस्थान मैं इस्समय और देशों की अपेक्षा सच्चे सावधान बहुत कम हैं और जो हैं वे द्रव्य की असगति सै, अथवा द्रव्यवानों की अज्ञानता सै, अथवा उपयोगी पदार्थों की अप्राप्ति सै, अथवा नई, नई युक्तियों के अनुभव करनें की कठिनाइयों सै, निरर्थक सै हो रहे हैं और उन्की सावधानता बन के फूलों की तरह कुछ उपयोग किए बिना वृथा नष्ट हो जाती है परंतु हिंदुस्थान मै इस्समय कोई सावधान न हो यह बात हरगिज़ नहीं है ."

"मेरे जान तो आजकल हिंदुस्थान मैं बराबर उन्नति होती जाती है . जगह जगह पढनें लिखनें की चर्चा सुनाई देती है, और लोग अपना हक पहचानें लगे हैं" बाबू बैजनाथ नें कहा .

"इन सब बातों मैं बहुत सी स्वार्थपरता और बहुत सी अज्ञानता मिली हुई है परंतु हकीकत मैं देशोन्नति बहुत थोड़ी है" लाला ब्रजकिशोर कहनें

लगे "जो लोग पढ़ते हैं वे अपनें बाप दादों का रोजगार छोड़कर केवल नौकरी के लिए पढ़ते है और जो देशोन्नति के हेतु चर्चा करते हैं उन्का लक्ष अच्छा नहीं है वे थोथी बातों पर बहुत हल्ला मचाते हैं परंतु विद्या की उन्नति, कलों के प्रचार, पृथ्वी के पैदावार बढ़ानें की नई, नई युक्ति और लाभदायक व्यापारादि आवश्यक बातों पर जैसा चाहिये ध्यान नहीं देते जिस्सै अपने यहाँ का घाटा पूरा हो . मैं पहले कह चुका हूँ कि जिन मनुष्यों की जो वृत्तियाँ प्रबल होती हैं वह उन्को खींच खाँच कर उसी तरफ ले जाती हैं सो देख लीजिए कि हिंदुस्थान मैं इतने दिन सै देशोन्नति की चर्चा हो रही है परंतु अब तक कुछ उन्नति नहीं हुई और फ्रासवालों को जर्मनीवालों सै हारे अभी पूरे दस वर्ष नहीं हुए जिस्मैं फ्रासवालों नें सच्ची सावधानी के कारण ऐसी उन्नति कर ली कि वे आज सब सुधरी हुई बलायतों सै आगे दिखाई देते हैं" .

"अच्छा ! आपके निकट सावधानी की पहचान क्या है ?" लाला मदनमोहन नें पूछा .

"सुनिये" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे "जिस तरह पाँच, सात गोलियें बराबर, बराबर चुन् दी जायँ और उन्मैं सै सिरे की एक गोली को हाथ सै धक्का दे दिया जाय तो हाथ का बल, पृथ्वी की आकर्षण शक्ति, हवा आदि सब कार्य कारणों के ठीक, ठीक जान्नें सै आपस्मै टकराकर अंत की गोली कितनी दूर लुढ़कैगी इस्का अदाज हो सक्ता है इसी तरह मनुष्यों की प्रकृति और पदार्थों की जुदी, जुदी शक्ति का परस्पर सबध बिचार कर दूर और पास की हरेक बात का ठीक परिणाम समझ लेना पूरी सावधानी है परंतु इन बातों को जान्नें के लिए अभी बहुत से साधनों की कसर है और किसी समय यह सब साधन पाकर एक मनुष्य बहुत दूर, दूर की बातों का ठीक परिणाम निकाल सकै यह बात असभव मालूम होती है तथापि अपनी सामर्थ्य के अनुसार जो मनुष्य इस राह पर चलै वह अपनें समाज मै साधारण रीति सै सावधान समझा जाता है . एक मोमबत्ती

एक तरफ सै जल्ती हो और दूसरी दोनों तरफ जल्ती हो तो उस्के वर्तमान प्रकाश पर न भूलना परिणाम पर दृष्टि करना सावधानी का साधारण काम है और इसी सै सावधानता पहचानी जाती है" .

"आपनें अपनी सावधानता जतानें के लिए इतना परिश्रम करके सावधानी का वर्णन किया इसलिए मै आपका बहुत उपकार मान्ता हूँ" लाला मदनमोहन नें हँस कर कहा .

"वाजबी बात कहनें पर मुझको आप सै ये तो उम्मेद ही थी" . लाला ब्रजकिशोर नें जवाब दिया, और लाला मदनमोहन सै रुखसत होकर अपने मकान को रवाने हुए .

———

प्रकरण ८—

सब मैं हाँ

"एकै साधे सब सधैं सब साधे सब जाहि ।
जो गहि सींचै मूल कों फूलैं फलैं अघाहि ॥

कबीर

"लाला ब्रजकिशोर बातें बनाने मैं बड़े होशयार हैं परतु आपनें भी इस्समय तो उन्को ऐसा मत्र सुनाया कि वह बद ही हो गए" मुशी चुन्नीलाल नें कहा .

"मुझको तो उन्की लबी चोडी बातों पर लुक्मान की वह कहावत याद आती है जिस्मैं एक पहाड़ के भीतर सै बडी गडगडाहट हुए पीछै छोटी सी मूसी निकली थी" मास्टर शिंभूदयाल नें कहा .

"उन्की बातचीत मैं एक बडा ऐब यह था कि वह बीच मैं दूसरे को बोलने का समय बहुत कम देते थे जिस्सै उन्की बात अपने आप फीकी मालूम होने लगती थी" बाबू बैजनाथ नें कहा.

"क्या करें ? वह वकील हैं और उन्की जीविका इन्हीं बातों सै है" हकीम अहमद हुसैन बोले.

"उन् पर क्या है अपना, अपना काम बनानें मैं सबही एक से दिखाई देते हैं" पडित पुरुषोत्तम दास ने कहा.

"देखिये सबेरे वह काचों की खरीदारी पर इतना झगडा करते थे परतु मन मैं क़ायल हो गए इस्सै इस्समय उन्का नाम भी न लिया" मुशी चुन्नीलाल ने याद दिलाई.

"हाँ, अच्छी याद दिलाई, तुम तीसरे पहर मिस्टर ब्राइट के पास गये थे ? काचों की कीमत क्या ठैरी !" लाला मदनमोहन ने शिंभूदयाल सै पूछा.

"आज मदरसे सै आने मैं देर हो गई इस्सै नहीं जा सका" मास्टर शिभूदयाल नें जवाब दिया. परतु यह उस्की बनावट थी असल मैं मिस्टर ब्राइट नें लाला मदनमोहन का भेद जान्नें के लिये सौदा अटका रक्खा था.

"मिस्टर रसल को दस हजार रुपे भेजने हैं उन्का कुछ बंदोबस्त हो गया" मुशी चुन्नीलाल नें पूछा.

हाँ लाला जवाहर लाल सै कह दिया है परंतु मास्टर साहब भी तो बदोबस्त करनें कहते थे इन्होंनें क्या किया ?" लाला मदनमोहन नें उलट कर पूछा.

"मैनें एक, दो जगह चर्चा की है पर अब तक किसी सै पक्कावट नहीं हुई." मास्टर शिभूदयाल ने जवाब दिया.

"खैर ! यह बाते तो हुआ ही करैगी मगर वह लखनऊ का तायफा शाम सै हाज़िर है उस्के वास्तै क्या हुक्म होता है ?" हकीम अहमद हुसैन नें पूछा.

"अच्छा ! उस्को बुलवाओ पर उस्के गानें मैं समा न बँधा तो आप को वह शर्त पूरी करनी पड़ेगी" लाला मदनमोहन नें मुस्करा कर कहा .

इस्पर लखनऊ का तायफा मुजरे के लिये खड़ा हुआ और उस्नें मीठी आवाज सै तालसुर मिलाकर सोरठ गाना शुरू किया .

निस्संदेह उस्का गाना अच्छा था परतु पंडित जी अपनी अभिज्ञता जताने के लिए बे समझे बूझे लट्टू हुए जाते थे समझनेंवालों का सिर मोके पर अपने आप हिल जाता है परतु पडित जी का सिर तो इस्समय मतवालों की तरह घूम रहा था, मास्टर शिभूदयाल को दुपहर का बदला लेने के लिए यह समय सब सै अच्छा मिला उस्नें पडित जी को आसामी बनानें के हेतु और लोगों सै इशारों मै सलाह कर ली और पंडित जी का मन बढ़ानें के लिये पहलै सब मिलकर गानें की वाह वाह करने लगे अत मै एक नें कहा "क्या स्याम कल्याण है" दूसरे ने कहा "नहीं ईमन है" तीसरे नें कहा "वाह झझौटी है" चोथा बोला "देस है" इस्पर सुनारी लडाई होने लगी .

"पडित जी को सबसै अधिक आनद आ रहा है इसलिये इन्सै पूछना चाहिये" लाला मदनमोहन ने झगडा मिटानें के मिस सै कहा .

"हाँ, हाँ पडित जी ने दिन मै अपनी विद्या के बल सै बे देखे भाले करेला बता दिया था सो अब इस प्रत्यक्ष बात के बताने मै क्या संदेह है ?" मास्टर शिभूदयाल ने शै दी और सब लोग पडित जी के मुँह की तरफ देखने लगे .

"शास्त्र सै कोई बात बाहर नहीं है जब हम सूर्य चंद्रमा का ग्रहण पहले सै बता देते हैं तो पृथ्वी पर की कोई बात बतानी हम को क्या कठिन है ?" पडित पुरुषोत्तम दास नें बात उड़ानें के वास्तै कहा .

"तो आप रेल और तार का हाल भी अच्छी तरह जान्ते होंगे ?" बाबू बैजनाथ नें पूछा .

"मैं जान्ता हूँ कि इन सब का प्रचार पहले हो चुका है क्योंकि "रेल पेल" और "एक तार" होने की कहावत अपने यहाँ बहुत दिन सै चली आती है" पंडित जी ने जवाब दिया.

"अच्छा महाराज! रेल शब्द का अर्थ क्या है और यह कैसे चल्ती है?" मास्टर शिंभूदयाल ने पूछा.

"भला यह बात भी कुछ पूछने के लायक है! जिस तरह पानी की रेल सब चीजों को बहा ले जाती है इसी तरह यह रेल भी सब चीजों को घसीट ले जाती है इस वास्तै इस्को लोग रेल कहते हैं और रेल धुँएँ के जोर से चल्ती है यह बात तो छोटे छोटे बच्चे भी जान्ते हैं*" पंडित पुरुषोत्तम दास ने जवाब दिया, और इस्पर सब आपस मैं एक दूसरे की तरफ देख कर मुस्करानें लगे.

"और तार?" मुंशी चुन्नीलाल ने रही सही कलई खोलनें के वास्तै पूछा.

"इस्मै कुछ योग विद्या की कला मालूम होती है." इतनी बात कह कर पंडित पुरुषोत्तम दास चुप होते थे परंतु लोगों को मुस्कराते देख कर अपनी भूल सुधारनें के लिये झटपट बोल उठे कि "कदाचित् योग विद्या न होगी तो तार भीतर सै पोला होगा जिस्मै होकर आवाज़ जाती होगी या उस्के भीतर चिट्ठी पहुँचाने के लिए डोर बँध रही होगी."

"क्यों दयालु! वैलून† कैसा होता है?" बाबू बैजनाथ नें पूछा.

"हम सब बातें जान्ते है परंतु हमारी परीक्षा लेने के वास्तै पूछते

---

* देश भाषा मै बाफ और बिजली की शक्ति के वृत्तांत न प्रकाशित होनें का यह फल है कि अब तक सर्वसाधारण रेल और तार का भेद कुछ नहीं जान्ते.

† गैस सै भरा हुआ उडनें का गुबारा.

हो इस्से हम कुछ नहीं बताते" पंडित जी नें अपना पीछा छुडानें के लिए कहा . परंतु शिभूदयाल नें सबको जता कर झूंटे छिपाव सै इशारे मै पडित जी को उड़नें की चीज बताई इस्पर पंडित जी तत्काल बोल उठे "हम को परीक्षा देनें की क्या ज़रूरत है ! परंतु इस समय न बतावेंगे तो लोग बहाना समझेगे, बैलून पतंग को कहते हैं ."

"वाह वा, वाह ! पंडित जी नें तो हद कर दी इस कलि काल मै ऐसी विद्या किसी को कहाँ आ सक्ती है !" मुशी चुन्नीलाल नें कहा .

"हाँ पडित जी महाराज ! हुलक किस जान्वर को कहते हैं ?" हकीम अहमद हुसैन नें नया नाम बनाकर पूछा .

"एक चोपाया है" मुशी चुन्नीलाल नें बहुत धीरी आवाज सै पडित जी को सुनाकर शिभूदयाल के कान मैं कहा .

"और बिना परों के उडता भी तो है" मास्टर शिभूदयाल नें उसी तरह चुन्नीलाल को जवाब दिया .

"चलो चुप रहो देखे पडित जी क्या कहते हैं" चुन्नीलाल ने धीरे सै कहा .

"जो तुमको हमारी परीक्षा ही लेनी है तो लो सुनो हुलक एक चतुष्पद जंतु विशेष है और बिना पखों के उड़ सक्ता है" पडित जी नें सबको सुनाकर कहा .

"यह तो आप ने बहुत पहुँच कर कहा परतु उस्की शक्ल बताइये" हकीम जी हुज्जत करनें लगे .

"जो शक्ल ही देखनी हो तो यह रही" बाबू बैजनाथ नें मेजपर सै एक छोटा सा काच उठाकर पडित जी के सामने कर दिया .

इस्पर सब लोग खिल खिलाकर हँस पड़े.

"यह सब बातें तो आपने बता दीं परंतु इस राग का नाम न बताया" लाला मदनमोहन नें हँसी थमे पीछै कहा .

"इस्समय मेरा चित्त ठिकानें नहीं है मुझको क्षमा करो" पडित पुरुषोत्तम दास नें हार मान कर कहा .

"बस महाराज ! आपको तो करेला ही करेला बताना आता है और कुछ भी नही आता" मास्टर शिभूदयाल बोले.

"नहीं साहब ! पंडित जी अपनी विद्या मैं एक ही हैं" "रेल और तार का हाल क्या ठीक, ठीक बताया है." "और बैलून मै तो आप ही उड चले !" "हुलक की सूरत भी तो आप ही नें दिखाई थी !" "और सबसै बढ़ कर राग का रस भी तो इनही नें लिया है" चारों तरफ लोग अपनी अपनी कहने लगे.

पडित जी इन लोगों की बातें सुन, सुन कर लज्जा के मारे धरती मै गडे चले जाते थे पर कुछ बोल नहीं सक्ते थे.

आखिर यह दिल्लगी पूरी हुई तब बाबू बैजनाथ लाला मदनमोहन को अलग ले जाकर कहनें लगे "मैनें सुना है कि लाला ब्रजकिशोर दो, चार आदमियों को पक्का कर कै यहाँ नये सिरे सै कालिज स्थापन करने के लिये कुछ उद्योग कर रहे हैं यद्यपि सब लोगों के निरुत्साह सै ब्रजकिशोर के कृतकार्य होनें की कुछ आशा नहीं है तथापि लोगो को देशोपकारी बातों मै अपनी रुचि दिखानें और अग्रसर बन्ने के लिए आप इस्मैं ज़रूर शामिल हो जायॅ अखबारों मै धूम मै मचा दूँगा यह समय कोरी बातों मै नाम निकालनें का आ गया है क्योंकि ब्रजकिशोर नामवरी नहीं चाहते इसोलिए मै बात चलाकर आपको चेताने के लिए इस्समय आपके पास आया था".

"आपकी बडी महरबानी हुई मै आपके उपकारों का बदला किसी तरह नहीं दे सक्ता, किसी ने सच कहा है

"हितहि परायो आपनो अहित अपनपो जाय ॥
बनकी ओषधि प्रिय लगत तन को दुख न सुहाय ॥"*

---

* परोपि हितवान् बन्धुर्बन्धुरप्यहितः परः ।
अहितो देहजो व्याधिर्हितमारण्यमोषधम् ॥

ऐसा हितकारी उपदेश आपके बिना और कौन दे सक्ता है" लाला मदनमोहन ने बडी प्रीति सै उन्का हाथ पकड कर कहा .

और इसी तरह अनेक प्रकार की बातों मैं बहुत रात चली गई तब सब लोग रुखसत होकर अपने , अपनें घर गए .

प्रकरण ६ .

सभासद .

धर्मशास्त्र पढ़, वेद पढ़ दुर्जन सुधरे नाहि ।
गो पय मीठे प्रकृति ते प्रकृति प्रबल सब माहिं ॥*

(हितोपदेश)

इस्समय मदनमोहन के वृत्तात लिखनें सै अवकाश पाकर हम थोडा सा हाल लाला मदनमोहन के सभासदों का पाठकगण को विदित करते हैं . इन्मैं सब सै पहलै मुशी चुन्नीलाल स्मर्ण योग्य हैं .

मुंशी चुन्नीलाल प्रथम ब्रजकिशोर के यहाँ दस रुपे महीनें का नोकर था उन्हींनें इस्को कुछ, कुछ लिखना पढना सिखाया था, उन्हीं की संगति मैं रहनें सै इसै कुछ सभा चातुरी आ गई थी, उन्हीं के कारण मदनमोहन सै इस्की जान पहचान हुई थी परतु इस्के स्वभाव मैं चालाकी ठेठ सै थी इस्का मन लिखनें पढ़नें मै कम लगता था पर इस्नें बड़ी, बडी पुस्तकों मै सै कुछ कुछ बाते ऐसी याद कर रक्खी थीं कि नए आदमी के सामनें

---

*. न धर्मशास्त्र पठतीति कारण न चापि वेदाध्ययनं दुरात्मनः ।
स्वभाव एवात्र तथातिरिच्यते यथा प्रकृत्या मधुरं गवा पयः ॥

झड बाँध देता था स्वार्थपरता के सिवाय परोपकार की रुचि नाम को न थी पर ज़बानी जमा खर्च करनें और कागज़ के घोड़े दौड़ानें मैं यह बड़ा धुरधर था. इस्की प्रीति अपना प्रयोजन निकालनें के लिये, और धर्म लोगों को ठगनें के लिये था. यह औरों सै विवाद करनें मैं बडा चतुर था परतु इस्को अपना चाल चलन सुधारनें की इच्छा न थी. यह मनुष्यों का स्वभाव भली भात पहचान्ता था, परंतु दूर दृष्टि सै हरेक बात का परिणाम समझ लेने की इस्को सामर्थ्य न थी। जोड़ तोड की बातों मैं यह इयागो का अवतार था. कणिक की नीति पर इस्का पूरा विश्वास था, किसी बड़े काम का प्रबध करने की इस्को शक्ति न थी परतु बातों मैं धरती और आकाश को एक कर देता था इस्के काम निकालने के ढग दुनिया सै निराले थे. यह अपने मतलब की बात बहुधा ऐसे समय करता था जब दूसरा किसी और काम मै लग रहा हो जिस्सै इस्की बात का अच्छी तरह विचार न कर सके अथवा यह काम की बात करती बार कुछ, कुछ साधारण बातों की ऐसी चर्चा छेड देता था जिस्सै दूसरे का मन बटा रहै अथवा कोई बात रुचि के विपरीत अगीकार करानी होती थी तो यह अपनी बातों मै हर तरह का बोझ इस ढब सै डाल देता था कि दूसरा इन्कार न कर सके कभी, कभी यह अपनी बातों को इस युक्ति सै पुष्ट कर जाता कि सुन्नेंवाले तत्काल इस्का कहना मान लेते. जो काम ये अपने स्वार्थ के लिए करता उस्का प्रयोजन सब लोगों के आगे और ही बताता था और अपनी स्वार्थपरता छिपाने के लिए बडी आना कानी सै वह बात मजूर करता था; यह अपनें बैरी की व्याजस्तुति इस ढब सै करता था कि लोग इस्का कहना इस्की दयालुता और शुभचिंतकता सै समझनें लगते थे. जिस्बात के सहसा प्रगट करनें मैं कुछ खटका समझता उस्का प्रथम इशारा कर देता था और सुन्नेंवाले के आग्रह पर रुक, रुक वह बात कहता था. जोखों की बात लोगों पर ढाल कर कहता था अथवा शिभूदयाल वगैरे के मुख सै कहवा दिया करता

था और आप साधने को तयार रहता था . तुच्छ बातों को बढ़ा कर, बड़ी बातों को घटा कर, अपनी तरफ़ से लोन मिर्च लगा कर, कभी प्रसन्न, कभी उदास, कभी क्रोधित, कभी शात हो कर यह इस रीति से बात कहता था कि जो कहता था उसकी मूर्ति बन जाता था . इसके मन मे सग्रह करनें की वृत्ति सब से प्रबल थी .

मुशी चुन्नीलाल ब्रजकिशोर के यहाँ नोकर था जब अपनी चालाकी से बहुधा मुक़द्मेंवालों को उलट पुलट समझाकर अपना हक ठैरा लिया करता था . स्टाम्प, तल्बानें वगैरे के हिसाब मे उन लोगों को धोका दे दिया करता था बल्कि कभी, कभी प्रतिपक्षी से मिल्कर किसी मुकद्मे वाले का सबूत वगैरे भी गुप चुप उसको दिखा दिया करता था . ब्रजकिशोर ने ये भेद जान्ते ही पहले उसे समझाया फिर धमकाया जब इस्पर भी राह मे न आया तो घर का मार्ग दिखाया . इस्ने पहले ही से ब्रजकिशोर का मन देख कर लाला मदनमोहन के पास अपनी मिसल लगा ली थी हर-किशोर को अपना सहायक बना लिया था . लाला ब्रजकिशोर के पास से अलग होते ही लाला मदनमोहन के पास रहनें लगा .

मुशी चुन्नीलाल नें लाला मदनमोहन के स्वभाव को अच्छी तरह पहचान लिया था . लाला मदनमोहन को हाकमों की प्रसन्नता, लोगों की वाह वाह, अपने शरीर का सुख, और थोड़े खर्च मैं बहुत पैदा करनें के लालच सिवाय किसी काम मैं रुपया खर्च करना अच्छा नहीं लगता था पर रुपया पैदा करनें अथवा अपनें पास की दौलत को बचा रखने के ठीक रस्ते नहीं मालूम थे इसलिए मुशी चुन्नीलाल उनको उनकी इच्छानुसार बातें बनाकर खूब लूटता था .

मास्टर शिभूदयाल प्रथम लाला मदनमोहन को अंग्रेजी पढ़ानें के लिये नोकर रक्खा गया था पर मदनमोहन का मन बचपन से पढ़नें

लिखने की अपेक्षा खेल कूद में अधिक लगता था. शिभूदयाल नें लिखनें पढनें की ताकीद की तो मदनमोहन का मन बिगडने लगा. मास्टर शिंभूदयाल खाने, पहनें, देखने, सुन्ने का रसिक था और लाला मदनमोहन के पिता अंग्रेजी नहीं पढे थे इसलिए मदनमोहन सै मेल करनें मैं इन्नें हर भांत अपना लाभ समझा पढानें लिखाने के बदले मदनमोहन बालक रहा जितनें अलिफ़लैला मैं सै सोते जागते का किस्सा, शेक्सपियर के नाटकों मैं सै कोमेडी आफ एरर्ज, ट्वेल्फ्थ नाइट, मचएडू एबाउट नथिंग, बेन जान्सन का एवरी मैन इन हिज ह्यूमर, स्विफ्ट के ड्रेपीअर्स लेटर्स, गुलिवर्स ट्रैवल्स, टेल आफ ए टब, आदि सुनाकर हँसाया करता था और इस युक्ति सै उस्को टोपी, रुमाल, घड़ी, छडी आदि का बहुधा फायदा हो जाता था. जब मदनमोहन तरुण हुआ तो अलिफलैला मैं सै अबुलहसन और शम्सुलनिहार का किस्सा, शेक्सपियर के नाटकों मैं सै रोमयो ऐंड जुलियट आदि सुनाकर आदि रस का रसिक बनाने लगा और आप भी उस्के साथ फूल के कीड़े की तरह चैन करनें लगा, परंतु यह सब बातें मदनमोहन के पिता के भय सै गुप्त होती थीं और गुप्त होती थीं इसी सै शिभूदयाल आदि का बहुत फायदा था. वह पहाडी आदमियों की तरह टेढ़ी राह मैं अच्छी तरह चल सक्ता था परंतु समभूमि पर उस्को आदत न थी. जब चुन्नीलाल मदनमोहन के पास आया कुछ दिन इन दोनों की बड़ी खटपट रही परंतु अंत मैं दोनों अपना हानि लाभ समझ कर गरम लोहे की तरह आपस मैं मिल गये. शिंभूदयाल को मदनमोहन नें सिफ़ारश कर के मदरसे मैं नोकर रखा दिया था इस्कारण वह मदनमोहन की अहसानमंदी के बहाने सै हर वक्त वहाँ बना रहता था.

पंडित पुरुषोत्तम दास भी बचपन सै लाला मदनमोहन के पास आते जाते थे इन्को लाला मदनमोहन के यहाँ सै इन्के स्वरूपानुरूप अच्छा

लाभ हो जाता था परतु इन्के मन मैं औरों की डाह बड़ी प्रबल थी. लोगों को धनवान, प्रतापवान, विद्वान, बुद्धिमान, सुंदर, तरुण, सुखी और कृतिकार्य देखकर इन्हें बड़ा खेद होता था. वह यशवान मनुष्यों सै सदा शत्रुता रखते थे औरों को अपनें सुख-लाभ का उद्योग करते देख कर कुढ जाते थे, अपने दुखिया चित्त को धैर्य देनें के लिए अच्छे अच्छे मनुष्यों के छोटे, छोटे दोष ढूंढ़ा करते थे किसी के यश मैं किसी तरह का कलक लग जानें सै यह बड़े प्रसन्न होते थे पापी दुर्योधन की तरह सब ससार के विनाश होनें मैं इन्की प्रसन्नता थी. और अपनी सर्वज्ञता बताने के लिए जाने बिना जानें हर काम मै पाँव अडाते थे. मदनमोहन को प्रसन्न करने के लिए अपनी चिड करेले की कर रक्खी थी. चुन्नीलाल और शिभूदयाल आदि की कटती कहनें मै कसर न रखते थे परतु अकल मोटी थी इसलिए उन्होंनें इन्हे खिलोना बना रक्खा था. और परकैंच कबूतर की तरह वह इन्हें अपना बसवर्ती रखते थे.

हकीम अहमद हुसैन बडा कमहिम्मत मनुष्य था इस्को चुन्नीलाल और शिभूदयाल सै कुछ प्रीति न थी परतु उन्को कर्ता समझ कर अपनें नुक्सान के डर सै यह सदा उन्की खुशामद किया करता था उन्हीं को अपना सहायक बना रक्खा था उन्के पीछै बहुधा मदनमोहन के पास नहीं जाता आता था और मदनमोहन की बडाई तथा चुन्नीलाल और शिभूदयाल की बातों को पुष्ट करनें के सिवाय और कोई बात मदनमोहन के आगे मुख सै नहीं निकालता था मदनमोहन के लिये औषधि तक मदनमोहन के इच्छानुसार बताई जाती थी मदनमोहन का कहना उचित हो, अथवा अनुचित हो यह उस्की हाँ मैं हाँ मिलाने को तयार था मदनमोहन की राय के साथ इस्को अपनी राय बदलने मै भी कुछ उज्र न था! "यह लाला जी का नोकर था कुछ बैंगनों का नोकर नहीं था" परंतु इन

लोगों की प्रसन्नता मैं कुछ अंतर न आता हो तो यह ब्रजकिशोर की कहन मैं भी सम्मति करने को तैयार रहता था इस्को बड़े, बड़े कामों के करनें की हिम्मत तो कहाँ सै आती छोटे, छोटे कामों सै इस्का जी दहल जाता था अजीर्ण के डर सै भोजन न करने और नुक्सान के डर सै व्यापार न करने की कहावत यहाँ प्रत्यक्ष दिखाई देती थी. इस्को सब कामो मैं पुरानी चाल पसद थी.

———

बाबू बैजनाथ ईस्ट इंडियन रेलवे कंपनी मैं नोकर था अंग्रेजी अच्छी पढा था. यूरुप के सुधरे हुए बिचारों को जान्ता था परंतु स्वार्थपरता नें इस्के सब गुण ढक रक्खे थे; बिद्या थी पर उस्के अनुसार व्यवहार न था "हाथी के दात खानें के' और दिखानें के और थे" इस्कं निर्वाह लायक इस्समय बहुत अच्छा प्रबध हो रहा था परतु एक संतोष बिना इस्के जी को ज़रा भी सुख न था. लाभ सै लोभ बढ़ता जाता था और समुद्र की तरह इस्की तृष्णा अपार थी. लोभ सै धर्म, अधर्म का कुछ बिचार न रहता था. बचपन मैं इस्को इल्ममुसल्लिम, तहरीरउक्लेदस और जब्रमुकाबले वगैरे के सीखनें मैं परीक्षा के भय सै बहुत परिश्रम करना पडा था परतु इस्के मन मैं धर्म प्रवृत्ति के उत्तेजित करनें के लिए धर्म नीति आदि के असरकारक उपदेश अथवा देशोन्नति के हेतु बाफ और बिजली आदि की शक्ति, नई नई कलों का भेद, और पृथ्वी की पैदावार बढ़ाने के हेतु खेती बाड़ी की बिद्या, अथवा स्वच्छदता सै अपना निर्वाह करनें के लिये देश दशा के अनुसार जीविका करनें की रीति और अर्थ बिद्या, तदुरुस्ती के लिये देह रक्षा के तत्व द्रव्यादि की रक्षा और राजाज्ञा भंग के अपराध सै बचने को राजाज्ञा का तात्पर्य, अथवा बड़े और बराबरवालों सै यथायोग्य व्यवहार करने के लिए शिष्टाचार का उपदेश बहुत ही कम मिला था बल्कि नहीं मिलनें के बराबर था. इसके कई वर्ष तो केवल अंग्रेज़ी भाषा सीखने मैं बिद्या के द्वार पर

खड़े खड़े बीत गये जो अंग्रेज़ों की तरह ये शिक्षा अपनी देश भाषा में होती अथवा काम, काम की पुस्तकों का अपनी भाषा में अनुवाद हो गया होता तो कितना समय व्यर्थ नष्ट होनें से बचता ? और कितनें अधिक लोग उससे लाभ उठाते ? परंतु प्रचलित रीति के अनुसार इस्को सच्ची हितकारी शिक्षा नहीं हुई थी जिस्पर अभिमान इतना बढ गया था कि बड़े बुढे मूर्ख मालूम होने लगे और उन्के काम से ग्लानि हो गई पर इस विद्वत्ता में भी सिवाय नोकरी के और कहीं ठिकाना न था भाग्यबल से मदरसा छोडते ही रेलवे की नोकरी मिल गई पर बाबू साहब को इतने पर सतोष न हुआ वह और किसी बुर्द की ताक झाक में लग रहे थे इतनें मे लाला मदनमोहन से मुलाकात हो गई एक बार लाला मदनमोहन आगरे लखनऊ की सैर को गए उस्समय इसनें उन्की स्टेशन पर बडी खातिर की थी उसी समय से इन्की जान पहचान हुई . यह दूसरे तीसरे दिन लाला मदनमोहन के यहाँ जाता था और समा बाँध कर तरह, तरह की बातें सुनाया करता था . इस्की बातों से मदनमोहन के चित्त पर ऐसा असर हुआ कि वह इस्को सब से अधिक चतुर और विश्वासी समझने लगा इस्ने अपनी युक्ति से चुन्नीलाल वगैरे को भी अपना बना रक्खा था पर अपने मतलब से निश्चिंत न था . यह सब बातें जान बूझ कर भी धृतराष्ट्र की तरह लोभ से अपनें मन को नहीं रोक सक्ता था .

खेद है कि लाला ब्रजकिशोर और हरकिशोर आदि के वृत्तात लिखनें का अवकाश इस्समय नहीं रहा . अच्छा फिर किसी समय विदित किया जायगा पाठकगण धैर्य रक्खें .

———

*

प्रकरण १०

प्रबंध (इंतज़ाम)

कारज को अनुबंध लख अरु उत्तर फल चाहि।
पुन अपनी सामर्थ्य लख करै कि न करै ताहि ॥*

(विदुर प्रजागरे)

सबेरे ही लाला मदनमोहन हवाख़ोरी के लिये कपड़े पहन रहे थे मुशी चुन्नीलाल और मास्टर शिंभूदयाल आ चुके थे .

"आजकल मै हमको एक बार हाकिमों के पास जाना है" लाला मदनमोहन नें कहा .

"ठीक है, आपको म्युनिसिपेलीटी के मेम्बर बनानें की रिपोर्ट हुई थी उस्की मज़ूरी भी आ गई होगी" मुशी चुन्नीलाल बोले .

"मज़ूरी मै क्या सदेह है ? ऐसे लायक आदमी सरकार को कहाँ मिलेंगे ?" मास्टर शिंभूदयाल नें कहा .

"अभी तो (खुशामद मै) बहुत कसर है ! साइराक्यूस के सभासद डायोनिस्यस का थूक चाट जाते थे और अमृत से अधिक मीठा बताते थे" लाला ब्रजकिशोर ने कमरे मै आते आते कहा .

"यों हर काम मै दोष निकालने की तो जुदी बात है पर आप ही बताइये इस्में मैंने झूंट क्या कहा ?" मास्टर.शिभूदयाल पूछनें लगे .

"लाला साहब नें म्युनिसिपेलीटी का सालानः आमद ख़र्च अच्छी तरह समझ लिया होगा ? आमदनी बढानें के रस्ते अच्छी तरह बिचार

---

* अनुबन्ध च सपेक्ष्य विपाक चैवकर्म्मणाम् ।
उत्थानमात्मनश्चैव धीरः कुर्वीत वा न वा ॥

लिये होंगे ? शहर की सफ़ाई के लिए अच्छे, अच्छे उपाय सोच लिये होंगे ?" लाला ब्रजकिशोर ने पूछा .

"नहीं, इन बातों में से अभी तो किसी बात पर दृष्टि नहीं पहुँचाई गई परतु इन बातों का क्या है ? ये सब बातें तो काम करते, करते अपनें आप मालूम हो जायँगी" लाला मदनमोहन नें जवाब दिया .

"अच्छा आप अपनें घर का काम तो इतने दिन से करते हो उसके नफ़े नुक्सान और राह बाट से तो आप अच्छी तरह वाकिफ हो गये होंगे ?" लाला ब्रजकिशोर ने पूछा .

इस्समय लाला मदनमोहन नावाकिफ़ नही बना चाहते थे परंतु वाकिफकार भी नहीं बन सक्ते थे इसलिए कुछ जवाब न दे सके .

"अब आप घर की तरह वहाँ भी औरों के भरोसे रहे तो काम कैसे चलेगा ? और सब बातों से वाक़िफ होनें का बिचार किया तो वाकिफ़ होंगे जितनें आप के बदले काम कौन करैगा ?" लाला ब्रजकिशोर नें पूछा .

"अच्छा मज़ूरी आवैगी जितने मैं इन् बातों से कुछ, कुछ वाकिफ हो लूँगा" लाला मदनमोहन ने कहा .

"क्या इन बातों से पहले आपको अपनें घर के कामों से वाकिफ होने की ज़रूरत नहीं है ? जब आप अपनें घर का प्रबंध उचित रीति से कर लेगे तो प्रबंध करने की रीति आ जायगी और हरेक काम का प्रबंध अच्छी तरह कर सकेंगे. परतु जब तक प्रबध करनें की रीति न आवेगी कोई काम अच्छी तरह न हो सकेगा ?" . लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे "हाकिमों की प्रसन्नता पर आधार रख ; अपने मुख से अधिकार मागने मैं क्या शोभा है ? और अधिकार लिये पीछै वह काम अच्छी तरह पूरा न हो सकै तो कैसी हँसी की बात है ? और अनुभव हुए बिना कोई काम किस तरह भली भाँत हो सक्ता है ? महाभारत मैं कौरवों के गो घेरनें पर विराट का राजकुमार उत्तर बड़े अभिमान से उन्को जीतनें की

बातें बनाता था परंतु कौरवों की सेना देखते ही रथ छोडकर उघाड़े पाँव भाग निकला ! इसी तरह सादी अपने अनुभव सै लिखते हैं कि "एक बार मैं बलख सै शामवालों के साथ सफ़र को चला मार्ग भयंकर था इसलिए एक बलवान पुरुष को साथ ले लिया वह शस्त्रों सै सजा रहता था और उस्की प्रत्यचा को दस आदमी भी नहीं चढ़ा सक्के थे वह बड़े, बड़े वृक्षों को हाथ सै उखाड डाल्ता परंतु उसनें कभी शत्रु सै युद्ध नहीं किया था . एक दिन मैं और वो आपस मैं बातें करते चले जाते थे उस्समय दो साधारण मनुष्य एक टीले के पीछै सै निकल आए और हम को लूटने लगे उन्मैं एक के पास लाठी थी और दूसरे के हाथ मैं एक पत्थर था परंतु उन्को देखते ही उस बलवान पुरुष के हाथ पाव फूल गए । तीर कमान छूट पडी ! अत मैं हमको अपने सब बस्त्र शस्त्र देकर उन्सै पीछा छुडाना पडा . बहुधा अब भी देखने मै आता है कि अच्छे प्रबंध बिना घर मै माल होनें पर किसी किसी साहूकार का दिवाला निकल जाता है और रुपे का माल दो दो आनें को बिकता फिरता है."

"परंतु काम किये बिना अनुभव कैसे हो सक्ता है ?" मुंशी चुन्नीलाल नें पूछा .

"सावधान मनुष्य काम करनें सै पहले औरों की दशा देख कर हरेक बात का अनुभव अच्छी तरह कर सक्ता है और अनायास कोई नया काम भी उस्को करना पड़े तो साधारण भाव सै प्रबंध करने की रीति जानकर और और बातों के अनुभव का लाभ लेनें सै काम करते करते वह मनुष्य उस विषय मैं अपना अनुभव अच्छी तरह बढ़ा सक्ता है सो मै प्रथम कह चुका हूँ कि लाला साहब प्रबंध करने की रीति जान जायँगे तो हरेक काम का प्रबंध अच्छी तरह कर सकैंगे" लाला ब्रजकिशोर नें जवाब दिया .

"आप के निकट प्रबंध करनें की रीति क्या है ?" लाला मदनमोहन नें पूछा .

"हरेक काम के प्रबंध करनें की रीति जुदी जुदी हैं परतु मै साधारण रीति सै सब का तत्व आप को सुनाता हूँ" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे. "सावधानी की सहायता लेकर हरेक बात का परिणाम पहले सै सोच लेना, और उन सब पर एक बार दृष्टि कर के जितना अवकाश हो उतनें ही मै सब बातो का ब्यौंत बना लेना निरर्थक चीजों को काम मै लाने की युक्ति सोचते रहना और जो जो बाते आगै होनें वाली मालूम हों उन्का प्रबध पहलै ही सै दूर दृष्टि पहुँचा कर धीरे धीरे इस भाँत करते जाना कि समय पर सब काम तयार मिलें, किसी बात का समय न चूकनें पावै, कोई काम उलट पलट न होनें पावै, अपनें आस पास वालों की उन्नति सै आप पीछे न रहे किसी नोकर का अधिकार स्वतत्रता की हद सै आगे न बढनें पावै, किसी पर जुल्म न होनें पावै, किसी के हक़ मैं अंतर न आनें पावै, सब बातों की सम्हाल उचित समय पर होती रहे, परतु ये सब काम इन्की बारीकियों पर दृष्टि रखनें सै कोई नहीं कर सक्ता बल्कि इस रीति सै बहुत महनत करने पर भी छोटे छोटे कामों मै इतना समय जाता रहता है कि उस्के बदले बहुत सै ज़रूरी काम अधूरे रह जाते हैं और तत्काल प्रबध बिगड़ जाता है इसलिए बुद्धिमान मनुष्य को चाहिये कि काम बाँट कर उन्पर योग्य आदमी मुकर्रर कर दे और उन्की कारवाई पर आप दृष्टि रक्खे पहले अदाज सै पिछला परिणाम मिलाकर भूल सुधारता जाय एक साथ बहुत काम न छेड़े, काम करनें के समय बटे रहैं आमद सै थोडा खर्च हो और कुपात्र को कुछ न दिया जाय. महाराज रामचंद्र जी भरत सै पूछते हैं

'आमद पूरी होत है ? खर्च अल्प दरसाय ।
देत न कबहुँ कुपात्र कों कहहु भरत समुझाय ॥" *

इसी तरह इन्तजाम के कामों मैं रू रीआयत सै बड़ा बिगाड़ होता है. इज़रत सादी कहते हैं—

---

* आयस्ते विपुलः कश्चित्काश्चदल्पतरो व्ययः ।
अपात्रेषु नते कश्चित्कोषो गच्छतिराघवः ॥

"जिस्सै तैने दोस्ती की उस्सै नोंकरी की आशा न रख" *

"लाला ब्रजकिशोर साहब आज कल की उन्नति के साथी हैं तथापि पुरानी चाल के अनुसार रोचक और भयानक बातों को अपनी कहन में मैं इस तरह मिला देते हैं कि किसी को बिल्कुल खबर नहीं होने पाती" मास्टर शिभूदयाल ने कहा.

"नहीं मैं जो कुछ कहता हूँ अपनी तुच्छ बुद्धि के अनुसार यथार्थ कहता हूँ" लाला ब्रजकिशोर कहने लगे "चीन के शहनशाह होएन ने एक बार अपने मंत्री टिची सै पूछा कि "राज्य के वास्ते सब सै अधिक भयकर पदार्थ क्या है?" मन्त्री ने कहा "मूर्ति के भीतर का मूसा" शहनशाह ने कहा "समझा कर कह" मंत्री बोला "अपने यहाँ काठ की पोली मूर्ति बनाई जाती है और ऊपर सै रंग दी जाती है अब दैव-योग सै कोई मूसा उस्के भीतर चला गया तो मूर्ति खडित होने के भय से उस्का कुछ नहीं कर सक्ते. इसी तरह हरेक राज्य में बहुधा ऐसे मनुष्य होते हैं जो किसी तरह की योग्यता और गुण बिना केवल राजा की कृपा के सहारे सै सब कामों में दखल देकर सत्यानास किया करते हैं परतु राजा के डर सै लोग उन्का कुछ नहीं कर सक्ते." हा जो राजा आप प्रबध करनें की रीति जान्ते हैं वह उन लोगों के चक्कर सै खूबसूरती के साथ बचे रहते है जैसै ईरान के बादशाह आरटाजरकसीस सै एक बार उस्के किसी कृपापात्र नें किसी अनुचित काम करनें के लिए सवाल किया बादशाह नें पूछा कि "तुझको इस्सै क्या लाभ होगा?" कृपापात्र नें बता दिया तब बादशाह नें उतनी रकम उस्को अपनें खजानें सै दिवा दी और कहा कि "ये रुपे ले इन्के देनें सै मेरा कुछ नहीं घटता परतु तैनें जो अनुचित सवाल किया था उस्के पूरा करनें सै मै निस्सदेह बहुत कुछ खो बैठता." उचित प्रबंध मैं जरा सा अंतर आनें सै कैसा भयंकर परिणाम

---

* चूं इकरारे दोस्ती कर दी तबक्के खिदमत मदार ॥

होता है इस्पर बिचार करिये कि इसी दिल्ली के तख्त बाबत दारा शिकोह और औरगज़ेब के बीच युद्ध हुआ उस्समय औरगज़ेब की पराजय मै कुछ सदेह न था परतु दारा शिकोह हाथी सै उतरते ही मानों तख्त सै उतर गया. मालिक का हाथी खाली देखते ही सब सेना तत्काल भाग निकली ."

"महाराज ! बग्गी तैयार है ." नोकर नें आकर रिपोर्ट की .

"अच्छा चलिये रस्ते मै बतलाते चलैंगे" लाला ब्रजकिशोर नें कहा. निदान सब लोग बग्गी मै बैठकर रवानें हुए .

प्रकरण ११

सज्जनता

सज्जनता न मिलै किये जतन करो किन कोय ।
ज्यो कर फार निहारिये लोचन बड़ो न होय ॥

वृद .

"आप भी कहाँ की बात कहा मिलानें लगे ! म्युनिसिपेलीटी के मेंबर होनें सै और इतजाम को इन बातों सै क्या संबध है ? म्युनिसिपेलीटी के कार्य निर्वाह का बोझ एक आदमी के सिर नहीं है उस्मैं बहुत से मेम्बर होते हैं और उन्मै कोई नया आदमी शामिल हो जाय तो कुछ दिन के अभ्यास सै अच्छी तरह वाकिफ़ हो सक्ता है . चार बराबर वालों सै बात-चीत करने मैं अपने विचार स्वत: सुधरते जाते हैं और आजकल के सुधरे विचार जान्नें का सीधा रस्ता तो इस्सै बढ़ कर और कोई नहीं है" मुशी चुन्नीलाल ने कहा .

"जिस तरह समुद्र मैं नोका चलानेंवाले केवट समुद्र की गहराई नहीं जान सक्के इसी तरह ससार मैं साधारण रीति सै मिलने भेटनें वाले इधर उधर की निरर्थक बातों सै कुछ फायदा नहीं उठा सक्के बाहर की सज धज और ज़ाहिर की बनावट सै सच्ची सज्जनता का कुछ सबध नहीं है वह तो दरिद्री धनवान और मूर्ख विद्वान का भेदभाव छोड कर सदा मन की निर्मलता के साथ रहती है और जिस जगह रहती है उस्को सदा प्रकाशित रखती है" लाला ब्रजकिशोर ने कहा.

"तो क्या लोगों के साथ आदर सत्कार सै मिलना जुलना और उन्का यथोचित शिष्टाचार करना सज्जनता नहीं है?" लाला मदनमोहन ने पूछा.

"सच्ची सज्जनता मन के सग है" लाला ब्रजकिशोर कहने लगे. "कुछ दिन हुए जब अपने गवर्नर जनरल मारक्विस आफ रिपन साहब ने अजमेर के मेयो कालिज मै बहुत से राजकुमारों के आगे कहा था कि "हम चाहे जितना प्रयत्न करैं परतु तुम्हारी भविष्यत अवस्था तुम्हारे हाथ है. अपनी योग्यता बढ़ानी, योग्यता की कदर करनी, सत्कर्मों मै प्रवृत्त रहना, असत्कर्मो सै ग्लानि करना तुम यहाँ सीख जाओगे तो निस्सदेह सरकार मैं प्रतिष्ठा, और प्रजा की प्रीति लाभ कर सकोगे. तुम मैं सै बहुत से राजकुमारों को बडी जोखों के काम उठाने पडेगे और तुम्हारी कर्तव्यता पर हज़ारों लाखों मनुष्यों के सुख दुःख का बल्कि जीने मरने का आधार रहैगा. तुम बड़े कुलीन हो और बड़े विभववान हो फ्रेंचभाषा मै एक कहावत है कि जो अपने सत्कुल का अभिमान रखता हो उस्को उचित है कि अपने सत्कर्मों सै अपना बचन प्रमाणिक कर दे. तुम जान्ते हो कि अग्रेज लोग बड़े, बड़े खिताबों के बदले सज्जन (Gentleman) जैसे साधारण शब्दों को अधिक प्रिय समझते है इस शब्द का साधारण अर्थ ये है कि मर्यादाशील, नम्र और सुधरे विचार का मनुष्य हो, निस्सदेह

ये गुण यहाँ के बहुत से अमीरों मै हैं परतु इस्के अर्थ पर अच्छी तरह दृष्टि की जाय तो इस्का आशय बहुत गभीर मालूम देता है. जिस मनुष्य की मर्यादा, नम्रता और सुधरे विचार केवल लोगों को दिखानें के लिए न हों बल्कि मन सै हों, अथवा जो सच्चा प्रतिष्ठित, सच्चा वीर और पक्षपात रहित न्यायपरायण हो, जो अपने शरीर को सुख देने के लिए नही बल्कि धर्म सै औरों के हक मै अपना कर्तव्य सपादन करनें के लिए जीता हो; अथवा जिस्का आशय अच्छा हो जो दुष्कर्मो सै सदैव बचता हो वह सच्चा सज्जन है."

"निस्सदेह सज्जनता का यह कल्पित चित्र अति विचित्र है परंतु ऐसा मनुष्य पृथ्वी पर तो कभी कोई काहे को उत्पन्न हुआ होगा" मास्टर शिभूदयाल नें कहा.

"हम लोग जहाँ खड़े हों वहाँ सै चारों तरफ को थोडी थोडी दूर पर पृथ्वी और आकाश मिले दिखाई देते हैं परतु हकीकत मै वह नही मिले इसी तरह संसार के सब लोग अपनी, अपनी प्रकृति के अनुसार और मनुष्यों के स्वभाव का अनुमान करते हैं परतु दर असल उन्मैं बडा अतर है" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे, "देखो—एथेन्स का निवासी आरिस्टाईडीज एक बार दो मनुष्यों का इंसाफ करने बैठा तब उन्मै सै एक ने कहा कि "प्रतिपक्षी ने आप को भी प्रथम बहुत दुख दिया है आरिस्टाईडीज ने जवाब दिया कि "मित्र! इस्नें तुमको दुख दिया हो वह बताओ क्योंकि इस्समय मै अपना नहीं, तुम्हारा इसाफ करता हूँ"

"प्रीवरनम के लोगों ने रूम के विपरीत बलवा उठाया उस्समय रूम की सेना नें वहाँ के मुखिया लोगों को पकड कर राजसभा मैं हाज़िर किया उस्समय प्लाटीनियस नामी सभासद ने एक बँधुए सै पूछा कि "तुम्हारे लिए कौन्सी सजा मुनासिब है?" बँधुए नें जवाब दिया कि "जो अपनी स्वतंत्रता चाहनें वालों के वास्तै मुनासिब हो" इस उत्तर सै

और सभासद अप्रसन्न हुए पर प्लाटीनियस प्रसन्न हुआ और बोला "अच्छा ! राजसभा तुम्हारा अपराध क्षमा कर दे तो तुम कैसा बरताव रक्खो ?" "जैसा हमारे साथ राजसभा रक्खे" बँधुआ कहने लगा "जो राजसभा हमसे मानपूर्वक मेल करेगी तो हम सदा ताबेदार बने रहेंगे परतु हमारे साथ अन्याय और अपमान सै बरताव होगा तो हमारी वफादारी पर सर्वथा विश्वास न रखना" इस जवाब सै और सभासद अधिक चिड़ गए और कहने लगे कि "इसमै राजसभा को धमकी दी गई है" प्लाटीनियस ने समझाया कि "इसमैं धमकी कुछ नही दी गई यह एक स्वतत्र मनुष्य का सच्चा जवाब है." निदान प्लाटीनियस के समझानें सै राजसभा का मन फिर गया और उसनें उन्हें कैद सै छोड दिया .

"मेसीडोन के पादशाह पीरस ने रूम के कैदियों को छोडा उस्समय फेब्रीशियस नामी एक रूमी सरदार को एकात मै ले जाकर कहा "मै जान्ता हूँ कि तुम जैसा वीर, गुणवान, स्वतत्र, और सच्चा मनुष्य रूम के राज भर मैं दूसरा नही है जिस्पर तुम ऐसे दरिद्री बन रहे हो यह बड़े खेद की बात है ! सच्ची योग्यता की कदर करना राजाओं का प्रथम कर्तव्य है इसलिये मै तुमको तुम्हारी पदवी के लायक धनवान बनाया चाहता हूँ परतु मै इसमै तुम्हारे ऊपर कुछ उपकार नहीं करता अथवा इसके बदले तुम सै कोई अनुचित काम नहीं लिया चाहता . मेरी केवल इतनी प्रार्थना है कि उचित रीति सै अपना कर्तव्य सपादन किये पीछै न्यायपूर्वक मेरी सहायता हो सके सो करना ." फेब्रीशियस ने उत्तर दिया कि "निस्संदेह मै धनवान नही हूँ मै एक छोटे से मकान मै रहता हूँ और ज़मीन का एक छोटा सा किता मेरे पास है . परतु ये मेरी ज़रूरत के लिये बहुत है और ज़रूरत सै ज्यादः लेकर मुझको क्या करना है ? मेरे सुख मै किसी तरह का अतर नहीं आता मेरी इज्जत और धनवानों सै बढ़कर है, मेरी नेकी मेरा धन है मै चाहता तो अब तक बहुत सी दौलत इकट्ठी कर लेता परंतु दौलत की अपेक्षा मुझको अपनी

इज्जत प्यारी है इसलिये तुम अपनी दौलत अपने पास रक्खो और मेरी इजत मेरे पास रहनें दो" .

"नोशेरवाँ अपनी सेना का सेनापति आप था एक बार उस्की मज़ूरी सै खज़ाची ने तनख्वाह बाँटने के वास्तै सब सैना को हथियार बंद होकर हाज़िर होने का हुक्म दिया पर नोशेरवाँ इस हुक्म सै हाज़िर न हुआ इसलिये खजाची ने क्रोध करके सब सेना को उलटा फेर दिया और दूसरी बार भी ऐसा ही हुआ तब तीसरी बार खज़ाची ने डोंडी पिटवाकर नोशेरवाँ को हाज़िर होनें का हुक्म दिया . नोशेरवाँ उस हुक्म के अनुसार हाजिर हुआ परतु उस्की हथियार बदी ठीक न थी . खज़ाची ने पूछा "तुम्हारे धनुष की फाल्तू प्रत्यचा कहाँ है ?" नोशेरवाँ ने कहा "महलों मै भूल आया" खज़ाची ने कहा "अच्छा ! अभी जाकर ले आओ" इस्पर नोशेरवाँ महलों मे जाकर प्रत्यचा ले आया तब सब की तनख्वाह बटी परतु नोशेरवाँ खज़ाची के इस अपक्षपात काम सै ऐसा प्रसन्न हुआ कि उसे निहाल कर दिया . इस प्रकार सच्ची सज्जनता के इतिहास मैं सैकडों दृष्टात मिल्ते हैं परतु समुद्र मैं गोता लगाए बिना मोती नहीं मिल्ता ."

"आप बार, बार सच्ची सज्जनता कहते हैं सो क्या सज्जनता, सज्जनता मै भी कुछ भेद भाव है ?" लाला मदनमोहन नें पूछा .

"हा सज्जनता के दो भेद हैं एक स्वाभाविक होती है जिसका वर्णन मैं अब तक करता चला आया हूँ . दूसरी ऊपर सै दिखानें की होती है जो बहुधा बड़े आदमियों मै और उन्के पास रहनेंवालों मैं पाई जाती है. बड़े आदमियों के लिए वह सज्जनता सुदर वस्त्रों के समान समझनी चाहिये जिस्को वह बाहर जाती बार पहन जाते हैं और घर मैं आते ही उतार देते हैं स्वाभाविक सज्जनता स्वच्छ स्वर्ण के अनुसार है जिस्को चाहे जैसे तपाओ, गलाओ परतु उस्मै कुछ अतर नहीं आता . ऊपर सै दिखानेवालों की सज्जनता गिल्टी के समान है जो रगड लगते ही उतर

जाती है ऊपर के दिखानेंवाले लोग अपना निज स्वभाव छिपाकर सज्जन बन्नें के लिये सच्चे सज्जनों के स्वभाव की नकल करते हैं परन्तु परीक्षा के समय उन्की कलई तत्काल खुल जाती है, उन्के मन मैं विकास के सकुचित भाव, सादगी के बदले बनावट, धर्म प्रवृत्ति के बदले स्वार्थपरता और धैर्य के बदले घबराट इत्यादि प्रगट दिखनें लगते हैं, उन्का सब सद्भाव अपने किसी गूढ़ प्रयोजन के लिये हुआ करता है परन्तु उन्के मन को सच्चा सुख इस्सै सर्वथा नहीं मिल सक्ता" .

प्रकरण १२

सुख दुःख

आत्मा को आधार अरु साक्षी आत्मा जान ।
निज आत्मा को भूलहू करिये नहि अपमान ॥*
(मनुस्मृतिः)

"सुख दुःख तो बहुधा आदमी की मानसिक वृत्तियों और शरीर की शक्ति के आधीन है . एक बात सै एक मनुष्य को अत्यत दुःख और क्लेश होता है वही बात दूसरे को खेल तमाशे की सी लगती है इसलिए सुख दुःख होने का कोई नियम नहीं मालूम होता" मुशी चुन्नीलाल नें कहा .

"मेरे जान तो मनुष्य जिस बात को मन सै चाहता है उस्का पूरा

---

* आत्मैव ह्यात्मनः साक्षी गतिरात्मा तथात्मनः ।
भावसस्थाः स्वमात्मानं नृणां साक्षिणमुत्तमम् ॥

होना ही सुख का कारण है और उस्मैं हर्ज पड़नें ही सै दुःख होता है." मास्टर शिंभूदयाल नें कहा.

"तो अनेक बार आदमी अनुचित काम करके दुःख मैं फँस जाता है और अपनें किये पर पछताता है इस्का क्या कारण? असल बात यह है कि जिस्समय मनुष्य के मन मैं जो वृत्ति प्रबल होती है वह उसी के अनुसार काम किया चाहता है और दूरअदेशी की सब बातों को सहसा भूल जाता है परतु जब वो बेग घटता है तबियत ठिकानें आती है तो वो अपनी भूल का पछतावा करता है और न्याय वृत्ति प्रबल हुई तो सबके साम्हनें अपनी भूल अगीकार कर कै उस्के सुधारनें का उद्योग करता है पर निकृष्ट प्रवृत्ति प्रबल हुई तो छल करके उस्को छिपाया चाहता है अथवा अपनी भूल दूसरे के सिर रक्खा चाहता है और एक अपराध छिपानें के लिये दूसरा अपराध करता है परतु अनुचित कर्म सै आत्मग्लानि और उचित कर्म सै, आत्मप्रसाद हुए बिना सर्वथा नहीं रहता." लाला ब्रजकिशोर बोले.

"अपना मन मारनें सै किसी को खुशी क्यों कर हो सक्ती है?" लाला मदनमोहन आश्चर्य सै कहनें लगे.

"सब लोग चित्त का सतोष और सच्चा आनद प्राप्त करनें के लिये अनेक प्रकार के उपाय करते हैं परतु सब वृत्तियों के अविरोध सै धर्म प्रवृत्ति के अनुसार चलनेंवालों को जो सुख मिल्ता है वह और किसी तरह नहीं मिल सक्ता" लाला ब्रजकिशोर कहने लगे "मनुस्मृति मैं लिखा है—

"जाको मन अरु बचन शुचि बिध सो रक्षित होय।
अति दुर्लभ वेदान्त फल जग मैं पावत सोय॥"*

---

* यस्य वाङ्मनसी शुद्धे सम्यग्गुप्ते च सर्वदा।
सवै सर्व मवाप्नोति वेदान्तोपगतम्फलम्॥

जो लोग ईश्वर के बांधे हुए नियमों के अनुसार सदा सत्कर्म करते रहते हैं उन्को आत्मप्रसाद का सच्चा सुख मिल्ता है उन्का मन विकसित पुष्पों के समान सदा प्रफुल्लित रहता है; जो लोग कह सक्ते हैं कि हम अपनी सामर्थ्य भर ईश्वर के नियमों का प्रतिपालन करते हैं, यथाशक्ति परोपकार करते हैं, सब लोगों के साथ अनीत छोड़कर नीतिपूर्वक सुहृद्भाव रखते हैं, अतिशय भक्ति और विश्वासपूर्वक ईश्वर की शरणागति हो रहे हैं वही सच्चे सुखी हैं . वह अपने निर्मल चरित्रों को बारबार याद कर के परम संतोष पाते हैं . यद्यपि उन्का सत्कर्म मनुष्य मात्र न जान्ते हों इसी तरह किसी के मुख से एक बार भी अपने सुयश सुन्नें की संभावना न हो, तथापि वह अपने कर्तव्य काम में अपने को कृतकार्य देखकर अद्वितीय सुख पाते हैं उचित रीति से निष्प्रयोजन होकर किसी दुखिया का दुःख मिटाने की, किसी मूर्ख को ज्ञानोपदेश करने की एक एक बात याद आने से उन्को जो सुख मिल्ता है वह किसी को बड़े से बड़ा राज मिलने पर भी नहीं मिल सक्ता . उन्का मन पक्षपात रहित होकर सबके हित-साधन में लगा रहता है इस्कारण वह सबके प्यारे होने चाहिये परन्तु मूर्ख जलन से, हट से, स्वार्थपरता से अथवा उन्का भाव जाने बिना उन्से द्वेष करै, उनका बिगाड़ करना चाहें तो क्या कर सक्ते हैं ? उन्का सर्वस्व नष्ट हो जाय तो भी वह नहीं घबराते; उन्के हृदय में जो धर्म का खज़ाना इकठ्ठा हो रहा है उस्के छूने की किसको सामर्थ्य है ? आपने सुना होगा कि महाराज रामचद्र जी को राजतिलक के समय चौदह वर्ष का बनवास हुआ उस्समय उन्के मुख पर उदासी के बदले प्रसन्नता चमकनें लगी .

"इंगलैंड की गद्दी बाबत एलीज़ाबेथ और मेरी के बीच विवाद हो रहा था उस्समय लेडी जेन ग्रे को उस्के पिता, पति और स्वसुर नें गद्दी पर बिठाना चाहा परन्तु उस्को राज का लोभ न था वह होशियार, विद्वान

और धर्मात्मा स्त्री थी . उसने उन्को समझाया कि "मेरी निस्बत मेरी और एलिज़ाबेथ का ज्यादः हक है और इस काम से तरह, तरह के बखेड़े उठने की सभावना है मैं अपनी वर्तमान अवस्था मे बहुत प्रसन्न हूँ इसलिये मुझको क्षमा करो" पर अत मे उस्को अपनी मरज़ी के उपरात बडों की आज्ञा से राजगद्दी पर बैठना पडा परतु दस दिन नहीं बीते इतने मे मेरी ने पकड कर उसे कैद किया और उस्के पति समेत फाँसी का हुक्म दिया . वह फाँसी के पास पहुँची उस्समय उस्ने अपने पति को लटकते देख कर तत्काल अपनी याददाश्त मे यह तीन बचन लाटिन, यूनानी, और अग्रेज़ी मैं क्रम से लिखे कि "मनुष्य जाति के न्याय ने मेरी देह को सज़ा दी परतु ईश्वर मेरे ऊपर कृपा करेगा . और मुझको किसी पाप के बदले यह सज़ा मिली होगी तो अज्ञान अवस्था के कारण मेरे अपराध क्षमा किये जायेगे . और मैं आशा रखती हूँ कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर और भविष्यत काल के मनुष्य मुझ पर कृपा दृष्टि रखेंगे" उस्ने फाँसी पर चढ़ कर सब लोगों के आगे एक वक्तृता की जिस्मे अपने मरने के लिये अपने सिवाय किसी को दोष न दिया वह बोली कि "इगलैंड की गद्दी पर बैठने के वास्ते उद्योग करने का दोष मुझ पर कोई नहीं लगावेगा परंतु इतना दोष अवश्य लगावेगा कि "वह औरों के कहने से गद्दी पर क्यों बैठी ? उस्ने जो भूल की वह लोभ के कारण नहीं, केवल बड़ों के आज्ञावर्ती होकर की थी" सो यह करना मेरा फर्ज़ था परतु किसी तरह करो जिस्के साथ मैंने अनुचित व्यवहार किया उस्के हाथ मे प्रसन्नता से अपने प्राण देने को तयार हू" यह कहकर उस्ने बड़े धैर्य से अपनी जान दी" .

"दुखिया अपने मन को धैर्य देने के लिये चाहे जैसे समझा करें परतु साधारण रीति तो यह है कि उचित उपाय से हो अथवा अनुचित उपाय से हो जो अपना काम निकाल लेता है वही सुखी समझा जाता है. आप विचार कर देखेंगे तो मालूम हो जायगा कि आज भूमडल मैं जितने

अमीर और रईस दिखाई देते हैं उन्के बड़ों मैं सै बहुतों नें अनुचित कर्म कर कै यह वैभव पाया होगा" मुशी चुन्नीलाल ने कहा .

"कभी अनुचित कर्म करने सै सच्चा सुख नहीं मिलता, प्रथम तो मनु महाराज और लोमश ऋषि एक स्वर सै कहते हैं कि—

"कर अधर्म पहले बढ़त सुख पावत बहु भांत।
शत्रुन जय कर आप पुन मूल सहित बिनसात॥*"

फिर जिस तरह सत्कर्म का फल आत्मप्रसाद है इसी तरह दुष्कर्म का फल आत्मग्लानि, आतरिक दुःख अथवा पछतावा हुए बिना सर्वथा नहीं रहता. मनुस्मृति मै लिखा है—

"पापी समुझत पाप कर काहू देख्यो नाहि।
पै सुर अरु निज आतमा निस दिन देखत जाहिं॥"†

लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे "जिस्समय कोई निकृष्ट प्रवृत्ति अत्यत प्रबल होकर धर्मप्रवृत्ति की रोक नही मान्ती उस्समय हम उस्की इच्छा पूरी करनें के लिए पाप करते हैं परतु उस काम सै निवृत्ति होते ही हमारे मन मैं अत्यंत ग्लानि होती है हमारी आत्मा हमको धिक्कारती है और लोक परलोक के भय सै चित्त बिकल रहता है जिस्नें अपने अधर्म सै किसी का सुख हर लिया है अथवा स्वार्थपरता के बसवर्ती होकर उपकार के बदले अपकार किया है, अथवा छल बल सै किसी का धर्म भ्रष्ट कर

---

* अधर्मेणैधते तावत्ततो भद्राणि पश्यति।
ततः सपत्नान् जयति समूलस्तूविनश्यति॥
वर्द्धत्य धर्मेण नरस्ततो भद्राणि पश्यति।
ततः सपत्नान् जयति समूलस्तूविनश्यति॥

† मन्यन्ते वै पापकृतो न कश्चित् पश्यतीतिनः।
तास्तु देवाः पप्रश्यन्ति स्वस्यैवान्तर पूरुषः॥

दिया है, जो अपनें मन मैं समझता है कि मुझ सै फ़लानें का सत्यानाश हुआ, अथवा मेरे कारण फ़लानें के निर्मल कुल मै कलंक लगा, अथवा संसार मैं दुःख के सोते इतनें अधिक हुए मैं उत्पन्न न हुआ होता तो पृथ्वी पर इतना पाप कम होता, केवल इन बातों की याद उस्का हृदय विदीर्ण करनें के लिये बहुत है और जो मनुष्य ऐसी अवस्था मै भी अपनें मन का समाधान रख सकै उस्को मै बज्रहृदय समझता हूँ. जिसनें किसी निर्धन मनुष्य के साथ छल अथवा विश्वासघात करके उस्की अत्यत दुर्दशा की है उस्की आत्मग्लानि और आतरिक दुःख का बरणन् कौन कर सक्ता है ? अनेक प्रकार के भोग विलास करनेंवालों को भी समय पाकर अवश्य पछ-तावा होता है . जो लोग कुछ काल श्रद्धा और यत्नपूर्वक धर्म का आनद लेकर इस दलदल मै फस्ते हैं उन्सै आत्मग्लानि और आतरिक दाह का क्लेश पूछना चाहिये .

"टरकी का खलीफा मौन्तासर अपने बाप को मरवा कर उस्के महल का कीमती सामान देख रहा था उस्समय एक उम्दा तस्वीर पर उस्की दृष्टि पड़ी जिस्मैं एक सुशोभित तरुण पुरुष घोड़े पर सवार था और रत्नजटित "ताज" उस्के सिर पर शोभायमान था . उस्के आसपास फ़ारसी मैं बहुत सी इबारत लिखी थी खलीफा नें एक मुंशी को बुला कर वह इबारत पढ़वाई उस्मैं लिखा था कि "मै सीरोज़ खुसरो का बेटा हू मैंनें अपनें बाप का ताज लेनें के वास्तै उसे मरवा डाला पर उस्के पीछै वह ताज मै सिर्फ छ महीनें अपने सिर पर रख सका" यह बात सुन्ते ही खलीफा मौन्तासर के दिल पर चोट लगी और अपनें आतरिक दुःख सै वह केवल तीन दिन राज कर कै मर गया" .

"यह आत्मग्लानि अथवा आंतरिक क्लेश किसी नए पंछी को जाल मैं फँसनै सै भले ही होता हो परानें खिलाड़ियों को तो इस्की खबर भी नहीं होती ससार मैं इस्समय ऐसे बहुत लोग मोजूद हैं जो दूसरे के प्राण लेकर हाथ भी नहीं धोते" मास्टर शिभूदयाल नें कहा .

"यह बात आप नें दुरुस्त कही निस्संदेह जो लोग लगातार दुष्कर्म करते चले जाते हैं और एक अपराधी सै बदला लेनें के लिये आप अपराधी बन जाते हैं अथवा एक दोष छिपानें के लिए दूसरा दूषित कर्म करनें लगते हैं या जिन्को केवल अपने मतलब सै गर्ज़ रहती है उन्के मन सै धीरे धीरे अधर्म की अरुचि उठती जाती है" लाला ब्रजकिशोर कहने लगे "जैसे दुर्गंध मैं रहनेंवाले मनुष्यों के मस्तक मै दुर्गंध समा जाती है तब उन्को वह दुर्गंध नहीं मालूम होती अथवा बारबार तरवार को पत्थर पर मारने सै उस्की धार अपनें आप भोंटी होती जाती है इसी तरह ऐसे मनुष्यों के मन सै अभ्यास बस अधर्म की ग्लानि निकल कर उन्के मन पर निकृष्ट प्रवृत्तियों का पूरा अधिकार हो जाता है. विदुर जी कहते हैं—

"तासो पाप न करत बुध किये बुद्धि कौ नाश।
बुद्धि नास ते बहुरि नर पापै करत प्रकाश॥"*

यह अवस्था बडी भयकर है और सन्निपात के समान इस्सै आरोग्य होनें की आशा बहुत कम रहती है. ऐसी अवस्था मैं निस्सदेह शिंभूदयाल के कहनें मूजब उन्को अनुचित रीति सै अपनी इच्छा पूरी करनें मैं सिवाय आनद के कुछ पछतावा नहीं होता परतु उन्को पछतावा हो या न हो ईश्वर के नियमानुसार उन्है अपनें पापों का फल अवश्य भोगना पडता है. मनुस्मृति मै लिखा है—

"वेद, यज्ञ, तप, नियम, अरु बहुत भांति के दान।
दुष्टहृदय को जगत मैं करत न कछु कल्यान॥"†

---

* तस्मात् पापं न कुर्वीत पुरुषः शसितव्रतः।
पापं प्रज्ञा नाशयति क्रियमाण पुनः पुनः॥

† वेदास्त्यागश्चयज्ञाश्च नियमाश्च तपांसिच।
नविप्रभावदुष्टस्य सिद्धि गच्छन्ति कहिचित्॥

ऐसे मनुष्यों को समाज की तरफ से, राज की तरफ़ से, अथवा ईश्वर की तरफ से अवश्य दंड मिल्ता है और बहुधा वह अपना प्राण देकर उस्से छुट्टी पाते हैं इसलिए सुख दुःख का आधार इच्छाफल की प्राप्ति पर नहीं बल्कि सत्कर्म और दुष्कर्म पर है."

इस्तरह पर अनेक प्रकार की बातचीत करते हुए लाला मदनमोहन की बग्गी मकान पर लोट आई और लाला ब्रजकिशोर वहाँ से रुखसत होकर अपनें घर गए.

प्रकरण १३

बिगाड़ का मूल—विवाद

कोपै बिन अपराध, रीझै बिन कारन जु नर।
ताको शील असाध, शरद काल के मेघ जों॥*
(बिदुर प्रजागरे)

लाला मदनमोहन हवा खाकर आए उस्समय लाला हरकिशोर साठन की गठरी लाकर कमरे मै बैठे थे.

"कल तुम नें लाला हरदयाल साहब के साम्नें बडी ढिटाई की परतु मैं पुरानी बातों का बिचार करके उस्समय कुछ नहीं बोला" लाला मदनमोहन नें कहा.

---

* अकस्मा देव कुप्यति प्रसीदंत्य निमित्तज्ञः।
शीलमेतदसाधूनामभ्रंपारिप्लवं यथा॥

"आपनें बड़ी दया की पर अब मुझको आप सै एकात मैं कुछ कहना है, अवकाश हो तो सुन लीजिए" लाला हरकिशोर बोले .

"यहाँ तो एकात ही है तुमको जो कुछ कहना हो निस्सदेह कहो" लाला मदनमोहन ने जवाब दिया .

"मुझको इतना ही कहना है कि मैंने अब तक अपनी समझ मूजिब आपको अप्रसन्न करने की कोई बात नहीं की परतु मेरी सब बाते आपको बुरी लगती हैं तो मै भी ज्यादः आवा जाई रखनें मै प्रसन्न नहीं हूँ . किसी नें सच कहा है

"जब तो हम गुल थे मियाँ लगते हजारों के गले।
अब तो हम खार हुए सबसै किनारे ही भले॥"

ससार मैं प्रीति स्वार्थपरता का दूसरा नाम है समय निकले पीछै दूसरे सै मेल रखने की किसी को क्या गरज़ पडी है ? अच्छा ! महरबानी करके मेरे माल की कीमत मुझको दिलवा दे" हरकिशोर ने रुखाई सै कहा. "क्या तुम कीमत का तकाजा कर के लाला साहब को दबाया चाहते हो ?" मुंशी चुन्नीलाल बोले .

"हरगिज़ नहीं, मेरी क्या मजाल ?" हरकिशोर कहने लगे . "सब जान्ते हैं कि मेरे पास गाँठ की पूँजी नही है, मै जहाँ तहाँ सै माल लाकर लाला साहब के हुक्म की तामील कर देता था परतु अब की बार रुपे मिलने मै देर हुई कई एक़रार झूँटे हो गए इसलिए लोगों का विश्वास जाता रहा अब आज कल मैं उन्के माल की कीमत उन्के पास न पहुँचेगी तो वे मेरे ऊपर नालिश कर देंगे और मेरी इज्ज़त धूल मै मिल जायगी".

"तुम कुछ दिन धैर्य धरो, तुम्हारे रुपे का भुगतान हम बहुत जल्दी कर देंगे" लाला मदनमोहन नें कहा .

"जब मेरे ऊपर नालिश हो गई और मेरी साख जाती रही तो फिर रुपे मिलनें सै मेरा क्या काम निकला ?

"देखो अवसर को भलो जासो सुधरे काम।
खेती सूखे बरसबो घन को निपट निकाम॥"

मै जान्ता हूँ कि आपको अपनें कारण किसी गरीब की इज्ज़त मैं बट्टा लगाना हरगिज़ मजूर न होगा". लाला हरकिशोर नें. कुछ नरम पड कर कहा.

"तुम्हारा रुपया कहा जाता है? तुम ज़रा धैर्य रक्खो. तुमने यहा सै बहुत कुछ फायदा उठाया है, फिर अबकी बार रुपे मिलनें मै दो चार दिन की देर हो गई तो क्या अनर्थ हो गया? तुमको ऐसा कडा तकाज़ा करने मै लाज नहीं आती? क्या संसार सै मेल मुलाहज़ा बिल्कुल उठ गया?" मुशी चुन्नीलाल ने कहा

"मै भी इसी चारा विचार मै हूँ" हरकिशोर नें जवाब दिया "मैं तो माल देकर मोल चाहता हूँ. ज़रूरत के सबब सै तकाज़ा करता हूँ पर न जानें और लोगों को क्या हो गया जो बेसबब मेरे पीछै पड रहे हैं? मुझ सै उन्को बहुत कुछ लाभ हुआ होगा परतु इससमय वे सब 'तोता चश्म' हो गए. उन्ही के कारण मुझको यह तकाज़ा करना पडता है. जो आज कल मै मेरे लेनदारों का रुपया न चुका, तो वे निस्सदेह मुझपर नालिश कर देंगे और मैं ग़रीब अमीरों की तरह दबाव डालकर उन्को किसी तरह न रोक सकूगा?"

"तुम्हारी ठग विद्या हम अच्छी तरह जान्ते हैं, तुम्हारी ज़िद सै इस्समय तुम को फूटी कौडी न मिलेगी, तुम्हारे मन मैं आवे सो करो." मुंशी चुन्नीलाल नें कहा.

"जनाब ज़बान सम्हाल कर बोलिये. माल देकर क़ीमत मागना ठग विद्या है? गिरधर सच कहता है

"साईं नदी समुद्र सों मिली बड़प्पन जानि।
जात नास भयो आपनो माल महत की हानि॥

मान महत की हानि कहो अब कैसी कीजै।
जल खारो ह्वै गयो ताहि कहु कैसैं पीजै॥
कह गिरधर कविराय कच्छ मच्छन सकुचाई।
बड़ो फ़जीहतचार भयो नदियन को साईं॥"

"बस अब तुम यहाँ सै चल दो ऐसे बाज़ारू आदमियों का यहाँ कुछ काम नहीं है" मास्टर शिंभूदयाल नें कहा

"मैं नें किसी अमीर के लडके को बहकाकर बदचलनी सिखाई? या किसी अमीर के लड़के को भोग विलास मै डालकर उस्की दौलत ठग ली जो तुम मुझे बाज़ारू आदमी बताते हो?"

"तुम कपडा बेचनें आये हो या झगड़ा करनें आये हो?" मुंशी चुन्नीलाल पूछनें लगे.

"न मैं कपडा बेचने आया न मै झगडा करनें आया, मैं तो अपना रुपया वसूल करने आया हू. मेरा रुपया मेरी झोली मै डालिये फिर मैं यहाँ क्षण भर न ठैरूँगा."

"नहीं जी, तुमको ज़बरदस्ती यहाँ ठैरने का कुछ अख़्तयार नहीं है रुपे का दावा हो तो जाकर अदालत मै नालिश करो" मास्टर शिंभूदयाल बोले.

"तुम लोग अपनी गली के शेर हो यहाँ चाहे जो कह लो परतु अदालत मै तुम्हारी गीदड़ भपकी नहीं चल सक्ती. तुम नहीं जान्ते कि ज्यादः घिस्ने पर चदन सै भी आग निकलती है अच्छे आदमियों को ख़ातर शिष्टाचार सै चाहे जितना दबा लो परतु अभिमान और धमकी सै वह कभी नहीं दबता."

"तो क्या तुम हमको इन बातों सै दबा लोगे?" लाला मदनमोहन नें त्योरी चढ़ाकर कहा

"नहीं साहब, मेरा क्या मक्दूर है! मैं ग़रीब, आप अमीर. मुझको दिन भर रोज़गार धंधा करना पड़ता है, आप का सब दिन हँसी दिल्लगी

की बातों मै जाता है . मै दिन भर पैदल भटकता हूँ, आप सवारी बिना एक कदम नहीं चल्ते . मेरे रहनें की एक झोंपड़ी, आप के बड़े बड़े महल . मुल्क मैं अकाल हो, गरीब बिचारे भूखों मरते हों, आपके यहाँ दिन रात ये ही होहा, हीही रहेगी . सच है आप पर उन्का क्या हक है ? उनसै आपका क्या संबंध है ? परमेश्वर नें आपको मनमानी मोज करने के लिए दौलत दे दी फिर औरों के दुख दर्द मै पडनें की आपको क्या जरूरत रही ? आप के लिये नीति अनीति की कोई रोक नहीं है, आप—"

"क्यों जी ! तुम अपनी बकवाद नहीं छोडते. अच्छा जमादार इन्को हाथ पकड़ कर यहाँ सै बाहर निकाल दो और इन्की गठरी उठा कर गली मै फेंक दो" मुंशी चुन्नीलाल नें हुक्म दिया .

"मुझको उठानें को क्या ज़रूरत है ? मै आप जाता हूँ परतु तुमनें बेसबब मेरी इज्ज़त ली है इस्का परिणाम थोड़े दिन मैं देखोगे जिस तरह राजा द्रुपद ने बचपन मैं द्रोणाचार्य सै मित्रता करके राज पानें पर उन्का अनादर किया तब द्रोणाचाय ने कौरव पाडवों को चढा ले जाकर उस्की मुश्कें बँधवा ली थीं और चाणक्य नें अपने अपमान होने पर नद वंश का नाश करके अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर दिखाई थी, पृथ्वीराज नें सयोगता के बसवर्ती होकर चद और हाहुली राय को लोंडियों के हाथ पिटवाया तब हाहुली राय नें उस्का बदला पृथ्वीराज सै लिया था, इसी तरह परमेश्वर नें चाहा तो मै भी इस्का बदला आप सै लेकर रहूँगा" यह कह कर हरकिशोर नें तत्काल अपनी गठरी उठा ली और गुस्सै मैं मूछों पर ताव देता चला गया .

"ये बदला लेंगे ! ऐसे बदला लेनें वाले सैकड़ों झक मारते फिरते हैं" हरकिशोर के जाते ही मुशी चुन्नीलाल नें मदनमोहन को दिलासा देने के लिये कहा .

"जो यों किसी के बैर भाव सै किसी का नुक्सान हो जाया करै तो बस संसार के काम ही बद हो जायँ" मास्टर शिंभूदयाल बोले .

"सूर्य चद्रमा की तरफ़ धूल फेंकनेवाले अपने ही सिर पर धूल डालते हैं" पडित पुरुषोत्तम दास नें कहा. पर इन बातों सै लाला मदनमोहन को सतोष न हुआ.

"मै हरकिशोर को ऐसा नहीं जान्ता था, वह तो आज आपे सै बाहर हो गये. अच्छा! अब वह नालिश कर दें तो उस्की जवाबदिही किस तरह करनी चाहिये? मै चाहता हूँ कि चाहे जितना रुपया खर्च हो जाय परतु हरकिशोर के पल्लै फूटी कौडी न पड़े" लाला मदनमोहन नें अपनें स्वभावानुसार कहा.

मदनमोहन के निकटवर्ती जान्ते थे कि मदनमोहन जैसे हठीले हैं वैसे ही कमहिम्मत हैं, जिस्समय उन्को किसी तरह का घबडाट हो हरेक आदमी दिलजमई की झूँटी सच्ची बातें बनाकर उन्को अपनें काबू पर चढ़ा सक्ता है और मन चाहा फायदा उठा सक्ता है इसलिये अब चुन्नीलाल नें वह चाल डाली.

"यह मुकद्दमा क्या चीज है! ऐसे सैकडों मुकद्दमें आप के पुन्य प्रताप सै चुटकियों मै उडा सक्ता हूँ परतु इस्समय मेरे चित्त को ज़रा उद्वेग हो रहा है इसी सै अकल काम नहीं देती" मुशी चुन्नीलाल नें कहा.

"क्यों तुम्हारे चित्त के उद्वेग का क्या कारण है? क्या हरकिशोर की धमकी सै डर गये? ऐसा हो तो विश्वास रक्खो कि मेरी सब दौलत खर्च हो जायगी तो भी तुम्हारे ऊपर आँच न आने दूगा" लाला मदनमोहन नें कहा.

"नहीं, महाराज! ऐसी बातों सै मै कब डरता हू? और आप के लिए जो तकलीफ मुझको उठानी पड़ै उस्मै तो और मेरी इज्जत है. आपके उपकारों का बदला मै किसी तरह नहीं दे सक्ता, परंतु लड़की के ब्याह के दिन बहुत पास आ गये, तयारी अब तक कुछ नहीं हुई, ब्याह

आपकी नामवरी के मूजिब करना पड़ेगा, इस्सै इन दिनों मेरी अकल कुछ गुम सी हो रही है" मुशी चुन्नीलाल नें कहा .

"तुम धैर्य रक्खो तुम्हारी लड़की के ब्याह का सब खच हम देंगे" लाला मदनमोहन नें एक दम हामी भर ली .

"ऐसी सहायता तो इस सरकार सै सबको मिलती ही है परंतु मेरी जीविका का वृत्तात भी आपको अच्छी तरह मालूम है और घर गृहस्थ का खर्च भी आप सै छिपा नहीं है, भाई खाली बैठे हैं जब आप के यहाँ सै कुछ सहायता होगी तो ब्याह का काम छिड़ैगा, कपड़े लत्ते वगैरे की तैयारी मै महीनों लगते हैं" मुंशी चुन्नीलाल ने कहा .

"लो; ये दो सो रुपे कै नोट लेकर इस्समय तो काम चल्ता करो, और बातों के लिये बंदोबस्त पीछै सै कर दिया जायगा" लाला मदनमोहन नें नोट देकर कहा .

"जी नहीं, हुजूर ! ऐसी क्या जल्दी थी" मु शी चुन्नीलाल नोट जेब मैं रख कर बोले .

"यह भी अच्छी विद्या है" पडित जी नें भरमा भरमी सुनाई .

"मैं जान्ता हूँ कि प्रथम तो हरकिशोर नालिश ही नही करेंगे और की भी तो दम भर मैं खारिज करा दी जायगी" मुशी चुन्नीलाल नें कहा .

निदान लाला मदनमोहन बहुत देर तक इस प्रकार की बातों सै अपनी छाती का बोझ हल्का करके भोजन करनें गए और गुपचुप बैजनाथ के बुलानें के लिए एक आदमी भेज दिया .

प्रकरण १४

पत्र व्यवहार

अपनें अपनें लाभ को बोलत बैन बनाय ।
बेस्या बरस घटांवही जोगी बरस बढ़ाय ॥

वृ द .

लाला मदनमोहन भोजन करके आए उस्समय डाक के चपरासी नें लाकर चिट्ठियाँ दी. उन्मैं एक पोस्टकार्ड महरोली सै मिस्टर बेली नें भेजा था उस्मै लिखा था कि "मेरा बिचार कल शाम को दिल्ली आनें का है आप महरबानी करके मेरे वास्तै डाक का बदोबस्त कर दे और लौटती डाक मै मुझ को लिख भेजै" लाला मदनमोहन नें तत्काल उस्का प्रबध कर दिया .

दूसरी चिठ्ठी कलकत्ते सै हमल्टीन कपनी जुएलर (जोहरी) को आई थी उस्मै लिखा था "आपके आरडर के बमूजिब हीरों की पाकट चेन बन कर तैयार हो गई है, एक दो दिन मै पालिश करके आप के पास भेजी जायगी और इस्पर लागत चार हज़ार अदाज रहैगी. आप नें पन्ने की अँगूठी और मोतियों की नेकलेस के रुपे अब तक नहीं भेजे सो महरबानी करके इन् तीनों चीज़ों के दाम बहुत जल्द भेज दीजिए"

तीसरा फार्सी खत अल्लीपूर सै अब्दुर्रहमान मेट का आया था उस्मै लिखा था कि "रुपे जल्दी भेजिये नहीं तो मेरी आबरू मैं फर्क आ जायगा और आप का बड़ा हर्ज होगा कंकरबाले का रुपया बहुत चढ़ गया इस लिये उस्नें खेप भेजनी बंद कर दी. मजदूरों का चिट्ठा एक महीनें सै नहीं बटा इसलिए वह मेरी इज्जत लिया चाहते हैं . इस ठेके बाबत पाँच हज़ार रुपे सरकार सै आप को मिलनेंवाले थे वह मिले होंगे, महरबानी करके वह

कुल रुपे यहाँ मेज दीजिये जिस्सै मेरा पीछा छूटे . मुझको बडा अफ़सोस है कि इस ठेके मै आप को नुक्सान रहैगा परतु मैं क्या करूँ ? मेरे बस की बात न थी . ज़मीन बहुत ऊँची नीची निकली, मजदूर दूर, दूर सै दूनी मज़दूरी देकर बुलानें पड़े, पानी का कोसों पता न था मुझ सै हो सका जहाँ तक मैने अपनी जान लडाई . खैर इस्का इनाम तो हुजूर के हाथ है परतु रुपे जल्दी भेजिये, रुपयों के बिना यहाँ का काम घडी भर नहीं चल सक्ता."

लाला मदनमोहन नोकरों को काम बतानें और उन्की तन्खवाह का खर्च निकालने के लिये बहुधा ऐसे ठेके वगैरा ले लिया करते थे. नोकरों के विषय मैं उन्का बरताव बडा विलक्षण था . जो मनुष्य एक बार नोकर हो गया वह हो गया . फिर उस्सै कुछ काम लिया जाय या न लिया जाय, उस्के लायक़ कोई काम हो या न हो, वह अपना काम अच्छी तरह करे या बुरी तरह करे, उस्के प्रतिपालन करनें का कोई हक अपनें ऊपर हो या न हो, वह अलग नहीं हो सक्ता, ससार के अयश का ऐसा भय समा रहा है कि अपनी अवस्था के अनुसार उचित प्रबध सर्वथा नहीं होनें पाता . सब नोकर सब कामों मैं दखल देते हैं परंतु कोई किसी काम का जिम्मेवार नहीं है, और न कोई सम्हाल रखता है . मामूली तनख्वाह तो उन लोगों ने बादशाही पेंशन समझ रक्खी है . दस पद्रह रुपे महीनें की तनख्वाह मैं हज़ार पाँच सो रुपे पेशगी ले रखना, दो, चार हजार पैदा कर लेना कौन बडी बात है ? पाँच रुपे महीने के नोकर हों, या तीन रुपे महीनें के नोकर हों विवाह आदि का खर्च लाला साहब के जिम्मे समझते हैं, और क्यों न समझैं ? लाला साहब की नोकरी करें तब विवाह आदि का खर्च लेनें कहाँ जायँ ? मदत का दारोगा मदत मै चीज़ बस्त लानेवाले चीज़ बस्त मैं, दुकान के गुमाश्ते दुकान मैं मनमाना काम बना रहे हैं जिस्ने जिस काम के वास्तै जितना रुपया पहले ले लिया वह उस्के बाप दादे का हो चुका, फिर हिसाब कोई नहीं पूछता . घाटे नफ़े और लेन देन

की जाँच परताल करनें के लिये कागज कोई नहीं देखता . हाल मै लाला मदनमोहन नें अपनें नोकरों के प्रतिपालन के लिए अल्लीपुर रोड का ठेका ले रक्खा था जिस्मैं सरकार सै ठेका लिया उस्सै दूनें रुपे अब तक खर्च हो चुके थे पर काम आधा भी नहीं बना था और खर्च के वास्तै वहाँ सै ताक़ीद पर ताकीद चली आती थी परमेश्वर जानें अब्दुर्रहमान को अपने घर खर्च के वास्तै रुपे की ज़रूरत थी या मदत के वास्तै रुपे की ज़रूर थी.

चोथा ख़त एक अखबार के एडीटर का था उस्मै लिखा था कि "आपनें इस महीनें की १३ वों तारीख का पत्र देखा होगा उस्मै कुछ वृत्तात आप का भी लिखा गया है इस्समय के लोगों को खुशामद बहुत प्यारी है और खुशामदी चैन करते हैं परतु मेरा यह काम नहीं . मैंनें जो कुछ लिखा वह सच, सच लिखा है . आप से बुद्धिमान, योग्य, सच्चे अभिज्ञ, उदार और देशहितैषी हिंदुस्थान मैं बहुत कम हैं इसी सै हिंदुस्थान की उन्नति नहीं होती, विद्याभ्यास के गुण कोई नहीं जान्ता, अखबारों की कदर कोई नहीं करता, अखबार जारी करनेंवालों को नफे के बदले नुक़सान उठाना पडता है . हम लोग अपना दिमाग खिपा कर देश की उन्नति के लिए आर्टिकल लिखते हैं, परंतु अपने देश के लोग उस्की तरफ आँख उठा कर भी नहीं देखते इस्सै जी टूटा जाता है . देखिये अखबार के कारण मुझ पर एक हज़ार रुपे का कर्ज़ हो गया और आगे को छापेखाने का खर्च निकलना भी बहुत कठिन मालूम होता है . प्रथम तो अखबार के पढनेवाले बहुत कम, और जो हैं उन्मैं भी बहुधा कार-स्पोन्डेन्ट बन कर बिना दाम दिये पत्र लिया चाहते हैं और जो गाहक बनते हैं उन्मै भी बहुधा दिवालिये निकल जाते हैं . छापेखानें का दो हज़ार रुपया इस्समय लोगों मैं बाकी है परतु फूटी कौड़ी पटनें का भरोसा नहीं . कोई आप सा साहसी पुरुष देश का हित विचार कर इस डूबती नाव को सहारा लगावे तो बेडा पार हो सक्ता है नहीं तो ख़ैर जो इच्छा परमेश्वर की ."

एक अखबार के एडीटर की इस लिखावट से क्या, क्या बातें मालूम होती हैं! प्रथम तो यह कि हिंदुस्थान में विद्या का, सर्वसाधारण की अनुमति जानने का, देशांतर के वृत्तांत जानने का, और देशोन्नति के लिये देश हितकारी बातों पर चर्चा करने का व्यसन अभी बहुत कम है. वलायत की बस्ती हिंदुस्थान की बस्ती से बहुत ही थोड़ी है तथापि वहाँ अखबारों की इतनी वृद्धि है कि बहुत से अखबारों की डेढ़ दो लाख कापियाँ निकलती हैं. वहाँ के स्त्री, पुरुष, बूढे, बालक, गरीब, अमीर, सब अपने देश का वृत्तांत जानते हैं और उसपर वादा विवाद करते हैं किसी अखबार मे कोई बात नई छपती है तो तत्काल उसकी चर्चा सब देश मे फैल जाती है और देशांतर को तार दौड़ जाते हैं परंतु हिंदुस्थान में ये बात कहाँ? यहाँ बहुत सी अखबारों की पूरी दो, दो सौ कापियाँ भी नहीं निकलतीं, और जो निकलती हैं उन्में भी जानने के लायक बातें बहुत ही कम रहती हैं क्योंकि बहुत से एडीटर तो अपना कठिन काम संपादन करने की योग्यता नहीं रखते और वलायत की तरह उन्को और विद्वानों की सहायता नहीं मिलती, बहुत से जान बूझ कर अपना काम चलाने के लिए अजान बन जाते हैं इसलिये उचित रीति से अपना कर्तव्य संपादन करनेवाले अखबारों की संख्या बहुत थोडी है पर जो है उसको भी उत्तेजन देनेवाला और मन लगाकर पढ़नेवाला कोई नहीं मिलता. बड़े बड़े अमीर, सौदागर, साहूकार, ज़मींदार, दस्तकार जिन्की हानि लाभ का और देशों से बड़ा संबंध है वह भी मन लगाकर अखबार नहीं देखते बल्कि कोई कोई तो अखबार के एडीटरों को प्रसन्न रखने के लिए अथवा गाहकों के सूचीपत्र में अपना नाम छपाने के लिये, अथवा अपनी मेज़ को नये नये अखबारों से सुशोभित करने के लिये, अथवा किसी समय अपना काम निकाल लेने के लिये अखबार खरीदते हैं! जिस्पर अखबार निकालनेवालों की यह दशा है! लाला मदनमोहन इस खत को पढ़ कर सहायता करने के लिए बहुत ललचाये परंतु रुपे की तंगी के कारण तत्काल कुछ न कर सके.

"हुजूर ! मिस्टर रसल के पास रुपे आज भेजनें चाहियें" मुंशी चुन्नीलाल नें डाक देखे पीछै याद दिवाई .

"हाँ ! मुझको बहुत खयाल है परंतु क्या करूँ ? अब तक कोई बानक नहीं बना." लाला मदनमोहन बोले .

"थोडी बहुत रक़म तो मिस्टर ब्राइट के यहाँ भी जरूर भेजनी पडेगी" मास्टर शिंभूदयाल नें अवसर पाकर कहा .

"हाँ, और हरकिशोर नें नालिश कर दी तो उस्सै जवाब दिही करने के लिये भी रुपे चाहियेंगे" लाला मदनमोहन चिंता करने लगे .

"आप चिंता न करें, जोतिष सै सब होनहार मालूम हो सक्ता है . चाणक्य नें कहा है—

"का ऐश्वर्य विशाल मैं का मोटे दुख पाहिं ।
रस्सी बांध्यो होय जों पुरुष दैव बस माहिं ॥*"

इसलिए आपको कुछ आगे का वृत्तांत जान्ना हो, तो आप प्रश्न करिये । जोतिष सै बढकर होनहार जान्नें का कोई सुगम मार्ग नहीं है" पंडित पुरुषोत्तम दास नें लाला मदनमोहन को कुछ उदास देखकर अपना मतलब गाँठनें के लिये कहा . वह जान्ता था कि निर्बल चित्त के मनुष्य सुख मैं किसी बात की ग़र्ज़ नहीं रखते परंतु घबराट के समय हर तरफ़ को सहारा तकते फिरते हैं .

"विद्या का प्रकाश प्रति दिन फैल्ता जाता है इसलिये अब आप की बातों मैं कोई नहीं आवेगा" मास्टर शिंभूदयाल नें कहा .

"यह तो आजकल के सुधरे हुओं की बात है परंतु वे लोग जिस विद्या का नाम नहीं जान्ते उस्मैं उन्की बात कैसे प्रमाण हो ?" पंडित जी नें जवाब दिया .

---

* ऐश्वर्ये वासु विस्तीर्णे व्यसनें वापि दारुणे ।
रज्वेव पुरुषो बद्धः कृतातेनोपनीयते ॥

"अच्छा ! आप करेले के सिवाय और क्या जान्ते हैं ? आप को मालूम है कि नई तहकीकात करनें वालों नें कैसी, कैसी दूरबीने बनाकर ग्रहों का हाल निश्चय किया है ?" मास्टर शिंभूदयाल बोले .

"किया होगा, परतु हमारे पुरुखों ने भी इस विषय मै कुछ कसर नहीं रक्खी" पडित पुरुषोत्तम दास कहनें लगे . "इस समय के विद्वानों ने बडा खर्च करके जो कलें ग्रहों का बृत्तात निश्चय करने के लिये बनाई हैं हमारे बडों ने छोटी, छोटी नलियों और बाँस की छडियों के द्वारा उससै बढकर काम निकाला था . सस्कृत की बहुत सी पुस्तकें नष्ट हो गई, योगाभ्यास आदि बिद्याओं का खोज नहीं रहा परतु फिर भी जो पुस्तकें अब मौजूद हैं उन्मै ढूँढनें वालों के लिए कुछ थोडा खज़ाना नहीं है . हाँ आप की तरह कोई कुछ ढूँढ भाल करे बिना दूर ही सै "कुछ नहीं" "कुछ नहीं" कह कर बात उड़ा दे तो यह जुदी बात है."

"सस्कृत विद्या की तो आजकल के सब विद्वान एक स्वर होकर प्रशसा करते हैं परंतु इस्समय जोतिष की चर्चा थी सो निस्संदेह जोतिष मैं फलादेश की पूरी बिध नहीं मिल्ती शायद बतानेंवालों की भूल हो . तथापि मैं इस विषय मै किसी समय तुम सै प्रश्न करूँगा और तुम्हारी बिध मिल जायगी तो तुम्हारा अच्छा सत्कार किया जायगा" लाला मदनमोहन नें कहा और यह बात सुन कर पडित जी के हर्ष की कुछ हद न रही .

———

प्रकरण १५

प्रिय अथवा पिय्

दमयन्ती बिलपत हुती बन मैं अहि भय पाइ।
अहि बध बधिक अधिक भयो ताहू ते दुखदाइ॥
नलोपाख्याने

"ज्योतिष की बिध पूरी नहीं मिल्ती इसलिये उस्पर विश्वास नहीं होता परंतु प्रश्न का बुरा उत्तर आवे तो प्रथम ही सै चित्त ऐसा व्याकुल हो जाता है कि उस काम के अचानक होने पर भी वैसा नहीं होता, और चित्त का असर ऐसा प्रबल होता है कि जिस वस्तु की संसार मैं सृष्टि ही न हो वह भी वहम समा जानें सै तत्काल दिखाई देनें लगती है. जिस्पर जोतिषी ग्रहों को उलट पुलट नहीं कर सक्ते, अच्छे बुरे फल को बदल नहीं सक्ते, फिर प्रश्न करने सै लाभ क्या? कोई ऐसी बात करनी चाहिये जिस्सै कुछ लाभ हो" मुशी चुन्नीलाल ने कहा.

"आप हुक्म दे तो मैं कुछ अर्ज करूँ?" बिहारी बाबू बहुत दिन सै अवसर देख रहे थे वह धीरे सै पूछनें लगे.

"अच्छा कहो" मुशी चुन्नीलाल नें मदनमोहन के कहने सै पहले ही कह दिया.

"भोजला पहाडी पर एक बडे धनवान् जागीरदार रहते हैं उन्को ताश खेलनें का बडा व्यसन है वह सदा बाज़ी बद कर खेलते हैं और मुझ को इस खेल के पत्ते ऐसी राह सै लगानें आते हैं कि जब खेलै तब अपनी ही जीत हो. मैंनें उन्को कितनी ही बार हरा दिया इसलिये

अब वह मुझको नहीं पतियाते परंतु आप चाहैं तो मैं वह खेल आप को सिखा दूँ फिर आप उन्सै निधड़क खेलैं आप हार जायँगे तो वह रक़म मैं दूँगा और जीतें तो उस्मैं सै मुझको आधी ही दैं" बिहारी बाबू नें जुए का नाम छिपा कर मदनमोहन को आसामी बनानें के वास्तै कहा .

"जीतेंगे तो चोथाई देंगे परतु हारने के लिये रकम पहले जमा कर दो" मुंशी चुन्नीलाल लाला मदनमोहन की तरफ़ सै मामला करनें लगे .

"हारनें के लिये पहले पाँच सौ की थैली अपनें पास रख लीजिये परंतु जीत मैं मैं आधा हिस्सा लूँगा" बिहारी बाबू हुजत करनें लगे .

"नहीं, जो चुन्नीलाल नें कह दिया वह हो चुका, उस्सै अधिक हम कुछ न देंगे" लाला मदनमोहन नें कहा .

और बडी मुश्किल सै बिहारी बाबू उस्पर कुछ, कुछ राज़ी हुए परतु सौभाग्य बस उस्समय बाबू बैजनाथ आ गए इस्सै सब काम जहाँ का तहाँ अटक गया .

"बिहारी बाबू सै किस बात का मामला हो रहा है ?" बाबू बैजनाथ नें पहुँचते ही पूछा .

"कुछ नहीं, यह तो ताश के खेल का ज़िक्र था" मुशी चुन्नीलाल ने साधारण रीति सै कहा .

"बिहारी बाबू कहते हैं कि "मैं पत्ते लगाना सिखा दूं जिस्तरह पत्ते लगाकर आप एक धनवान जागीरदार सै ताश खेलैं और बाज़ी बद लें जो हारेंगे तो सब नुक्सान मैं दूगा और जीतेंगे तो उस्मैं सै चौथाई ही मै लूँगा" लाला मदनमोहन नें भोले भाव सै सच्चा वृत्तात कह दिया .

"यह तो खुला जुआ है और बिहारी बाबू आप को चाट लगानें के लिये प्रथम यह सब्ज़ बाग दिखाते हैं" बाबू बैजनाथ कहनें लगे "जिस तरह सै पहले एक मेव ने आप को गड़ी दौलत का तांबे पत्र दिखाया था, और वह सब दौलत गुप चुप आपके यहाँ ला डालनें की हामी भरता था परतु आप सै खोदनें के बहानें सो, पचास रुपे मार ले गया तब सै

लौट कर सूरत तक न दिखाई ! आप को याद होगा कि आपके पास एक बदमाश स्याम का शाहज़ादा बन कर आया था और उस्नें कहा था कि "मैं हिंदुस्थान की सैर करने आया हूँ मेरे जहाज़ नें कलकत्ते मैं लंगर कर रक्खा है मुझको यहाँ खर्च की ज़रूरत है आप अपने अदतिये का नाम मुझे बता दें मैं अपने नोकरों को लिखकर उस्के पास रुपे जमा कर दूँगा जब उस्की इत्तला आप के पास आ जाय तब आप रुपे मुझे दे दें" निदान आप के अदतिये के नाम सै तार आप के पास आ गया और आप ने रुपे उस्को दे दिये, परंतु वह तार उन्हीं के किसी साथी नें आप के अदतिये के नाम सै आप को दे दिया था इसलिये यह भेद खुला उस्समय शाहज़ादे का पता न लगा ! एक बार एक मामला करानेंवाला एक मामला आप के पास लाया था जब उस्नें कहा था कि "सरकार मैं रसद के लिये लकड़ियों की ख़रीद है और तहसील मैं ढाई मन का भाव है. मैं सरकारी हुक्म आप को दिखा दूँगा आप चार मन के भाव मैं मेरी मारफ़त एक जगलवाले की लकडी लेनी कर लें" यह कह कर उस्नें तहसील सै निर्खनामे की दस्तखती नक़ल लाकर आप को दिखा दी पर उस भाव मैं सरकार की कुछ ख़रीददारी न थी ! इन्सै सिवाय जिस्तरह बहुत सै रसायनी तरह, तरह का धोका देकर सीधे आदमियों को ठगने फिरते हैं इसी तरह यह भी जुआरी बनाने की एक चाल है. जिस काम मैं बे लागत और बे महनत बहुत सा फायदा दिखाई दे उस्मैं बहुधा कुछ न कुछ धोकेबाज़ी होती है ऐसे मामलेवाले ऊपर सै सब्ज़ बाग दिखा कर भीतर कुछ न कुछ चोरी जरूर रखते हैं".

"बाबू साहब ! मैनें जिस राह सै ताश खेलने के वास्तै कहा था वह हरगिज़ जुए मैं नहीं गिनी जा सक्ती परतु आप उस्को जुआ ही ठैराते हैं तो कहिये जुए मैं क्या दोष है ?" बिहारी बाबू मामला बिगड़ता देख कर बोले "दिवाली के दिनों मैं सब संसार जुआ खेल्ता है और असल मैं जुआ एक तरह का व्यापार है जो नुक्सान के डर सै जुआ

वर्जित हो तो और सब तरह के व्यापार भी वर्जित होने चाहियें. और व्यापार मै घाटा देने के समय मनुष्य की नीयत ठिकाने नहीं रहती परतु जुए के लेन देन बाबत अदालत की डिक्री का डर नही है तो भी जुआरी अपना सब माल अस्बाब बेचकर लेनदारों की कौडी, कौडी चुका देता है उस्के पास रुपया हो तो वह उस्के लुटानें मै हाथ नहीं रोकता और अपने काम मैं ऐसा निमग्न हो जाता है कि उसै खानें पीनें तक की याद नही रहती. उस्के पास फूटी कौडी न रहै तो भी वह भूखों नहीं मरता फड पर जाते ही जीते जुआरी दो, चार गडे देकर उस्का काम अच्छी तरह चला देते हैं."

"राम ! राम ! दिवाली पर क्या ? समझवार तो स्वप्न मै भी जुए के पास नहीं जाते जुए सै व्यापार का क्या सबध ? उस्की कुछ सूरत मिल्ती है तो बदनी सै मिल्ती है पर उस्को जुए सै अलग कौन समझता है ? उस्को प्रतिष्ठित साहूकार कब करते हैं ? सरकार मै उस्की सुनाई कहा होती है ? निरी बातों का जमा खर्च व्यापार मै सर्वथा नही गिना जाता. व्यापार के तत्व ही जुदे हैं. भविष्यत काल की अवस्था पर दृष्टि पहुँचाना, परता लगाना, माल का खरीदना, बेचना या दिसावर को बीजक भेजकर माल मँगाना और माल भेजकर बदला भुगताना, व्यापार है परतु जुए मै यह बाते कहाँ ? जुआ तो सब अधर्मों की जड है. मनु और विदुर जी एक स्वर सै कहते हैं

"सुनी पुरातन बात जुआ कलह को मूल है ।
हांसी हू मै तात तासो नहि खेलैं चतुर ॥"*

बाबू बैजनाथ ने कहा.

"आप वृथा तेज होते हैं मै खुद जुए का तरफदार नहीं हूँ परतु विवाद के समय अच्छी अच्छी युक्तियों सै अपना पक्ष प्रबल करना चाहिये.

---

* द्यूतमेतत्पुराकल्पे दृष्ट वैरकरम् महत् ॥
तस्मात् द्यूतन्नसेवेत हास्यार्थमपि बुद्धिमान् ॥

क्रोध करके गाली देने सै जय नहीं होती . आप की दृष्टि मै मैं झूटा हू परतु मेरी सदुक्तियों को आप झूटा नहीं ठैरा सक्ते मुझ पर किसी तरह का दोषारोप किया जाय तो उस्को युक्तिपूर्वक साबित करना चाहिये और और बातों मै मेरी भूल निकालनें सै क्या वह दोष साबित हो जायगा ? "

"जुये का नुक्सान साबित करनें के लिये विशेष परिश्रम नहीं करना पड़ेगा देखो नल और युधिष्ठिरादि की बरबादी इस्का प्रत्यक्ष प्रमाण है" बाबू बैजनाथ बोले .

"मैं आपसै कुछ अर्ज़ नहीं कर सक्ता परतु—"

"बस जी ! रहने दो बाबू साहब कुछ तुम सै बहस करने के लिये इस्समय यहाँ नही आये" यह कह कर लाला मदनमोहन बाबू बैजनाथ को अलग ले गए और हरकिशोर की तकरार का सब बृत्तात थोड़े मै उन्हैं सुना दिया .

"मैं पहले हरकिशोर को अच्छा आदमी समझता था परतु कुछ दिन सै उस्की चाल बिल्कुल बिगड गई उस्को आप की प्रतिष्ठा का बिल्कुल बिचार नहीं रहा और आज तो उस्नें ऐसी ढिठाई की कि उस्को अवश्य दड होना चाहिये था सो अच्छा हुआ कि वह अपने आप यहाँ सै चला गया, उस्के चले जाने सै उस्के सब हक जाते रहे अब कुछ दिन धक्के खाने सै उस्की अकल अपनें आप ठिकानें आ जायगी ."

"और उसने नालिश कर दी तो ?" लाला मदनमोहन घबरा कर बोले.

"क्या होगा ? उस्के पास सबूत क्या है ? उस्का गवाह कौन है ? वह नालिश करैगा तो हम क़ानूनी पाइट सै उस्को पलट देंगे परंतु हम जान्ते हैं कि यहाँ तक नोबत न पहुँचेगी . अच्छा ! उस्के पास आप की कोई सनद है ?"

"कोई नहीं"

"तो फिर आप क्यों डरते हैं ? वह आप का क्या कर सक्ता है !"

"सच है उस्को रुपे की ग़र्ज होगी तो वह नाक रगडता आप चला आयगा हम उस्के नीचे नहीं दबे वही कुछ हमारे नीचे दब रहा है."

"आप इस विषय मैं बिल्कुल निश्चिंत रहें."

"मुझको थोड़ा सा खटका लाला ब्रजकिशोर की तरफ़ का है यह हर बात मैं मेरा गला घोंटते हैं और मुझको तोते की तरह पिंजरे मै बंद रक्खा चाहते हैं."

वकीलों की चाल ऐसी ही होती है वह प्रथम धरती आकाश के कुल्लाबे मिलाकर अपनी योग्यता जताते हैं फिर दूसरे को तरह, तरह का डर दिखाकर अपना आधीन बनाते हैं और अंत मैं आप उस्के घर बार के मालक बन बैठते हैं परंतु चाहे जैसा फ़ायदा हो मैं तो ऐसी परतंत्रता सै रहने को अच्छा नहीं समझता."

"मेरा भी यही विचार है मैं जों जों दबता हू वह ज्यादः दबाते जाते हैं इसलिये अब नहीं दबा चाहता."

"आप को दबनें की क्या ज़रूरत है ? जब तक आप इनको मुंहतोड जबाब न देंगे यह सीधे न होंगे, लाला ब्रजकिशोर आप के घर के टुकड़े खा खा कर बढ़े हुए थे वह दिन भूल गये !"

लाला मदनमोहन नें बाबू बैजनाथ की नेक सलाहों का बहुत उपकार माना और वह लाला मदनमोहन सै रुखसत होकर अपनें घर गए.

प्रकरण १६ .

सुरा (शराब)

जे निंदित कर्म न डरहिं करहि काज शुभ जान ।
रक्षैं मत्र प्रमाद तज करहिं न ते मदपान ॥*
(बिदुरनीति)

"अब तो यहाँ बैठे, बैठे जी उखताता है चलो कहीं बाहर चल कर दस, पाच दिन सैर कर आवैं" लाला मदनमोहन नें कमरे मैं आ कर कहा .

"मेरे मन मैं तो यह बात कई दिन सै फिर रही थी परतु कहनें का समय नहीं मिला" मास्टर शिंभूदयाल बोले .

"हुज़ूर ! आजकल कुतब मै बडी बहार आ रही है थोडे दिन पहले एक छींटा हो गया था इस्सै चारों तरफ़ हरियाली छा गई इस्समय झरनें की शोभा देखनें लायक है" मुशी चुन्नीलाल कहनें लगे .

"आ हा ! वहाँ की शोभा का क्या पूछना है ! आम के मौर की सुगंधी सै सब अमरैयें महक रही हैं उस्की लहलही लताओं पर बैठकर कोयल कुहुकती रहती है घनघोर वृक्षों की घटा सी छटा देख कर मोर नाचा करते हैं, नीचै झरना झरता है ऊपर बेल और लताओं के मिलनें सै तरह तरह की रमणीक कुजै और लता-मडप बन गये हैं रग, रग के फूलों की बहार जुदी ही मन को लुभाती है फूलों पर मदमाते भौरों की

---

* अकार्यं कारणाद्भीतः कार्याणाच विवर्जनात् ।
अकाले मत्र मेदाच्च येनमाद्येन्नतत्पिबेत् ॥

गुजार और भी आनद बढ़ाती है शीतल मद सुगंधित हवा सै मन अपनें आप खिला जाता है निर्मल सरोवरों के बीच बारहदरी मैं बैठकर चहर और फुआरों की शोभा देखने सै जी कैसा हरा हो जाता है ? वृक्षों की गहरी छाया मैं पत्थर के चटानों पर बैठकर यह बहार देखनें सै कैसा आनंद आता है ." पडित पुरुषोत्तम दास नें कहा .

'पहाड की ऊँची चोटियों पर जानें सै कुछ और विशेष चमत्कार दिखाई देता है जब वहाँ सै नीचे की तरफ देखते हैं कहीं बर्फ, कहीं पत्थर की चटानें, कही बड़ी बड़ी कंदराएँ, कहीं पानी बहने के घाटों मै कोसों तक वृक्षों की लंगतार, कही सूअर, रीछ और हिरनों के झुड, कही जोर सै पानी का टकराकर छींट छींट हो जाना और उन्मै सूर्य की किर्णों के पडनें सै रंग, रंग के प्रतिबिंबों का दिखाई देना, कहीं बादलों का पहाड सै टकराकर अपने आप बरस जाना, बरसा की झड, अपनें आस पास बादलों का लूम झूम कर घिर आना अति मनोहर दिखाई देता है" मास्टर शिभूदयाल नें कहा .

"कुतब मैं ये बहार नहीं है तो भी वो अपनी दिल्लगी के लिये बहुत अच्छी जगह है" मुशी चुन्नीलाल बोले .

"रात को चाँद अपनी चाँदनी सै सब जगत को रुपहरी बना देता है उस्समय दरया किनारे हरियाली के बीच मीठी तान कैसी प्यारी लगती है ?" हकीम अहमद हुसैन ने कहा . "पानी के झरनें की झनझनाहट, पछियों की चहचहाहट, हवा की सनसनाहट, बाजे के सुरों सै मिल कर गानें वाले की लय को चौगुना बढा देते हैं . आहा ! जिस समय यह समा आँख के साम्नें हो स्वर्ग का सुख तुच्छ मालूम देता है ."

"जिस्मै यह बसंत ऋतु तो इसके लिए सब सै बढ़कर है" पडित जी कहनें लगे "नई कोंपल, नए पत्ते, नई कलो, नए फूलों सै सज सजाकर वृक्ष ऐसे तैयार हो जाते हैं जैसे बुड्ढों मै नए सिर सै जवानी आ जाय ."

"निस्सदेह, वहाँ कुछ दिन रहना हो, सुख भोग की सब सामग्री मौजूद हो और भीनी भीनी रात मै ताल सुर के साथ किसी पिकबयनी की आवाज़ आकर कान मै पड़े तो पूरा आनद मिले" मास्टर शिभूदयाल नें कहा.

"शराब की चस बिना यह सब मज़ा फीका है" मुशी चुन्नीलाल बोले.

"इसमै कुछ संदेह नहीं" मास्टर शिभूदयाल ने सहारा लगाया "मन की चिता मिटाने के लिये तो ये अक्सीर का गुण रखती है इस्की लहरों के चढाव उतार मै स्वर्ग का सुख तुच्छ मालूम होता है इस्के जोश मै बहादुरी बढती है बनावट और छिपाव दूर हो जाता है हरेक काम मै मन खूब लगता है".

'बस, विशेष कुछ न कहो ऐसी बुरी चीज़ की तुम इतनी तारीफ करते हो इस्से मालूम होता है कि तुम इस्समय भी उसी के बसवर्ती हो रहे हो" बाबू बैजनाथ कहनें लगे. "मनुष्य बुद्धि के कारण और जीवों से उत्तम है फिर जिस्के पान से बुद्धि विकार हो, किसी काम के परिणाम की खबर न रहै, हरेक पदार्थ का रूप और से और जाना जाय, स्वेच्छाचार की हिम्मत हो काम क्रोधादि रिपु प्रबल हों, शरीर जर्जर हो वह कैसे अच्छी समझी जाय?"

"यों तो गुण दोष से खाली कोई चीज़ नहीं है परतु थोडी शराब लेने से शरीर मैं बल और फुर्ती तो ज़रूर मालूम होती है" मुंशी चुन्नीलाल ने कहा.

"पहले थोडी शराब पीनें से निस्सदेह रुधिर की गति तेज़ होती है, नाडी बलवान होती है और शरीर मै फुर्ती पाई जाती है परंतु पीछै उतनी शराब का कुछ असर नहीं मालूम होता इस लिये वह धीरे धीरे बढानी पडती है उस्के पान किये बिना शरीर शिथिल हो जाता है, अन्न हजम नहीं होता, हात पाँव काम नही देते. पर बढ़ानें से बढ़ते, बढ़ते वो ही

शराब प्राणघातक हो जाती है . डाक्टर पेरेरा लिखते हैं कि शराब से दिमाग और उदर आदि के अनेक रोग उत्पन्न होते हैं, डाक्टर कार्पेन्टर नें इस बाबत एक पुस्तक रची है जिस्में बहुत से प्रसिद्ध डाक्टरों की राय से साबित किया है कि शराब से लकवा, मदाग्नि, बात, मूत्र रोग, चर्म रोग, फोडा फुसी और कंपवायु आदि अनेक रोग उत्पन्न होते हैं, शराबियों की दुर्दशा प्रति दिन देखी जाती है, कभी कभी उनका शरीर सूखे काठ की तरह अपनें आप भभक उठता है. दिमाग मै गर्मी बढनें से बहुधा लोग बावले हो जाते हैं ."

"शराब मैं इतनें दोष होते तो अंग्रेज़ों मै शराब का इतना रिवाज़ हरगिज़ न पाया जाता" मास्टर शिभूदयाल बोले .

"तुमको मालूम नहीं है बलायत के सैकडों डाक्टरों नें इस्के विपरीत राय दी है और वहाँ सुरापान निवारिणी सभा के द्वारा बहुत लोग इसे छोडते जाते हैं परतु वह छोड़ें तो क्या और न छोड़ें तो क्या ? इंद्र के परस्त्री (अहिल्या) गमन से क्या वह काम अच्छा समझ लिया जायगा ? अफ़सोस ! हिंदुस्थान मैं यह दुराचार दिन दिन बढता जाता है यहाँ के बहुत से कुलीन युवा छिप छिप कर इस्में शामिल होनें लगे हैं पर जब इंगलैंड जैसे ठंडे मुल्क मैं शराब पीने से लोगों की यह गत होती है तो न जानें हिंदुस्थानियों का क्या परिणाम होगा और देश की इस दुर्दशा पर कौन्से देश हितैषी की आँखों से आँसू न टपकेंगे ."

"अब तो आप हद से आगे बढ़ चले" मुशी चुन्नीलाल नें कहा .

"नहीं, हरगिज़ नहीं मैं जो कुछ कहता हूँ यथार्थ कहता हूँ देखो इसी मदिरा के कारण छप्पन कोटि यादवों का नाश घड़ी भर मैं हो गया, इसी मदिरा के कारण सिकदर नें भर जवानी मैं अपनें प्राण खो दिये . मनुस्मृति मैं लिखा है—

"द्विजघाती, मद्यप, बहुरि चोर, गुरु-स्त्री मीत।
महापातकी है सोऊ जाकी इन सों प्रीत॥"

इसी तरह कुरान मैं शराब के स्पर्श तक का महा दोष लिखा है."

"आज तो बाबू साहब नें लाला ब्रजकिशोर की गद्दी दबा ली" मुंशी चुन्नीलाल नें मुस्करा कर कहा.

"राम, राम उन्का ढग तो दुनिया सै निराला है वह क्या अपनी बातचीत मैं किसी को एक अक्षर बोलनें देते हैं" मास्टर शिंभूदयाल बोले.

"उन्की कहन क्या है अर्गन बाजा है एक बार चाबी दे दी, घंटों बजता रहा." मुंशी चुन्नीलाल नें कहा.

"मैंनें तो कल ही कह दिया था कि ऐसे फिलासफर विद्या सबधी बातों मैं भले ही उपकारी हों ससारी बातों मैं तो किसी काम के नहीं होते" मास्टर शिंभूदयाल बोले.

"मुझ को तो उन्का मन भी कुछ अच्छा नहीं मालूम देता" लाला मदनमोहन आप ही बोल उठे.

"आप उन्सै ज़रा हरकिशोर की बाबत बातचीत करैंगे तो रहा सहा भेद और खुल जायगा देखैं इस विषय मैं वह अपनें भाई की तरफदारी करते हैं या इसाफ़ पर रहते हैं" मुंशी चुन्नीलाल नें पेच सै कहा.

"क्या कहैं! हमारी आदत निदा करनें की नहीं है परसों शाम को लाला साहब मुझ सै चाँदनी चौक मैं मिले थे आँख की सैन मार कर कहनें लगे "आजकल तो बड़े गहरों मैं हो हम पर भी थोड़ी कृपा दृष्टि रक्खा करो" मास्टर शिंभूदयाल नें मदनमोहन का आशय जान्ते ही जड़ दी.

"हैं! तुम सै ये बात कही?" लाला मदनमोहन आश्चर्य सै बोले

"मुझ से तो सैकडों बार ऐसी नोक झोक हो चुकी है परतु मैं कभी इन्बातों का विचार नहीं करता" मुशी चुन्नीलाल नें मिल्ती मैं मिलाई .

"जब वह मेरे पीछै मेरा टट्टा उडाते हैं तो मेरे मित्र कहाँ रहे ? जब तक वह मेरे कामों के लिये केवल मुझ से झगडते थे मुझको कुछ बिचार न था परतु जब वह मेरे पास वालों को छेडने लगे तो मैं उन्को अपना मित्र कभी नहीं समझ सकता" लाला मदनमोहन बोल उठे .

"सच तो ये है कि सब लोग आपकी इस बरदाश्त पर बडा आश्चर्य करते है" मुशी चुन्नीलाल ने अवसर पाकर बात आगै बढाई .

"आप को लाला ब्रजकिशोर का इतना क्या दबाव है ? उन्से आप इतने क्यों दबते हैं ?" मास्टर शिभूदयाल ने कहा .

"सच है मै अपनी दौलत खर्च करता हू इस्मै उन्की गाँठ का क्या जाता है ? और वह बीच, बीच मैं बोलने वाले कौन हैं ?" लाला मदन-मोहन तेज़ होकर कहनें लगे .

"इस्तरह पर हर बात मैं रोक टोक होनें से बात का गुमर नहीं रहता , नोकरों को मुकाबला करने का होसला बढता जाता है और आगै चल कर काम काज मैं फर्क आनें की सूरत हो चली है" मुशी चुन्नीलाल लै बढ़ाने लगे .

"मैं अब उन्से हरगिज़ नहीं दबूँगा, मैंने अब तक दब, दब कर बृथा उन्को सिर चढ़ा लिया." लाला मदनमोहन ने प्रतिज्ञा की .

"जो वह झरनें के सरोवरों मैं अपना तैरना और तिबारी के ऊपर से कलामुडी खा खाकर कूदना देखेंगे तो फिर घंटों तक उन्का राग काहे को बद होगा ?" पडित पुरुषोत्तम दास बड़ी देर से बोलने के लिये उमाह रहे थे वह झटपट बोल उठे .

"उन्का वहाँ चलने का क्या काम है ? उन्को चार दोस्तों मैं बैठ कर हँसने बोलने की आदत ही नहीं है वह तो शाम सबेरे हवा खा लेते हैं और दिन भर अपने काम मैं लगे रहते हैं या पुस्तको के पन्ने उलट पुलट किया करते हैं ! वह ससार का सुख भोगने के लिए पैदा नही हुये फिर उन्हें ले जाकर हम क्या अपना मज़ा मट्टी करें ?" लाला मदनमोहन नें कहा .

"बरसात मैं तो वहाँ झूनों की बड़ी बहार रहती है" हकीम अहमद हुसैन बोले .

"परतु यह ऋतु झूनों की नहीं है आज कल तो होली की बहार है" पडित पुरुषोत्तम दास ने जवाब दिया .

"अच्छा फिर कब चलने की ठैरी और मै कितने दिन की रुखसत ले आऊँ" मास्टर शिभूदयाल ने पूछा .

"वृथा देर करने सै क्या फायदा है ? चलना ही ठैरा तो कल सवेरे यहाँ सै चल देंगे और कम सै कम दस बारह दिन वहाँ रहैगे" लाला मदनमोहन नें जवाब दिया .

लाला मदनमोहन केवल सैर के लिए कुतब नही जाते ऊपर सै यह केवल सैर का बहाना करते हैं परतु इन्के जी मै अब तक हरकिशोर की धमकी का खटका बन रहा है. मुशी चुन्नीलाल और बाबू बैजनाथ वगैरे ने इन्को हिम्मत बँधानें मै कसर नहीं रक्खी परतु इन्का मन कमज़ोर है इस्सै इन्की छाती अब तक नहीं ठुकती यह इस अवसर पर दस पाच दिन के लिए यहाँ सै टल जाना अच्छा समझते हैं इन्का मन आज दिन भर बेचैन रहा है इसलिए और कुछ फायदा हो या न हो यह अपना मन बहलाने के लिए, अपने मन सै यह डरावनें विचार दूर करने के लिए दस पाँच दिन यहाँ सै बाहर चले जाना अच्छा समझते है और इसी वास्तै ये झट पट दिल्ली सै बाहर जाने की तैयारी कर रहे हैं .

———

प्रकरण १७.

स्वतंत्रता और स्वेच्छाचार.

जो कहुँ सब प्राणीन सो होय सरलता भाव।
सब तीरथ अभिषेक ते ताको अधिक प्रभाव ॥*

(विदुर प्रजागरे)

लाला मदनमोहन कुतब जानें की तैयारी कर रहे थे इतने मै लाला ब्रजकिशोर भी आ पहुँचे.

"आपने लाला हरकिशोर का कुछ हाल सुना?" ब्रजकिशोर के आते ही मदनमोहन नें पूछा.

"नहीं! मैं तो कचहरी सै सीधा चला आया हूँ."

"फिर आप नित्य तो घर होकर आते थे आज सीधे कैसे चले आए?" मास्टर शिंभूदयाल ने सदेह प्रगट करके कहा.

"इस्मैं कुछ दोष हुआ? मुझको कचहरी मै देर हो गई थी इस्वास्तै सीधा चला आया तुम अपना मतलब कहो"

"मतलब तो आप का और मेरा लाला साहब खुद समझते होगे परतु मुझको यह बात कुछ नई, नई सी मालूम होती है" मास्टर शिंभूदयाल नें सदेह बढ़ानें के वास्तै कहा.

"सीधी बात को बे मतलब पहेली बनाना क्या ज़रूर है? जो कुछ कहना हो साफ कहो."

"अच्छा! सुनिये" लाला मदनमोहन कहनें लगे "लाला हरकिशोर

---

*सर्वतीर्थेषु वा स्नान सर्वभूतेषु चार्जवम्॥
उभे त्वेते समे स्याता मार्जव वा विशिष्यते॥

के स्वभाव को तो आप जान्ते ही हैं आपके और उन्के बीच बचपन सै झगडा चला आता है—"

"वह झगडा भी आप ही की बदौलत है परतु खैर, इस्समय आप उस्का कुछ विचार न करें अपना वृत्तात सुनायँ औरों के काम मै अपनी निज की बातों का सबध मिलाना बडी अनुचित बात है ?" लाला ब्रजकिशोर नें कहा .

"अच्छा ! आप हमारा वृत्तात सुनिये" लाला मदनमोहन कहने लगे . "कई दिन सै लाला हरकिशोर रूठे रूठे से रहते थे कल बेसबब हरगोविद सै लड पड़े उस्की जिद पर आप पाच, पाच रुपे के घाटे सै टोपिये देने लगे ! शाम को बाग़ मैं गए तो लाला हरदयाल साहब सै वृथा झगड पड़े, आज यहाँ आए तो मुझको और चुन्नीलाल को सैकडों कहनी न कहनी सुना गए !"

"बेसबब तो कोई बात नहीं होती आप इस्का अस्ली सबब बताइये ? और लाला हरकिशोर पाँच, पाँच रुपे के घाटे पर प्रसन्नता सै आप को टोपियाँ देते थे तो आपनें उनमैं सै दस पाँच क्यों नही ले लीं ? इन्मैं आप सै आप हरकिशोर पर पाच पच्चीस रुपे का जुर्माना हो जाता" लाला ब्रजकिशोर नें मुस्करा कर कहा

"तो क्या मैं हरकिशोर की जिद पर उस्की टोपिये ले लेता और दस बीस रुपे के वास्तै हरगोविंद को नीचा देखनें देता ? मैं हरगोविंद की भूल अपनें ऊपर लेनें को तैयार हूँ परतु अपने आश्रितुओं की ऐसी बेइज्जती नहीं किया चाहता" लाला मदनमोहन नें ज़ोर देकर कहा .

"यह आप का झूटा पक्षपात है" लाला ब्रजकिशोर स्वतत्रता सै कहनें लगे "पापी आप पाप करने सै ही नहीं होता पापियों की सहायता करनें वाले, पापियों को उत्तेजन देने वाले, बहुत प्रकार के पापी होते हैं,

कोई अपने स्वार्थ से, कोई अपराधी की मित्रता से कोई औरों की शत्रुता से, कोई अपराधी के सबधियों की दया से, कोई अपने निज के सबध से, कोई खुशामद से, महान् अपराधियों का पक्ष करने वाले बन जाते हैं परतु वह सब पापी समझे जाते हैं और वह प्रगट मे जाहे जैसे धर्मात्मा, दयालु, कोमल चित्त हों, भीतर से वह भी बहुधा वैसे ही पापी और कुटिल होते है "

"तो क्या आप की राह मे किसी की सहायता नहीं करनी चाहिये ?" लाला मदनमोहन ने तेज होकर पूछा .

"नहीं, बुरे कामों के लिये बुरे आदमियों की सहायता कभी नहीं करनी चाहिये" लाला ब्रजकिशोर कहने लगे . "रशिया का शाहन्शाह पीटर एक बार भर जवानी मे ज्वर से मरने लायक हो गया था उस्समय उस्के वजीर ने पूछा कि "नो अपराधियों को अभी लूट मार के कारण कठोर दड दिया गया है क्या वह भी ईश्वर प्रार्थना के लिए छोड दिये जायँ ?" पीटर नें निर्बल आवाज से कहा "क्या तुम यह समझते हो कि इन अभागों को क्षमा करने और इसाफ की राह मे काटे बोने से मे कोई अच्छा काम करूँगा ? और जो अभागे माया जाल मे फसकर उस सर्वशक्तिमान ईश्वर को ही भूल गए हैं मेरे फायदे के लिए, ईश्वर उन्की प्रार्थना अगीकार करैगा ? नही हरगिज़ नही, जो कोई काम मुझ से ईश्वर की प्रसन्नता लायक बन पड़े तो वह यही इसाफ का शुभ काम है"

"मै तो आपके कहने से इसाफ के लिए परमार्थ करना कभी नहीं छोड सक्ता" लाला मदनमोहन तमक कर कहनें लगे .

"जो जिस्के लिये करना चाहिये सो करना इंसाफ मे आ गया परतु स्वार्थ का काम परमार्थ कैसे हो सक्ता है ! एक के लाभ के लिये दूसरों की अनुचित हानि परमार्थ मे कैसे समझी जा सक्ती है ! किसी तरह के स्वार्थ बिना अपनें ऊपर परिश्रम उठा कर, आप दुःख सह कर,

अपना मन मार कर औरो को सुखी करना सच्चा धर्म समझा जाता है जैसे यूनान में कोडर्स नामी बादशाह राज करता था उस्समय यूनानियों पर हेरेकडिली लोगों नें चढाई की. उस्समय के लोग ऐसे अवसर पर मदिर मे जाकर हार जीत का प्रश्न किया करते थे इसी तरह कोडर्स ने प्रश्न किया तब उसे यह उत्तर मिला कि "तू शत्रु के हाथ से मारा जायगा तो तेरा राज स्वदेशियों के हाथ बना रहेगा और तू जीता रहेगा तो शत्रु प्रबल होता जायगा" कोडर्स देशोपकार के लिए प्रसन्नता से अपने प्राण देने को तैयार था परतु कोडर्स के शत्रु को भी यह बात मालूम हो गई इस लिये उसने अपनी सेना मे हुक्म दे दिया कि कोडर्स को कोई न मारे. तथापि कोडर्स नें यह बात लोग दिखाई के लिए नही की थी इस से वह साधारण सिपाही का भेष बना कर लडाई मे लड मरा परतु अपनें देशियों की स्वतत्रता शत्रु के हाथ न जाने दी."

"जब आप स्वतत्रता को ऐसा अच्छा पदार्थ समझते हैं तो आप लाला साहब को इच्छानुसार काम करने से रोक कर क्यों पिजरे का पंछी बनाया चाहते हैं?" मास्टर शिंभूदयाल ने कहा

"यह स्वतत्रता नही स्वेच्छाचार है, और इन्को एक समझने से लोग बारबार धोखा खाते है" लाला ब्रजकिशोर कहने लगे "ईश्वर ने मनुष्य को स्वतत्र बनाया है पर स्वेच्छाचारी नहीं बनाया क्योंकि उस्को प्रकृति के नियमो मे अदल बदल करने की कुछ शक्ति नही दी गई वह किसी पदार्थ की स्वाभाविक शक्ति में तिल भर घटा बढी नहीं कर सक्ता, जिन पदार्थों मे अलग, अलग रहने अथवा रसायनिक सयोग होने से जो, जो शक्ति उत्पन्न होने का नियम ईश्वर ने बना दिया है बुद्धि द्वारा उन पदार्थों की शक्ति पहचान कर केवल उन्से लाभ लेने के लिये मनुष्य को स्वतत्रता मिली है इसलिये जो काम ईश्वर के नियमानुसार स्वाधीन भाव से किया जाय वह स्वतत्रता मे समझा जाता है और जो काम उस्के नियमों के विपरीत स्वाधीन भाव से किया जाय वह

स्वेच्छाचार और उसका स्पष्ट दृष्टांत यह है कि शतरंज के खेल में दोनों खिलाडियों को अपनी मर्ज़ी मूजिब चाल चलनें की स्वतत्रता दी गई है परतु वह लोग घोड़े को हाथी की चाल या हाथी को घोड़े की चाल नहीं चल सक्ते और जो वे इस्तरह चलें तो उन्का चलना शतरज के खेल से अलग होकर स्वेच्छाचार समझा जायगा यह स्वेच्छाचार अत्यत दूषित है और इसका परिणाम महा भयकर होता है इसलिये वर्तमान समय के अनुसार सब के फायदे की बातों पर सत् शास्त्र और शिष्टाचार की एकता से बरताव करना सच्ची स्वतत्रता है और बड़े लोगों नें स्वतंत्रता की यह हद बाँध दी है . मनु महाराज कहते हैं—

"बिना सताए काहु के धीरे धर्म बटोर।
ज्यो मृतिका दीमक हरत क्रम क्रम सो चँहु ओर ॥"*

महाभारत कर्णपर्व में युधिष्ठिर और अर्जुन का बिगाड़ हुआ उससमय श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा है कि

"धर्म ज्ञान अनुमान ते अतिशय कठिन लखाय।
एक धर्म है वेद यह भाषत जन समुदाय ॥"†

तामैं कछु संशय नहीं, पर लख धर्म अपार।
स्पष्ट करन हित कहुँ कहूँ पडित करत विचार ॥ ‡

---

* धर्म्मं शनस्सं चिनुयाद्वल्मीकमिव पुत्तिका।
परलोक सहायार्थं सर्व भूतान्य पीडयन् ॥
† दुष्कर परमं ज्ञान तर्केणानु व्यवस्यति।
श्रुतेर्धर्मं इतित्येके वदति बहवोजनाः ॥
‡ तत्तेन प्रत्यसूयामि न च सर्वं विधीयते।
प्रभवार्थाय भूताना धर्म प्रवचन कृतं ॥

जहाँ न पीड़ित होय कोउ, सो सुधर्म्म निरधार।
हिंसक हिंसा हरन हित भयो सुधर्म्म प्रचार॥ *

प्राणिन को धारण करे ताते कहियत धर्म।
जासो जन रक्षित रहैं सों निश्चय शुभ कर्म॥ †

जे जन पर संतोष हित करैं पाप शुभ जान।
तिन सो कबहुँ न बोलिये श्रुति विरुद्ध पहिचान॥ ‡

इसलिये दूसरे की प्रसन्नता के हेतु अधर्म करनें का किसी को अधिकार नहीं है इसी तरह अपने या औरों के लाभ के लिये दूसरे के वाजबी हकों मे अंतर डालनें का भी किसी को अधिकार नहीं है. जिस्समय महाराज रामचद्र जी नें निर्दोष जनकनदनी का परित्याग किया जानकी जी को कुछ थोडा दुःख था? परतु वह गर्भ नाश के भय सै अपना शरीर न छोड सकीं हौं जिस्तरह उन्ने अकारण अत्यत दुःख पाने पर भी कभी रघुनाथ जी के दोष नहीं विचारे थे इस तरह सब प्राणियों को अपने विषय मे अपराधी के अपराध क्षमा करने का पूरा अधिकार है और इस तरह अपने निज के अपराधों का क्षमा करना मनुष्य मात्र के लिए अच्छे सै अच्छा गुण समझा जाता है परतु औरों को किसी तरह की अनुचित हानि हो वहाँ यह रीति काम मैं नहीं लाई जा सक्ती."

---

* यतस्याद हिसा सयुक्त सधर्म इति निश्चयः।
अहिसार्थाय हिसाया धर्म प्रवचनं कृतं॥

† धारणाद्धर्म मित्याहुर्धर्मो धारयते प्रजाः।
यत्स्याद्धारण सयुक्तं सधर्म इति निश्चयः॥

‡ येन्यायेन जिहीर्षतो धर्ममिच्छति कर्हिचित।
अकूजनेन मोक्ष वा नानुकूजेत् कथंचन॥

"मै तो यह समझता हूँ कि मुझ सै एक मनुष्य का भी कुछ उपकार हो सके तो मेरा जन्म सफल है" लाला मदनमोहन नें कहा.

"जिस्मै नामवरी आदि स्वार्थ का कुछ अश हो वह परोपकार नही और परोपकार करने मै भी किसी खास मनुष्य का पक्ष किया जाय तो बहुधा उस्के पक्षपात सै औरों की हानि होने का डर रहता है इसलिये अशक्त अपाहजों का पालनपोषण करना, इसाफ का साथ देना और हर तरह का स्वार्थ छोड कर सर्वसाधारण के हित मै तत्पर रहना मेरे जान सच्चा परोपकार है" लाला ब्रजकिशोर ने जवाब दिया.

प्रकरण १८

क्षमा

नर को भूषण रूप है रूपहु को गुण जान।
गुण को भूषण ज्ञान है क्षमा ज्ञान को मान॥*

सुभाषित रत्नाकरे।

"आप चाहे स्वार्थ समझै चाहे पक्षपात समझै हरकिशोर ने तो मुझे ऐसा चिडाया है कि मैं उस्सै बदला लिये बिना कभी नहीं रहूगा" लाला मदनमोहन ने गुस्से सै कहा.

"उस्का कसूर क्या है? हरेक मनुष्य सै तीन तरह की हानि हो सक्ती है एक अपवाद करके दूसरे के यश मैं धब्बा लगाना, दूसरे शरीर की चोट, तीसरे माल का नुक्सान करना इन्मैं हरकिशोर नें आपकी कौन सी हानि की?" लाला ब्रजकिशोर ने कहा.

---

* नरस्याभरणं रूपं रूपस्याभरणं गुणः।
गुणस्याभरणं ज्ञानं ज्ञानस्याभरणं क्षमा॥

लाला मदनमोहन के मन मैं यह बात निश्चय समा रही थी कि हरकिशोर ने कोई बडा भारी अपराध किया है परंतु ब्रजकिशोर ने तीन तरह के अपराध बताकर हरकिशोर का अपराध पूछा तब वह कुछ न बता सके क्योंकि मदनमोहन की वाकफियत मैं ऐसा कोई अपराध हरकिशोर का न था. मदनमोहन को लोगों नें आसमान पर चढा रक्खा था इसलिये केवल हरकिशोर के जवाब देनें सै उस्के मन मैं इतना गुस्सा भर रहा था.

"उस्ने बडी ढिठाई की वह अपने रुपे तत्काल माँगनें लगा और रुपया लिये बिना जानै सै साफ इन्कार किया" लाला मदनमोहन ने बडी देर सोच विचार कर कहा.

"बस उस्का यही अपराध है? इस्मैं तो उस्नें आप की कुछ हानि नहीं की मनुष्य को अपना सा जी सबका समझना चाहिये. आप का किसी पर रुपया लेना हो और आप को रुपे की जरूरत हो अथवा उस्की तरफ सै आपके जी मैं किसी तरह का शक आ जाय अथवा आप के और उस्के दिल मैं किसी तरह का अंतर आ जाय तो क्या आप उस्सै व्यवहार बद करने के लिये अपने रुपे का तकाज़ा न करेंगे? जब ऐसी हालतों मैं आप को अपनें रुपे के लिये औरों पर तक़ाज़ा करने का अधिकार है तो औरों को आप पर तकाजा करने का अधिकार क्यों न होगा? आप तो बेसबब ज़रा, जरा सी बातों पर मुँह बनाएँ, वाजबी राह सै जरा सी बात दुलख देने पर उस्को अपना शत्रु समझने लगे और दूसरे को वाजबी बात कहने का भी अधिकार न हो!" लाला ब्रजकिशोर ने ज़ोर देकर कहा.

"साहब! उस्ने लाला साहब को तग करने की नीयत सै ऐसा तकाजा किया था" मुशी चुन्नीलाल बोले.

"लाला साहब को उस्का स्वभाव पहचान्कर उस्सै व्यवहार डालना चाहिये था अथवा उस्का रुपया बाकी न रखना चाहिये था. जब उस्का

रुपया बाकी है तो उसको तकाज़ा करनें का निस्सदेह अधिकार है और उस्नें कड़ा तकाजा करने मैं कुछ अपराध भी किया हो तो उस्के पहले कामों का सबध मिलाना चाहिये" लाला व्रजकिशोर कहनें लगे. "प्रल्हाद जी नें राजा बलि सै कहा है

"पहलो उपकारी करै जो कहुँ अतिशय हान।
तोहू ताको छोड़िये पहले गुण अनुमान ॥*
बिन समझे आश्रित करै, सोऊ क्षमिये तात।
सब पुरुषन मैं सहज नहि चतुराई की बात ॥†"

यह सच है कि छोटे आदमी पहले उपकार करकै पीछै उस्का बदला बहुधा अनुचित रीति सै लिया चाहते हैं परतु यहाँ तो कुछ ऐसा भी नहीं हुआ."

"उपकार हो या न हो ऐसे आदमियों को उन्की करनी का दड तो अवश्य मिलना चाहिये" मास्टर शिभूदयाल कहनें लगे. "जो उन्को उन्की करनी का दंड न मिलेगा तो उन्की देखा देखी और लोग बिगडते चले जायँगे और भय बिना किसी बात का प्रबध न रह सकेगा सुधरे हुए लोगों का यह नियम है कि किसी को कोई नाहक न सतावै और सतावै तो दड पावै. दंड का प्रयोजन किसी अपराधी सै बदला लेने का नहीं है बल्कि आगै के लिये और अपराधों सै लोगो को बचाने का है"

"इसी वास्तै मै चाहता हूँ कि मेरा चाहै जितना नुक्सान हो जाय परतु हरकिशोर के पल्ले फूटी कौडी न पडने पावै" लाला मदनमोहन दाँत पीसकर कहने लगे

---

* पूर्वोपकारी यस्ते स्यादपराध गरीयसी।
उपकारण तत्तस्य क्षतव्यमपराधिनः ॥
अबुद्धिमाश्रितानातु क्षतव्यमपराधिना।
नहि सर्वत्र पाडित्य सुलभं पुरुषेणवै ॥

"अच्छा ! लाला साहब नें कहा इस रीति सै क्या मास्टर साहब के कहने का मतलब निकल आवैगा ?" लाला ब्रजकिशोर पूछनें लगे. "आप जान्ते हैं कि दंड दो तरह का है एक तो उचित रीति सै अपराधी को दंड दिवाकर औरों के मन मैं अपराध की अरुचि अथवा भय पैदा करना, दूसरे अपराधी सै अपना बैर लेना और अपने जी का गुस्सा निकालना. जिस्ने झूँटी निंदा करके मेरी इज्जत ली उस्को उचित रीति सै दंड कराने मैं मैं अपने देश की सेवा करता हूं परंतु मैं यह मार्ग छोड कर केवल उस्की बरबादी का विचार करूं अथवा उस्का बैर उस्के निर्दोष संबंधियों सै लिया चाहूं आधीरात के समय चुपके सै उस्के घर मै आग लगा दूं और लोगों को दिखानें के लिये हाथ मै पानी लेकर आग बुझानें जाऊँ तो मेरी बराबर नीच कौन होगा ? विदुर जी ने कहा है—

"सिद्ध होत बिनहू जतन मिथ्या मिश्रित काज।
अकर्तव्य से स्वप्न हू मन न धरो महाराज॥"*

ऐसी कारवाई करनेंवाला अपनें मन मै प्रसन्न होता है कि मैं नें अपनें बैरी को दुखी किया परंतु वह आप महापापी बन्ता है और देश का पूरा नुक्सान करता है, मनु महाराज ने कहा है —

"दुखित होय भाखै न तौ मर्म विभेदक बैन।
द्रोह भाव राखै न चित करै न परहि अचैन॥"†

"जो अपराध केवल मन को सतानेवाले हों और प्रगट मैं साबित न हो सकैं तो उन्का बदला दूसरे सै कैसे लिया जाय ?" लाला मदन-मोहन ने पूछा.

---

* मिथ्योपेतानि कर्माणि सिद्ध्युर्यानि भारत।
अनुपायप्रयुक्तानि मास्म तेषु मनः कृथाः॥

† नारुन्तुदः स्यादार्तोपि न परद्रोहकर्म्मधीः।
ययास्यो द्विजते वाचा नालोक्यान्तामदीरयेत॥

"प्रथम तो ऐसा अपराध हो ही नही सक्ता और थोडा बहुत हो भी तो वह खयाल करनें लायक़ नही है क्योंकि सदेह का लाभ सदा अपराधी को मिल्ता है इस्के सिवाय जब कोई अपराधी सच्चे मन सै अपने अपराध का पछ्तावा कर ले तो वह भी क्षमा करने योग्य हो जाता है और उस्सै भी दड देने के बराबर ही नतीजा निकल आता है ."

"पर एक अपराधी पर इतनी दया करनी क्या जरूर है ?" लाला मदनमोहन ने ताज्जुब सै पूछा .

"जब हम लोग सर्वशक्तिमान परमेश्वर के अत्यत अपराधी हो कर उस्सै क्षमा कराने की आशा रखते है तो क्या हमको अपने निज के कामों के लिये, अपनें अधिकार के कामों के लिये आगे की राह दुरुस्त हुए पीछै, अपराधी के मन मै शिक्षा की बराबर पछ्तावा हुए पीछै, क्षमा करना अनुचित है ? यदि मनुष्य के मन मै क्षमा और दया का लेश भी न हो तो उस्मै और एक हिसक जतु मै क्या अतर है ? पोप कहता है "भूल करना मनुष्य का स्वभाव है परतु उस्को क्षमा करना ईश्वर का गुण है"* एक अपराधी अपना कर्तव्य भूल जाय तो क्या उस्की देखा देखी हमको भी अपना कर्तव्य भूल जाना चाहिये ? सादी नें कहा है—

"होत हुमा याही लिये सब पक्षिन को राय ।
अस्थि भक्ष रक्षे तनहि काहू कौं न सताय ॥"†

दूसरे का उपकार याद रखना वाजबी बात है परतु अपकार याद रखने मै या यों कहो कि अपने कलेजे का घाव हरा रखने मै कौन्सी तारीफ़ है ? जा दैवयोग सै किसी अपराधी को औरों क फायदे के लिये

---

* To err is human, to forgive divine.

† हुमाय बरसरे मुर्गा अज़ाँ शरफ़ दारद् ।
किउस्तुखवा खुरदो तायरे नयाज़ारद ॥

दंड दिवानें की ज़रूरत हो तो भी अपनें मन मै उस्की तरफ दया और करुणा ही रखनी चाहिये."

"ये सब बातें हँसी खुशी मैं याद आती हैं क्रोध मैं बदला लिये बिना किसी तरह चित्त को सतोष नहीं होता" लाला मदनमोहन ने कहा.

"बदला लेनें का तो इस्सै अच्छा दूसरा रस्ता ही नहीं है कि वह अपकार करे और उस्के बदले आप उपकार करो" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे "जब वह अपनें अपराधों के बदले आप की मेहरबानी देखेगा तो आप लज्जित होगा और उस्का मन ही उस्को धिक्कारने लगेगा. बैरी के लिये इस्सै कठोर दंड दूसरा नही है परंतु यह बात हर किसी सै नहीं हो सक्ती. तरह तरह का दुःख, नुक्सान और निंदा सहने के लिये जितने साहस, धैर्य और गभीरता की जरूरत है बैरी सै बैर लेनें के लिये उन्की कुछ भी ज़रूरत नहीं होती. यह काम बहुत थोड़े आदमियों सै बन पडता है पर जिन्सै बन पडता है वही सच्चे धर्मात्मा हैं:—

"जिस्समय साइराक्यूज़वालों नें एथेन्स को जीत लिया साइराक्यूज़ की कौसिल मै एथीनियन्स को सजा देने की बाबत विवाद होने लगा इतने मै निकोलास नामी एक प्रसिद्ध गृहस्थ बुढापे के कारण नौकरों के कधे पर बैठकर वहाँ आया और कौंसिल को समझा कर कहनें लगा "भाइयो! मेरी ओर दृष्टि करो मैं वह अभागा बाप हूँ जिस्की निस्बत ज्यादः नुक्सान इस लडाई मै शायद ही किसी को हुआ होगा मेरे दो जवान बेटे इस लडाई मै देशोपकार के लिये मारे गए उन्सै मानो मेरे सहारे की लकडी छिन गई, मेरे हाथ पाँव टूट गए. जिन एथेन्सवालों ने यह लडाई की उन्को मै अपने पुत्रों के प्राणघातक समझ कर थोडा नहीं धिक्कारता तथापि मुझको अपने निज के हानि लाभ के बदले अपने देश की प्रतिष्ठा अधिक प्यारी है बैरियों सै बदला लेनें के लिये जो कठोर सलाह इस्समय हुई है वह अपनें देश के यश को सदा सर्वदा के

लिये कलकित कर देगी . क्या अपने बैरियों को परमेश्वर की ओर सै कठिन दड नहीं मिला ? क्या उन्को युद्ध मै इस तरह हारनें सै अपना बदला नही भुगता ? क्या शत्रुओं नें अपनें प्राण रक्षा के भरोसे पर तुमको हथियार नहीं सोपे ? और अब तुम उन्सै अपना बचन तोडोगे तो क्या तुम विश्वासघाती न होगे ? जीतने सै अविनाशी यश नहीं मिल सक्ता परतु जीते हुए शत्रुओं पर दया करने सै सदा सर्वदा के लिये यश मिल्ता है" . साइराक्यूज़ की कौंसिल के चित्त पर निकोलास के कहनें का ऐसा असर हुआ कि सब एथीनियन्स तत्काल छोड दिये गए" .

"आप जान्ते हैं कि शरीर के घाव औषधि सै रुज जाते हैं परतु दुखती बातों का घाव कलेजे पर सै किसी तरह नहीं मिटता" मुशी चुन्नीलाल नें कहा .

"क्षमाशील के कलेजे पर ऐसा घाव क्यों होने लगा है ? वह अपने मन मै समझता है कि जो किसी नें मेरा सच्चा दोष कहा तो बुरे मान्नें की कौन्सी बात हुई ? और मेरे मतलब को बिना पहुँचे कहा तो नादान के कहने सै बुरा मानने की कौन्सी बात रही ? और जान बूझ कर मेरा जी दुखाने के वास्तै मेरी झूँटी निदा की तो मैं उचित रीति सै उस्को झूटा डाल सक्ता हूँ सज़ा दिवा सक्ता हू फिर मन मै द्वेष और प्रगट मै गाली गलौज लडने की क्या ज़रूरत है ? आप बुरा हो और लोग अच्छा कहैं इस्की निस्बत आप अच्छा हो और लोग बुरा कहैं यह बहुत अच्छा है" लाला ब्रजकिशोर ने जवाब दिया .

प्रकरण १६

स्वतंत्रता.

स्तुति निंदा कोऊ करहि लक्ष्मी रहहि की जाय।
मरै कि जियै न धीर जन धरै कुमारग पाय ॥*

(प्रसंग रत्नावली)

"सच तो यह है कि आज लाला ब्रजकिशोर साहब नें बहुत अच्छी तरह भाई चारा निभाया इन्की बातचीत मै यह बडी तारीफ है कि जैसा काम किया चाहते हैं वैसा ही असर सबके चित्त पर पैदा कर देते हैं" मास्टर शिभूदयाल नें मुस्करा कर कहा.

"हरगिज़ नहीं, हरगिज़ नहीं, मै इसाफ के मामले मै भाई चारे को पास नहीं आनें देता जिस रीति सै बरतने के लिये मै और लोगों को सलाह देता हूँ उस रीति सै बरतना मै अपनें ऊपर फज़ समझता हू. कहना कुछ और, करना कुछ और न्यायकों का काम है और सचाई की अमिट दलीलों को दलील करनें वाले पर झूटा दोषारोप करके उडा देने वाले और होते हैं" लाला ब्रजकिशोर ने शेर की तरह गरज कर कहा और क्रोध के मारे उन्की आँखे लाल हो गईं.

लाला ब्रजकिशोर अभी मदनमोहन को क्षमा करने के लिये सलाह दे रहे थे इतने मै एकाएक शिंभूदयाल की ज़रा सी बात पर गुस्से मै कैसे भर गए ? शिभूदयाल नें तो कोई बात प्रगट मैं ब्रजकिशोर के अप्रसन्न होनें लायक नहीं कही थी ! निस्सदेह प्रगट मै नहीं कही परतु भीतर

---

* निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदिवास्तुवन्तु लक्ष्मीः समाविशतुगच्छतुवा यथेष्टम्।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पद न धीरा ॥

सै ब्रजकिशोर का हृदय विदीर्ण करने के लिये यह साधारण वचन सब सै अधिक कठोर था ब्रजकिशोर और सब बातों मै निरभिमानी थे परतु अपनी ईमान्दारी का अभिमान रखते थे इसलिये जब शिंभूदयाल ने उन्की ईमान्दारी मै बट्टा लगाया तब उन्को क्रोध आये बिना न रहा . ईमान्दार मनुष्य को इतना खेद और किसी बात सै नही होता जितना उस्को बेईमान बताने सै होता है .

"आप क्रोध न करे . आप को यहाँ की बातों मै अपना कुछ स्वार्थ नहीं है तो आप हरेक बात पर इतना जोर क्यों देते हैं ? क्या आप की ये सब बातें किसी को याद रह सक्ती हैं ? और शुभचिंतकी के विचार सै हानि लाभ जताने के लिये क्या एक इशारा काफी नहीं है ?" मुशी चुन्नीलाल नें शिभूदयाल की तरफदारी करके कहा .

"मै ने अब तक लाला साहब सै जो स्वार्थ की बात की होगी वह लाला साहब और तुम लोग जान्ते होगे . जो इशारे मै काम हो सक्ता तो मुझको इतने बढ़ा कर कहने सै क्या लाभ था ? मै नें कही है वह सब बाते निस्सदेह याद नहीं रह सक्ती परतु मन लगाकर सुन्नें सै बहुधा उन्का मतलब याद रह सक्ता है और उस्समय याद न भी रहै तो समय पर याद आ जाता है . मनुष्य के जन्म सै लेकर वर्तमान समय तक जिस, जिस हालत मै वह रहता है उन सबका असर बिना जानें उस्की तबियत मै बना रहता है इस वास्ते मैं नें ये बातें जुदे, जुदे अवसर पर यह समझ कर कह दी थी कि अब कुछ फायदा न होगा तो आगे चल कर किसी समय काम आवेगी" लाला ब्रजकिशोर नें जवाब दिया .

"अपनी बातों को आप अपने ही पास रहने दीजिये क्योंकि यहाँ इन्का कोई गाहक नहीं है" लाला मदनमोहन कहने लगे "आप के कहने का अभिप्राय यह मालूम होता है कि आप के सिवाय सब लोग अनसमझ और स्वार्थपर हैं ."

"मै सबके लिये कुछ नहीं कहता परंतु आपके पास रहने वालों मैं तो निस्सदेह बहुत लोग नालायक और स्वार्थपर हैं" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे "ये लोग दिन रात आपके पास बैठे रहते हैं, हर बात मै आप की बडाई किया करते हैं, हर काम मै अपनी जान हथेली पर लिये फिरते हैं पर यह आप के नहीं; आप के रुपे के दोस्त हैं, परमेश्वर न करे जिस दिन आपके रुपे जाते रहैंगे इन्का कोसों पता न लगेगा. जो इज्जत, दौलत और अधिकार के कारण मिलती है वह उस मनुष्य की नहीं होती जो लोग रुपे के कारण आप को झुक झुक कर सलाम करते हैं वही अपनें घर बैठ कर आप की बुद्धिमानी का ठट्ठा उडाते हैं! कोई काम पूरा नहीं होता जब तक उस्मै अनेक प्रकार के नुक्सान होने की सभावना रहती है पूरे होनें की उम्मेद पर दस काम उठाये जाते हैं जिन्मै मुश्किल सै दो पूरे पडते हैं परंतु आप के पास वाले खाली उम्मेद पर बल्कि भीतर की नाउम्मेदी पर भी आप को नफे का सब्जबाग़ दिखा कर बहुत सा रुपया खर्च करा देते हैं! मैं पहले कह चुका हूँ कि आदमी की पहचान ज़ाहिरी बातों सै नहीं होती उस्के बरताव सै होती है. इन्मै आपका सच्चा शुभचिंतक कौन है? आपके हानि लाभ का दर्साने वाला कौन है? आप के हानि लाभ का विचार करने वाला कौन है? क्या आप की हाँ मै हाँ मिलानें सै सब हो गया? मुझको तो आप के मुसाहिबों मै सिवाय मसखरापन के और किसी बात की लियाक़त नहीं मालूम होती कोई फबतियाँ कह कर इनाम पाता है, कोई छेडछाड़ कर गालियें खाता है, कोई गाने बजाने का रग जमाता है, कोई धोलधप्पे लड कर हँसता हँसाता है पर ऐसे आदमियों सै किसी तरह की उम्मेद नहीं हो सक्ती."

"मेरी दिल्लगी की आदत है मुझ सै तो हँसी दिल्लगी बिना रोती सूरत बना कर दिन भर नहीं रहा जाता परतु इन बातों सै काम की बातों में कुछ अतर आया हो तो बताइये" लाला मदनमोहन नें पूछा.

"आप के पिता का परलोक हुआ जब से आप की पूँजी मै क्या घटा बढी हुई ? कितनी रकम पैदा हुई ? कितनी अहँड हुई कितनी ग़लत हुई, कितनी खर्च हुई इन बातों का किसी ने विचार किया है ? आमदनी से अधिक खर्च करने का क्या परिणाम है ? कौन्सा खर्च वाजबी है, कौन्सा गैरवाजबी है, मामूली खर्च के बराबर बँधी आमदनी कैसे हो सक्ती है ? इन बातों पर कोई दृष्टि पहुँचाता है ? मामूली आमदनी पर किसी की निगाह है ? आमदनी देखकर मामूली खर्च के वास्ते हरेक सीगे का अदाजा पहले से कभी किया है, ग़ैर मामूली खर्चों के वास्ते मामूली तौर पर सीगेवार कुछ रक़म हर साल अलग रक्खी जाती है ? बिना जाने नुक्सान, खर्च और आमदनी कम होने के लिए कुछ रकम हर साल बचा कर अलग रक्खी जाती है ? पैदावार बढाने के लिये वर्तमान समय के अनुसार अपने बराबर वालों की कारवाई, देश देशातर का वृत्तात और होनहार बातों पर निगाह पहुँचा कर अपने रोजगार धदे की बातों मे कुछ उन्नति की जाती है ? व्यापार के तत्व क्या हैं. थोड़े खर्च, थोडी महनत और थोड़े समय मे चीज तैयार होने से कितना फायदा होता है, इन बातों पर किसी ने मन लगाया है ? उगाही मैं कितनें रुपे लेने है, पटने की क्या सूरत है, देनदारों की कैसी दशा है, मयाद के कितनें दिन बाकी है इन बातों पर कोई ध्यान देता है ? व्योपार सीगा के माल पर कितनी रकम लगती है, माल कितना मोजूद है किस्समय बेचनें मै फायदा होगा इन्बातों पर कोई निगाह दौडाता है ? खर्च सीगा के माल की कमी बिध मिलाई जाती है ? उस्की कमी बेशी के लिये कोई जिम्मेदार है ? नौकर कितनें हैं, तनख्वाह क्या पाते हैं, काम क्या करते हैं, उन्की लियाकत कैसी है, नीयत कैसी है, कारवाई कैसी है, उन्को सेवा का आप पर क्या हक है, उन्के रखने न रखने मै आप का क्या नफा नुक्सान है इन्बातों को कभी आपनें मन लगाकर सोचा है ?"

"मैं पहले ही जान्ता था कि आप हिर फिर कर मेरे पास के आदमियों पर चोट करेंगे परतु अब मुझको यह बात असह्य है मैं अपना

नफा नुक्सान समझता हूँ आप इस विषय मै अधिक परिश्रम न करें." लाला मदनमोहन ने रोक कर कहा .

"मैं कहूँगा पहलै सै बुद्धिमान कहते चले आए है" लाला ब्रजकिशोर कहने लगे "वलियम कूपर कहता है:—

"जिन नृपन को शिशुकाल सै सेवहि छली तन मन दिये।
तिनकी दशा अविलोक करुणा होत अति मेरे हिये॥
आजन्म सो अभिषेक लौं मिथ्या प्रशंसा जन करैं।
बहु भात अस्तुति गाय, गाय सराहि सिर स्हेरा धरैं॥
शिशुकाल ते सीखत सदा सज धज दिखावन लोक मै।
तिनको जगावत मृत्यु बहुतिक दिन गए इह लोक मै॥
मिथ्याप्रशसी बैठ घुटनन, जोड़ कर, मुस्कावहीं।
छल की सुहाती बात कहि पापहि धरम दरसावही॥
छबिशालिनी, मृदुहासिनी अरु धनिक नित घेरै रहैं।
झूँटी झलक दरसाय मनहि लुभाय कछु दिन मैं लहैं॥
जे हेमचित्रित रथन चढ़, चचल तुरंग भजावही।
सेना निरख अभिमान कर, यों व्यर्थ दिवस गमावहीं॥
'तिनकी दशा अविलोक' भाखत फेरहू मन दुख लिये।
नृप की अधम गति देख 'करुणा होत अति मेरे हिये'॥"*

---

* I Pity kings, whom worship waits upon
Obsequious from the cradle to the throne,
Before whose infant eyes the flatterer bows,
And binds a wreath about their baby brows,
Whom education stiffens into state,
And death awakens from that dream too late,
Oh ! if servility with supple knees,

"लाला साहब अपने सरल स्वभाव सै कुछ नहीं कहते इस वास्तै आप चाहे जो कहते चले जायँ परंतु कोई तेज स्वभाव का मनुष्य होता तो आप इस तरह हरगिज न कहनें पाते" मास्टर शिभूदयाल नें अपनी जात दिखाई .

"सच है ! विदुर जी कहते हैं—

"दयावंत लज्जा सहित मृदु अरु सरल सुभाइ ।
ता नर को असमर्थ गिन लेत कुबुद्धि दबाइ ॥"*

Whose trade it is to smile, to crouch,
to please;
If smooth dissimulation, skill'd to grace
A devil's purpose with an angel's face ;
If smiling peeresses, and simp'ring peers,
Encompassing his throne a few short year's;
If the gilt carriage, and the pamper'd steed,
That wants no driving, and disdains the lead;
If guards, mechanically form'd in ranks,
Playing, at beat of drum, their martial
pranks,
Should'ring and standing as if stuck to stone,
While condescending majesty looks on—
If monarchy consist in such base things,
Sighing I say again, I pity kings !

(William Cowper)

* आर्जवेन नरं युक्तं मार्जवात् सव्यपत्रपम् ।
अशक्तं मन्यमानास्तु धर्षयन्ति कुबुद्धयः ॥

इसलिये इन् गुणों के साथ सावधानी की बहुत ज़रूरत है सादगी और सीधेपन सै रहने मैं मनुष्य की सच्ची अशराफत मालूम होती है, मनुष्य की उन्नति का यह सीधा मार्ग है परंतु चालाक आदमियों की चालाकी सै बचने के लिये हर तरह की वाकफियत भी ज़रूर होनी चाहिये" लाला ब्रजकिशोर ने जवाब दिया.

"दोषदर्शी मनुष्यों के लिये सब बातों मै दोष मिल सक्ते हैं क्योंकि लाला साहब के सरल स्वभाव की बडाई सब संसार मैं हो रही है परंतु लाला ब्रजकिशोर को उस्मै भी दोष ही दिखाई दिया!" पडित पुरुषोत्तम दास बोले.

"द्रव्य के लालचियों की बडाई पर मै क्या विश्वास करूँ? विदुर जी कहते हैं कि—

"जाहि सराहत हैं सब उत्तारी। जाहि सराहत चंचल नारी॥
जाहि सराहत भाट वृथा ही। मानहु सो नर जीवत नाही॥"*

लाला ब्रजकिशोर ने जवाब दिया.

"मैं अच्छा हूँ या बुरा हूँ आप का क्या लेता हूँ? आप क्यों हाथ धो कर मेरे पीछे पड़े हैं? आप को मेरी रीति भाँति अच्छी नहीं लगती तो आप मेरे पास न आँय" लाला मदनमोहन ने बिगड कर कहा.

"मै आप का शत्रु नहीं, मित्र हूँ परंतु आप को ऐसा ही जचता है तो अब मै भी आपको अधिक परिश्रम नहीं दिया चाहता मेरी इतनी ही लालसा है कि आपके बडों की बदौलत मै नें जो कुछ पाया है वह मै आपकी भेंट करता जाऊँ" लाला ब्रजकिशोर लायकी सै कहने लगे "मै नें आपके बडों की कृपा सै विद्या धन पाया जिस्का बडा हिस्सा मै आपके सन्मुख रख चुका तथापि जो कुछ बाकी रहा है उस्को आप कृपा करके और अंगीकार कर लें. मै चाहता हूँ कि मुझ सै आप भले ही अप्रसन्न

---

* य प्रशसन्ति कितवः य प्रशसन्ति चारणाः।
य प्रशसन्ति बन्धक्यो न सजीवति मानवः॥

रहें मुझको हरगिज अपने पास न रक्खे परतु आपका मंगल हो . यदि इस बिगाड सै आपका कुछ मगल होता हो तो मैं इसै ईश्वर की कृपा समझूँगा . आप मेरे दोषों की ओर दृष्टि न दे, मेरी थोथी बातों मै जो कुछ गुण निकल्ता हो उसे ग्रहण करे . हजरत सादी कहते हैं—

"भीत लिख्यो उपदेश जु कोऊ।
सादर ग्रहण कीजिये सोऊ॥"*

इसलिये आप स्वपक्ष और विपक्ष का विचार छोड कर गुण सग्रह करनें पर दृष्टि रक्खें आपका बरताव अच्छा होगा तो मै क्या हूँ ? बड़े बड़े लायक आदमी आपको सहज मै मिल जायँगे परतु आपका बरताव अच्छा न हुआ तो जो होंगे वह भी जाते रहेगे . एक छोटे से पखेरू की क्या है ? जहाँ रात हो जाय वहीं उस्का रैन बसेरा हो सक्ता है परतु वह फलदार बृक्ष सदा हरा भरा रहना चाहिये जिस्के आश्रय बहुत से पक्षी जीते हों ."

"बहुत कहने सै क्या है ? आपको हम सै सबंध रखना हो तो हमारी मर्जी के मूजिब बरताव रक्खो नहीं तो अपना रस्ता लो हम सै अब आप के ताने नहीं सहे जाते" लाला मदनमोहन नें ब्रजकिशोर को नरम देख कर ज्यादः दबाने की तजवीज की .

"बहुत अच्छा ! मै जाता हूँ, बहुत लोग जाहरी इज्जत बनाने के लिये भीतरी इज्जत खो बैठते हैं परतु मै उन्मै का नही हू. तुलसी कृत रामायण मै रघुनाथ जी ने कहा है—

"जो हम निदरहि बिप्र बर सत्य सुनहु भृगुनाथ।
तो अस को जग सुभट तिहि भय बस नावहिं माथ॥"

सोई प्रसग इस्समय मेरे लिये बर्तमान है . एथेन्स मै जिन दिनों

---

* मर्द्र बायद कि गीरद अदरगोश।
बर नबिश्तस्द पदबर दीवार॥

तीस अन्याइयों की कौन्सिल का अधिकार था एक बार कौन्सिल नें सेक्रिटीज को बुलाकर हुक्म दिया कि "तुम लिओं नामी धनवान को पकड़ लाओ जिस्सै उस्का माल जप्त किया जाय" सेक्रिटीज ने जवाब दिया कि "एक अनुचित काम मैं मै अपनी प्रसन्नता सै कभी सहायता न करूंगा" कौन्सिल के प्रेसिडेंट ने धमकी दी कि "तुमको आज्ञा उल्लघन करने के कारण कठोर दंड मिलेगा" सेक्रिटीज़ नें कहा कि "यह तो मै पहले ही सै जान्ता हूं परतु मेरे निकट अनुचित काम करने के बराबर कोई कठोर दड नहीं है" लाला ब्रजकिशोर बोले.

"जब आप हमको छोडने ही का पक्का विचार कर चुके तो फिर इतना वादाविवाद करने सै क्या लाभ है? हमारे प्रारब्ध मै होगा वह हम भुगत लेंगे, आप अधिक परिश्रम न करैं" लाला मदनमोहन नें त्योरी बदल कर कहा.

"अब मैं जाता हू ईश्वर आपका मगल करे. बहुत दिन पास रहने के कारण जाने बिना जाने अब तक जो अपराध हुए हों वह क्षमा करना" यह कह कर लाला ब्रजकिशोर तत्काल अपने मकान को चले गए.

लाला ब्रजकिशोर के गए पीछै मदनमोहन के जी मैं कुछ, कुछ पछतावा सा हुआ वह समझे कि "मै अपने हट सै आज एक लायक़ आदमी को खो बैठा परतु अब क्या? अब तो जो होना था हो चुका. इस्समय हार मान्ने सै सबके आगे लज्जित होना पड़ेगा और इस्समय ब्रजकिशोर के बिना कुछ हर्ज भी नहीं, हाँ, ब्रजकिशोर ने हरकिशोर को सहायता दी तो कैसी होगी? क्या करैं? हमको लज्जित होना न पड़े और सफाई की कोई राह निकल आवै तो अच्छा हो" लाला मदनमोहन इसी सोच विचार मै बडी देर बैठे रहे परतु मन की निर्बलता सै कोई बात निश्चय न कर सके.

———

प्रकरण २०

कृतज्ञता

तृणहु उतारे जन गनत कोटि मुहर उपकार।
प्राण दियेहू दुष्ट जन करत बैर व्यवहार ॥*

(भोजप्रबध सार)

लाला ब्रजकिशोर मदनमोहन के पास सै उठ कर घर को जाने लगे उस्समय उन्का मन मदनमोहन की दशा देख कर दुःख सै बिबस हुआ जाता था वह बारम्बार सोचते थे कि मदनमोहन ने केवल अपना ही नुक्सान नहीं किया, अपनें बाल बच्चों का हक़ भी डबो दिया, मदनमोहन ने केवल अपनी पूँजी ही नही खोई अपने ऊपर क़र्ज़ भी कर लिया .

भला ! लाला मदनमोहन को क़र्ज़ करने की क्या जरूरत थी ? जो यह पहलै ही सै प्रबंध करने की रीति जान्कर तत्काल अपने आमद खर्च का बंदोबस्त कर लेते तो इन्को क्या इन्के बेटे पोतों को भी तंगी उठानें की कुछ जरूरत न थी मै आप तकलीफ सै रहनें को, निर्लज्जता सै रहनें को, बदइतज़ामी सै रहने को, अथवा किसी हकदार के हक़ मै कमी करने को पसद नहीं करता, परंतु इन्को तो इन बातों के लिये उद्योग करनें को भी कुछ जरूरत न थी यह तो अपनी आमदनी का बंदोबस्त करके असल पूँजी के हाथ लगाए बिना अमीरी ठाठ सै उमर भर चैन कर सक्ते थे . विदुर जी नें कहा है—

---

* सन्त स्तृणोत्तारणमृतमागात् सुवर्णकोट्यर्पणभा मनंति।
प्राणव्ययेनापि कृतोपकाराः खलाः परम्बैरमिवोद्वहन्ति ॥

"फल अपक्व जो वृक्ष ते तोर लेत नर कोय।
फल को रस पावै नहीं नास बीज को होय॥
नास बीज को होय यहै निज चित्त बिचारै।
पके, पके फल लेइ समय परिपाक निहारै॥
पके पके फल लेइ स्वाद रस लहै बुद्धि बल।
फल ते पावै बीज, बीज ते होइ बहुरि फल॥"*

यह उपदेश सब नीति का सार है परंतु जहाँ मालिक को अनुभव न हो, निकटवर्ती स्वार्थपर हों वहाँ यह बात कैसे हो सक्ती है!

"जैसै माली बाग को राखत हित चित चाहि।
तैसै जो कोला करत कहा दरद है ताहि?"

लाला मदनमोहन अब तक कर्जदारी की दुर्दशा का वृत्तात नहीं जान्ते. जिस्समय कर्जदार बादे पर रुपया नहीं दे सक्ता उसी समय सै लेनदार को अपने कर्ज़ के अनुसार कर्जदार की जायदाद और स्वतत्रता पर अधिकार हो जाता है. वह कर्जदार को कठोर सै कठोर वाक्य "बेईमान" कह सक्ता है, रस्ता चल्ते मैं उस्का हाथ पकड सक्ता है. यह कैसी लज्जा की बात है कि एक मनुष्य को देखते ही डर के मारे छाती धडकने लगे और शर्म के मारे आँखे नीची हो जायँ, सब लोग लाला मदनमोहन की तरह फिजूलखर्ची और झूँटी ठसक दिखाने मैं बरबाद नहीं होते सौ मैं दो, एक समझवार भी किसी का काम बिगड जाने सै, या किसी को जामनी कर देने सै या किसी और उचित कारण सै

---

* वनस्पतेरपक्वानि फलानिप्रचिनोति यः।
सनाप्नोति रसं तेभ्यो बीज चास्य विनश्यति॥
यस्तु पक्वमुपादत्ते काले परिणतं बलं।
फलाद्रस सलभते बीजञ्चैव फलं पुनः॥

इस आफत मै फॅस जाते हैं परतु बहुधा लोग अमीरों की सी ठसक दिखाने मै और अपने बूते सै बढ कर चलने मै कर्जदार होते हैं .

कर्जदारी मै सब सै बडा दोष यह है कि जो मनुष्य धर्मात्मा होता है वह भी कर्ज मै फँसकर लाचारी सै अधर्म की राह चलने लगता है . जब सै कर्ज लेने की इच्छा होती है तब ही सै कर्ज लेनेवाले को ललचाने, और अपनी साहूकारी दिखाने के लिये तरह तरह की बनावट की जाती है . एक बार कर्ज लिये पीछै कर्ज लेने का चस्का पड जाता है और समय पर कर्ज नहीं चुका सक्ता तब लेनदार को धीर्य देने और उस्की दृष्टि मै साहूकार दीखने के लिये ज्यादः ज्यादः कर्ज मैं जकडता जाता है और लेनदार का कडा तकाजा हुआ तो उस्का कर्ज चुकाने के लिये अधर्म करने की भी रुचि हो जाती है . कर्जदार झूँट बोलने सै नहीं डरता और झूँट बोले पीछै उस्की साख नहीं रहती वह अपने बाल बच्चों के हक मै दुश्मन सै अधिक बुराई करता है. मित्रों को तरह तरह की जोखों मैं फॅसाता है अपनी घडी भर की मौज के लिये आप जन्म भर के बधन मै पडता है और अपनी अनुचित इच्छा को सजीवन करने के लिये आप मर मिटता है .

बहुत सै अविचारी लोग कर्ज चुकाने की अपेक्षा उदारता को अधिक समझते है इस्का कारण यह है कि उदारता सै यश मिल्ता है, लोग जगह जगह उदार मनुष्य की बडाई करते फिरते है परतु कर्ज चुकाना केवल इसाफ है इसलिये उस्की तारीफ कोई नहीं करता, इंसाफ को लोग साधारण नेकी समझते हैं इस कारण उस्की निस्बत उदारता की ज्यादः कदर करते हैं जो बहुधा स्वभाव की तेजी और अभिमान सै प्रगट होती है परतु बुद्धिमानी सै कुछ सबंध नहीं रखती किसी उदार मनुष्य सै उस्का नौकर जाकर कहै कि फलाना लेनदार अपने रुपे का तकाज़ा करने आया है और आप के फलाने गरीब मित्र अपने निर्बाह के लिये आप

की सहायता चाहते हैं तो वह उदार मनुष्य तत्काल कह देगा कि लेनदार को टाल दो और उस गरीब को रुपे दे दो क्योंकि लेनदार का क्या ? वह तो अपने लेनें लेता है इस्के देनें सै वाह वाह होगी .

परतु इसाफ़ का अर्थ लोग अच्छी तरह नहीं समझते क्योंकि जिस्के लिये जो करना चाहिये वह करना इंसाफ है इसलिये इसाफ मै सब नेकिये आ गई इसाफ का काम वह है जिस्मै ईश्वर की तरफ का कर्तव्य, ससार की तरफ का कर्तव्य और अपनी आत्मा की तरफ का कर्तव्य अच्छी तरह सपन्न होता हो . इसाफ सब नेकियों की जड है और सब नेकियाँ उस्की शाखा प्रशाखा हैं इसाफ की सहायता बिना कोई बात मध्यम भाव सै न होगी तो सरलता अविवेक, बहादुरी दुराग्रह, परोपकार अनसमझी और उदारता फिजूलखर्ची हो जायँगी .

कोई स्वार्थरहित काम इसाफ के साथ किया जाय तो उस्की सूरत ही बदल जाती है और उस्का परिणाम बहुधा भयकर होता है . सिवाय की रकम मै सै अच्छे कामों मै लगाए पीछै कुछ रुपया बचै और वो निर्दोष दिल्लगी की बातों मै खर्च किया जाय तो उस्को कोई अनुचित नहीं बता सक्ता परतु कर्तव्य कामों को अटका कर दिल्लगी की बातों मै रुपया या समय खर्च करना कभी अच्छा नहीं हो सक्ता . अपने बूते मूजिब उचित रीति सै औरों की सहायता करनी मनुष्य का फर्ज है परतु इस्का यह अर्थ नहीं है कि अपने मन की अनुचित इच्छाओ को पूरी करने का उपाय करै अथवा ऐसी उदारता पर कमर बाँधे कि आगै को अपना कर्तव्य सपादन करने के लिये और किसी अच्छे काम मै खर्च करने के लिये अपनें पास फूटी कौडी न बचे बल्कि सिवाय मैं कर्ज हो जाय .

अफसोस ! लाला मदनमोहन की इस्समय ऐसी ही दशा हो रही है . इन्पर चारो तरफ सै आफत के बादल उमड़े चले आते है . परतु इन्हें कुछ खबर नहीं है . विदुर जी ने सच कहा है—

"बुद्धिभ्रंश ते लहत बिनासहि।
ताहि अनीति नीति सी भासहि।*"

इस तरह सै अनेक प्रकार के सोच बिचार मैं डूबे हुए लाला ब्रजकिशोर अपने मकान पर पहुँचे परंतु उन्के चित्त को किसी बात सै ज़रा भी धैर्य न हुआ.

लाला ब्रजकिशोर कठिन सै कठिन समय मैं अपने मन को स्थिर रख सक्ते थे परंतु इस्समय उन्का चित्त ठिकानें न था उन्ने यह काम अच्छा किया कि बुरा किया? इस बात का निश्चय वह आप नही कर सक्ते थे वह कहते थे, कि इस दशा मै मदनमोहन का काम बहुत दिन नहीं चलेगा और उस्समय ये सब रुपे के मित्र मदनमोहन को छोड कर अपने अपनें रस्ते लगेंगे परतु मै क्या करूँ? मुझको कोई रस्ता नहीं दिखाई देता और इस्समय मुझ सै मदनमोहन की कुछ सहायता न हो सकी तो मैं ने संसार मैं जन्म लेकर क्या किया?

फ्रास के चौथे हेन्री ने डी ला ट्रेमाइल को देशनिकाला दिया था और काउंट डी आविग्नी उस्सै मेल रखता था इस्पर एक दिन चौथे हेन्री नें डी आविग्नी सै कहा कि "तुम अब तक डी ला ट्रेमाइल की मित्रता कैसे नही छोडते?" डी आविग्नी ने जवाब दिया कि "मै ऐसी हालत मै उस्की मित्रता नहीं छोड सक्ता क्योंकि मेरी मित्रता के उपयोग करने का काम तो उस्को अभी पड़ा है."

पृथ्वीराज महोबे की लडाई मै बहुत घायल होकर मुर्दों के शामिल पड़े थे और सजमराय भी उन्के बराबर उसी दशा मैं पडा था. उस्समय एक गिद्ध आके पृथ्वीराज की आँख निकालने लगा परतु पृथ्वीराज को उस्के रोकनें की सामर्थ्य न थी इस्पर सजमराय पृथ्वीराज को बचाने के लिये

---

* बुद्धौ कलुष भूताया विनाशे प्रत्युपस्थिते।
अनयो नयसकाशो हृदयान्नापसर्पति॥

अपने शरीर का मास काट काट कर गिद्ध के आगे फैकने लगा जिस्से पृथ्वीराज की आँखें बच गईं और थोडी देर में चंद वगैरे आ पहुँचे .

हेन्री रिचमन्ड पीटर के भय से ब्रीटनी छोड़ कर फ्रास को भागने लगा उस्समय उस्के सेवक सीमार नें उस्के वस्त्र पहन कर उस्की जोखों अपनें सिर ली और उस्को साफ निकाल दिया .

क्या इस्तरह से मैं मदनमोहन की कुछ सहायता इस्समय नहीं कर सक्ता ? यदि इस काम मे मेरी जान भी जाती रहै तो कुछ चिंता नहीं जब मैं उन्को अनसमझ जान कर उन्के कहनें से उन्हैं छोड़ आया तो मैनें कौन्सी बुद्धिमानी की ? पर मैं रह कर क्या करता ? हाँ मैं हाँ मिला कर रहना रोगी को कुपथ्य देने से कम न था और ऐसे अवसर पर उन्का नुक्सान देख कर चुप हो रहना भी स्वार्थपरता से क्या कम था ? मेरा विचार सदैव से यह रहता है कि काम करना तो विधीपूर्वक करना . न हो सके तो चुप हो रहना, बेगार तक को बेगार न समझना, परतु वहाँ तो मेरे वाजबी कहने से उल्टा असर होता था और दिन पर दिन जिद बढ़ती जाती थी मैं नें बहुत धैर्य से उन्को राह पर लाने के अनेक उपाय किये पर उन्ने किसी हालत में अपनी हद्द से आगे बढ़ना मजूर न किया .

असल तो ये है कि अब मदनमोहन बच्चे नहीं रहे उन्की उम्र पक गई, किसी का दबाव उन्पर नहीं रहा, लोगों ने हाँ मैं हाँ मिला कर उन्की भूलों को और दृढ कर दिया रुपे के कारण उन्को अपनी भूलों का फल न मिला और संसार के दुःख सुख का अनुभव भी न होने पाया बस रग पक्का हो गया . बिदुर जी कहते हैं कि—

"सन्त असंत तपस्वी चोर, पापी सुकृती हृदय कठोर ।
तैसो होय बसै जिहि संग, जैसो होत बसन मिल रग ॥"*

---

* यदि सन्त सेवति यद्यसन्तं तपस्विन यदि वा स्तनमेव ।
वासो यथा रग वशं प्रयाति तथा सतेषा वशमभ्युपैति ॥

यदि वह सावधान हों तो अगद हनुमान की तरह उन्की आज्ञा पालन करने मै सब कर्तव्य सपादन हो जाते हैं परतु जहाँ ऐसा नहीं होता वहाँ बडी कठिनाई पडती है. सकड़ी गली मै हाथी नहीं चल्ता तब महावत कूढ़ बाजता है. वृद कहता है कि—

"ताको त्यो समझाइये जो समझे जिहि बानि।
बैन कहत मग अन्ध को अरु बहरे को पानि॥"

जिस तरह सुग्रीव भोग बिलास मैं फँस गया तब रघुनाथ जी केवल उस्को धमकी देकर राह पर ले आए थे इस तरह लाला मदनमोहन के लिये क्या कोई उपाय नहीं हो सक्ता? हे जगदीश! इस कठिन काम में तूँ मेरी सहायता कर.

लाला ब्रजकिशोर इन्बातों के बिचार मै ऐसे डूबे हुए थे कि उन्को अपना देहानुसधान न था. एक बार वह सहसा कलम उठाकर कुछ लिखने लगे और किसी जगह को पूरा महसूल देकर एक ज़रूरी तार तत्काल भेज दिया. परतु फिर उन्हीं बातों के सोच बिचार मैं मग्न हो गए. इस्समय उन्के मुख सै अनायास कोई, कोई शब्द बेजोड निकल जाते थे जिन्का अर्थ कुछ समझ मै नही आता था. एक बार उन्ने कहा "तुलसीदास जी सच कहते हैं—

"षट् रस बहु प्रकार व्यजन कोउ दिन अरु रैन बखाने।
बिन बोले सतोष जनित सुख खाय सोई पै जाने॥"

थोडी देर पीछै कहा—"मुझको इस्समय इस बचन पर बरताव रखना पड़ेगा—

(वृद) झूटहु ऐसो बोलिये साँच बराबर होय।
जों अँगुरी सो भीत पर चद्र दिखावे कोय॥"

परतु पानी जैसा दूध सै मिल जाता है तेल सै नही मिल्ता. विक्रमोर्वशी नाटक मै उर्वशी के मुख सै सच्ची प्रीति के कारण पुरुषोत्तम की

जगह मुरूरव्वा का नाम निकल गया था इसी तरह मेरे मुख सै कुछ का कुछ निकल गया तो क्या होगा? थोडी देर पीछै कहा "लोक निंदा सै डरना तो वृथा है जब वह लोग जगत-जननी जनक-नदिनी की झूंटी निंदा किए बिना नहीं रहे! श्रीकृष्णचद्र को जाति वालों के अपवाद का उपाय नारद जी सै पूछना पडा! तो हम जैसे तुच्छ मनुष्यों की क्या गिन्ती है? सादी ने लिखा है "एक विद्वान सै पूछा गया था कि कोई मनुष्य ऐसा होगा जो किसी रूपवान सुदरी के साथ एकात मै बैठा हो, दरवाज़ा बद हो, पहरे वाला सोता हो मन ललचा रहा हो काम प्रबल हो ××और वह अपने शम दम के बल सै निर्दोष चल सकै?" उसने कहा कि "हाँ वह रूपवान सुदरी सै बच सक्ता है परतु निदकों की निदा सै नही बच सक्ता" फिर लोक-निदा के भय सै अपना कर्तव्य न करना बडी भूल है धर्म औरों के लिए नही अपने लिये और अपने लिए भी फल की इच्छा सै नही, अपना कर्तव्य पूरा करने के लिये करना चाहिये परतु धर्म करते अधर्म हो जाय, नेकी करते बुराई पल्ले पड़े, औरों को निकालती बार आप गोता खाने लगे तो कैसा हो? रुपे का लालच बडा प्रबल है और निर्धनों को तो उन्के काम निकालने की चाबी होने के कारण बहुत ही ललचाता है" थोडी देर पीछै कहा "हलधर दास नें कहा है—

"बिन काले मुख नहि पलाश को अरुणाई है।
बिन बूड़े न समुद्र काहु मुक्ता पाई है॥"

इसी तरह गोल्डस्मिथ कहता है कि "साहस किये बिना अलभ्य वस्तु हाथ नहीं लग सक्ती" इसलिये ऐसे साहसी कामो मै अपनी नीयत अच्छी रखनी चाहिये यदि अपनी नीयत अच्छी होगी तो ईश्वर अवश्य सहायता करैगा और डूब भी जायेंगे तो अपनी स्वरूप हानि न होगी."

———

प्रकरण २१

पतिव्रता

पति के सँग जीवन मरण पति हर्षे हर्षाय।
स्नेहमयी कुल नारि की उपमा लखो न जाय ॥ *

(शार्ङ्गधरे)

लाला ब्रजकिशोर न जाने कब तक इसी भँवर जाल मैं फँसे रहते परतु मदनमोहन की पतिव्रता स्त्री के पास सै उस्के दो नन्हें, नन्हें बच्चों को लेकर एक बुढिया आ पहुँची इस्सै ब्रजकिशोर का ध्यान बट गया.

उन बालकों की आँखों मैं नींद घुल रही थी उन्को आते ही ब्रजकिशोर नें बड़े प्यार सै अपनी गोद मैं बिठा लिया और बुढिया सै कहा "इन्को इस्समय क्यों हैरान किया ? देख इन्की आँखों मैं नींद घुल रही है जिस्सै ऐसा मालूम होता है कि मानों यह भी अपनें बाप के काम काज की निर्बल अवस्था देखकर उदास हो रहे हैं" उन्को छाती सै लगा कर कहा "शाबास ! बेटे शाबास !! तुम अपने बाप की भूल नही समझते तो भी उदास मालूम होते हो परतु वह सब कुछ समझता है तो भी तुम्हारी हानि लाभ का कुछ बिचार नही करता झूँटी जिद अथवा हठधर्मी सै तुम्हारा वाजबी हक खोए देता है तुम्हारे बाप को लोग बडा उदार और दयालु बताते हैं परतु वह कैसा कठोर चित्त है कि अपने गुलाब जैसे कोमल और गंगाजल जैसे निर्मल बालकों के साथ विश्वासघात

---

* जीवति जीवति नाथे मृतेमृता या मुदायुता मुदिते।
सहजस्नेह रसाला कुलबनिता केन तुल्यास्यात् ॥

करके उन्को जन्म भर के लिये दरिद्री बनाये देता है वह नहीं जान्ता कि एक हकदार का हक छीन कर मुफ्तखोरों को लुटा देने मैं कितना पाप है ! कहो अब तुम्हारे वास्ते क्या मगवायँ ?"

"खिनोने" (खिलौने) छोटे नें कहा "बप्फी" (बर्फी) बड़े बोले और दोनों ब्रजकिशोर की मूँछें पकड़ कर खेचने लगे . ब्रजकिशोर नें बड़े प्यार सै उन्के गुलाबी गालों पर एक, एक मीठी चूमी ले ली और नौकरों को आवाज़ देकर खिलौनें और बरफी लाने का हुक्म दिया .

"जी ! इन्की माँ ने ये बच्चे आप के पास भेजे हैं" बुढिया बोली "और कह दिया है कि इन्को आप के पाओं मै डाल कर कह देना कि मुझ को आप के क्रोधित हो कर चले जानें का हाल सुन्कर बडी चिंता हो रही है मुझ को अपने दुःख सुख का कुछ बिचार नहीं मै तो उन्के साथ रहनें मैं सब तरह प्रसन्न हूँ, परंतु इन छोटे, छोटे बच्चों की क्या दशा होगी ? इन्को बिद्या कौन पढायगा ? नीति कौन सिखायगा ? इन्की उमर कैसे कटेगी ? मैं नहीं जान्ती कि आप को इस कठिन समय मै अपना मन मार कर उन्की बुद्धि सुधारनी चाहिये थी अथवा उन्को अधर धार मै लटका कर घर चले जाना चाहिये था ? खैर ! आप उन्पर नहीं तो अपने कर्तव्य पर दृष्टि करें, अपने कर्तव्य पर नहीं तो इन छोटे बच्चों पर दया करे ये अपनी रक्षा आप नही कर सक्ते इन्का बोझ आप के सिर है आप इन्की खबर न लेंगे तो ससार मै इन्का कहीं पता न लगेगा और ये बिचारे यों ही झुर झुर कर मर जायँगे !"

यह बात सुन कर ब्रजकिशोर की आँखें भर आईं थोड़ी देर कुछ नहीं बोला गया फिर चित्त स्थिर कर के कहनें लगे "तुम बहन सै कह देना कि मुझको अपना कर्तव्य अच्छी तरह याद है परतु क्या करूँ ? मैं बिबस हू काल की कुटिल गति सै मुझ को अपने मनोर्थ के विपरीत आचरण (बरताव) करना पडता है तथापि वह चिंता न करें . ईश्वर का कोई काम भलाई सै खाली नही होता उस्ने इस्मैं भी अपना कुछ न

कुछ हित ही सोचा होगा" लड़कों की तरफ देख कर कहा "बेटे ! तुम कुछ उदास मत हो जिस तरह सूर्य चंद्रमा को ग्रहण लग जाता है इसी तरह निर्दोष मनुष्यों पर भी कभी, कभी अनायास विपत्ति आ पडती है परतु उस्समय उन्हे अपनी निर्दोषता का बिचार करके मन मै धैर्य रखना चाहिये" .

उन अनसमझ बच्चों को इन्बातों की कुछ परवा न थी बरफी और खिलोनों के लालच सै उन्की नींद उड गई थी इस वास्तै वह तो हरेक चीज़ की उठाया धरी मै लग रहे थे और ब्रजकिशोर पर तकाजा जारी था .

थोड़ी देर मै बरफी और खिलोने भी आ पहुँचे इस्समय उन्की खुशी की हद न रही . ब्रजकिशोर दोनों को बरफी बाटा चाहते थे इतने मैं छोटा हाथ मार कर सब ले भागा और बडा उस्सै छीन्ने लगा तो सब की सब एक बार मुँह मै रख गया . मुँह छोटा था इसलिये वह मुँह मै नही समाती थी परतु यह खुशी भी कुछ थोडी न थी कनअँखियों सै बड़े की तरफ देख कर मुस्कराता जाता था और नाचता जाता था. वह भोली भोली सूरत, ठुमक ठुमक कर नाचना, छिप छिप कर बड़े की तरफ देखना, सैन मारना , उस्के मुस्कराने मै दूध के छोटे, छोटे दातों की मोती की सी झलक देख कर थोडी देर के लिये ब्रजकिशोर अपनें सब चारा बिचार भूल गए परतु इस्को नाचता कूदता देख कर अब बडा मचल पडा उस्ने सब खिलोने अपने कब्जे मै कर लिये और ठिनक, ठिनक कर रोने लगा . ब्रजकिशोर उस्को बहुत समझाते थे कि "वह तुम्हारा छोटा भाई है तुम्हारे हिस्से की बरफी खा ली तो क्या हुआ ? तुम ही जाने दो" परतु वहाँ इन्बातों की कुछ सुनाई न थी इधर छोटे खिलोंनों की छीना झपटी मै लग रहे थे ! निदान ब्रजकिशोर को बड़े के वास्तै बरफ़ी और छोटे के वास्तै खिलौने फिर मगानें पड़े . जब दोनों की रज़ामदी हो गई तो ब्रजकिशोर नें बड़े प्यार सै दोनों की

एक, एक मिठी (मीठी चूमी) लेकर उन्हें विदा किया और जाती बार बुढ़िया को समझा दिया कि "बहन को अच्छी तरह समझा देना वह कुछ चिंता न करे ."

परतु बुढ़िया मकान पर पहुँची जितने वहाँ की तो रगत ही बदल गई थी मदनमोहन के साले जगजीवन दास अपनी बहन को लिवा ले जाने के लिये मेरठ सै आए थे वह अपनी मा (अर्थात् मदनमोहन की सास) की तबीयत अच्छी नही बताते थे और आज ही रात की रेल मैं अपनी बहन को मेरठ लिवा ले जानें की तैयारी करा रहे थे, मदनमोहन की स्त्री के मन मै इस्समय मदनमोहन को अकेले छोड कर जानें की बिल्कुल न थी परतु एक तो वह अपने भाई सै लज्जा के मारे कुछ नहीं कह सक्ती थी दूसरे मा की माँदगी का मामला था तीसरे मदनमोहन हुक्म दे चुके थे इस लिये लाचार होकर उस्ने दो, एक दिन के वास्ते जानें की तैयारी की थी .

मदनमोहन की स्त्री अपने पति की सच्ची प्रीतिमान, शुभचितक, दुःख सुख की साथन, और आज्ञा मै रहनें वाली थी और मदनमोहन भी प्रारंभ मै उस्सै बहुत ही प्रीति रखता था परतु जब सै वह चुन्नीलाल और शिभूदयाल आदि नए मित्रों की सगति मै बैठने लगा नाच रग की धुन लगी, बेश्याओं के झूटे हाव भाव देख कर लोट पोट हो गया ! "अय ! सुभानअल्लाह ! क्या जोबन खिल रहा है !" "वल्लाह ! क्या बहार आ रही है !" "चश्मबद्दूर क्या भोली, भोली सूरत है !" "अय ! परे हटो !" "मै सदकै ! मै कुर्बान मुझे न छेडो !" "खुदा की कसम ! मेरी तरफ तिरछी नज़र सै न देखो !" बस यह चोचले की बातें चित्त मै चुभ गई . किसी बात का अनुभव तो था ही नहीं तरुणाई की तरग, शिभूदयाल और चुन्नीलाल आदि की सगति, द्रव्य और अधिकार के नशे मैं ऐसा चकचूर हुआ कि लोक परलोक की कुछ खबर न रही .

यह बिचारी सीधी सादी सुयोग्य स्त्री अब गंवारी मालूम होने लगी; पहले पहले कुछ दिन यह बात छिपी रही परतु प्रीति के फूल मै कीडा लगे पीछे वह रस कहाँ रह सक्ता है ? उस समय परस्पर के मिलाप से किसी का जी नहीं भरता था, बातो की गुलझटी कभी सुलझने नहीं पाती थी, आधी बात मुख मै और आधी होटों ही मै हो जाती थी, आँख से आँख मिल्ते ही दोनों को अपने आप हँसी आ जाती थी केवल हँसी नहीं उस हँसी मै धूप छाया की तरह आधी प्रीति और आधी लज्जा की झलक दिखाई देती थी और सच्ची प्रीति के कारण ससार की कोई वस्तु सुदरता मै उससे अधिक नही मालूम होती थी . एक की गुप्त दृष्टि सदा दूसरे की ताक झाक मै लगी रहती थी क्या चित्रपट देखने मै, क्या रमणीक स्थानों की सैर करने मै, क्या हँसी दिल्लगी की बातों मै कोई मौका नोक झोक से खाली नहीं जाता था और ससार के सब सुख अपने प्राण जीवन बिना उन्को फीके लगते थे परतु अब वह बाते कहाँ हैं ? उस्की स्त्री अब तक सब बातों मै वैसी ही दृढ है बल्कि अज्ञान अवस्था की अपेक्षा अब अधिक प्रीति रखती है परतु मदनमोहन का चित्त वह न रहा वह उस बिचारी से कोसों भागता है उस्को आफत समझता है क्या इन्बातों से अनसमझ तरुणों की प्रीति केवल आँखों मै नही मालूम होती ? क्या यह उस्की बेकदरी और झूँटी हिर्स का सब से अधिक प्रमाण नहीं है ? क्या यह जाने पीछे कोई बुद्धिमान ऐसे अनसमझ आदमियों की प्रतिज्ञाओं का विश्वास कर सक्ता है ? क्या ऐसी पवित्र प्रीति के जोड़े मै अतर डालने वालों को वाल्मीकि ऋषि का शाप * भस्म न करेगा ? क्या एक हकदार की सच्ची प्रीति के ऐसे चोरों को परमेश्वर के यहाँ से कठिन दंड न होगा ?

---

* मा निषाद प्रतिष्ठा त्वमगमः शाश्वतीः समाः ।
यत्क्रौंच मिथुनादेकमवधीः काममोहितम् ॥

मदनमोहन की पतिव्रता स्त्री अपने पति पर क्रोध करना तो सीखी ही नहीं है मदनमोहन उस्की दृष्टि मैं एक देवता है वह अपने ऊपर के सब दुःखों को मदनमोहन की सूरत देखते ही भूल जाती है और मदनमोहन के बड़े सै बड़े अपराधों को सदा जाना न जाना करती रहती है. मदनमोहन महीनों उस्की याद नहीं करता परंतु वह केवल मदनमोहन को देखकर जीती है वह अपना जीवन अपने लिये नहीं, अपने प्राणपति के लिये समझती है जब वह मदनमोहन को कुछ उदास देखती है तो उस्के शरीर का रुधिर सूख जाता है जब उस्को मदनमोहन के शरीर मैं कुछ पीडा मालूम होती है तो वह उस्की चिंता सै बावली बन जाती है, मदनमोहन की चिंता सै उस्का शरीर सूख कर काटा हो गया है उस्को अपने खाने पीनें की बिल्कुल लालसा नहीं है परंतु वह मदनमोहन के खानें पीने की सब सै अधिक चिंता रखती है वह सदा मदनमोहन की बडाई करती रहती है और जो लोग मदनमोहन की ज़रा भी निंदा करते हैं वह उन्की शत्रु बन जाती है, वह सदा मदनमोहन को प्रसन्न रखने के लिये उपाय करती है उस्के सन्मुख प्रसन्न रहती है अपना दुःख उस्को नहीं जताती और सच्ची प्रीति सै बडप्पन का बिचार रख कर भय और सावधानी के साथ सदा उस्की आज्ञा प्रतिपालन करती रहती है.

थोड़े खर्च मै घर का प्रबंध ऐसी अच्छी तरह कर रक्खा है कि मदनमोहन को घर के कामो मे ज़रा परिश्रम नहीं करना पडता जिस्पर फ़ुर्सत के समय खाली बैठ कर और लोगों की पंचायत और स्त्रियो के गहनें गाँठे की थोथी बातों के बदले कुछ, कुछ लिखने पढनें, कसीदा काढ़नें और चित्रादि बनाने का अभ्यास रखती है बच्चे बहुत छोटे हैं परंतु उन्को खेल ही खेल मै अभी सै नीति के तत्व समझाए जाते हैं और बेमालूम रीति सै धीरे, धीरे हरेक वस्तु का ज्ञान बढ़ाकर ज्ञान बढ़ानें की उन्की स्वाभाविक रुचि को उत्तेजन दिया जाता है परंतु उन्के

मन पर किसी तरह का बोझ नहीं डाला जाता उन्के निर्दोष खेल कूद और हँसनें बोलनें की स्वतंत्रता मैं किसी तरह की बाधा नहीं होनें पाती .

मदनमोहन की स्त्री अपने पति को किसी समय मौके सै नेक सलाह भी देती है परतु बडों की तरह दबा कर नहीं, बराबर वालों की तरह झगड कर नहीं, छोटों की तरह अपने पति की पदवी का विचार करके, उन्के चित्त दुःखित होनें का विचार करके, अपनी अज्ञानता प्रगट करके, स्त्रियों की ओछी समझ जता कर धीरज सै अपना भाव प्रगट करती है परंतु कभी लोट कर जवाब नहीं देती, विवाद नहीं करती . वह बुद्धिमती चुन्नीलाल और शिभूदयाल इत्यादि की स्वार्थपरता सै अच्छी तरह भेदी है परतु पति की ताबेदारी करना अपना कर्तव्य समझ कर समय की बाट देख रही है और ब्रजकिशोर को मदनमोहन का सच्चा शुभचितक जान्कर केवल उसी सै मदनमोहन की भलाई की आशा रखती है. वह कभी ब्रजकिशोर सै सन्मुख होकर नहीं मिली परतु उस्को धर्म का भाई मान्ती है और केवल अपने पति की भलाई के लिये जो कुछ नया वृत्तात कहलाने के लायक मालूम होता है वह गुपचुप उस्सै कहला भेजती है . ब्रजकिशोर भी उस्को धर्म की बहन समझता है इस्कारण आज ब्रजकिशोर के अनायास क्रोध करके चले जाने पर उस्ने मदनमोहन के हक मै ब्रजकिशोर को दया उत्पन्न करनें के लिये इस्समय अपनें नन्हें नन्हे बच्चों को टहलनी के साथ ब्रजकिशोर के पास भेज दिया था परतु वह लोट कर आए जितने अपनी ही मेरठ जाने की तैयारी हो गई और रातों रात वहाँ जाना पडा .

प्रकरण २२

संशय

अज्ञ पुरुष श्रद्धारहित संशययुत बिनशाय।
बिन श्रद्धा दुहुँ लोक मैं ताकों सुख न लखाय ॥*
(श्रीमद्भगवद्गीता)

लाला ब्रजकिशोर उठकर कपड़े नही उतारने पाये थे इतने मै हर-किशोर आ पहुँचा.

"क्यों! भाई! आज तुम अपने पुराने मित्र सै कैसै लड आए?" ब्रजकिशोर नें पूछा.

"इस्मै आपको क्या? आपके हाँ तो घी के दिये जल गए होंगे" हरकिशोर नें जवाब दिया.

"मेरे हाँ घी के दिये जलने की इस्मै कौन्सी बात थी?" ब्रजकिशोर नें पूछा

"आप हमारी मित्रता देख कर सदैव जला करते थे आज वह जलन मिट गई."

"क्या तुम्हारे मन मै अब तक यह झूँटा वहम समा रहा है?" ब्रजकिशोर ने पूछा.

"इस्मै कुछ सदेह नहीं" हरकिशोर हुज्जत करनें लगा. "मै ठेठ सै देखता आता हूँ कि आप मुझको देखकर जल्ते हैं मेरी और मदनमोहन की मित्रता देख कर आपकी छाती पर साप लोटता है. आपने हमारा परस्पर बिगाड करानें के लिए कुछ थोड़े उपाय किये? मदनमोहन के

---

* अज्ञश्चाश्रद्दधानश्च सशयात्मा बिनश्यति।
नायलोकोस्तिनपरो न सुखं सशयात्मनः॥

पिता को थोडा भडकाया ? जिस दिन मेरे लड़के की बरात मै शहर के सब प्रतिष्ठित मनुष्य आए थे उन्को देख कर आपके जी मै कुछ थोड़ा दुःख हुआ ? शहर के सब प्रतिष्ठित मनुष्यों सै मेरा मेल देख कर आप नहीं कुढते ? आप मेरी तारीफ सुन्कर कभी अपने मन मै प्रसन्न हुए ? आपने किसी काम मै मुझको सहायता दी ? जब मै ने अपने लडके के विवाह मै मजलिस की थी आपने मजलिस करनें सै मुझे नहीं रोका ? लोगों के आगे मुझको बावला नहीं बताया ? बहुत कहनें सै क्या है ? आज ही मदनमोहन का मेरा बिगाड सुन्कर कचहरी सै वहाँ झटपट दोड गए और दो घटे एकात मै बैठकर उस्को अपनी इच्छानुसार पट्टी पढा दी परतु मुझको इन बातों की क्या परवा है ? आप और वह दोनो मिल्कर मेरा क्या कर सक्ते हो ? मै सब समझ लूँगा "

लाला ब्रजकिशोर ये बाते सुन सुन कर मुस्कराते जाते थे . वह अब धीरज सै बोले "भाई ! तुम बृथा वहम का भूत बनाकर इतना डरते हो . इस वहम का कुछ ठिकाना है ? तुम तत्काल इन बातों की सफाई करते चले जाते तो मन मैं इतना वहम सर्वथा नहीं रहता . क्या स्वच्छ अतःकरण का यही अर्थ है ? मुझको जलन किस बात पर होती ? तुम अपना सब काम छोड कर दिन भर लोगों की हाजरी साधते फिरोगे , उन्की चाकरी करोगे, उन्को तोहफा तहायफ दोगे ? दस, दस बार मसाल लेकर उन्के घर बुलाने जाओगे तो वह क्यों न आवेंगे ? अपने गाठ की दौलत खर्च करके उन्को नाच दिखाओगे तो वह क्यों न तारीफ़ करेंगे ? परतु यह तारीफ कितनी देर की, वाह वाह कितनी देर की ? कभी तुम पर आफत आ पड़ेगी तो इन्मैं सै कोई तुम्हारी सहायता को आवेगा ? इस खर्च सै देश का कुछ भला हुआ ? तुम्हारा कुछ भला हुआ ? तुम्हारी सतान का कुछ भला हुआ ? यदि इस फिजूलखर्चों के बदले लडके के पढ़ानें लिखानें मैं यह रुपया लगाया जाता, अथवा किसी देश हितकारी काम मैं खर्च होता तो निस्सदेह बडाई की बात थी परतु मैं

इस्मैं क्या तारीफ करता, क्या प्रसन्न होता, क्या सहायता करता, मुझको तुम्हारी भोली, भोली बातों पर बड़ा आश्चर्य था इसी वास्ते मै नें तुमको फ़िजूलखर्ची सै रोका था, तुमको बावला बताया था परंतु तुम्हारी तरफ की मेरी मन की प्रीति मै कुछ अतर कभी नहीं आया क्या तुम यह बिचारते हो कि जिससै सबध हो उस्की उचित अनुचित हरेक बात का पक्षपात करना चाहिये ? इसाफ अपने वास्ते नहीं केवल औरों के वास्ते है ? क्या हाथ मै डिमडिमी लेकर सब जगह डोंडी पीटे बिना सच्ची प्रीति नहीं मालूम होती ? इन सब बातों मै कोई बात तुम्हारी बडाई के लायक हो तो घर फूंक तमाशा देखना है . इसी तरह इन सब बातो मै कोई बात मेरे प्रसन्न होने लायक हो तो तुमको प्रसन्न देख कर प्रसन्न होना है मै यह नहीं कहता कि मनुष्य ऐसे कुछ काम न करे समय, समय पर अपने बूते मूजिब सब काम करने योग्य हैं परतु यह मामूली कारवाई है जितना वैभव अधिक होता है उतनी ही धूम धाम बढ जाती है इसलिये इस्मै कोई खास बात नही पाई जाती है मै चाहता हू कि तुम सै कोई देशहितैषी ऐसा काम बने जिस्मै मै अपने मन की उमग निकाल सकूं. मनुष्य को जलन उस मौके पर हुआ करती है जब वह आप उस लायक न हो परतु तुमको जो बडाई बड़े परिश्रम सै मिली है वह ईश्वर की कृपा सै मुझको बेमहनत मिल रही है फिर मुझ को जलन क्यों हो ? तुम्हारी तरह खुशामद कर के मदनमोहन सै मेल किया चाहता तो मै सहज मै कर लेता परतु मै ने आप यह चाल पसद न की तो अपनी इच्छा सै छोडी हुई बातों के लिये मुझको जलन क्यों हो ? जलन की वृत्ति परमेश्वर ने मनुष्य को इसलिए दी है कि वह अपने सै ऊँची पदवी के लोगों को देखकर उचित रीति सै अपनी उन्नति का उद्योग करे परतु जो लोग जलन के मारे औरों का नुक्सान करके उन्हें अपनी बराबर का बनाया चाहते है वह मनुष्य के नाम को धब्बा लगाते है मुझको तुम सै केवल यह शिकायत थी और इसी विषय मै तुम्हारे विपरीत चर्चा करनी पडी थी कि तुमने मदन-

मोहन सै मित्रता करके मित्र के करनें का काम न किया, तुम को मदन-मोहन के सुधारनें का उपाय करना चाहिये था परतु मै ने तुम्हारे बिगाड़ की कोई बात नहीं की हाँ इस वहम का क्या ठिकाना है ? खाते, पीते, बैठते, उठते, बिना जाने ऐसी सैकडों बातें बन जाती है कि जिन्का बिचार किया करे तो एक दिन मै बावले बन जायॅ . आए तो आए क्यों, गए तो गए क्यों, बैठे तो बैठे क्यों, हँसे तो हँसे क्यों, फलानें सै क्या बात की फलानें सै क्यों मिले ? ऐसी निरर्थक बातों का बिचार किया करें तो एक दिन काम न चले . छुटभैये सैकडों बातें बीच की बीच मै बनाकर नित्य लड़ाई करा दिया करें पर नहीं अपनें मन को सदैव दृढ रखना चाहिए निर्बल मन के मनुष्य जिस तरह की ज़रा ज़रा सी बातों मै बिगड़ खड़े होते हैं दृढ मन के मनुष्य को वैसी बातों की खबर भी नहीं होती इसलिये छोटी, छोटी बातों पर विशेष बिचार करना कुछ तारीफ की बात नहीं है और निश्चय किए बिना किसी को निंदित बातों पर बिश्वास न करना चाहिये, किसी बात मै सदेह पड जाय तो स्वच्छ मन सै कह सुनकर उस्की तत्काल सफ़ाई कर लेनी अच्छी है क्योंकि ऐसे झूटे, झूटे वहम सदेह और मनःकल्पित बातों सै अब तक हज़ारों घर बिगड चुके हैं "

"खैर ! और बातों में आप चाहें जो कहैं परतु इतनी बात तो आप भी अगीकार करते हैं कि मदनमोहन की और मेरी मित्रता के बिषय मै आप ने मेरे बिपरीत चर्चा की बस इतना प्रमाण मेरे कहनें की सचाई प्रगट करनें के लिए बहुत है" हरकिशोर कहने लगा "आप का यह बरताव केवल मेरे सग नहीं है बल्कि सब ससार के सग है आप सबकी नुक्ताचीनी किया करते हैं "

"अब तो तुम अपनी बात को सब संसार के साथ मिलानें लगे परंतु तुम्हारे कहने सै यह बात अगीकार नहीं हो सक्ती . जो मनुष्य आप जैसा होता है वैसा ही सब ससार को समझता है मै ने अपना

कर्तव्य समझ कर अपने मन के सच्चे, सच्चे विचार तुम से कह दिये अब उन्को मानों या न मानों तुम्हें अधिकार है" लाला ब्रजकिशोर नें स्वतंत्रता से कहा.

"आप सच्ची बात के प्रगट होने से कुछ संकोच न करें संबंधी हो अथवा बिगाना हो जिस्से अपनी स्वार्थ-हानि होती है उस्से मन मै अंतर तो पड ही जाता है" हरकिशोर कहने लगा "स्यमन्तक मणि के संदेह पर श्रीकृष्ण बलदेव जैसे भाइयों मै भी मन चाल पड़ गई ब्रह्मसभा मै अपमान होने पर दक्ष और महादेव (ससुर जँवाई) के बीच भी विरोध हुए बिना न रहा."

"तो यों साफ क्यो नही कहते कि मेरी तरफ से अब तक तुम्हारे मन मै वही विचार बन रहे हैं. मुझको कहना था वह कह चुका अब तुम्हारे मन मै आवे जैसे समझते रहो" लाला ब्रजकिशोर नें बेपरवाई से कहा.

"चालाक आदमियों की यह तो रीति ही होती है कि वह जैसी हवा देखते हैं वैसी बात करते हैं. अब तक मदनमोहन से आप की अनबन रहती थी अब मुकदमों का समय आते ही मेल हो गया! अब तक आप मदनमोहन से मेरी मित्रता छुडाने का उपाय करते थे अब मुझको मित्रता रखनें के लिए समझानें लगे! सच है बुद्धिमान मनुष्य जो करना होता है वही करता है परंतु औरों का ओलभा मिटाने के लिए उन्के सिर मुफ्त का छप्पर ज़रूर धर देता है अच्छा! आप को लाला मदनमोहन की नई मित्रता के लिए बधाई है और आप के मनोर्थ सफल करनें का उपाय बहुत लोग कर रहे हैं" हरकिशोर नें भरमा भरमी कहा

"यह तुम क्या बक्ते हो मेरा मनोर्थ क्या है? और मै ने हवा देख कर कौन्सी चाल बदली?" लाला ब्रजकिशोर कहने लगे "जैसे नाव मै बैठनें वाले को किनारे के वृक्ष चल्ते दिखाई देते हैं इसी तरह तुम्हारी

चाल बदल जानें सै तुमको मेरी चाल मैं अतर मालूम पडता है . तुम्हारी तबियत को जाचने के लिये तुमने पहले सै कुछ नियम स्थिर कर रक्खे होते तो तुमको ऐसी भ्राति कभी न होती मैं ठेठ सै जिस्तरह मदनमोहन को चाहता था, जिस्तरह तुमको चाहता था, जिस्तरह तुम दोनों की परस्पर प्रीति चाहता था उसी तरह अब भी चाहता हूँ परतु तुम्हारी तबियत ठिकाने नही है इस्सै तुमको बारबार मेरी चाल पर सदेह होता है, सो खैर ! मुझै तो चाहे जैसा समझते रहो परतु मदनमोहन के साथ बैर भाव मत रक्खो, तुच्छ बातों पर कलह करना अनुचित है और बैरी सै भी बैर बढाने के बदले उस्के अपराध क्षमा करने मै बडाई मिल्ती है ."

"जी हाँ ! पृथ्वीराज नें शहाबुद्दीन गोरी को क्षमा करके जैसी बडाई पाई थी वह सबको प्रगट है" हरकिशोर ने कहा .

"आगे की हानि का सदेह मिटे पीछे पहले के अपराध क्षमा करनें चाहियें परतु पृथ्वीराज नें ऐसा नहीं किया था इसी सै धोका खाया और—"

"बस, बस यहीं रहनें दीजिये मेरा मतलब निकल आया आप अपनें मुख से ऐसी दशा मै क्षमा करना अनुचित बता चुके उस्सै आगै सुन्कर मैं क्या करूँगा ?" यह कह कर हरकिशोर, ब्रजकिशोर के बुलाते बुलाते उठ कर चला गया .

और ब्रजकिशोर भी इन्हीं बातो के सोच विचार मैं वहाँ सै उठ कर पलग पर जा लेटे .

प्रकरण २३

प्रामाणिकता .

"एक प्रामाणिक मनुष्य परमेश्वर की सर्वोत्कृष्ट रचना है"*
(पोप)

ब्रजकिशोर कौन है ? मदनमोहन की क्यों इतनी सहानुभूति (हमदर्दी) करते हैं ? अच्छा ! अब थोडी देर और कुछ काम नहीं है जितने थोडा सा हाल इन्का सुनिये

लाला ब्रजकिशोर गरीब मा बाप के पुत्र है परतु प्रामाणिक, सावधान, विद्वान और सरल स्वभाव हैं इन्की अवस्था छोटी है तथापि अनुभव बहुत है यह जो कहते है उसी के अनुसार चलते है इन्की बहुत सी बाते अब तक इस पुस्तक मे आ चुकी हैं इसलिए कुछ विशेष लिखने की जरूरत नहीं है तथापि इतना कहे बिना नहीं रहा जाता कि यह परमेश्वर की सृष्टि का (के) एक उत्तम पदार्थ हैं . यह वकील हैं परतु अपनी तरफ के मुकद्दमेवालों का झूटा पक्षपात नही करते, झूटे मुकद्दमे नहीं लेते बूते से ज्यादः काम नहीं उठाते, परतु जो मुकद्दमे लेते हैं उन्की पैरवी वाजबी तौर पर बहुत अच्छी तरह करते हैं और बहुधा अन्याय से सताए हुए गरीबों के मुकद्दमों मे बे महन्ताना लिये पैरवी किया करते हैं, हाकिम और नगरनिवासियों को इन्की बात पर बहुत विश्वास है . यह स्वतंत्र मनुष्य हैं परतु स्वेच्छाचारी और अहकारी नहीं हैं अपनी स्वतत्रता को उचित मर्यादा से आगे नहीं बढने देते, परमेश्वर और स्वधर्म पर दृढ विश्वास रखते हैं बात सच कहते हैं परतु ऐसी चतुराई

---

* An honest man's the noblest work of God.
Alexander Pope.

सै कहते हैं कि इन्का कहना किसी को बुरा नहीं लगता और किसी की हक तल्फी भी नहीं होनें पाती यह थोथी बातों पर विवाद नही करते और इन्के कर्तव्य मै अतर न आता हो तो ये दूसरे की प्रसन्नता के लिए अकारण भी चुप हो रहते हैं अथवा केवल सकेत सा कर देते हैं जहाँ तक औरों के हक मै अतर न आय, ये अपने ऊपर दुःख उठा कर भी परोपकार करते हैं बैरी सै सावधान रहते हैं परंतु अपनें मन मै उस्की तरफ का बैर भाव नही रखते . अपनी ठसक किसी को नही दिखलाया चाहते . यह मध्यम भाष सै रहनें को पसंद करते हैं और इनकी भलमनसात सै सब लोग प्रसन्न हैं परतु मदनमोहन को इन्की बाते अच्छी नही लगती और लोगों सै यह केवल इतनी बात करते हैं जिस्में वह प्रसन्न रहैं और इन्हें झूंट न बोलनी पड़े परतु मदनमोहन सै ऐसा सबंध नहीं है . उस्की हानि लाभ को यह अपनी हानि लाभ सै अधिक समझते हैं इसी वास्तै इन्की उस्सै नही बन्ती . यह कहते है कि "जब तक कुछ काम न हो अपने पल्ले मै किसी तरह का दाग लगाए बिना हर तरह के आदमी सै अच्छी तरह मित्रता निभ सक्ती है परतु काम पड़े पर उचित रीति बिना काम नहीं चल्ता ."

यह अपनी भूल जान्ते ही प्रसन्नता सै उस्को अगीकार कर के उस्के सुधारनें का उद्योग करते हैं इसी तरह जो बात नही जान्ते उस्मै अपनी झूटी निपुणता दिखानें पर काम पडनें पर उस्का अभ्यास करके जेम्सवाट की तरह अपनी सच्ची सावधानी सै लोगों को आश्चर्य मै डालते हैं .

(बहुधा लोग जान्ते होंगे कि जेम्सवाट कलों के काम मै एक प्रसिद्ध मनुष्य हो गया है उस्के समान काल मै उस्की अपेक्षा बहुत लोग अधिक विद्वान थे परतु अपने ज्ञान को काम में लानें के वास्ते जेम्सवाट नें जितनी महनत की उतनी और किसी नें नहीं की . उस्नें हरेक पदार्थ की बारीकियों पर दृष्टि पहुँचानें के लिए खूब अभ्यास बढाया . वह बढ़ई का

पुत्र था जब वह बालक था तब ही अपनें खिलोनों मैं सै विद्या विषय ढूँढ़ निकालता था. उसके बाप की दुकान मैं ग्रहों के देखनें को कले रक्खी थी जिससै उसको प्रकाश और जोतिष विद्या का व्यसन हुआ. उसके शरीर मैं रोग उत्पन्न होने सै उसको वैद्यक सीखनें की रुचि हुई और बाहर गाँव मैं एकात फिरने की आदत सै उसने वनस्पति विद्या और इतिहास का अभ्यास किया. गणित शास्त्र के औजार बनाते, बनाते उसको एक आर्गन बाजा बनाने की फर्मायश हुई परतु उसको उससमय तक गाना नही आता था इसलिये उसनें प्रथम सगीत विद्या का अभ्यास करके पीछे सै एक आर्गन बाजा बहुत अच्छा बना दिया. इसी तरह एक बाफ की कल उसकी दुकान पर सुधरने आई तब उसने गर्मी और बाफ विषयक वृत्तात सीखने पर मन लगाया और किसी तरह की आशा अथवा किसी के उत्तेजन बिना इस काम मैं दस बरस परिश्रम करके बाफ की एक नई कल ढूढ़ निकाली जिससै उसका नाम सदा के लिए अमर हो गया.)

लाला ब्रजकिशोर को ससारी सुख भोगने की तृष्णा नहीं है और द्रव्य की आवश्यकता यह केवल सासारिक कार्य निर्वाह के लिये समझते हैं इस वास्तै ससारी कामो की जरूरत के लायक परिश्रम और धम सै रुपया पैदा किये पीछे बाकी का समय यह विद्याभ्यास और देशोपकारी बातों मैं लगाते है.

इन्के निकट उन गरीबों की सहायता करने मै सच्चा पुन्य है जो सच-मुच अपना निर्वाह आप नहीं कर सक्ते, या जिन रोगियों के पास इलाज करानें के लिए रुपया अथवा सेवा करने के लिये कोई आदमी नहीं होवा. ये उन अनसमझ बच्चों को पढ़ाने लिखाने मैं, अथवा कारीगरी इत्यादि सिखा कर कमाने खानें के लायक बना देने मैं, सच्चा धर्म समझते हैं जिन्के मा बाप दरिद्रता अथवा मूर्खता सै कुछ

नहीं कर सक्ते . ये अपने देश मै उपयोगी विद्याओं की चर्चा फैलानें, अच्छी अच्छी पुस्तकों का और भाषाओं सै अनुवाद करवा कर अथवा नई बनवा कर अपनें देश मै प्रचार करनें, और देश के सच्चे शुभचितक और योग्य पुरुषों को उत्तेजन देनें, और कलों की अथवा खेती आदि की सच्ची देश हितकारी बातों के प्रचलित करनें मै सच्चा धर्म समझते हैं . परतु शर्त यह है कि इन सब बातों मै अपना कुछ स्वार्थ न हो, अपनी नामवरी का लालच न हो, किसी पर उपकार करने का बोझ न डाला जाय बल्कि किसी को खबर ही न होनें पाय

इन्ने थोडी आमद मै अपने घर का प्रबध बहुत अच्छा बाध रक्खा है इन्की आमदनी मामूली नही है तथापि जितनी आमदनी आती है उस्सै खर्च कम किया जाता है और उसी खर्च मै भावी विवाह आदि का खर्च समझ कर उन्के वास्तै क्रम क्रम सै सीगेवार रकम जमा होती जाती है. विवाहादि के खर्चा का मामूल बध रहा है उन्मै फिजूलखर्ची सर्वथा नहीं होने पाती परतु वाजबी बातो मै कसर भी नही रहती . इन्के सिवाय जो कुछ थोडा बहुत बचता है वह बिना विचारे खर्च और नुक्सानादि के लिए अमानत रक्खा जाता है और विश्वास योग्य फायदे के कामों मै लगानें सै उस्की बृद्धि भी की जाती है .

इन्के दो छोटे भाइयों के पढाने लिखानें का बोझ इन्के सिर है इसलिए ये उन्को प्रचलित विद्याभ्यास की रूढ़ी के सिवाय उन्के मानसिक बिचारों के सुधारने पर सब सै अधिक दृष्टि रखते है ये कहते हैं कि "मनुष्य के मन के बिचार न सुधरे तो पढने लिखने सै क्या लाभ हुआ ?" इन्ने इतिहास और वर्तमान काल की दशा दिखा दिखा कर भले बुरे कामों के परिणाम और उन्की बारीकी उन्के मन पर अच्छी तरह बैठा दी है तथापि ये अपनी दूर दृष्टि सै अपनी सम्हाल मै गफ़लत नहीं करते उन्हें कुसगति मै नहीं बैठने देते यह उन्के सग ऐसी

युक्ति सै बरतते हैं जिस्मै न वो उद्धत होकर ढिठाई करने योग्य होनें पावै न भय सै उचित बात करनें मैं सकोच करैं . ये जान्ते है कि बच्चों के मन मै गुरु के उपदेश सै इतना असर नहीं होता जितना अपने बडों का आचरण देखने सै होता है इस लिये ये उन्को मुख सै उपदेश देकर उतनी बात नहीं सिखाते जितनी अपनी चाल चलन सै उनके मन पर बैठाते हैं .

ब्रजकिशोर को सच्ची सावधानी सै हरेक काम मैं सहायता मिल्ती है . सच्ची सावधानी मानों परमेश्वर की तरफ सें इन्को हरेक काम की राह बतानेवाली उपदेष्टा है परतु लोग सच्ची सावधानी और चालाकी का भेद नही समझते क्या सच्ची सावधानी और चालाकी एक है ?

मनुष्य की प्रकृति मैं बहुत सी उत्तमोत्तम वृत्ति मोजूद हैं परतु सावधानी के बराबर कोई हितकारी नहीं है सावधान मनुष्य केवल अपनी तबियत पर ही नहीं औरों की तबियत पर भी अधिकार रख सक्ता है वह दूसरे सै बात करते ही उसका स्वभाव पहचान जाता है और उस्सै काम निकालने का ढग जान्ता है . यदि मनुष्य मै और गुण साधारण हों और सावधानी अधिक हो तो वह अच्छी तरह काम चला सक्ता है परतु सावधानी बिना और गुणों से काम निकालना बहुत कठिन है

जिस्तरह सावधानी उत्तम पुरुषों के स्वभाव मै होती है इसी तरह चालाकी तुच्छ और कमीने आदमियों की तबियत मैं पाई जाती है . सावधानी हमको उत्तमोत्तम बातें बताती है और उन्के प्राप्त करने के लिये उचित मार्ग दिखाती है वह हर काम के परिणाम पर दृष्टि पहुँचाती है और आगे कुछ बिगाड की सूरत मालूम हो तो झूँटे लालच के कामों को प्रारभ सै पहले ही अटका देती है परतु चालाकी अपने आसपास की छोटी, छोटी चीजों को देख सक्ती है और केवल वर्तमान समय के फायदों का बिचार रखती है. वह सदा अपनें स्वार्थ की तरफ

झुकती है और जिस्तरह हो सके, अपनें काम निकाल लेनें पर दृष्टि रखती है . सावधानी आदमी की दृढ बुद्धि को कहते हैं और वह जों, जों लोगों मै प्रगट होती जाती है, सावधान मनुष्य की प्रतिष्ठा बढती जाती है परतु चालाकी प्रगट हुए पीछै उसकी बात का असर नहीं रहता चालाकी होशियारी की नकल है और बहुधा जान्वरों मै अथवा जान्वरों की सी प्रकृति के मनुष्यों मै पाई जाती है इसलिए उस्में मनुष्य जन्म को भूषित करनें के लायक कोई बात नही है वह अज्ञानियों के निकट ऐसी समझी जाती है जैसे ठट्ठेबाजी, चतुराई और भारी भरकमपना बुद्धिमानी समझे जायँ

लाला ब्रजकिशोर सच्ची सावधानी के कारण किसी के उपकार का बोझ अपनें ऊपर नही उठाया चाहते, किसी सै सिफारश आदि की सहायता नहीं लिया चाहते, कोई काम अपनें आग्रह सै नहीं कराया चाहते, किसी को कच्ची सलाह नहीं देते, ईश्वर के सिवाय किसी के भरोसे पर काम नहीं उठाते, अपनें अधिकार सै बढ कर किस काम मे दस्तदाज़ी नहीं करते . औरों की मारफत मामला करनें के बदले रोबरू बातचीत करनें को अधिक पसद करते हैं, वह लेन देन मै बड़ेखरे हैं परतु ईश्वर के नियमानुसार कोई मनुष्य सब के उपकारों सै अनृणीय (उऋण) नहीं हो सक्ता . ईश्वर, गुरु और माता पितादि के उपकारों का बदला किसी तरह नहीं दिया जा सक्ता परतु ब्रजकिशोर पर केवल इन्हीं के उपकार का बोझ नहीं है वह इन्सै सिवाय एक और मनुष्य के उपकार मे भी बँध रहे हैं .

ब्रजकिशोर का पिता अत्यत दरिद्री था अपनें पास सै फीस देकर ब्रजकिशोर को मदरसे मै पढानें की उस्की सामर्थ्य न थी और न वह इतनें दिन खाली रख कर ब्रजकिशोर को विद्या मै निपुण किया चाहता था, परतु मदनमोहन के पिता ने ब्रजकिशोर की बुद्धि और आचरण देख कर उसै अपनी तरफ सै ऊँचे दर्जे तक विद्या पढाई थी उस्की फीस

अपने पास सै दी थी उस्को पुस्तकें अपने पास सै ले दी थीं बल्कि उस्के घर का खर्च तक अपनें पास सै दिया था और यह सब बातैं ऐसी गुप्त रीति सै हुईं कि इन्का हाल स्पष्ट रीति सै मदनमोहन को भी मालूम न होने पाया था. ब्रजकिशोर उसी उपकार के बधन सै इस्समय मदनमोहन के लिए इतनी कोशिश करते हैं

प्रकरण २४

हाथ सै पैदा करनें वाले और पोतड़ों के अमीर

अमिल द्रव्यहू यत्न ते मिलै सु अवसर पाय।
सचित हू रक्षा बिना स्वत: नष्ट हो जाय ॥*

(हितोपदेशे)

मदनमोहन का पिता पुरानी चाल का आदमी था वह अपना बूता देख कर काम करता था और जो करता था वह कहता नहीं फिरता था उस्ने केवल हिंदी पढी थी वह बहुत सीधा सादा मनुष्य था परंतु व्यापार मै बडा निपुण था साहूकारे मै उस्की बडी साख थी वह लोगों की देखा देखी नहीं, अपनी बुद्धि सै व्यापार करता था. उस्ने थोड़े व्यापार मै अपनी सावधानी सै बहुत दौलत पैदा की थी इस्समय जिस्तरह बहुधा मनुष्य तरह, तरह की बनावट और अन्याय सै औरों की जमा मार कर साहूकार बन बैठते हैं सोने चाँदी के जगमगाहट के नीचे अपने घोर

---

* अलब्धमिच्छेत्तीर्थं योगादर्थस्य प्राप्तिरेव।
लब्धस्याप्यरक्षितस्य निधेरपिक्षय विनाशः॥

पापों को छिपाकर सज्जन बन्ने का दावा करते हैं धन को अपनी पाप बासना पूरी करनें का एक साधन समझते हैं ऐसा उस्नें नही किया था वह व्यापार मै किसी को कसर नहीं देता था पर आप भी किसी सै कसर नहीं खाता था उन दिनों कुछ तो मार्ग की कठिनाई आदि के कारण हरेक धुनें जुलाहे को व्यापार करने का साहस न होता था इसलिये व्यापार मै अच्छा नफा था दूसरे वह वर्तमान दशा और होनहार बातों का प्रसग समझ कर अपनी सामर्थ्य मूजिब हर बार नए रोज़गार पर दृष्टि पहुँचाया करता था इसलिए मक्खन उस्के हाथ लग जाता था, छाछ मैं और रह जाते थे . कहते हैं कि एक बार नई खान के पन्ने की खड बाज़ार मै बिकने आई परतु लोग उस्को असलियत को न पहचान सके और उसै खरीद कर नगीना बनवाने का किसी को हौसला न हुआ परतु उस्की निपुणाई सै उस्की दृष्टि मै यह माल जच गया था इसलिए उस्ने बहुत थोड़े दामो मै खरीद लिया और उस्के नगीने बनवा कर भली भाँत लाभ उठाया उसी समय सै उस्की जड जमी और पीछै वह उसै और, और व्यापार मै बढाता गया . परतु वह आप कभी बढ़कर न चला . वह कुछ तकलीफ सै नहीं रहता था , परतु लोगों को झूटी भडक दिखाने के लिए फिजूलखर्ची भी नही करता था उस्की सवारी मै नागोरी बैलों का एक सुशोभित तागा था और वह खासे मलमल सै बढकर कभी वस्त्र नहीं पहनता था, वह अपनें स्थान को झाड पोंछकर स्वच्छ रखता था परतु झाड-फानूस आदि को फिजूलखर्ची मैं समझता था उस्के हाँ मकान और दुकान पर बहुत थोड़े आदमी नोकर थे परतु हरेक मनुष्य का काम बट रहा था इस लिये बड़ी सुगमता सै सब काम अपने अपने समय पर होता चला जाता था . वह अपने धर्म पर दृढ था ईश्वर मै बड़ी भक्ति रखता था प्रति दिन प्रातःकाल घटा डेढ घटा कथा सुन्ता था और दरिद्री, दुखिया, अपाहजों की सहायता करनें मैं बडी अभिरुचि रखता था परतु वह अपनी उदारता किसी को प्रगट नहीं होने देता था वह अपने

काम धंदे मैं लगा रहता था इसलिये हाकिमों और रईसों सै मिलने का उसे समय नहीं मिल सक्ता था परंतु वह वाजबी राह सै चल्ता था इस लिये उसे बहुधा उन्सै मिलने की कुछ आवश्यकता भी न थी क्योंकि देशोन्नति का भार पुरानी रूढी के अनुसार केवल राजपुरुषों पर समझा जाता था. वह महनती था इसलिए तन्दुरुस्त था वह अपनें काम का बोझ हरगिज औरों के सिर नहीं डालता था, हां यथाशक्ति वाजबी बातों मैं औरों की सहायता करनें को तैयार रहता था.

परंतु अब समय बदल गया इससमय मदनमोहन के विचार और ही हो रहे हैं, जहां देखो अमीरी ठाठ, अमीरी कारखानें, बाग की सजावट का कुछ हाल हम पहले लिख चुके हैं मकान मैं कुछ उस्सै अधिक चमत्कार दिखाई देता है, बैठक का मकान अंग्रेजी चाल का बनवाया गया है उस्मैं बहुमूल्य शीशे बरतन के सिवाय तरह, तरह का उम्दा सै उम्दा सामान मिसल सै लगा हुआ है सहन इत्यादि मैं चीनी की ईंटों का सुशोभित फर्श कश्मीर के गलीचों को मात करता है. तबेले मैं अच्छी से अच्छी विलायती गाडियें और अरबी, केप, टेलर, आदि की उम्दा जोडियें अथवा जीन सवारी के घोड़े बहुतायत सै मौजूद हैं साहब लोगों की चिट्ठियें नित्य आती जाती हैं. अंग्रेजी तथा देसी अखबार और मासिकपत्र बहुत सै लिये जाते हैं और उन्मैं सै खबरें अथवा आर्टिक्लों को कोई देखे या न देखे परंतु सौदागरों के इश्तहार अवश्य देखे जाते हैं, नई फैशन की चीजें अवश्य मंगाई जाती हैं, मित्रों का जल्सा सदैव बना रहता है और कभी कभी तो अंग्रेजों को भी बोल दिया जाता है, मित्रों के सत्कार करनें मे यहां किसी तरह की कसर नहीं रहती और जो लोग अधिक दुनियादार होते हैं उन्की तो पूजा बहुत ही विश्वासपूर्वक की जाती है मदनमोहन की अवस्था पच्चीस, तीस बरस सै अधिक न होगी वह प्रगट मैं बडा विवेकी और विचारवान मालूम होता है नए आदमियों सै बडी अच्छी तरह मिल्ता

है उसके मुख पर अमीरी झलकती है वह वस्त्र सादे परतु बहुमूल्य पहनता है उसके पिता को व्यापारी लोगों के सिवाय कोई नही जान्ता था परतु उसकी प्रशसा अखबारों मै बहुधा किसी न किसी बहाने छपती रहती है और वह लोग अपनी योग्यता सै प्रतिष्ठित होनें का मान उसे देते हैं

अच्छा ! मदनमोहन ने उन्नति की अथवा अवनति की इस विषय मै हम इस्समय विशेष कुछ नहीं कहा चाहते परतु मदनमोहन ने यह पदवी कैसे पाई ? पिता पुत्र के स्वभाव मै इतना अतर कैसे हो गया ? इस्का कारण इस्समय दिखाया चाहते है

मदनमोहन का पिता आप तो हरेक बात को बहुत अच्छी तरह समझता था परतु अपने विचारों को दूसरे के मन मै (उसका स्वभाव पहिचान कर) बैठा देने की सामर्थ्य उसे न थी उस्ने मदनमोहन को बचपन मै हिंदी, फारसी और अग्रेजी भाषा सिखाने के लिये अच्छे अच्छे उस्ताद नौकर रख दिए थे परतु वह क्या जान्ता था कि भाषा ज्ञान विद्या नहीं, विद्या का दरवाजा है, विद्या का लाभ तो साधारण रीति से बुद्धि के तीक्ष्ण होने पर और मुख्य करके विचारों के सुधरने पर मिल्ता है . जब उस्को यह भेद प्रगट हुआ उस्ने मदनमोहन को धमका कर राह पर लाने की युक्ति विचारी परतु वह नही जान्ता था कि आदमी धमकाने सै आँख और मुख बद कर सक्ता है, हाथ जोड सक्ता है, पैरों मै पड सक्ता है, कहो जैसे कह सक्ता है, परतु चित्त पर असर हुए बिना चित्त नही बदलता और सत्सग बिना चित्त पर असर नहीं होता जब तक अपने चित्त मै अपनी हालत सुधारने की अभिलाषा न हो औरों के उपदेश सै क्या लाभ हो सक्ता है ? मदनमोहन का पिता मदनमोहन को धमका कर उस्के चित्त का असर देखने के लिए कुछ दिन चुप हो जाता था परतु मदनमोहन के मन दुखने के विचार सै आप प्रबध न करता था और इस

देरदार का असर उल्टा होता था . हरकिशोर, शिभूदयाल, चुन्नीलाल, वगैरे मदनमोहन की बाल्यावस्था को इसी झमेले में निकाला चाहते थे क्योंकि एक तो इस अवकाश में उन लोगों के सग का असर मदनमोहन के चित्त पर दृढ होता जाता था दूसरे मदनमोहन की अवस्था के सग उस्की स्वतंत्रता बढती जाती थी इसलिये मदनमोहन के सुधरनें का यह रस्ता न था . मदनमोहन के विचार प्रति दिन दृढ होते जाते थे परतु वह अपने पिता के भय सै उन्हें प्रगट न करता था . खुलासा यह है कि मदनमोहन के पिता ने अपनी प्रीति अथवा मदनमोहन की प्रसन्नता के विचार सै मदनमोहन के बचपन मे अपने रक्षक भाव पर अच्छी तरह बरताव नहीं किया अथवा यों कहो कि अपना कुदरती हक छोड दिया इस लिये इन्के स्वभाव मै अतर पडने का मुख्य ये ही कारण हुआ .

ब्रजकिशोर ठेठ सै मदनमोहन के विरुद्ध समझा जाता था . ब्रजकिशोर को वह लोग कपटी, चुगल, द्वेषी और अभिमानी बताते थे, उन्के निकट मदनमोहन के पिता का मन बिगाडनें वाला वह था . चुन्नीलाल और शिभूदयाल उस्की सावधानी सै डर कर मदनमोहन का मन उस्की तरफ सै बिगाडते रहते थे और मदनमोहन भी उस्पर पिता की कृपा देख कर भीतर सै जल्ता था हरकिशोर जैसे मुँहफट तो कुछ, कुछ भरमा भरमी उस्को सुना भी दिया करते थे परतु वह उचित जवाब देकर चुप हो जाता था और अपनी निर्दोष चाल के भरोसे निश्चित रहता था हाँ उस्को इन्की चाल अच्छी नहीं लगती थी और इन्के मन का पाप भी मालूम था इसलिये वह इन्सै अलग रहता था इन्का वृत्तात जान्नें सै जान बूझ कर बेपरवाई करता था, उस्ने मदनमोहन के पिता सै इस विषय मै बातचीत करना बिल्कुल बद कर दिया था मदनमोहन के पिता का परलोक हुये पीछै निस्सदेह उस्को मदनमोहन के सुधारने की चटपटी लगी उस्ने मदनमोहन को राह पर लाने के लिये समझाने मे कोई बात बाकी नही छोडी परतु उस्का सब श्रम व्यर्थ गया उस्के समझाने सै कुछ काम न निकला .

अब आज हरकिशोर और ब्रजकिशोर दोनों इज्जत खोकर मदनमोहन के पास से दूर हुए है इन्मै से आगै चलकर देखै कौन् कैसा बरताव करता है ?

———

प्रकरण २५

साहसी पुरुष

सानुबन्ध कारज करे सब अनुबन्ध निहार ।
करै न साहस, बुद्धि बल पंडित करै बिचार ॥*
(विदुर प्रजागरे)

इम प्रथम लिख चुके हैं कि हरकिशोर साहसी पुरुष था और दूर के सबध मैं ब्रजकिशोर का भाई लगता था अब तक उसके काम उसकी इच्छानुसार हुए जाते थे वह सब कामों मैं बडा उद्योगी और दृढ दिखाई देता था उसका मन बढता जाता था और वह लड़ाई झगड़े वगैरे के भयकर और साहसिक कामो मैं बडी कारगुजारी दिखलाया करता था वह हरेक काम के अग प्रत्यग पर दृष्टि डालने या सोच विचार के कामों मैं माथा खाली करने और परिणाम सोचने वा कागज़ी और हिसाबी मामलों मैं मन लगानें के बदले ऊपर, ऊपर से इन्को देख भाल कर केवल बड़े बड़े कामों मैं अपने ताईं लगाये रखनें और बड़े आदमियों मैं प्रतिष्ठा पानें की विशेष रुचि रखता था . उसने हरेक अमीर के हाँ अपनी

---

* अनुबन्धानपेक्षेत सानुबन्धेषु कर्म्मसु ।
सप्रधार्य च कुर्वीत न वेगेन समाचरेत् ॥

आवा जाई कर ली थी और वह सब सै मेल रखता था . उस्के स्वभाव मैं जल्दी होने के कारण वह निर्मूल बातों पर सहसा विश्वास कर लेता था और झट्पट उन्का उपाय करने लगता था उस्के बिना बिचारे कामों सै जिस्तरह बिना बिचारा नुक्सान हो जाता था इसी तरह बिना बिचारे फायदे भी इतने हो जाते थे जो बिचार कर करनें सै किसी प्रकार सभव न थे . जब तक उस्के काम अच्छी तरह सपन्न हुए जाते थे, उस्को प्रतिदिन अपनी उन्नति दिखाई देती थी, सब लोग उस्की बात मान्ते थे, उस्का मन बढता जाता था और वो अपना काम सपन्न करनें के लिए अधिक, अधिक परिश्रम करता था परतु जहा किसी बात मे उस्का मन रुका उस्की इच्छानुसार काम न हुआ किसी नें उस्की बात दुलख दी अथवा उस्को शाबासी न मिली वहा वह तत्काल आग हो जाता था, हरेक काम को बुरी निगाह सै देखने लगता था, उस्की कारगुजारी मै फर्क आ जाता था और वह नुक्सान सै खुश होनें लगता था इसलिये उस्की मित्रता भय सै खाली न थी

कोई साहसी पुरुष स्वार्थ छोड कर ससार के हितकारी कामों मे प्रवृत्त हो तो कोलम्बस की तरह बहुत उपयोगी हो सक्ता है और अब तक ससार की बहुत कुछ उन्नति ऐसे ही लोगों सै हुई है इसलिये साहसी पुरुष परित्याग करने के लायक नही है परतु युक्ति सै काम लेने के लायक हैं . हा ! ऐसे मनुष्यों सै काम लेने मै उन्का मन बराबर बढ़ाते जाय तो आगै चल कर काबू सै बाहर हो जाने का भय रहता है इसलिये कोई बुद्धिमान तो उन्का मन ऐसी रीति सै घटाते बढाते रहते हैं कि न उन्का मन बिगडनें पावै न हद सै आगे बढ़ने पावै कोई अनुभवी मध्यम प्रकृति के मनुष्यों को बीच मे रखते हैं कि वह उन्को वाजबी राह बताते रहै परतु लाला मदनमोहन के यहा ऐसा कुछ प्रबध न था दूसरे उस्के बिचार मूजिब मदनमोहन नें अपने झूटे अभिमान सै भलाई के बदले जान बूझ कर उस्की इजत ली थी इस्कारण हरकिशोर इस्समय

क्रोध के आवेश मै लाल हो रहा था और बदला लेने के लिए उसके मन मै तरगै उठती थी। उस्ने मदनमोहन के मकान सै निकलते ही अपने जी का गुबार निकालना आरभ किया

पहलै उसको निहालचद मोदी मिला उस्ने पूछा "आज कितने की बिक्री की ?"

"खरीदारी की तो यहा कुछ हद हो नही है परतु माल बेच कर दाम किस सै ले जिस्को बहुत नफे का लालच हो वह भले ही बेचै मुझको तो अपनी रकम डबोनी मजूर नही" हरकिशोर नें जवाब दिया .

"है ! यह क्या कहते हो ? लाला साहब की रकम मै कुछ धोका है ?"

"धोके का हाल थोड़े दिन मै खुल जायगा मेरे जान तो जो होना था वह हो चुका ."

"तुम यह बात क्या समझ कर कहते हो ?" मोदी ने घबरा कर पूछा "कम सै कम लाख, पचास हजार का तो शीशा बतन इस्समय इन्के मकान मै होगा .'

"समय पर शीशे बर्तन को कोई नहीं पूछता उसको लागत मै रुपे के दो आने नहीं उठते इन्हीं चीजों की खरीदारी मै तो सब दौलत जाती रही मै ने निश्चय सुना है कि इन चीजो की कीमत बाबत पचास हजार रुपे तो ब्राइट साहब के देने है और कल एक अँग्रेज़ दस हजार रुपे माँगने आया था न जाने उसके लेने थे कि कर्ज मागता था परंतु लाला साहब न किसी सै उधार मँगा कर देने का करार किया है ? फिर जहाँ उधार के भरोसे सब काम भुगतनें लगा वहाँ बाकी क्या रहा ? मैं ने अपनी रकम के लिए अभी बहुत तकाज़ा किया पर वे फूटी कौड़ी नहीं देते इस लिये मैं तो अपने रुपों की नालिश अभी दायर करता हूँ तुम्हारी तुम जानो ."

यह बात सुन्ते ही मोदी के होश उड गए वह बोला "मेरे भी पाँच हज़ार लेने हैं मैं ने कई बार तगादा किया पर कुछ सुनाई न हुई मै अभी

जाकर अपनी रकम माँगता हूँ जो सूधी तरह दे देंगे तो ठीक है नहीं तो मैं भी नालिश कर दूँगा . ब्योहार मैं मुलाहिजा क्या ?

इस्तरह बतला कर दोनों अपने, अपने रस्ते लगे . आगे चल कर हरकिशोर को मिस्टर ब्राइट का मुशी मिला वह अपने घर भोजन करने जाता था उसै देख कर हरकिशोर अपनें आप कहने लगा "मुझै क्या है ? मेरे तो थोड़े से रुपे हैं मैं तो अभी नालिश करके पटा लूँगा . मुश्किल तो पचास, पचास हजार वालों की है देखें वह क्या करते हैं ?"

"लाला हरकिशोर किस्पर नालिश की तैयारी कर रहे हैं ?" मुशी ने पूछा . "कुछ नही साहब ! मैं आप सै कुछ नहीं कहता . मैं तो बिचारे मदनमोहन का बिचार कर रहा हूँ . हा ! उसकी सब दौलत थोड़े दिन में लुट गई अब उसके काम मैं हलचल हो रही है लोग नालिश करने को तैयार है मैं ने भी कम्बख्ती के मारे हजार दो एक का कपड़ा दे दिया था इसलिये मैं भी अपने रुपे पटाने की राह सोच रहा हू . बिचारा मदनमोहन कैसा सीधा आदमी था ?"

"क्या सचमुच उस्पर तकाजा हो गया ? उस्पर तो हमारे साहब के भी पचास हजार रुपे लेने हैं आज सबेरे तो लाला मदनमोहन की तरफ सै बड़े काचों की एक जोडी खरीदने के लिए मास्टर शिंभूदयाल हमारे साहब के पास गए थे फिर इतनी देर मैं क्या हो गया ? तुमने यह बात किस्मै सुनी ?"

"मैं आप वहाँ सै आता हू कल सै गडबड हो रही है कल एक साहब दस हजार रुपे माँगने आये थे इस्पर मदनमोहन ने स्पष्ट कह दिया कि मेरे पास कुछ नही है मैं कहीं सै उधार लेकर दो एक दिन मैं आप का बदोबस्त कर दूगा मैं नें अपने रुपे के लिये बहुत ताकीद की पर मुझ को भी कोरा जवाब ही मिला अब मैं नालिश करनें जाता हू और निहालचंद मोदी अभी पाँच हजार के लिए पेट पकड़े गया है वह कहता

था कि मेरे रुपे इस्समय न दैगे तो मैं भी अभी नालिश कर दूगा जिस्को नालिश पहलै होगी उस्को पूरे रुपे मिलैगे ."

"तो मैं भी जाकर साहब सै यह हाल कह दूँ तुम्हारी रकम तो खेरीज है परंतु साहब का कर्ज़ा बहुत बडा है जो साहब की इस रकम मैं कुछ धोका हुआ तो साहब का काम चलना कठिन हो जायगा" ये कह कर मिस्टर ब्राइट का मुशी घर जाने के बदले साहब के पास दोड़ गया .

लाला हरकिशोर आगे बढे तो मार्ग मैं लाला मदनमोहन की पच पन सो की खरीद के तीन घोड़े लिए हुए आगा हसन जान लाला मदन-मोहन के मकान की तरफ जाता मिला उस्को देख कर हरकिशोर कहने लगे "ये ही घोड़े मदनमोहन ने कल खरीदे थे माल तो बड़े फायदे सै बिका पर दाम पट जाय तब जानिये ."

"दामों की क्या है ? हमारा हजारो रुपे का काम पहलै पड चुका है" आगा हसन जान ने जवाब दिया और मन मै कहा "हमारी रकम तो अपने लालच सै चुन्नीलाल और शिभूदयाल घर बैठे पहुँचा जायगे ."

"वह दिन गए आज लाला मदनमोहन का काम डिगमिगा रहा है . उस्के ऊपर लोगों का तगादा जारी है जो तुम किसी के भरोसे रहोगे तो धोका खाओगे जो काम करो अच्छी तरह सोच समझ कर करना ."

"कल शाम को तो लाला साहब ने हमारे यहाँ आकर ये घोड़े पसद किए थे फिर इतनी देर मैं क्या हो गया ?"

जब तेल चुक जाता है तो दिये बुझने मै क्या देर लगती है ? चुन्नी-लाल, शिभूदयाल सब तेल चाट गये ऐसे चूहों की घात लगे पीछै भला क्या बाकी रह सक्ता था ?"

"मैं जान्ता हू कि लाला साहब का बहुत सा रुपया लोग खा गए परतु उन्के काम बिगडने की बात मेरे मन में अब तक नही बैठती तुमने यह हाल किस्से सुना है ?"

"मै आप वहाँ सै आया हू मुझको झूट बोलने सै क्या फायदा है ? मैं तो अभी जाकर नालिश करता हू निहालचद मोदी नालिश करने को तैयार है ब्राइट साहब का मुंशी अभी सब हकीकत निश्चय करके साहब के पास दौडा गया है तुमको भरोसा न हो निस्सदेह न मानो तुम न मानोगे इस्सै मेरी क्या हानि होगी" यह कह कर हरकिशोर वहाँ से चल दिया .

पर अब मदनमोहन की तरफ सै आगा हसन जान को चैन न रहा . असल रुपे का लालच उस्को पीछै हटाता था और नफे का लालच आगै बढाता था पहले रुपे के बिचार सै तबियत और भी घबराई जाती थी निदान यह राह ठैरी कि इस्समय घोडों को फेर ले चलो मदनमोहन का काम बना रहैगा तो पहले रुपे वसूल हुए पीछै ये घोड़े पहुँचा दैंगे नहीं तो कुछ काम नहीं .

इधर हरकिशोर को मार्ग मै जो मिलता था उस्सै वह मदनमोहन के दिवाले का हाल बराबर कहता चला जाता था और यह सब बातें बाजार में होती थी इसलिए एक से कहने मै पाच और सुन लेते थे और उन पाच के मुख सै पचासों को यह हाल तत्काल मालूम हो जाता था फिर पचास सै पाच सौ मे और पाच सौ सै पाच हजार मै फैलते क्या देर लगती थी ? और अधिक आश्चर्य की बात यह थी कि हरेक आदमी अपनी तरफ सै भी कुछ, न कुछ नोंन मिर्च लगा ही देता था जिस्को एक के कहने सै भरोसा न आया दो के कहने सै आ गया, दो के कहने सै न आया चार के कहनें सै आ गया . मदनमोहन के चाल चलन सै अनुभवी मनुष्य तो यह परिणाम पहले ही सै समझ रहे थे जिस्पर मास्टर शिवदयाल ने मदनमोहन की तरफ सै एक दो जगह उधार लेने की बातचीत की थी इसलिये इस चर्चा मै किसी को सदेह न रहा . बारूद बिछ रही थी बत्ती दिखाते ही तत्काल भभक उठी .

परतु लाला मदनमोहन या ब्रजकिशोर वगैरे को अब तक इस्का कुछ हाल मालूम न था .

प्रकरण २६

दिवाला

कीजे समझ, न कीजिए बिन बिचार व्यवहार।
आय रहत जानत नही ? सिर को पायन भार ॥ वृंद

लाला मदनमोहन प्रातःकाल उठते ही कुतब जाने की तैयारी कर रहे थे. साथ जानेवाले अपनें, अपने कपडे लेकर आते जाते थे इतने मैं निहालचद मोदी कई तकाजगीरों को साथ लेकर आ पहुचा.

इस्ने हरकिशोर सै मदनमोहन के दिवाले का हाल सुना था उसी समय सै इस्को तलामली लग रही थी कल कई बार यह मदनमोहन के मकान पर आया पर किसी नें इस्को मदनमोहन के पास तक न जानें दिया और न इस्के आने की इत्तला की सध्या समय मदनमोहन के सवार होने के भगेसे वह दरवाजे पर बैठा रहा परतु मदनमोहन सवार न हुए इस्सै इस्का संदेह और भी दृढ हो गया शहर मै तरह, तरह की हजारों बातें सुनाई देती थी इस्सै वह आज सबेरे ही कई लेनदारों को साथ लेकर एकदम मदनमोहन के मकान मै घुस आया और पहुचते ही कहने लगा "साहब ! अपना हिसाब कर के जितने रुपे हमारे बाकी निकले हम को इसी समय दे दीजिये हमें आप का लेन देन रखना मजूर नही है कल सै हम कई बार यहा आए परतु पहरे वालों ने आप के पास तक नहीं पहुचनें दिया."

"हमारा रुपया खर्च करक हमारे तकाजे सै बचने के लिए यह तो अच्छी युक्ति निकाली !" एक दूसरे लेनदार ने कहा "परतु इस्तरह रकम नही पच सक्ती नालिश करके दम भर मै रुपया धरा लिया जायगा"

"बाहर पहरे चोकी का बदोबस्त करके भीतर आप अस्बाब बाध रहे हैं !" तीसरे मनुष्य ने कहा 'जो दो, चार घड़ी हम लोग और न आते तो दरवाजे पर पहरा ही पहरा रह जाता लाला साहब का पता भी न लगता ."

"इसमैं क्या सदेह है ? कल रात ही को लाला साहब अपने बाल बच्चों को तो मेरठ भेज चुके हैं" चोथे ने कहा "इन्मालवन्सी के सहारे सै लोगों को जमा मारने का इन दिनों बहुत होसला हो गया है."

"क्या इस जमाने मैं रुपया पैदा करने का लोगों नें यही ढग समझ रक्खा है ?" एक और मनुष्य कहने लगा "पहले अपनी साहूकारी, मातबरी, और रसाई दिखाकर लोगों के चित्त मैं विश्वास बैठाना, अत मैं उन्की रकम मारकर एक किनारे हो बैठना "

"मेरी तो जन्म भर की कमाई यही है मैं ने समझा था कि थोडी सी उमर बाकी रही है सो इसमें आराम सै कट जायगी परतु अब क्या करूँ ?" एक बुड्ढा आँखो में आँसू भर कर कहने लगा "न मेरी उमर महनत करने की है न मुझको किसी का सहारा दिखाई देता है जो तुम सै मेरी रकम न पटेगी तो मेरा कहाँ पता लगेगा ?"

"हमारे तो पाँच हजार रुपे लेने है परतु लाओ इससमय हम चार हजार मैं फैसला करते है" एक लेनदार ने कहा .

"औरों की जमा मार कर सुख भोगने मैं क्या आनद आता होगा ?" एक और मनुष्य बोल उठा .

इतने मै और बहुत से लोगों की भीड आ गई वह चारों तरफ सै मदनमोहन को घेर कर अपनी, अपनी कहने लगे . मदनमोहन की ऐसी दशा कभी काहे को हुई थी ? उसके होश उड गये . चुन्नीलाल, शिभूदयाल वगैरे लोगों को धैर्य देने की कोशिश करते थे परतु उन्को कोई बोलने ही नहीं देता था . जब कुछ देर खूब गडबड हो चुकी लोगों का

जोश कुछ नरम हुआ तब चुन्नीलाल पूछने लगा "आज क्या है ? सब के सब एकाएक ऐसी तेजी में कैसे आ गये ? ऐसी गडबड से कुछ भी लाभ न होगा जो कुछ कहना हो धीरे से समझा कर कहो"

"हमको और कुछ नहीं कहना हम तो अपनी रकम चाहते है." निहालचंद ने जवाब दिया .

हमारी रकम हमारे पल्ले डालो फिर हम कुछ गडबड न करेंगे" दूसरे ने कहा .

"तुम पहले अपने लेने का चिट्ठा बनाओ, अपनी अपनी दस्तावेज दिखाओ, हिसाब करो, उस्समय तुम्हारा रुपया तत्काल चुका दिया जायगा" मुशी चुन्नीलाल ने जवाब दिया .

"यह लो हमारे पास तो यह रुक्का है" "हमारा हिसाब यह रहा" "इस रसीद को देखिये" "हमनें तो अभी रकम भुगताई है" इस तरह पर चारों तरफ से लोग कहने लगे .

"देखो जी ! तुम बहुत हल्ला करोगे तो अभी पकड कर कोतवाली में भेज दिये जाओगे और तुम पर हतक इज्जत की नालिश की जायगी नहीं तो जो कुछ कहना हो धीरज से कहो" मास्टर शिंभूदयाल ने अवसर पाकर दबाने की तजवीज़ की .

"हम को लडने झगडने की क्या जरूरत है ? हम तो केवल जवाब चाहते है जवाब मिले पीछे आप से पहले हम नालिश कर देंगे" निहालचद नें सबकी तरफ से कहा .

"तुम वृथा घबराते हो हमारा सब माल मता तुम्हारे साम्हने मौजूद है हमारे घर मे घाटा नहीं है व्याज समेत सब को कौडी कौडी चुका दी जायगी" लाला मदनमोहन ने कहा .

"कोरी बातों से जी नहीं भरता" निहालचद कहनें लगा "आप अपना बही खाता दिखा दे . क्या लेना है ? क्या देना है ? कितना

माल मौजूद है ? जो अच्छी तरह हमारा मन भर जायगा तो हम नालिश नहीं करेंगे ."

"कागज़ तो इस्समय तैयार नहीं है" लाला मदनमोहन ने लजा कर कहा.

"तो खातरी कैसे हो ? ऐसी अँधेरी कोठरी में कौन रहै ?

जो पहले करिये जतन, तो पीछे फल होय।
आग लगे खोदे कुआ, कैसे पावे तोय॥ (वृन्द)

इस काठ कबाड के तो समय पर रुपे में दो आने भी नहीं उठते" एक लेनदार नें कहा .

"ऐसे ही अनसमझ आदमी जल्दी करके बेसबब दूसरों का काम बिगाड दिया करते हैं" मास्टर शिभूदयाल कहनें लगे

इतने में हरकिशोर अदालत के एक चपरासी को लेकर मदनमोहन के मकान पर आ पहुँचे और चपरासी ने सम्मन पर मदनमोहन से क़ायदे मूजिब इत्तला लिखा ली

उसको गए थोडी देर न बीतने पाई थी कि आगा हसन जान के वकील की नोटिस आ पहुँची उसमें लिखा था कि "आगा हसन जान की तरफ से मुझ को आप के जताने के लिए यह फर्मायश हुई है कि आप उसके पहले की खरीद के घोडों की कीमत का रुपया तत्काल चुका दें और कल की खरीद के तीन घोडों की कीमत चौबीस घटे के भीतर भेज कर अपने घोड़े मँगवा लें जो इस मयाद के भीतर कुल रुपया न चुका दिया जायगा तो ये घोडे नीलाम कर दिये जायँगे और इन्की कीमत में जो कमी रहैगी पहले की बाकी समेत नालिश करके आप से वसूल की जायगी ."

थोड़ी देर पीछे मिस्टर ब्राइट का सम्मन और कच्ची कुरकी एक साथ आ पहुँची इससे लोगो के घबराट की कुछ हद न रही . घर में मामला होनें की आशा जाती रही सबको अपनी, अपनी रकम गलत

मालूम होने लगी और सब नालिश करने के लिए कचहरी को दोड गए

"यह क्या है ? किस दुष्ट की दुष्टता से हम पर यह गजब का गोला एक साथ आ पडा ?" लाला मदनमोहन आँखों मे आँसू भर कर बडी कठिनाई से इतनी बात कह सके

"क्या कहूँ ? कोई बात समझ मे नही आती" मुशी चुन्नीलाल कहने लगे "कल लाला ब्रजकिशोर यहाँ से ऐसे बिगड कर गए थे कि मेरे मन मे इसी समय खटका हो गया था शायद उन्हीं ने यह बखेडा उठाया हो बाजे आदमियों को अपनी बात का ऐसा पक्ष होता है कि यह औरों की तो क्या अपनी बरबादी का भी कुछ विचार नहीं करते परमेश्वर ऐसे हटीलों से बचाय हरकिशोर का ऐसा हौसला नहीं मालूम होता और वह कुछ बखेडा करता तो उसका असर कल मालूम होना चाहिए था अब तक क्यो न हुआ ?"

प्रथम तो निहालचद कल से अपने मन मे घबराहट होने का हाल आप कह चुका था, दूसरे हरकिशोर की तरफ से नालिश दायर होकर सम्मन आ गया, तीसरे चुन्नीलाल ब्रजकिशोर के स्वभाव को अच्छी तरह जान्ता था इसलिये उसके मन मे ब्रजकिशोर की तरफ से जरा भी सदेह न था परतु वह हरकिशोर की अपेक्षा ब्रजकिशोर से अधिक डरता था इसलिए उसने ब्रजकिशोर ही को अपराधी ठैराने का विचार किया. अफसोस ! जो दुराचारी अपने किसी तरह के स्वार्थ से निर्दोष और धर्मात्मा मनुष्यों पर झूँटा दोष लगाते है अथवा अपना कसूर उन्पर बरसाते हैं उन्के बराबर पापी ससार मैं और कौन होगा ?

लाला मदनमोहन के मन मे चुन्नीलाल के कहने का पूरा विश्वास हो गया उन्नें कहा कि "मे अपने मित्रों को रुपे की सहायता के लिये चिट्ठी लिखता हू मुझको विश्वास है कि उन्की तरफ से पूरी सहायता मिलेगी

परंतु सब से पहले ब्रजकिशोर के नाम चिट्ठी लिखूंगा कि अब वह मुझ को अपना काला मुँह जन्म भर न दिखलाय" यह कह कर लाला मदनमोहन चिट्ठियाँ लिखने लगे

———

प्रकरण २७

लोक चर्चा (अफ़वाह)

निन्दा, चुगली, झूट अरु पर दुखदायक बात।
जे न करहि तिन पर द्रवहि सर्वेश्वर बहु भाँत ॥*

(विष्णुपुराणे)

उस तरफ लाला ब्रजकिशोर ने प्रातःकाल उठ कर नित्य नियम मै निश्चित होने ही मुशी हीरालाल को बुलाने के लिये आदमी भेजा

हीरालाल मुशी चुन्नीलाल का भाई है यह पहले बदोबस्त के महकमे मै नौकर था जब से वह काम पूरा हुआ, इसकी नोकरी कहीं नहीं लगी थी

"तुमने इतने दिन से आकर सूरत तक नहीं दिखाई घर बैठे क्या किया करते हो ?" हीरालाल को आते ही ब्रजकिशोर कहने लगे "दफ्तर मै जाते थे जब तक तो खैर अवकाश ही न था परतु अब क्यों नहीं आते ?"

"हुजूर ! मै तो हर वक्त हाजिर हूं परतु बेकाम आने मै शर्म आती थी आज आप ने याद किया तो हाजिर हुआ फरमाइये क्या हुक्म है ?" हीरालाल ने कहा

---

* परापवादपैशुन्यमनृत च न भाषते।
अन्याद्वेगकरं चापि तोष्यते तेन केशवः ॥

"तुम खाली बैठे हो इस्की मुझे बडी चिंता है तुम्हारे विचार सुधरे हुए हैं इस्से तुमको पुराने हक का कुछ खयाल हो या न हो परंतु मै तो नहीं भूल सक्ता . तुम्हारा भाई जवानी की तरग मे आकर नौकरी छोड गया परतु मै तो तुम्हें नहीं छोड सक्ता मेरे यहाँ इन दिनों एक मुहर्रिर की चाह थी सब से पहले मुझको तुम्हारी याद आई (मुस्करा कर) तुम्हारे भाई को दस रुपे महीना मिलता था परतु तुम उस्से बड़े हो इस लिये तुमको उस्से दूनी तनख्वाह मिलेगी"

'जी हाँ ! फिर आप को चिन्ता न होगी तो और किस्को होगी ? आप के सिवाय हमारा सहायक कौन है ? चुन्नीलाल ने निस्सदेह मूर्खता की परतु फिर भी तो जो कुछ हुआ आप ही के प्रताप से हुआ ."

"नहीं मुझ को चुन्नीलाल की मूर्खता का कुछ विचार नहीं है मै तो यही चाहता हूँ कि वह जहाँ रहे सुख रहे हाँ मेरी उपदेश की कोई, कोई बात उस्को बुरी लगती होगी परतु मै क्या करूँ ? जो अपना होता है उस्का दर्द आता ही है".

"इस्मे क्या सदेह है ? जो आप को हमारा दर्द न होता तो आप इससमय मुझको घर से बुलाकर क्यों इतनी कृपा करते ? आप का उपकार मान्ने के लिए मुझको कोई शब्द नहीं मिलते परतु चुन्नीलाल की समझ पर बडा अफसोस आता है कि उस्ने आप जैसे प्रतिपालक के छोड जाने की ढिठाई की अब वह अपने किये का फल पावेगा तब उस्की आँखे खुलेगी".

"मै उस्के किसी, किसी काम को निस्सदेह नापसन्द करता हूँ परतु यह सर्वथा नहीं चाहता कि उस्को किसी तरह का दुःख हो"

"यह आपकी दयालुता है परतु कार्य कारण के सबध को आप कैसे रोक सक्ते हैं ? आज लाला मदनमोहन पर तकाज़ा हो गया . जो ये लोग आप का उपदेश मान्ते तो ऐसा क्यों होता ?"

"हाय ! हाय ! तुम यह क्या कहते हो ? मदनमोहन पर तकाजा हो गया ? तुमने यह बात किससे सुनी ? मैं चाहता हूं कि परमेश्वर करे यह बात झूंट निकले" लाला ब्रजकिशोर इतनी बात कह कर दुःख-सागर में डूब गए उन्के शरीर में बिजली का सा एक झटका लगा, आँखों में आँसू भर आए, हाथ पाँव शिथिल हो गए मदनमोहन के आचरण से बड़े दुःख के साथ वह यह परिणाम पहले ही समझ रहे थे इसलिये उन्को उस्का जितना दुःख होना चाहिये पहले हो चुका था तथापि उन्को ऐसी जल्दी इस दुखदाई खबर के सुन्ने की सर्वथा आशा न थी इसलिये यह खबर सुन्ते ही उन्का जी एक साथ उमड आया परंतु वह थोडी देर में अपने चित्त का समाधान करके कहने लगे—

"हा ! कल क्या था ! आज क्या हो गया !! शृंगार रस का सुहावना समा एकाएक करुणा से बदल गया ! बेलजिअम की राजधानी ब्रसेल्स पर नैपोलियन ने चढाई की थी उस्समय की दुर्दशा इस्समय याद आती है लार्ड बायरन लिखता है—

"निशि में बरसेलस गाजि रह्यो । बल रूप बढाय बिराजि रह्यो ।
अति रूपवती युवती दरसैं । बलवान सुजान जवान लसैं ।
सबके मुख दीपन सों दमकैं । सबके हिय आनँद सों धमकैं ।
बहु भाति बिनोद प्रमोद करैं । मधुरे सुर गाय उमग भरैं ।
जब रागन की मृदु तान उडै । प्रिय प्रीतम नैनन सैन जुडै ।
चहुँ ओर सुखी सुख छाय रह्यो । मनु ब्याहन घट निनाद भयो ।
पर मौन गहो ! अबिलोक इतै । यह होत भयानक शब्द कितै ?
डरपौ जिन चंचल बायु बहे । अथवा रथ दौरत आवत है ।
प्रिय नाचहु, नाचहु ना ठहरो । अपने सुख की अवधी न करो ।
जब जोबन और उमग मिलै । सुख लूटन को दुहु दोर चलैं ।
तब नीद कहूँ निश आवत है ? कुछ औरहु बात सुहावत है !
पर कान लगा अब फेर सुनो । वह शब्द भयानक है दुगनो !

घनघोर घटा गरजी अबही । तिहँ गूँज मनो दुहराय रही ।
यह तोप दनादन आवत हैं । ढिग आवत भूमि कँपावत हैं ।
"सब शस्त्र सजो, सब शस्त्र सजो" । घबराट बढ़ो सुख दूर भजो ।
दुख सो बिलपैं कलपैं सबही । तिनकी करुणा नहि जाय कही ।
निज कोमलता सुनि लाज गए । सुकपोल ततक्षण पीत भए ।
दुख पाय कराहि वियोग लहैं । जनु प्राण वियोग शरीर सहैं ।
किहि भांति करो अनुमान यहू । प्रिय प्रीतम नैन मिलैं कबहूँ ?
जब वा सुख चैनहि रात गई । इहि भांत भयंकर प्रात भई !!!"*

---

* There was a sound of revelry by night,
And Belgium's Capital had gathered then
Her beauty and her chivalry, and bright
The lamps shone o'er fair women and brave men;
A thousand hearts beat happily; and when
Music arose with its voluptuous swell,
Soft eyes look'd love to eyes which spake again,
And all went merry as a marriage bell.
But, hush ! hark ! a deep sound strikes like a rising knell.
Did ye not hear it ?—No; t was but the wind,
Or the car rattling over the stony street;
On with the dance ! let joy be unconfined
No sleep till morn, when Youth and Pleasure meet
To chase the glowing hours with flying feet

"हाँ यह खबर तुमने किस्से सुनी ?"

"चुन्नीलाल अभी घर भोजन करने आया था वह कहता था".

"वह अब तक घर हो तो उसे एक बार मेरे पास भेज देना हम लोग खुशी प्रसन्नता मै चाहे जितनें लडते झगडते रहें परतु दुःख दर्द मैं सब एक हैं . तुम चुन्नीलाल सै कह देना कि मेरे पास आनें मै कुछ सकोच न करे मै उस्सै ज़रा भी अप्रसन्न नहीं हूँ ."

But hark ! that heavy sound breaks in once more,
As if the clouds its echo would repeat;
And nearer, clearer, deadlier, than before !
Arm ! arm! it is—it is the cannon's opening roar !
Ah ! then and there was hurrying to and fro,
And gathering tears and tremblings of distress,
And cheeks all pale, which but an hour ago
Blush'd at the praise of their own loveliness
And there were sudden partings, such as press
The life from out young hearts, and choking sighs
Which ne'er might be repeated, who would guess
If ever more should meet those mutual eyes,
Since upon night so sweet such awful morn should rise !

Lord Byron.

"राम, राम ! यह हजूर क्या फरमाते हैं ? आपकी अप्रसन्नता का विचार कैसे हो सक्ता है ? आप तो हमारे प्रतिपालक हैं . मै जाकर अभी चुन्नीलाल को भेजता हूँ वह आकर अपना अपराध क्षमा करायगा और चला गया होगा तो शाम को हाजिर होगा" हीरालाल ने उठते उठते कहा

"अच्छा ! तुम कितनी देर मै आओगे ?"

"मै अभी भोजन करके हाजिर होता हूँ" यह कह कर हीरालाल रुखसत हुआ .

लाला ब्रजकिशोर अपने मन मै विचारने लगे कि "अब चुन्नीलाल सै सहज मै मेल हो जायगा परतु यह तक़ाजा कैसे हुआ ? कल हरकिशोर क्रोध मै भर रहा था इस्सै शायद उसी नें यह अफवा फैलाई हो उस्नें ऐसा किया तो उस्के क्रोध ने बडा अनुचित मार्ग लिया और लोगों ने उस्के कहने मैं आकर बडा धोका खाया .

"अफ़वा वह भयकर वस्तु है जिस्सै बहुत सै निर्दोष दूषित बन जाते हैं . बहुत लोगों के जी मै रज पड जाते हैं बहुत लोगों के घर बिगड जाते हैं . हिदुस्थानियों मै अब तक विद्या का व्यसन नहीं है समय की कदर नही है भले बुरे कामों की पूरी पहचान नही है इसी सै यहाँ के निवासी अपना बहुत समय औरों के निज की बातों पर हाशिया लगानें मै और इधर उधर की जटल्ल हाँकने मैं खो देते हैं जिस्सै तरह, तरह की अफवाएँ पैदा होती हैं और भलेमानसों की झूँटी निदा अफवा की ज़हरी पवन मै मिल्कर उन्के सुयश को धूंधला करती है इन अफवा फैलाने वालों मै कोई कोई दुर्जन खाने कमाने वाले है, कोई कोई दुष्ट बैर और जलन सै औरों की निदा करनें वाले हैं और कोई पागी ऐसे भी हैं जो आप किसी तरह की योग्यता नहीं रखते इसलिए अपना भरम बढाने को बड़े बड़े योग्य मनुष्यों को साधारण भूलों पर टीका कर कै आप उन्के बराबर के बना चाहते हैं अथवा अपना दोष छिपाने के लिये

दूसरे के दोष ढूँडते फिरते हैं या किसी की निंदित चर्चा सुन्कर आप उस्सै जुदे बन्ने के लिए उस्की चर्चा फैलाने में शामिल हो जाते हैं या किसी लाभदायक वस्तु सै केवल अपना लाभ स्थिर रखने के लिए औरों के आगे उस्की निंदा किया करते हैं पर बहुत से ठिलुए अपना मन बहलाने के लिए औरों की पंचायत ले बैठते है बहुत से अन्समझ भोले भाव सै बात का मर्म जाने बिना लोगों की बनावट मै आकर धोका खाते हैं जो लोग औरों की निंदा सुन्कर कॉपते हैं वह आप भी अपने अजानपनें मै औरों की निंदा करते हैं जो लोग निर्दोष मनुष्यों की निंदा सुन्कर उन्पर दया करते है वह आप भी धीरे सै, कान मै झुक कर, औरों सै कहने के वास्तै मनै कर कर, औरों की निंदा करते हैं। जिन लोगों के मुख सै यह वाक्य सुनाई देते है कि "बडे खेद की बात है" "बडी बुरी बात है" "बडी लज्जा की बात है" "यह बात मान्ने योग्य नहीं" "इस्मै बहुत संदेह है" "इन्बातों सै हाथ उठाओ" वह आप भी औरों की निंदा करते हैं . वह आप भी अफवा फैलानें वालों की बात पर थोडा बहुत विश्वास रखते हैं . झूँटी अफवा सै केवल भोले आदमियों के चित्त पर ही बुरा असर नहीं होता वह सावधान सै सावधान मनुष्यों का भी ठगती है . उस्का एक एक शब्द भलेमानसों की इज्जत लूटता है . कल्पद्रुम मै कहा है—

"होत चुगल ससर्ग ते सज्जन मनहुँ बिकार।
कमल गधवाही गलिन धूर उड़ावत व्यार॥"*

जो लोग असली बात निश्चय किए बिना केवल अफवा के भरोसे किसी के लिए मत बाध लेते हैं वह उस्के हक मैं बडी बेइन्साफी करते हैं . अफवा के कारण अब तक हमारे देश को बहुत कुछ नुक्सान हो चुका

---

* सुजनानामपि हृदय पिशुनपरिष्वंगलिप्तमिह भवति।
पवनः परागवाही रथ्यासुवहन् रजस्वलो भवति॥

है नादिरशाह से हार मान्कर मुहम्मदशाह उसे दिल्ली मे ` लवा लाया तब नगर निवासियों ने यह झूँटी अफवा उडा दी कि नादिरशाह मर गया . नादिरशाह नें इस झूँटी अफवा को रोकनें के लिए बहुत उपाय किये परतु अफ़वा फैले पीछे कब रुक सक्ती थी ! लाचार होकर नादिरशाह नें बिजन बोल दिया . दोपहर के भीतर, भीतर लाख मनुष्यों से अधिक मारे गए , तथापि हिदुस्थानियों की आँख न खुली .

"हिदुस्थानियों को आज कल हर बात मै अग्रेजों की नकल करनें का चस्का पड रहा है तो वह भोजन वस्त्रादि निरर्थक बातों की नकल करने के बदले उन्के सच्चे सद्गुणों की नकल क्यों नहीं करते ? देशोपकार, कारीगरी और व्यापारादि मै उन्की सी उन्नति क्यों नहीं करते ? अपना स्वभाव स्थिर रखने मै उन्का दृष्टात क्यों नहीं लेते ? अग्रेज़ों की बातचीत मै किसी की निज की बातों का चर्चा करना अत्यत दूषित समझा जाता है . किसी की तन्ख्वाह या किसी की आमदनी, किसी का अधिकार या किसी का रोज़गार, किसी की सतान या किसी के घर का बृत्तात पूछने मै, पूछा होय तो कहने मे, कहा होय तो सुन्ने मै वह लोग आनाकानी करते है और किसी समय तो किसी का नाम, पता और उम्र पूछना भी ढिटाई समझा जाता है . अपने निज के सबधियों की निज की बातों से भी अजान रहना वह लोग बहुधा पसद करते हैं . रेल मै, जहाज़ मै, खाने पीनें के जल्सों मै, पास बैठने मै और बातचीत करनें मै जान पहचान नहीं समझी जाती . वह लोग किराए के मकान में बहुत दिन पास रहने पर बल्कि दुःख दर्द मै साधारण रीति से सहायता करनें पर पर भी दूसरे की निज की बातों से अजान रहते हैं जब तक जान पहाचान स्थिर रखनें के लिए दूसरे की तरफ से सवाल न हो, अथवा किसी तीसरे मनुष्य नें जान पहचान न कराई हो, नित्य की मिला भेंटी और साधारण रीति से बातचीत होने पर भी जान पहचान नहीं समझी जाती और जान पहचान हुए पीछे भी मित्रता होने मे बड़ी देर लगती है

क्योंकि वह लोग स्वभाव पहचाने बिना मित्रता नहीं करते पर मित्रता हुए पीछै भी दूसरे की निज की बातों सै अजान रहना अधिक पसद करते हैं. उन्के यहाँ निज की बातों के पूछने की रीति नहीं है उन्को देश संबंधी बातें करनें का इतना अभ्यास होता है कि निज के वृत्तात पूछनें का अवकाश ही नही मिल्ता परतु निज की बातों सै अजान रहनें के कारण उन्की प्रीति मै कुछ अंतर नहीं आता. मनुष्य को दुराचार साबित होनें पर वह उसै तत्काल छोड देते हैं परतु केवल अफवा पर वह कुछ ख्याल नहीं करते बल्कि उस्का अपराध साबित न हो जब तक वह उस्को अपना बचाव करनें के लिये पूरा अवकाश देते हैं और उचित रीति सै उस्का पक्ष करते है."

प्रकरण २८

फूट का काला मुँह

फूट गए हीरा की विकानी कनी हाट हाट,
काहू घाट मोल काहू बाट मोल को लयो।
टूट गई लंका फूट मिल्यो जो बिभीषण है,
रावन समेत बंस आसमान को गयो॥
कहे कवि गंग दुर्योधन सो छत्रधारी,
तनक के फूटे ते गुमान वाको नै गयो।
फूटे ते नर्द उठ जात बाजी चौपर की
आपस के फूटे कहु कौन को भलो भयो?॥

गंग।

थोडी देर पीछे मुशी चुन्नीलाल आ पहुँचा परतु उसके चहरे का रग उड रहा था लाज से उसकी आँख ऊँची नहीं होती थी प्रथम तो उसकी सलाह से मदनमोहन का काम बिगडा दूसरे उसकी कृतघ्नता पर ब्रजकिशोर ने उसके साथ ऐसा उपकार किया इसलिए वह सकोच के मारे धरती में समाया जाता था .

"तुम इतने क्यो लजाते हो ? मै तुम से जरा भी अप्रसन्न नहीं हूँ बल्कि किसी किसी बात मे तो मुझको अपनी ही भूल मालूम होती है, मै लाला मदनमोहन की हरेक बात पर हद से ज्यादः जिद करने लगता था परतु मेरी वह जिद अनुचित थी . हरेक मनुष्य अपने विचार का आप धनी है मै चाहता हूँ कि आगे को ऐसी सूरत न हो और हम सब एक चित्त होकर रहें परतु मै ने तुमको इस्समय इस सलाह के लिए नहीं बुलाया इस विषय मे तो जब तुम्हारी तरफ से चाहना मालूम होगी देखा जायगा" लाला ब्रजकिशोर कहने लगे "इस्समय तो मुझको तुम से हीरा-लाला की नौकरी बाबत सलाह करनी है . यह बहुत दिन से खाली है और मुझको अपने यहाँ इस्समय एक मुहर्रिर की जरूरत मालूम होती है तुम कहो तो इन्हे रख लूँ ?"

"इस्मे मुझ से क्या पूछते हैं ? इस्के लिये आप मालिक हैं" मुशी चुन्नीलाल कहने लगा "मेरी तो इतनी ही प्रार्थना है कि आप मेरी मूर्खता पर दृष्टि न करें अपने बडप्पन का विचार रक्खे . पहली बातो के याद करने से मुझको अत्यत लज्जा आती है आप ने इस्समय लाला हीरालाल को नौकर रखकर मुझे मात कर दिया ."

"मै तुम को लज्जित करने के लिए यह बात नहीं कहता मै ने अपने मन का निज भाव तुम को इसलिये समझा दिया है कि तुम मुझे अपना शत्रु न समझो" लाला ब्रजकिशोर कहने लगे "हिदुस्थान के सत्यानाश की जड प्रारभ से यही फूट है इसी के कारण कौरवों पाडवों का घोर युद्ध हुआ, इसी के कारण नद वश की जड उखडी, पृथ्वीराज और जय-

चद की फूट सै हिदुस्थान मैं मुसल्मानो का राज आया और मुसल्मानों का राज भी अत मै इसी फूट के कारण गया . सौ सवा सौ बरस सै लेकर अब तक हिदुस्थान मै कुछ ऐसे अप्रबध, फूट और स्वेच्छाचार की हवा चली कि बहुधा लोग आपस मै कट मरे . साहूजी नें ईस्ट इडियन कपनी को देवीकोटे का किला और जिला देकर उस्के द्वारा अपने भाई प्रतापसिह सै तजौर का राज छीन लिया . बगाल के सूबेदार सिराजुद्दौला सै अधिकार छीन्ने के लिये उस्के बख्शी मीर जाफर और दीवान राय दुर्लभ आदि ने कपनी को दक्षिण काल्वी तक की जमींदारी एक किरोड रुपया नकद और कलकत्ते के अग्रेजों को पचास लाख, फौज को पचास लाख और और लोगों को चालीस लाख अनुमान देनें किये. जब मीर जाफर सूबेदार हुआ तब उस्सै अधिकार छीन्ने के लिये उस्के जंवाई कासम अली खाँ ने कपनी को बर्दवान, मेदनीपुर, चटगाँव के जिले, पाच लाख रुपे नकद और कौसिल वालों को बीस लाख रुपे देने किये, जब कासम अली खाँ सूबेदार हो गया और महसूल बरबत उस्का कंपन सै बिगाड हुआ तब मीर जाफर ने कपनी को तीस लाख रुपे नकद और बारह हजार सवार और बारह हजार पेदलों का खर्च देकर फिर अपना अधिकार जमा लिया . उधर अवध का सूबेदार शुजाउद्दौला कपनी को चालीस लाख रुपे नकद और लडाई का खर्च देना कर के उस्की फौज रुहेलों पर चढा ले गया . दखन मै बालाजी राव पेशवा के मरते ही पेशवाओं के घराने मै फूट पडी, दो थोक हो गए . अब तक पजाब बच रहा था रणजीतसिह की उन्नति होती जाती थी परतु रणजीतसिह के मरते ही वहा फूट ने ऐसे पाव फैलाए कि पहले सब झगडों को मात कर दिया . राजा ध्यानसिह मत्री और उस्के बेटे हीरासिह आदि की स्वार्थपरता, लहनसिह और अजीतसिह सिधावालो का छल अर्थात् कुँवर शेरसिह और राजा ध्यानसिह के जी मे एक दूसरे की तरफ सै सदेह डालकर विरोध बढाना और अंत मै दोनों के प्राण लेना, राजकुमार खडगसिह उस्का बेटा नौनि-

हालसिंह राजकुमार शेरसिंह उसका बेटा प्रतापसिंह आदि की अनसमझी से आपस में वह कटमकटा हुई कि पाँच बरस के भीतर भीतर उसके वंश में सिवाय दिलीपसिंह नामी एक बालक के कोई न रहा और उसका राज भी कंपनी के राज में मिल गया. किसी ने सच कहा है—

"अल्पसार हू बहुत मिल करैं बड़ो सो जोर।
जो गज को बंधन करे तृण की निर्मित डोर॥"*

इसलिये मैं आपस की फूट को सर्वथा अच्छी नहीं समझता तुम मेरे पास से गए थे इसलिये मुझको तुम्हारे कामों पर विशेष दृष्टि रखनी पड़ती थी परंतु तुम अपने जी में कुछ और ही समझते रहे चलो खैर! अब इन बातों की चर्चा करने से क्या लाभ है"

"आप यह क्या कहते हैं? आप मेरे बड़े हैं मैं आपका बरताव और तरह कैसे समझ सक्ता था?" चुन्नीलाल कहने लगा "आप ने बचपन से मेरा पालन किया, मुझ को पढ़ा लिखा कर आदमी बनाया इससे बढ़ कर कोई क्या उपकार करेगा? मैं अच्छी तरह जान्ता हूँ कि आप ने मुझ से जो कुछ भला बुरा कहा, मेरी भलाई के लिए कहा. क्या मैं इतना भी नहीं जान्ता कि दगा करने से माँ अपने बालक को मारती है दूसरे से कुछ नहीं कहती. यदि आप को हमारे प्रतिपालन की चिंता मन से न होती तो ऐसे कठिन समय में लाला हीरालाल को घर से बुला कर क्यों नौकर रखते?"

"भाई! अब तो तुम ने वही खुशामद की लच्छेदार बातें छेड़ दीं" लाला ब्रजकिशोर ने हँस कर कहा.

आप के जी में मेरी तरफ का संदेह हो रहा है इससे आप को ऐसा ही भासता होगा परंतु इन में से कौन्सी बात आप को खुशामद की मालूम हुई?"

---

* बहूनामल्प साराणां समवायोहि दुर्जयः।
तृणैर्विधीयते रज्जुर्यया बध्यन्ते दन्तिनस्तया॥

"मनुस्मृति मैं कहा है—

"आकृति, चेष्टा, भाव, गति, बचन रीति, अनुमान।
नैन, सैन, मुख कांति लख मन की रुचि पहिचान॥"*

लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे "तुम कहते हो कि 'आप ने जो कुछ भला बुरा कहा मेरी भलाई के लिये कहा' परतु उस्समय तुम यह सर्वथा नहीं समझते थे तुम्हारे कामों सैं यह स्पष्ट जाना जाता था कि तुम मेरी बातों सैं अप्रसन्न हो और तुम्हारा अप्रसन्न होना अनुचित न था क्योंकि मेरी बातों सैं तुम्हारा नुक्सान होता था मुझ को इस्बात का पीछै बिचार आया. मुझ को इस्समय इन बातों के जतानें की जरूरत न थी परतु मैं ने इसलिये जता दी कि मै भी सच झूँट को पहचान्ता हू सचाई बिना मुझ सैं सफाई न होगी."

"आप की मेरी सफाई क्या? सफाई और बिगाड बराबर वालों में हुआ करता है, आप तो मेरे प्रतिपालक हैं आप की बराबरी में कैसे कर सक्ता हू"? मुशी चुन्नीलाल ने गभीरता सैं कहा.

यह तो बहानेंसाजी की बातें है सफाई के ढग और ही हुआ करते है मुझ को तुम्हारा सब भेद मालूम है परतु तुम ने अब तक कौन्सी बात खुल के कही?" लाला ब्रजकिशोर कहने लगे "मैं पूछता हूँ कि तुम ने मदनमोहन के हाँ सैं सिवाय तनख्वाह के और कुछ नहीं लिया तो तुम्हारे पास आठ दस हज़ार रुपे कहाँ सैं आ गए? मिस्टर ब्राइट इत्यादि सैं तुम जो कमीशन लेते हो उस्का हाल मैं उन्के मुख सैं सुन चुका हू तुम्हारी और शिम्भूदयाल की हिस्सा पत्ती का हाल मुझे अच्छी तरह मालूम है हरकिशोर और निहालचद गली गली तुम्हारी धूल उडाते फिरते हैं मै नहीं जान्ता कि

---

* आकारै रिङ्गितैर्गत्या चेष्टया भाषितेन च।
नेत्रवक्त्र विकारेश्च गृह्यतेन्तर्गतम्मनः॥

जब इस्की चर्चा अदालत तक पहुँचेगी तो तुम्हारे लिए क्या परिणाम होगा ? मै ने केवल तुम सै सलाह करने के लिए यह चर्चा छेडी थी परतु तुम इस्के छिपाने मै अपनी सब अकलमदी खर्च करने लगे तो मुझ को पूछने सै क्या प्रयोजन है ? जो कुछ होना होगा समय पर अपने आप हो रहैगा ''

"आप क्रोध न करै मै ने हर काम मै आप को अपना मालिक और प्रतिपालक समझ रक्खा है मेरी भूल क्षमा करे और मुझ को इस्समय सै अपना सच्चा सेवक समझते रहै" मुशी चुन्नीलाल ने कुछ कुछ डर कर कहा "आप जान्ते हैं कि कुन्बे का बडा खर्च है इस्के वास्तै मनुष्य को हजार तरह के झूट सच बोलने पडते हैं

"उदर भरन के कारनें प्राणी करत इलाज ।
नाचे बाँचे रण भिरे, राचे काज अकाज ॥" (वृन्द)

"संसार की यही रीति है प्रसग रत्नावली मै लिखा है—

"ज्ञान वृद्ध तपवृद्ध अस वय के वृद्ध सुजान ।
धनवानन के द्वार को सेवैं भृत्य समान ॥*"

लाला व्रजकिशोर कहनें लगे "तुमको मेरी एकाएक राय पलटनें का आश्चर्य होगा परतु आश्चर्य न करो. जिस तरह शतरज मै एक एक चाल चलने सै बाज़ी का नक्शा पलटता जाता है इसी तरह ससार मै हरेक बात सै काम काज की रीति भाति बदलती रहती है मै अब तक यह समझता था कि मुझ को मदनमोहन सै अवश्य इन्साफ मिलेगा परतु वह समय निकल गया अब मै फायदा उठाऊँ या न उठाऊँ मदनमोहन को फायदा पहुँचाना सहज नहीं मेरा हाल तुम अच्छी तरह जान्ते हो

---

* वयोवृद्धास्तपोवृद्धा ज्ञानवृद्धास्तथापरे ।
ते सर्वे धनवृद्धस्य द्वारि तिष्ठंति किंकराः ॥

मैं केवल अपनी हिम्मत के सहारे सब तरह का दुःख झेल रहा हू परतु मेरे कर्तव्य काम मुझको जरा भी नही उभरने देते . कहते हैं कि अत्यंत विपत्ति काल मै महर्षि विश्वामित्र ने भी चंडाल के घर से कुत्ते का मास चुराया था! फिर मै क्या करूँ क्या न करूँ? कुछ बुद्धि काम नहीं करती ."

"समय बीते पीछै आप इन सब बातों की याद करते हैं अब तो जो होना था हो चुका यदि आप पहले इन बातों को (का) विचार करते तो केवल आप को ही नही आप के कारण हम लोगों को भी बहुत कुछ फायदा हो जाता ."

"तुम अपने फायदे के लिए तो बृथा खेद करते हो?" लाला ब्रज-किशोर नें हँस कर जवाब दिया "अलबत्ता मै मदनमोहन से साफ जवाब पाए बिना कुछ नहीं कर सक्ता था क्यों कि मुझको प्रतिज्ञा भग करना मजूर न था. क्या तुम को मेरी तरफ से अब तक कुछ सदेह है?"

"जी नही, आप की तरफ का तो मुझ को कुछ सदेह नहीं है परतु इतना ही विचार है कि खल मै से तेल आप किस तरह निकालेंगे!" मुशी चुन्नीलाल नें जी मै सदेह कर के कहा .

"इसकी चिता नही, ऐसे कामों के लिये लोग यह समय बहुत अच्छा समझते है"

"बहुत अच्छा! अब मै जाता हूँ परतु ....." मुशी चुन्नीलाल कहते कहते रुक गया

"परतु क्या? स्पष्ट कहो, मैं जान्ता हूँ कि तुम्हारे मन का सदेह अब तक नही गया . तुम्हारी हज़ार बार राज़ी हो तो तुम सफाई करो नही तो न करो अभी कुछ नहीं बिगड़ा मेरा कौन्सा काम अटक रहा है? तुम अपना नफा नुक्सान आप समझ सक्ते हो"

"आप अप्रसन्न न हों, मुझ को आप पर पूरा भरोसा है मै इस कठिन समय मैं केवल आप पर अपने निस्तार का आधार समझता हू, मेरी

लायकी, नालायकी मेरे कामों सै आप को मालूम हो जायगी परतु मेरी इतनी ही विनती है कि आप भी जरा नरम ही रहैं इन्को बातों मैं बढावा दे कर इन्सै सब तरह का काम ले सक्ते हैं परतु इन पर एतराज़ करने सै यह चिड जाते है. कल के झगड़े के कारण आज के तकाजे का सदेह इन्को आप पर हुआ है परंतु अब मैं जाते ही मिटा दूँगा" मुशी चुन्नीलाल ने बात पलट कर कहा और उठ कर जानें लगा

"तुम किया चाहोगे तो सफाई होनी कौन कठिन है ?

प्रेरक ही ते होत है कारज सिद्ध निदान।
चढ़े धनुष हू ना चले, बिना चलाये बान ॥ १ ॥
सुजन बीच पर दुहुन को हरत कलह रस पूर।
करत देहरी दीप जो घर आँगन तम दूर ॥ २ ॥ (वृद)

यह कह कर लाला ब्रजकिशोर ने चुन्नीलाल को रुखसत किया.

चुन्नीलाल के चित्त पर ब्रजकिशोर की कहन और हीरालाल की नौकरी सै बडा असर हुआ था परंतु अब तक ब्रजकिशोर की तरफ सै उस्का मन पूरा साफ़ न था. यह बाते ब्रजकिशोर के स्वभाव सै इतनी उल्टी थीं कि ब्रजकिशोर के इतनें समझाने पर भी चुन्नीलाल का मन न भरा. वह सदेह के झूले मै झोटे खा रहा था और बडा बिचार कर के उस्नें यह युक्ति सोची थी कि 'कुछ दिन दोनों को दम मै रक्खूँ, ब्रजकिशोर को मदनमोहन की सफाई की उम्मेद पर ललचाता रहूं और इस काम की कठिनाई दिखा, दिखा कर अपना उपकार जताता रहूँ. मदनमोहन को अदालत के मुकद्दमों मैं ब्रजकिशोर सै मदद लेने की पट्टी पढ़ाऊँ पर बेपरवाई जतानें के बहाने सै दोनों मै परस्पर काम की बात खुल कर न होने दू जिस्मैं दोनों का मिलाप होता रहै उन्के चित्त को धैर्य मिलने के लिये सफाई के आसार, शिष्टाचार की बाते दिन दिन बढ़ती जायं पर चित्त की सफाई न होनें पाए, और दोनों की कुजी मेरे हाथ रहै."

ब्रजकिशोर चुन्नीलाल की मुखचर्या सै उस्के मन की धुकड पुकड

पहचान्ता था इस लिए उस्ने जाती बार हीरालाल के भेजने की ताकीद कर दी थी. वह जान्ता था कि हीरालाल बेरोज़गारी सै तंग है वह अपने स्वार्थ सै चुन्नीलाल को सच्ची सफाई के लिए विवस करेंगा और उस्की ज़िद के आगे चुन्नीलाल की कुछ न चलेगी. निदान ऐसा ही हुआ हीरालाल ने ब्रजकिशोर की सावधानी दिखा कर चुन्नीलाल को बनावट के विचार सै अलग रक्खा, ब्रजकिशोर की प्रामाणिकता दिखा कर उस ब्रजकिशोर सै सफाई रखने के वास्तै पक्का किया, मदनमोहन के काम बिगड़ने की सूरत बता कर आगे को ब्रजकिशोर का ठिकाना बनाने की सलाह दी और समझा कर कहा कि "एक ठिकानें पर बैठे हुए दस ठिकानें हाथ आ सक्ते हैं जैसे एक दिया जल्ता हो तो उस्सै दस दिये जल सक्ते हैं परतु जब यह ठिकाना जाता रहेगा तो कहीं ठिकाना न लगेगा" अदालत मैं मदनमोहन पर नालिश होनें सै चुन्नीलाल के भेद खुलने का भय दिखाया और अन्त मैं ब्रजकिशोर सै चुन्नीलाल नें सच्ची सफाई न की तो हीरालाल नें आप ब्रजकिशोर के साथ होकर चुन्नीलाल की चोरी साबित करने की धमकी दी और इन् बातो सै परवस हो कर चुन्नीलाल को ब्रजकिशोर सै मन की सफाई रखने के लिए दृढ प्रतिज्ञा करनी पडी.

परतु आज ब्रजकिशोर की वह सफाई और सचाई कहाँ है? हरकिशोर का कहना इससमय क्या झूँट है? इस्के आचरण सै इस्को धर्मात्मा कोन बता सक्ता है? और जब ऐसे खर्तल मनुष्य का अत मैं यह भेद खुला तो ससार मैं धर्मात्मा किस्को कह सक्ते हैं? काम, क्रोध, लोभ, मोह का बेग कौन रोक सक्ता है? परतु टैरो! जिस मनुष्य के ज़ाहिरी बरताव पर हम इतना धोका खा गए कि सबेरे तक उस्को मदनमोहन का सच्चा मित्र समझते रहे हर जगह उस्की सावधानी, योग्यता, चित्त की सफाई और धमप्रवृत्ति की बडाई करते रहे उस्के चित्त मैं और कितनी बाते गुप्त होंगी यह बात सिवाय परमेश्वर के और कोन जान सक्ता है? और निश्चय जानें बिना हम लोगों को पक्की राय लगानें का क्या अधिकार है?

प्रकरण २६

बातचीत

सीख्यो धन धाम सब काम के सुधारिबे को
सीख्यो अभिराम बाम राखत हजूर मैं।
सीख्यो सराजाम गढ़ कोट के गिराइबे को
सीख्यो समसेर बाँधि काटि अरि ऊर मैं॥
सीख्यो कुल जत्र मंत्र तत्रहू की बात सीख्यो
पिगल पुरान सीख बह्यो जात कूर मै।
कहै कृपाराम सब सीखबो गयो निकाम
एक बोलबो न सीख्यो सीख्यो गयो धूर मै॥

(शृगार सग्रह)

"आज तो मुझ सै एक बडी भूल हुई" मुशी चुन्नीलाल ने लाला मदनमोहन के पास पहुँचते ही कहा "मै (ने) समझा था कि यह सब बखेडा लाला ब्रजकिशोर ने उठाया है परतु वह तो इस्सै बिल्कुल अलग निकले यह सब करतूत तो हरकिशोर की थी. क्या आप नें लाला ब्रज-किशोर के नाम चिट्ठी भेज दी?"

"हाँ चिट्ठी तो मै भेज चुका" मदनमोहन नें जवाब दिया.

"यह बडी बुरी बात हुई. जब एक निरपराधी को अपराधी समझ कर दड दिया जायगा तो उस्के चित्त को कितना दुःख होगा" मुशी चुन्नीलाल नें दया करके कहा

"फिर क्या करें? जो तीर हाथ सै छुट चुका वह लौट कर नहीं आ सक्ता" लाला मदनमोहन नें जवाब दिया.

"निस्सदेह नहीं आ सक्ता परतु जहाँ तक हो सके उस्का बदला देना चाहिए" मुंशी चुन्नीलाल कहनें लगा "कहते हैं कि महाराज दशरथ ने धोके सै श्रवण के तीर मारा परतु अपनी भूल जान्ते ही बड़े पस्तावे के साथ उस्सै अपना अपराध क्षमा कराया उसै उठा कर उस्के माता पिता के पास पहुँचाया उन्को सब तरह धैर्य दिया और उन्का शाप प्रसन्नता सै अपनें सिर चढ़ा लिया."

"ब्रजकिशोर की यह भूल हो या न हो परतु उस्ने पहलै जो ढिठाई की है वह कुछ कम नहीं है. गई बला को फिर घर मै बुलाना अच्छा नहीं मालूम होता. जो कुछ हुआ सो हुआ चलो अब चुप हो रहो" मास्टर शिभूदयाल ने कहा.

"इस्समय ब्रजकिशोर सै मेल करना केवल उन्की प्रसन्नता के लिए नहीं है बल्कि उन्सै अदालत मैं बहुत काम निकलनें की उम्मेद की जाती है" मुंशी चुन्नीलाल ने मदनमोहन को स्वार्थ दिखा कर कहा.

"कल तो तुम ने मुझ सै कहा था कि उन्की विकालत अपने लिए कुछ उपकारी नहीं हो सक्ती" मदनमोहन नें याद दिवाई.

. यह बात सुन्कर चुन्नीलाल एक बार ठिठका परतु फिर तत्काल सम्हल कर बोला "वह समय और था यह समय और है. मामूली मुक़द्दमों का काम हम हरेक वकील सै ले सक्ते थे परतु इस्समय तो ब्रजकिशोर के सिवाय हम किसी को अपना विश्वासी नहीं बना सक्ते."

"यह तुम्हारी लायक है परतु ब्रजकिशोर का दाव लगे तो वह तुमको घड़ी भर जीता न रहनें दे" मास्टर शिभूदयाल ने कहा.

"मै अपने निज के सबंध का बिचार कर के लाला साहब को कच्ची सलाह नहीं दे सक्ता" चुन्नीलाल खरे बने.

"अच्छा तो अब क्या करें? ब्रजकिशोर को दूसरी चिट्ठी लिख भेजें या यहाँ बुलाकर उन्की खातिर कर दें?" निदान लाला मदनमोहन ने चुन्नीलाल की राह सै राह मिला कर कहा.

"मेरे निकट तो आपको उन्के मकान पर चलना चाहिये और कोई कीमती चीज तोहफा मै देकर ऐसी प्रीति बढानी चाहिये जिस्से उन्के मन मै पहली गाठ बिल्कुल न रहै और आप के मुकद्दमों मैं सच्चे मन से पैरवी करे ऐसे अवसर पर उदारता से बडा काम निकलता है सादी ने कहा है—

"द्रव्य दीजिये बीर को तासो दे वह सीस।
प्राण बचावैगो सदा बिन पाये बखशीश॥"*

मुशी चुन्नीलाल नें कहा .

"लाला साहब को ऐसी क्या गरज पडी है जो ब्रजकिशोर के घर जायॅ और कल जिसे बेइज्जत करके निकाल दिया था आज उस्की खुशामद करते फिरें ?" मास्टर शिभूदयाल बोले

"असल मै, अपनी भूल है और अपनी भूल पर दूसरे को सताना बहुत अनुचित है" मुशी चुन्नीलाल सकेत से शिभूदयाल को धमका कर कहने लगा "बैठनें उठने, और आने जाने की साधारण बातों पर अपनी प्रतिष्ठा, अप्रतिष्ठा का आधार समझना, ससार मै अपनी बराबर किसी को न गिन्ना, एक तरह का जगली विचार है . इस्की निस्बत सादगी और मिलनसारी से रहने को लोग अधिक पसद करते हैं . लाला ब्रजकिशोर कुछ ऐसे अप्रतिष्ठित नहीं है कि उन्के हाँ जाने से लाला साहब की स्वरूप हानि हो ."

"यह तो सच है परतु मै ने उन्का दुष्ट स्वभाव समझ कर इतनी बात कही थी" मास्टर शिभूदयाल चुन्नीलाल का सकेत समझ कर बोले

---

* ज़रबिदह मर्दे सिपाहीरा तासर बिदिहद।
बगरश ज़र नादिही सर ननिहद दरआलम॥

"ब्रजकिशोर के मकान पर जाने मै मेरी कुछ हानि नही है परतु इतना ही विचार है कि मेल के बदले कहीं अधिक बिगाड न हो जाय" लाला मदनमोहन ने कहा .

"जी नहीं, लाला ब्रजकिशोर ऐसे अनसमझ नहीं है मैं जान्ता हूं कि वह क्रोध सै आग हो रहे होंगे तो भी आप के पहुँचते ही पानी हो जायँगे क्योंकि गरमी मै धूप के सताए मनुष्य को छाया अधिक प्यारी होती है" मुशी चुन्नीलाल नें कहा

निदान सबकी सलाह सै मदनमोहन का ब्रजकिशोर के हाँ जाना ठैर गया . चुन्नीलाल ने पहले सै खबर भेज दी . ब्रजकिशोर वह खबर सुन कर आप आने को तैयार होते थे इतने मै चुन्नीलाल के साथ लाला मदनमोहन वहाँ जा पहुँचे ब्रजकिशोर ने बडी उमग सै इन्का आदर सत्कार किया .

"आप ने क्यो तकलीफ की ? मैं तो आप आनें को था" लाला ब्रजकिशोर ने कहा .

"हरकिशोर के धोके मै आज आप के नाम एक चिठ्ठी भूल सै भेज दी गई थी इसलिये लाला साहब चलकर यह बात कहने आए है कि आप उस्का कुछ खयाल न करें ." मुशी चुन्नीलाल ने कहा .

"जो बात भूल सै हो और वह भूल अगीकार कर ली जाय तो फिर उस्मै खयाल करने की क्या बात है ? और इस छोटे सै काम के वास्तै लाला साहब को परिश्रम उठा कर यहाँ आने की क्या ज़रूरत थी ? लाला ब्रजकिशोर ने कहा .

"केवल इतना ही काम न था मुझ सै कल भी कुछ भूल हो गई थी . और मै उस्का भी एवज दिया चाहता था" यह कह कर लाला मदनमोहन ने एक बहुमूल्य पाकटचेन (जो थोड़े दिन पहले हमल्टन कपनी के हाँ

सै फ़र्मायशी बन कर आई थी), अपने हाथ सै ब्रजकिशोर की घड़ी मै लगा दी.

"जी ! यह तो आप मुझ को लज्जित करते हैं मेरा एवज़ तो मुझ को आप के मुख सै यह बात सुन्ते ही मिल चुका. मुझ को आपके कहनें का कभी कुछ रज नहीं होता इस्के सिवाय मुझे इस अवसर पर आप की कुछ सेवा करनी चाहिये थी सो मै उल्टा आप सै कैसे लूँ ? जिस मामले मै आप अपनी भूल बताते हैं केवल आप ही की भूल नही है आप सै बढ़ कर मेरी भूल है और मै उस्के लिये अतःकरण सै क्षमा चाहता हू" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे "मै हर बात मै आप सै अपनी मर्ज़ी मूजिब काम कराने के लिये आग्रह करता था परतु वह मेरी बड़ी भूल थी वृद नें सच कहा है—

"सबको रस मै राखिये अंत लीजिये नाहि।
विष निकस्यो अति मथन ते रत्नाकर हू मांहि ॥"

मुझको विकालत के कारण बढाकर बात करने की आदत पड गई है और मैं कभी, कभी अपना मतलब समझाने के लिये हरेक बात इतनी बढ़ाकर कहता चला जाता हू कि सुन्नेंवाले उखता जाते हैं. मुझ को उस अवसर पर जितनी बातें याद आती हैं मैं सब कह डाल्ता हू परतु मै जान्ता हू कि यह रीति बातचीत के नियमों सै विपरीत है और इन्का छोडना मुझ पर फर्ज़ है बल्कि इन्हें छोडने के लिए मैं कुछ, कुछ उद्योग भी कर रहा हू "

"क्या बातचीत के भी कुछ नियम हैं ?" लाला मदनमोहन ने आश्चर्य सै पूछा.

"हाँ ! इस्को बुद्धिमानों नें बहुत अच्छी तरह बरण किया है" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे "सुलभा नाम तपस्विनी नें राजा जनक सै बचन के यह लक्षण कहे हैं—

"अर्थसहित, सशयरहित, पूर्वापर अविरोध।
उचित, सरल, संक्षिप्त पुनि कहो बचन परिशोध ॥*
प्राय कठिन अक्षर रहित, घृणा अमगल हीन।
सत्य, काम, धर्मार्थयुत शुद्ध नियम आधीन ॥†
सभव कूट न अरुचिकर, सरस, युक्ति दरसाय।
निष्कारण अक्षर रहित, खडितहू न लखाय ॥"‡

ससार मै देखा जाता है कि कितने ही मनुष्यों को थोडी सी मामूली बातें याद होती हैं जिन्हें वह अदल बदल कर सदा सुनाया करते हैं जिस्से सुन्नेवाला थोडी देर मै उखता जाता है. बातचीत करनें की उत्तम रीति यह है कि मनुष्य अपनी बात को मौके सै पूरी कर के उस्पर अपना अपना विचार प्रगट करने के लिए औरों को अवकाश दे और पीछे सै कोई नई चर्चा छेड़े, और किसी विषय मै अपना विचार प्रगट करे तो उस्का कारण भी साथ ही समझाता जाय, कोई बात सुनी सुनाई हो तो वेह भी स्पष्ट कह दे हॅसी को बातो मैं भी सचाई और गभीरता को न छोडे, कोई बात इतनी दूर तक खेंच कर न ले जाय जिस्से सुन्नेवालों को थकान मालूम हो, धर्म, दया, और प्रबध की बातो में दिल्लगी न करे दूसरे की मर्म की बातों को दिल्लगी में जबान पर न लाय उचित अवसर पर वाजबी राह सै पूछ, पूछ कर साधारण बातो का जान लेना कुछ दूषित नही है परतु टेढ़े और निरर्थक प्रश्न करके लोगों को तग करना अथवा बकवाद कर के

---

*उपेतार्थमभिन्नार्थं न्यायवृत्त न चाधिक।
नाश्लक्ष्ण नचसदिग्धं वक्ष्यामि परमततः ॥
†नगुर्वक्षर सयुक्त पराङ्मुख सुखनच।
नानृत नत्रिवर्गेण विरुद्ध नाप्यसस्कृतम् ॥
‡नन्यूनं कष्टशब्दंवा विक्रमाभिहितं न च।
न शेषमनुकल्पेन निष्कारणमहेतुकम् ॥

औरों के प्राण खा जाना बहुत बुरी आदत है . बातचीत करनें की तारीफ यह है कि सबका स्वभाव पहिचान कर इस ढब सै बात कहै जिस्मै सब सुन्नेवाले प्रसन्न रहैं जची हुई बात कहना मधुर भाषण सै बहुत बढ कर है खास कर जहाँ मामले की बात करनी हो . शब्द विन्यास के बदले सोच बिचार कर बातचीत करना सदैव अच्छा समझा जाता है और सवाल जवाब बिना मेरी तरह लगातार बात कहते चले जाना कहनेवालों की सुस्ती और अयोग्यता प्रगट करता है इसी तरह असल मतलब पर आनें के लिए बहुत सी भूमिकाओं सै सुन्नेवाले का जी घबरा जाता है परतु थोडी सी भूमिका बिना भी बात का रग नहीं जमता इसलिए अब मै बहुत सी भूमिकाओं के बदले आप सै प्रयोजन मात्र कहता हू कि आप गई बीती बातों का कुछ खयाल न करें ?"

"जो कुछ भी खयाल होता तो लाला साहब इस तरह उठ कर क्या चले आते ? अब तो सब का आधार आप की कारगुज़ारी (अर्थात् कार्य-कुशलता) पर है ." मुशी चुन्नीलाल ने कहा ।

"मेरे ऐसे भाग्य कहाँ ?" लाला ब्रजकिशोर प्रेम बिबस होकर बोले .

"देखो हरकिशोर नें कैसा नीचपन किया है !" लाला मदनमोहन नें आँसू भर कर कहा

"इस्सै बढ कर और क्या नीचपन होगा ?" लाला ब्रजकिशोर कहने लगे . "मैं ने कल उस्के लिए आप को समझाया था इस्सै मै बहुत लजित हूँ मुझको उस्समय तक उस्के यह गुन मालूम न थे अब ये अफवा किसी तरह झूट हो जाय तो मै उसै मजा दिखाऊँ "

"निस्सदेह आप की तरफ सै ऐसी ही उम्मेद है ऐसे समय मै आप साथ न दोगे तो और कौन देगा ?" लाला मदनमोहन नें करुणा सै कहा .

इस्समय सब सै पहले अदालत की जवाबदिही का बदोबस्त होना चाहिये

क्योंकि मुकद्दमों की तारीखें बहुत पास, पास लगी हैं" मुंशी चुन्नीलाल ने कहा.

"अच्छा आप अपना कागज तैयार करानें के वास्तै तीन चार गुमाश्ते तत्काल बढ़ा दें और अदालत की कारवाई के वास्तै मेरे नाम एक मुख्त्यारनामा लिखते जायँ बस फिर मैं समझ लूंगा." लाला ब्रजकिशोर ने कहा.

निदान लाला मदनमोहन ब्रजकिशोर के नाम मुख्त्यारनामा लिख कर अपने मकान को रवाने हुए

प्रकरण ३०

नैराश्य (नाउम्मेदी)

फलहीन महीरुह को खगवृन्द तजैं बन को मृग भस्म भंए।
मकरन्द पिए अरविन्द मिलिन्द तजै सर सारस सूख गए॥
धनहीन मनुष्य तजै गणिका नृप को सठ सेवक राज हुए।
बिन स्वारथ कौन सखा जग मैं? सब कारज के हित हीत भए॥*

(भर्तृहरि)

सध्या समय लाला मदनमोहन भोजन करनें गए तब मुंशी चुन्नीलाल

---

*वृक्षं क्षीणफलं त्यजन्ति विहगा दग्धं वनान्तं मृगाः।
पुष्पं पीतरसं त्यजन्ति मधुपा शुष्कं सरः सारसाः॥
निर्द्रव्यं पुरुषं त्यजन्ति गणिका भ्रष्टं नृपं मन्त्रिणः।
सर्वः कार्यवशाज्जनो भिरमते कः कस्यचे बल्लभः॥

और मास्टर शिंभूदयाल को खुल कर बात करनें का अवकाश मिला . वह दोनों धीरे, धीरे बतलानें लगे

"मेरे निकट तुम नें ब्रजकिशोर सै मेल करनें मै कुछ बुद्धिमानी नही की . बैरी के हाथ मै अधिकार दे कर कोई अपनी रक्षा कर सक्ता है ?" मास्टर शिंभूदयाल ने कहा .

"क्या करूँ ? इस्समय इस युक्ति के सिवाय अपने बचाव का कोई रस्ता न था . लोगों की नालिशें हो चुकीं, अपनें भेद खुलने का समय आ गया . ब्रजकिशोर सब बातों सै भेदी थे इसलिये मै नें उन्हीं के ज़िम्मे इन्बातों के छिपानें का बोझ डाल दिया कि वह अपनें विपरीत कुछ न करनें पायें ." मुंशी चुन्नीलाल ने शिंभूदयाल की बात उडाकर कहा .

"परतु अब ब्रजकिशोर तुम्हारा भेद खोल दें तो तुम कैसे अपना बचाव करो ? हर काम मै आदमी को पहले अपने निकास का रस्ता सोचना चाहिये . अभिमन्यु की तरह धुन बाँधकर चकाबू में घुसे चले जाओगे तो फिर निकलना बहुत कठिन होगा . पतंग उडा कर डोर अपने हाथ न रक्खोगे तो उस्के हाथ लगने की क्या उम्मेद रहेगी ?" मास्टर शिंभूदयाल नें कहा

मै ने अपनें निकास की उम्मेद केवल ब्रजकिशोर के विश्वास पर बाधी है परंतु उन्की दो एक बातों सै मुझ को अभी सदेह होने लगा . प्रथम तो उन्होंने इस गए बीते समय में मदनमोहन सै मेल करने मै क्या फायदा बिचारा ? और महन्ताने के लालच सै मेल किया भी था तो ऐसी जल्दी कागज तैयार करनें की क्या ज़रूरत थी ? मै जान्ता हूँ कि वह नालिश करने वालों सै जवाबदिही करने के वास्तै यह उपाय करते होंगे परतु जब वह जवाबदिही करेंगे तो नालिश करनेंवालों की तरफ सै हमारा भेद अपने आप खुल जायगा और जिस बात को हम दूर फेका चाहते हैं वही पास आ जावेगी" मुंशी चुन्नीलाल ने कहा .

वकीलों के यही तो पेच होते हैं जिस बात को वह अपनी तरफ सै

नहीं कहा चाहते उल्टे सीधे सवाल करके दूसरे के मुख सै कहा लेते हैं और आप भले के भले बने रहते हैं. बिचारो तो सही हमनें ब्रजकिशोर के साथ कौन्सी भलाई की है जो वह हमारे साथ भलाई करैंगे ? वकीलों के ढग बड़े पेचीदा होते हैं वह एक मुकद्दमे मै तुम्हारे वकील बनते हैं तो दूसरे मैं तुम्हारे बैरी के वकील बन जाते हैं परतु अपना मतलब किसी तरह नहीं जानें देते ."

"सच है इस काम मै लाला ब्रजकिशोर की चाल पर अवश्य सदेह होता है परतु क्या करे ? अपनें वकील न करेंगे तो वह प्रतिपक्षी के वकील हो जायगे और अपना भेद खोलनें मै किसी तरह की कसर न रक्खेगे" मु शी चुन्नीलाल कहने लगा "असल तो यह है कि अब यहाँ रहनें मै कुछ मज़ा नही रहा प्रथम तो आगे को कोई बुर्द नही दिखाई देती फिर जिन लोगों सै हजारों रुपे खाये पीये हैं उन्हीं के सामनें होकर विवाद करना पड़ेगा और जब हम उन्सै विवाद करेंगे तो वह हम सै मुलाहजा क्यों रक्खेंगे , हमारा भेद क्यों छिपावेंगे ? कभी कभी हम उन्सै लाला साहब के हिसाब मै लिखाकर बहुत सी चीजे घर ले गए है इसी तरह उन्के यहाँ जमा कराने के वास्ते लाला साहब सै जो रुपे ले गए थे वह उन्के यहाँ जमा नही कराए . ऐसी रकमों की बाबत पहले, पहले तो यह बिचार था कि इस्समय अपना काम चला लें फिर जहाँ की तहाँ पहुँचा देंगे परतु पीछे सै न तो अपने पास रुपे की समाई हुई न कोई देखने भालने वाला मिला बस सब रकमें जहाँ की तहाँ रह गई अब अदालत मै यह भेद खुलेगा तो कैसी आफत आवेगी ! और हम लाला साहब की तरफ सै विवाद करेंगे तो यह भेद कैसे छिप सकेगा ? क्या करे ? कोई सीधा रस्ता नही दिखाई देता ."

यदि ऐसै ही पाप करके लोग बच जाया करते तो ससार मै पाप पुण्य का बिचार काहे को रहता ?

"मुझ को तो अब सीधा रस्ता यही दिखाई देता है कि जो हाथ लगे

ले लिवा कर यहाँ सै रफूचक्कर हो. ब्रजकिशोर तुम्हारे भाग्य सै इस्समय आ फसा है इस्के सिर मुफ्त का छुपर रख कर अलग हो बैठो" मास्टर शिंभूदयाल कहने लगा "जिस तरह अलिफलैला मै अबुलहसन और शम्सुल्निहार के परस्पर प्रेम बिबस हुए पीछे बखेडा उठनें की सूरत मालूम हुई तब उन्का मध्यस्थ इब्नतायर उन्को छिटका कर अलग हो बैठा और एक जौहरी ने मुफ्त मै वह आफत अपने सिर लेकर अपने आप को जजाल मै फॅसा दिया. इसी तरह इस्समय तुम्हारी और ब्रजकिशोर की दशा है. ब्रजकिशोर को काम सोंप कर तुम इस्समय अलग हो जाओ तो सब बदनामी का ठीकरा ब्रजकिशोर के सिर फूटेगा और दूध मलाई चखनेवाले तुम रहोगे."

"यह तो बड़े मज़े की बात है ब्रजकिशोर पर तो हम यह बोझ डालेंगे कि तुम्हारे लिए हम अलग होते है पीछे सै हमारा भेद न खुलने पाय. लेनदारो सै यह कहेंगे कि तुम्हारे वास्ते लाला साहब सै हमारी तकरार हो गई उन्होंने हमारा कहा नहीं माना अब तुम भी कही हम को धोका न देना" मु शी चुन्नीलाल ने कहा.

"आज तो दोनो मै बडी घूट घूट कर बातें हो रही हैं" लाला मदन-मोहन ने आते ही कहा. "तुम्हारी सलाह कभो पूरी नहीं होती न जाने कौन्से किले लेने का बिचार किया करते हो!"

"जी हुजूर! कुछ नहीं, मिस्टर रसल के मामले की चर्चा थी उस्की जायदाद के नीलाम की तारीख मैं केवल दो दिन बाकी हैं परतु अब तक रुपे का कुछ बदोबस्त नहीं हुआ" मु शी चुन्नीलाल ने तत्काल बात पलट कर कहा.

"इस बिना बिचारी आफत का हाल किस्को मालूम था? तुम उन्हें लिख दो कि जिस्तरह हो सके थोड़े दिन की मुहलत ले लें, हम उस्के भीतर भीतर रुपे का प्रबध अवश्य कर देंगे" लाला मदनमोहन ने कहा.

"मुहलत पहले कई बार ले चुके हैं इस्से अब मिलनी कठिन है परतु इस्समय कुछ गहना गिरवी रख कर रुपे का प्रबंध कर दिया जाय तो उस्की जायदाद बनी रहै और धीरे धीरे रुपया चुका कर गहना भी छुडा लिया जाय" मास्टर शिभूदयाल ने जाते जाते सिप्पा लगाने की युक्ति की. उस्का मनोर्थ था कि यह रकम हाथ लग जाय तो किसी लेनदार को देकर भली भाँति लाभ उठायें. अथवा मदनमोहन मागने योग्य न रहै तो सब की सब रकम आप ही प्रसाद कर जायें, अथवा किसी के यहाँ गिरवी भी धरे तो लेनदारों को कुर्की कराने के लिये उस्का पता बता कर उन्से भली भाँति हाथ रगै, अथवा माल अपने नीचे दबे पीछे और किसी युक्ति से भरपूर फायदे की सूरत निकाले परतु मदनमोहन के सौभाग्य से इस्समय लाला ब्रजकिशोर आ पहुँचे इसलिये उस्की कुल दाल न गली.

'क्या है? किस काम के लिये गहना चाहते हो?" लाला ब्रजकिशोर ने शिभूदयाल की उछटती सी बात सुनी थी इस्पर आते ही पूछा.

"जी कुछ नही, यह तो मिस्टर रसल की चर्चा थी" मुंशी चुन्नीलाल ने बात उडाने के वास्ते गोल कहा.

"उस्का क्या देन लेन है? उस्का मामला अब तक अदालत मैं तो नही पहुँचा?" लाला ब्रजकिशोर पूछने लगे.

"वह एक नील का सौदागर है और उस्पर बीस, पचीस हजार रुपे अपने लेने है इस्समय उस्की नील की कोठी और कुछ बिस्वे बिस्वासी दूसरे की डिकी मैं नीलाम पर चढे हैं और नीलाम की तारीख मै केवल दो दिन बाकी हैं नीलाम हुए पीछै अपने रुपे पटने की कोई सूरत नही मालूम होती इसलिए ये लोग कहते थे कि गहना गिरवी रखकर उस्का क़र्ज़ चुका दो परतु इतना बदोबस्त तो इस्समय किसी तरह नही हो सक्ता" लाला मदनमोहन नें लजाते लजाते कहा.

"अभी आप को अपने कर्ज़ का प्रबध करना है और यह मामला केवल मुहलत लेनें सै कुछ दिन टल सक्ता है" लाला ब्रजकिशोर ने अपने मन का सदेह छिपा कर कहा .

"मैं जान्ता हूँ कि मेरा कर्ज चुकानें के लिए तो मेरे मित्रों की तरफ सै आजकल मै बहुत रुपया आ पहुँचेगा" लाला मदनमोहन नें अपनी समझ मूजिब जवाब दिया .

"और मुहलत कई बार ले ली गई है इस्सै अब मिलनी कठिन है" मास्टर शिंभूदयाल बोले .

"मै खयाल करता हूँ कि अदालत के विश्वास योग्य कारण बता दिया जायगा तो मुहलत अवश्य मिल जायगी" लाला ब्रजकिशोर ने कहा .

"और जो न मिली ?" शिंभूदयाल हुज्जत करनें लगा

"तो मै अपनी ज़ामिनी देकर जायदाद नीलाम न होने दूगा" लाला ब्रजकिशोर ने जवाब दिया . और अब शिंभूदयाल को बोलने की कोई जगह न रही .

"कल कई मुकद्दमों की तारीखै लग रही हैं और अब तक मै उन्के हाल सै कुछ भेदी नहीं हूँ तुमको अवकाश हो तो लाला साहब सै आज्ञा लेकर थोडी देर के लिए मेरे साथ चलो" लाला ब्रजकिशोर नें मु शी चुन्नीलाल सै कहा .

"हाँ, हाँ तुम साथ जाकर सब बातें अच्छी तरह समझा आओ" लाला मदनमोहन ने मु शी चुन्नीलाल को हुक्म दिया .

"आप इस्समय किसी काम के लिए किसी को अपना गहना न दे ऐसे अवसर पर ऐसी बातो म तरह तरह का डर रहता है" लाला ब्रजकिशोर नें जाती बार मदनमोहन सै सकेत मै कहा और मु शी चुन्नीलाल को साथ लेकर रुखसत हुए

आज लाला मदनमोहन की सभा मैं वह शोभा न थी केवल चुन्नीलाल शिंभूदयाल आदि दो चार आदमी दृष्टि आते थे परंतु उन्के मन भी बुझे हुए थे . हँसी चुहल की बातें किसी के मुख सै नहीं सुनाई देती थीं खास्कर ब्रजकिशोर और चुन्नीलाल के गए पीछे तो और भी सुस्ती छा गई मकान सुन्सान मालूम होने लगा . शिंभूदयाल ऊपर के मन सै हँसी चुहल की कुछ कुछ बातें बनाता था परतु उन्मैं मोम के फूल की तरह कुछ रस न था . निदान थोडी देर इधर उधर की बातें बना कर सब अपनें अपने रस्ते लगे और लाला मदनमोहन भी मुर्झाए पलँग पर जा लेटे .

———

प्रकरण ३१

चालाक की चूक

सुख दिखाय दुख दीजिए खल सो लरिये काहि ।
जो गुर दीये ही मरै क्यों विष दीजे ताहि ? ॥ वृद

"लाला मदनमोहन का लेन देन किस्तरह पर है ?" ब्रजकिशोर नें मकान पर पहुँचते ही चुन्नीलाल सै पूछा .

"बिगत वार हाल तो कागज तैयार होने पर मालूम होगा परंतु अदाज़ यह है कि पचास हज़ार के लगभग तो मिस्टर ब्राइट के देनें होगें, पदरह बीस हज़ार आगा हसन जान मुहम्मद जान वगैरे खेरीज सौदागरों के देनें होंगे, दस बारह हज़ार कलकत्ते, मुबई के सौदागरों के देनें होंगे, पचास हज़ार मै निहालचद, हरकिशोर वगैरे बाज़ार के

दुकानदार और दिसावरों के आढतिये आ गए" मुशी चुन्नीलाल ने जवाब दिया

"और लेने किस, किस पर हैं ?" ब्रजकिशोर ने पूछा

"बीस पचीस हजार तो मिस्टर रसल की तरफ बाकी होंगे, दस बारह हजार आगरे के एक जौहरी मै जवाहरात की बिकी के लेने हैं, दस पदरह हज़ार यहाँ के बाज़ार वालों मै और दिसावरों के आढतियों मै लेने होंगे पाँच, सात हजार खेरीज लोगों मै और नौकरों मै बाकी होगे, आठ दस हज़ार का व्यापार सीगे का माल मोजूद है, पाँच हजार रुपे अलीपुर रोड के ठेके बाबत सरकार सै मिलने वाले है और रहने का मकान, बाग, सवारी, सरसामान वगैरे सब इन्सै अलग है" मुशी चुन्नीलाल ने जवाब दिया.

"इस्तरह अटकल पच्चू हिसाब बताने सै कुछ काम नहीं चल्ता जब तक लेने देने का ठीक हाल मालूम न हो फैस्ला किस तरह किया जाय ? तुम सबेरे लाला जवाहरलाल को मेरे पास भेज देना मै उस्सै सब हाल पूछ लूँगा. ऐसे अवसर पर असावधानी रखने सै देना सिर पर बना रहता है और लेना मिट्टी हो जाता है" ब्रजकिशोर ने कहा.

"कागज़ बहुत दिनों का चढ रहा है और बहुत से जमा खर्च होने बाकी हैं इसलिए कागज़ सै कुछ नहीं मालूम हो सक्ता" मुशी चुन्नीलाल ने बात उड़ाने की तजबीज की

"कुछ हर्ज़ नहीं, मै लोगों सै जिरह के सवाल कर के अपना मतलब निकाल लूँगा मुझको अदालत में हर तरह के मनुष्यों सै नित्य काम पडता है" लाला ब्रजकिशोर कहने लगे "तुम ने आज सबेरे मुझ सै सफ़ाई करनें की बात की थी परतु अभी सै उस्मै अतर आने लगा मै वहाँ पहुँचा उस्समय तुम लोग लाला साहब सै गहना लेने की तजबीज कर रहे थे परतु मेरे पहुँचते ही वह बात उड़ानें लगे मुझ को कुछ का कुछ

समझाने लगे सो मै ऐसा अनसमझ नहीं हूँ यदि मेरा रहना तुम को असह्य है, मेरे मेल सै तुम्हारी कमाई में फक आता है, मेरे मेल कराने का तुम को पछतावा होता है तो मै तुम्हारी मारफत मेल कर के तुम्हारा नुक्सान हरगिज़ नहीं किया चाहता, लाला साहब सै मेल नहीं रक्खा चाहता तुम अपना बदोबस्त आप कर लेना".

"आप वृथा खेद करते ह . म ने आप सें छिप कर कोन्सा काम किया ? आप के मेल सै मेरी अप्रसन्नता कैसे मालूम हुई ? आप पहुँचे जब निस्सदेह शिभूदयाल ने मिस्टर रसल के लिए गहने की चर्चा छेडी थी परतु वह कुछ पक्की बात न थी और आप की सलाह बिना किसी तरह पूरी नहीं पड सक्ती थी आप सै पहले बात करने का समय नही मिला था इसी लिये आप के साम्ने बात करने मै इतना सकोच हुआ था परतु आप को हमारी तरफ सै अब तक इतना सदेह बन रहा है तो आप लाला साहब के छोडने का बिचार क्यों करते हैं आप के लिए हम ही अपनी आवाजाई बद कर देंगे". मुशी चुन्नीलाल ने कहा .

"सादी ने सच कहा है "वृद्धा वेश्या तपस्विनी न होय तो और क्या करे ? उतरा सेनक किसी का क्या बिगाड कर सक्ता है कि साधु न बने ?"* लाला ब्रजकिशोर मुस्करा कर कहनें लगे "मै किसी काम मै किसी का उपकार नहीं सहा चाहता यदि कोई मुझ पर थोडा सा उपकार करे तो मै उससै अधिक करने की इच्छा रखता हूँ फिर मुझ को इस थोथे काम मै किसी का उपकार उटानें की क्या ज़रूरत है ? जो तुम महरबानी कर के मेरा पूरा महन्ताना मुझ को दिवा दोगे तो मै इसी मै तुम्हारी बडी सहायता समझूँगा और प्रसन्नता सै तुम्हारा कमीशन

---

* क़हबए पीर अज़ नाबकारी चे कुनद कि तोबा नकुद ?
ब शहनए माज़ूल अज़ मदुम आज़ारी .

तुम्हारी नज़र करूँगा." लाला ब्रजकिशोर इस बातचीत मै ठेठ सै अपनी सच्ची सावधानी के साथ एक दाव खेल रहे थे . उन्ने इस युक्ति सै बातचीत की थी जिस्सै उन्का कुछ स्वार्थ न मालूम पड़े और चुन्नीलाल आप सै आप मदनमोहन को छोड जानें के लिए तैयार हो जाय, पास रहने मै अपनी हानि, और छोड जाने मैं अपना फ़ायदा समझे बल्कि जाते, जाते अपनें फ़ायदे के लालच सै ब्रजकिशोर का महन्ताना भी दिवाता जाय

"आप अपना महन्ताना भी ले और लाला मदनमोहन के हा का कुल अख़्त्यार भी लें हम को तो हर भाँति आप की प्रसन्नता करनी है हम,नें तो आप की शरण ली है हमारा तो यही निवेदन है कि इस्समय आप हमारी इज्जत बचा लें" मुशी चुन्नीलाल नें हार मान कर कहा वह भीतर सै चाहे जैसा पापी था परतु प्रगट मै अपनी इज्जत खोने सै बहुत डरता था, संसार मै बडा भलामानस बना फिरता था और इसी भलमनसात के नीचे उस्नें अपने सब पाप छिपा रक्खे थे .

"इन बातों सै इज्जत का क्या सबध है ! मुझ सै हो सकेगा जहाँ तक मैं तुम्हारी इज्जत पर घब्बा न आने दूगा परतु इस कठिन समय मै तुम मदनमोहन के छोडनें का विचार करते हो इस्मैं मुझ को तुम्हारी भूल मालूम होती है ऐसा न हो कि पीछै सै तुम्हें पछताना पड़े . चारों तरफ दृष्टि रखकर बुद्धिमान मनुष्य काम किया करते है". लाला ब्रजकिशोर ने युक्ति सै कहा

"तो क्या इस्समय आप की राय मैं लाला मदनमोहन के पास सै हमारा अलग होना अनुचित है ?" चुन्नीलाल ने ब्रजकिशोर पर बोझ डाल कर पूछा

"मैं साफ कुछ नहीं कह सक्ता क्योंकि औरों की निस्बत वह अपना हानि लाभ आप अधिक समझ सक्ते हैं" लाला ब्रजकिशोर नें भरम मैं कहा .

"तो खैर ! मेरी तुच्छ बुद्धि मैं इस्समय हमारी निस्बत आप लाला मदनमोहन की अधिक सहायता कर सक्ते हैं और इसी मैं हमारी भी भलाई है" मुंशी चुन्नीलाल बोले

"तुम नें इन दिनों मैं नवल और जुगल (ब्रजकिशोर के छोटे भाई) की भी परीक्षा ली या नहीं ! तुम गए तब वह बहुत छोटे थे परंतु अब कुछ, कुछ होशियार होते चले हैं" लाला ब्रजकिशोर ने पहली बात बदल कर घर बिध की चर्चा छेड़ी

मैं ने आज उन्को नहीं देखा परंतु मुझ को उन्की तरफ सै भली भाँत विश्वास है भला आप की शिक्षा पाए पीछै किसी तरह की कसर रह सक्ती है !" मुंशी चुन्नीलाल ने कहा .

"भाई ! तुम तो फिर खुशामद की बातें करने लगे यह रहनें दो घर मैं खुशामद की क्या ज़रूरत है ?" लाला ब्रजकिशोर नें नरम ओलभा दिया और चुन्नीलाल उन सै रुखसत होकर अपनें घर गया .

प्रकरण ३२

अदालत

काम परे ही जानिए जो नर जैसो होय।
बिन ताये खोटो खरो गहनो लखै न कोय ॥ वृंद।

अदालत मैं हाकिम कुर्सी पर बैठे इजलास कर रहे हैं . सब अहलकार अपनी, अपनी जगह बैठे हैं निहालचंद मोदी का मुकद्दमा हो रहा है उस्की तरफ़ सै लतीफ हुसैन वकील हैं . मदनमोहन की तरफ सै लाला ब्रजकिशोर जवाबदिही करते है . ब्रजकिशोर ने बचपन मैं

मदनमोहन के हा बैठकर हिंदी पढी थी इस वास्तै वह सराफी कागज़ की रीति भाति अच्छी तरह जान्ता था और उस्ने मुकद्दमा छिड़नें सै पहले मामूली फीस देकर निहालचद के बही खाते अच्छी तरह देख लिये थे. इस मुकद्दमे मै कानूनी बहस कुछ न थी केवुल लेन देन का मामला था.

ब्रजकिशोर ने निहालचंद को गवाह ठैरा कर उस्सै जिरह के सवाल पूछने शुरू किये "तुम्हारा लेन देन रुक्के पर्चो सै है ?"

जवाब "नहीं"

"तो तुम किस तरह लेन देन रखते हो ?"

ज० "नोकरों की मारफत"

"तुमको कैसे मालूम होता है कि यह आदमी लाला मदनमोहन की तरफ सै माल लेनें आया है और उन्हीं के हा ले जायगा ?"

"हम यह नहीं जान सक्ते परतु लाला साहब का हुक्म है कि वह लोग जो जो सामान मागें तत्काल दे दिया करो"

"अच्छा ! वह हुक्म दिखाओ !"

ज० "वह हुक्म लिखकर नहीं दिया था जबानी है"

"अच्छा ! वह हुक्म किस्के आगे दिया था ?"—"किस किस के लिए दिया था !"—"कितनें दिन हुए ?"—"कौन्सा समय था ?"—कौन्सी जगह थी ?"—"क्या कहा था ?"

"बहुत दिन की बात है मुझ को अच्छी तरह याद नहीं".

"अच्छा ! जितनी बात याद हो वही बतलाओ !"

ज० "मै इस्समय कुछ नही कह सक्ता"

"तो क्या किसी सै पूछ कर कहोगे ?"

ज० "जी नही याद करके कहूगा"

"अच्छा ! तुम्हारा हिसाब होकर बीच मै बाकी निकल चुकी है ?"

ज० "नहीं"

"तो तुमनें साल की साल बाकी निकाल कर ब्याज पर ब्याज कैसे लगा लिया ?"

"साहूकारे का दस्तूर यही है."

"साहूकारे मै तो साल की साल हिसाब होकर ब्याज लगाया जाता है फिर तुम नें हिसाब क्यों नहीं किया ?"

ज० "अवकाश नहीं मिला"

"तुम्हारी बहियों मैं उदरत खाते सै क्या मतलब है ?"

"लाला मदनमोहन के लेन देन सिवाय आप और किसी खाते का सवाल न करें" निहालचंद के वकील ने कहा.

"मुझ को इस खाते सै लाला मदनमोहन के लेन देन का विशेष सबध मालूम होता है इसी सै मै ने यह सवाल किया है" लाला ब्रजकिशोर ने जवाब दिया और परिणाम मै हाकिम के हुक्म सै यह सवाल पूछा गया.

"जो रकमे बही खाते मै हिसाब पक्का कर के लिखी जानें के लायक होती हैं और तत्काल उन्का हिसाब पक्का नहीं हो सक्ता वह रक़में हिसाब की सफाई होने तक इस खाते मै रहती हैं और सफाई होनें पर जहा की तहा चली जाती हैं" निहालचद नें जवाब दिया.

"अच्छा ! तुम्हारे हा जिन मितियों मै बहुत करके लाला मदनमोहन के नाम बडी बडी रकमें लिखी गई हैं उन्ही मितियों मै उदरत खाते कुछ रकम जमा की गई है और फिर कुछ दिन पीछे उदरत खाते नाम लिखकर वह रकमें लोगों को हाथों हाथ दे दी गई हैं या उन्के खाते मै जमा कर दी गई हैं इस्का क्या सबब है ?" लाला ब्रजकिशोर नें पूछा.

"मै पहले कह चुका हू कि जिन लोगो की रक़में अलल हिसाब आती जाती है या जिन्का लेन देन थोड़े दिन के वास्तै हुआ करता है उन्की रकम कुछ दिन के लिए इस तरह पर उदरत खाते मैं रहती है परतु मैं किसी खास रक़म का हाल बही देखे बिना नहीं बता सक्ता." निहालचद नें जवाब दिया

"और यह भी जरूर है कि जिस दिन लाला मदनमोहन का काम पड़े उस दिन की यह कारवाई अयोग्य समझी जाय?" निहालचद के वकील ने कहा .

"तो ये क्या ज़रूर है कि जिस मिती मै लाला मदनमोहन के नाम बडी रकम लिखी जाय उसी मिती मै कुछ रकम उदरत खाते जमा हो और थोड़े दिन पीछै वह रकम जैसी की तैसी लोगों को बाट दी जाय?" लाला ब्रजकिशोर ने जवाब दिया

"देखो जी! इस मुकद्दमे मै किसी तरह का फरेब साबित होगा तो हम उसै तत्काल फौजदारी सुपुर्द कर देगे" हाकिम नें सदेह करके कहा .

"हजूर हम को एक दिन की मुहलत मिल जाय हम इन सब बातों के लिए लाला ब्रजकिशोर साहब की दिलजमई अच्छी तरह कर देगे" निहालचद के वकील नें हाकिम सै अर्ज़ की और ब्रजकिशोर नें इस बात को खुशी सै मंजूर किया .

उदरत खाते सै लाला मदनमोहन के नोकरों की कमीशन वगैरे का हाल खुल्ता था, जहाँ रकम जमा थी किस्सै आई? किस बाबत आई? इस्का कुछ पता न था परंतु जहाँ रकम दी गई मदनमोहन के नोकरों का अलग अलग नाम लिखा था और हिसाब लगानें सै उस्का भेद भाव अच्छी तरह मिल सक्ता था जिन नोकरों के खाते थे उन्के खातों मै यह रकमें जमा हुई थीं और कानून के अनुसार ऐसे मामलों मै रिश्वत लेने देने वाले दोनों अपराधी थे परंतु ब्रजकिशोर के मन मै इन्के फँसाने की इच्छा न थी वह केवल नमूना दिखा कर लेनदारों की हिम्मत घटाया चाहता था उस्ने ऐसी लपेट सै सवाल किये थे कि हाकिम को भारी न लगे और लेनदारों के चित्त मैं गढ़ जाँय सो ब्रजकिशोर की इतनी ही पकड सै बहुत से लेनदारों के छक्के छूट गये .

कितनें ही छिपे लुच्चे मदनमोहन की बेखबरी और कागज़ का अधेर लेनदारों का हुल्लड़, मुकदमों के झटपट हो जाने की उम्मेद, मदनमोहन

के नोकरों की स्वार्थपरता के भरोसे पर कुछ कुछ बढ़ाकर दावे कर बैठे थे यह सूरत देखते ही उन्के पाँव तले की ज़मीन निकल गई . मिस्टर ब्राइट की कुर्की मै सब माल अस्बाब के कुर्क हो जाने सै लेनदारों को अपनी रकम के पटने का सदेह तो पहले ही हो गया था . अब किसी तरह की लपेट आ जानें पर अपनी इज्जत खो बैठनें का डर मालूम होने लगा "नमाज़ को गए थे रोज़े गले पड़े" .

सिवाय मै यह चर्चा सुनाई दी कि मदनमोहन को और, और दिसावरों का बहुत देना है यदि सब माल जायदाद नीलाम होकर हिस्सै रसदी सब लेनदारों को दिया गया तो भी बहुत थोडी रकम पल्ले पड़ेगी ब्रजकिशोर सै लोग इस्का हाल पूछते थे तब वह अजान बन्कर अलग हो जाता था इस्सै लोगों की और भी छाती बैठी जाती थी. जिस्तरह पल भर मै मदनमोहन के दिवाले की चर्चा चारों तरफ फैल गई थी इसी तरह अब यह सब बातें अफवा की ज़हरी हवा मै मिलकर चारों तरफ उडने लगीं

मोदी के मुकद्दमे सिवाय आज कोई पेदचार मुकद्दमा अदालत मै न हुआ जिन्के मुकद्दमो मै आज की तारीख लगी थी उन्ने भी निहालचद के मुकद्दमें का परिणाम देखने के लिये अपने मुकद्दमे एक, एक दो, दो दिन आगे बढवा दिये .

जब इस काम सै अवकाश मिला तो लाला ब्रजकिशोर ने अदालत सै अर्ज़ करके मिस्टर रसल की जायदाद नीलाम होने की तारीख आगे बढ़वा दी परतु यह बात ऐसी सीधी थी कि इस्के लिये कुछ विशेष परिश्रम न उठाना पडा

लाला ब्रजकिशोर की इस्समय की चाल देखकर बडा आश्चर्य होता है . सब लेनदार चारों तरफ सै निराश होकर उस्के पास आते है परतु वह आप उन्सै अधिक निराश मालूम होता है वह उन्के साथ बडी बेपरवाई सै बातचीत करता है उन्को हर तरह के चढाव उतार दिखाता है जब वह लोग अपना पीछा छुडाने के लिये उस्सै बहुत आधीनता करते हैं तो

वह बडी बेपरवाई सै उन्के साथ लगाव की बात करता है परतु जब वह किसी बात पर जमते हैं तो वह आप कच्चा पक्का होने लगता है उल्टी सीधी बात करके अपनी बात सै निकला चाहता है और जब कोई बात मजूर करता है तो बडी आनाकानी सै ज़बान निकलनें के कारण उस्को यह बोझ उठाना पडता हो ऐसा रूप दिखाई देता है. कचहरी सै लौटती बार उस्नें घंटे डेढ घटे मिस्टर ब्राइट सै एकात मै बातचीत की अदालत के कामों मैं उस्का वैसा ही उद्योग दिखाई देता है परतु दर असल वह किसी अत्यत कठिन काम मै लग रहा हो ऐसा ढग मालूम होता है उस्के पहले सब काम नियमानुसार दिखाई देते थे परतु इस्समय कुछ क्रम नही रहा इस्समय उस्के सब काम परस्पर विपरीत दिखाई देते हैं इसलिए उस्का निज भाव पहचान्ना बहुत कठिन है परतु हम केवल इतनी बात पर सतोष बाँध बैठे हैं कि जब उस्की कारवाई का परिणाम प्रगट हो जायगा तो वह अपना भाव सर्व साधारण की दृष्टि सै कैसे गुप्त रख सकेगा ?

प्रकरण ३३

मित्र परीक्षा.

धन न भये हू मित्र की सज्जन करत सहाय ।
मित्र भाव जाचे बिना कैसे जान्यो जाय ॥*

(विदुर प्रजागरे)

---

* अर्चयेदेव मित्राणि सनिवासतिवा धने ।
नानर्थ यन् प्रजानाति मित्राणा सारफल्गुता ॥

आज तो लाला ब्रजकिशोर की बातों मै लाला मदनमोहन की बात ही भूल गए थे .

लाला मदनमोहन के मकान पर वैसी ही सुस्ती छा रही है केवल मास्टर शिभूदयाल और मुशी चुन्नीलाल आदि तीन, चार आदमी दिखाई देते हैं, परतु उन्का भी होना न होना एक सा है वह भी अपने निकास का रस्ता ढूँढ रहे है हम अब तक लाला मदनमोहन के बाकी मुसाहबों की पहचान कराने के लिए अवकाश देख रहे थे इतने मैं उन्नें मदनमोहन का साथ छोड कर अपनी पहिचान आप बता दी . हरगोविद और पुरुषोत्तमदास ने भी कल से सूरत नहीं दिखाई थी . बाबू बैजनाथ को बुलाने के लिए आदमी गया था परतु उन्हैं आनें का अवकाश न मिला लाला हरदयाल साहब के नाम कुछ दिन के लिए थोड़े रुपे हाथ उधार देने को लिखा गया था परतु उन्का भी जवाब नहीं आया . लाला मदनमोहन का ध्यान सब से अधिक डाक की तरफ लग रहा था उन्को विश्वास था कि मित्रों की तरफ से अवश्य अवश्य सहायता मिलेगी बल्कि कोई, कोई तो तार की मारफत रुपे भिजवायेगे .

"क्या करें ? बुद्धि काम नहीं करती" मास्टर शिभूदयाल ने समय देख कर अपने मतलब की बात छेडी "इन्हीं दिनो मै यहाँ काम है और इन्हीं दिनों मदरसे मै लडकों का इम्तहान है कल मुझ को वहाँ पहुँचने मै पाव घटे की देर हो गई थी इस्पर हेडमास्टर सिर हो गए वहाँ न जायँ तो रोज़गार जाता है यहाँ न रहैं तो मन नही मान्ता (मदनमोहन से) आप आज्ञा दे जैसा किया जाय ".

"खैर ? यहाँ का तो होना होगा सो हो रहैगा तुम अपना रोजगार न खोओ" लाला मदनमोहन ने रुखाई से जवाब दिया .

"क्या करूँ ? लाचार हूँ" मास्टर शिभूदयाल बोले "यहाँ आए बिना तो मन नहीं मानेगा परतु हाँ कुछ कम आना होगा आठ पहर की हाजरी न सध सकेगी मेरी देह मदरसे मै रहेगी परतु मेरा मन यहाँ लगा रहैगा".

"बस आप की इतनी ही महरबानी बहुत है" लाला मदनमोहन ने ज़ोर देकर कहा . निदान मास्टर शिभूदयाल मदरसे जाने का समय बता कर रुखसत हुए

"आज निहालचद का मुकद्दमा है देखें ब्रजकिशोर कैसी पैरवी करते हैं" मुंशी चुन्नीलाल नें कहा" कल आप के पाकटचेन देने सै उन्का मन बढ़ गया परतु वह उसै अपने महन्तानें मैं न समझैं मेरे निकट अब उन्का महन्ताना तत्काल भेज देना चाहिये जिस्सै उन्को यह सदेह न रहै और मन लगा कर अपनें मुकद्दमों मैं अच्छी जवाबदिही करे मै इन्के पास रह कर देख चुका हूँ कि यह अपनें मुख सै तो कुछ नहीं कहते परतु इन्के साथ जो जितना उपकार करता है यह उस्सै बढ कर उस्का काम कर देते है"

"अच्छा ! तो आज शाम को कोई कीमती चीज इन्के महन्तानें मैं दे देंगे और काम अच्छा किया तो शुक्राना जुदा देंगे" लाला मदनमोहन नें कहा .

इतनें मै डाक आई उस्मै एक रजिस्ट्री चिठ्ठी मेरठ सै एक मित्र की आई थी जिस्मै दस हजार की दर्शनी हुंडी निकली और यह लिखा था कि "जितने रुपे चाहियें और मँगा लेना आप का घर है" लाला मदनमोहन यह चिठ्ठी देखते ही उछल पड़े और अपनें मित्रों की बडाई करने लगे . हुडी तत्काल सकारने को भेज दी परतु जिस्के नाम हुडी थी उस्ने यह कह कर हुडी सिकारनें सै इन्कार किया कि जिस साहूकार के हाँ सै लाला मदनमोहन के पास हुंडी आई है उसी ने तार देकर मुझको हुडी सिकारने की मनाई की है इस्सै सब भेद खुल गया . असल बात यह थी कि जिस्समय मदनमोहन को चिठ्ठी उस्के पास पहुँची उस्को मदनमोहन के बिगडनें का ज़रा भी सदेह न था इसलिये मदनमोहन की चिठ्ठी पहुँचते ही उस्नें सच्ची प्रीति दिखाने के लिए दस हजार की हुडी खाम दी परतु पीछे सै और लोगों की जबानी मदनमोहन के बिगडनें का हाल सुन्कर घबराया और तत्काल तार देकर हुंडी खड़ी रखवा दी .

लाला मदनमोहन इस तरह अपनें एक मित्र के छल सै निराश हो कर तीसरे पहर अपनें शहर के मित्रों सै सहायता माँगने के लिए आप सवार हुए . पहलै रस्ते मै जो लोग झुक झुक कर सलाम करते थे वही आज इन्हैं देख कर मुख फेरने लगे बल्कि कोई कोई तो आवाजे कसने लगे . मदनमोहन को सब सै अधिक विश्वास लाला हरदयाल का था इसलिए वह पहलै उसी के मकान पर पहुँचे

हरदयाल को मदनमोहन के काम बिगडने का हाल पहले मालूम हो चुका था और इसी वास्तै उस्नें मदनमोहन की चिट्ठी का जवाब नहीं भेजा था अब मदनमोहन के आने का हाल सुन्ते ही वह जरा सी देर मैं मदनमोहन के पास पहुँचा और बड़े सत्कार सै मदनमोहन को लिवा ले जा कर अपनी बैठक मैं बिठाया .

लाला मदनमोहन नें कल सहायता माँगनें के लिए चिट्ठी भेजी थी उस्को पहलै उस्ने हँसी की बात ठैराई और जवाब न भेजनें का भी यही कारण बताया परतु जब मदनमोहन नें यह बात सच्ची बताई और उस्के पीछे का सब वृत्तात कहा तो लाला हरदयाल अत्यत दुखित हुए और बडी उमग सै अपनी सब दौलत लाला मदनमोहन पर न्योछावर करने लगे . लाला हरदयाल की यह बातें केवल कहने के लिए न थी वह दौड़ कर अपने गहनें का कलमदान उठा लाए और उस्मैं सै एक, एक रकम निकाल कर लाला मदनमोहन को देने लगे इतने मै एकाएक दरवाज़ा खुला हरदयाल का पिता भीतर पहुँचा और वह हरदयाल को जवाहरात की रक़में मदनमोहन के हाथ में देते देख कर क्रोध सै लाल हो गया .

"अभागे हटधर्मी ! मैं नें तुझको इतनी बार बरजा परतु तू अपना हट नहीं छोड़ता आजकल के कपूत लड़के इतनी बात को सच्ची स्वतत्रता समझते हैं कि जहाँ तक हो सके बडों का निरादर और अपमान किया

जाय, उन्को मूर्ख और अनसमझ बताया जाय, परतु मै इन बातों को कभी नही सहूँगा मेरे बैठे तुझको घर बरबाद करने का क्या अधिकार है ? निकल यहाँ सै काला मुँह कर तेरी इच्छा होय जहाँ चला जा मेरा तेरा कुछ सबध नहीं रहा" यह कह कर एक तमाचा जड दिया और गहना सम्हाल सम्हालकर सदूक मै रखनें लगा थोडी देर पीछे लाला मदनमोहन की तरफ देख के कहा "ससार के सब काम रुप से चलते है फिर जो लोग अपनी दौलत खोकर बैरागी बन बैठें और औरो की दौलत उडाकर उन्को भी अपनी तरह बैरागी बनाना चाहे वह मेरे निकट सर्वथा दया करने के योग्य नही हैं और जो लोग ऐसे अज्ञानियों की सहायता करते हैं वह मेरे निकट ईश्वर का नियम तोडते हैं और ससारी मनुष्यों के लिए बडी हानि का काम करते हैं . मेरे निकट ऐसे आदमियों को उन्की मूर्खता का दड अवश्य होना चाहिये जिस्सै और लोगों की आँखे खुलें . क्या मित्रता का यही अर्थ है कि आप तो डूबें सो डूबें अपनें साथ औरों को भी ले डूबें ! नहीं, नहीं आप ऐसे विचार छोड दीजिये और चुपचुपाते अपनें घर की राह लीजिये यह समय अपने मित्रों को देनें का है अथवा उल्टा उन्सै लेने का है ?"

बुरे वक्त में एक मित्र का जी दुखाना, और दया के समय क्रूरता करनी, किसी की दुखती चोट पर हँसना, एक गरीब को उस्की गरीबी के कारण तुच्छ समझना, अथवा उस्की गरीबी की याद दिवाकर उसै सताना, दूसरे का बदला भुगताती बार अपने मतलब का खयाल करना, कैसा ओछापन और घोर पाप है ! जहाँ सज्जन धनवानों की खुशामद सै दूर रह कर गरीबों का साथ देनें और सहायता करने में सच्ची सज्जनता समझते हैं कठोर बचन दो तरह सै कहा जाता है जो लोग अपनायत की रीति सै कहते हैं उन्की कहन सै तो अपनें चित्त मै वफादारी और आधीनता बढ़ती है पर जो अभिमान की राह सै दूसरे को तुच्छ बनाते हैं उन्की कहन सै चित्त मै क्रोध और धिःकार बढ़ता जाता है .

हर तरह का घाव ओषधि सै अच्छा हो सक्ता है परतु मर्मबेधी बात का नासूर किसी तरह नही रुझता विदुर जी ने सच कहा है—

"नावक सर धनु तीर काढे कढ़त शरीर ते।
कुवचन तीर गभीर कढत न क्यों हूँ उर गढे॥"

निदान लाला मदनमोहन को यह कहन अत्यन्त असह्य हुई. वह तत्काल उठ कर वहाँ सै चल दिये परतु बैठक सै बाहर जाते, जाते उन्हैं पीछै सै हरदयाल का यह बचन सुन्कर बडा आश्चर्य हुआ कि "चलो यह स्वाग (अभिनय) हो चुका अब अपना काम करो".

लाला मदनमोहन वहाँ सै चलकर एक दूसरे मित्र के मकान पर पहुँचे और उस्सै अपनें आनें की खबर कराई. वह उस्समय कमरे मै मोजूद था परतु उस्ने लाला मदनमोहन को थोडी देर अपनें दरवाजे पर बाट दिखाने मै और अपने कमरे को जरा मेज कुरसी, किताब, अखबार आदि से सजाकर मिलने मै अधिक शोभा समझी इसलिए कहला भेजा कि "आप ठैरें लाला साहब भोजन करने गए हैं अभी आकर आप सै मिलेंगे" देखिए आजकल के सुधरे बिचारों का नमूना यह है! थोडी देर पीछे वह लाला मदनमोहन को लिवानें आया और बड़े शिष्टाचार सै लिवा ले जाकर उन्हैं तकिये के सहारे बिठाया. लाला मदनमोहन को थोडी देर उस्की बाट देखनी पडी थी इस्की क्षमा चाही और इधर उधर की दो चार बातें करके मानों कुछ चिठ्ठियाँ अत्यत आवश्यकीय लिखनी बाकी रह गई हो इस्तरह चिठ्ठी लिखने लगा परतु दो चार पल पीछे फिर कलम रोककर बोला "हाँ यह तो कहिये आप ने इस्समय किस्तरह परिश्रम किया?"

"क्यों भाई! आनें जानें का कुछ डर है? क्या मै पहले कभी तुम्हारे यहाँ नहीं आया? या तुम मेरे यहाँ नहीं गए?" लाला मदनमोहन नें कहा "

"आप ने यह तो बड़ी कृपा की परतु मेरे पूछनें का मतलब यह था कि कुछ ताबेदारी बताकर मुझे अधिक अनुग्रहीत कीजिए" उस मनुष्य नें अजानपने मैं कहा .

"हाँ कुछ काम भी है , मुझको इस्समय कुछ रुपे की जरूरत है मेरे पास बहुत कुछ माल अस्बाब मौजूद है परतु लोगों नें वृथा तकाज़ा करके मुझको घबरा लिया" लाला मदनमोहन भोले भाव सै बोले

"मुझको बडा खेद है कि मै नें अपना रुपया अभी एक और काम मै लगा दिया यदि मुझको पहलै सै कुछ सूचना होती तो मैं सर्वथा वह काम न करता" उस मनुष्य ने जवाब दिया .

"अच्छा ! कुछ चिंता नहीं आप मेरे लेनदारों की जमाखातर जरा अपनी तरफ़ सै कर दे ."

"इस्सै हमारी स्वरूप-हानि है हम जामनी करें तो हमको रुपया उसी समय देना चाहिये" उस पुरुष ने जवाब दिया और लाला मदनमोहन वहाँ सै भी निराश होकर रवानें हुए "

रस्ते मैं एक और मित्र मिले वह दूर ही सै अजान की तरह दृष्टि बचाकर गली मैं जाने लगे परतु लाला मदनमोहन नें आवाज देकर उन्हैं ठैराया और अपनी बग्गी खडी की इस्सै लाचार होकर उन्हैं ठैरना पड़ा परतु उन्के मन मै पहली सी उमग नाम को न थी .

"आप प्रसन्न हैं ? मुझ को इस्समय एक बडा ज़रूरी काम था इस्सै मैं लपका चला जाता था मुझ को आपकी बग्गी दृष्टि न आई, माफ करें मैं किसी समय आपके पास हाज़िर होऊँगा ." यह कहकर वह मनुष्य जाने लगा परंतु मदनमोहन ने उसै फिर रोका और कहा , "हाँ भाई ! अब तुमको अपनें ज़रूरी कामों के आगे मुझ सै मिलनें का अवकाश क्यों मिलनें लगा था ? अच्छा, जाओ हमारा भी परमेश्वर रक्षक है ."

इस तानें सै लाचार होकर उसे ठैरना पडा और उस्के ठैरनें पर लाला मदनमोहन ने अपना वृत्तात कहा .

"यह हाल सुन्कर मुझको अत्यत खेद हुआ परमेश्वर आप पर कृपा करे वह सर्वशक्तिमान दीनदयाल सर्व का दुःख दूर करता है उस्पर विश्वास रखनें सै आप के सब दुःख दूर हो जायँगे आप धैर्य रक्खें. मुझ को इस्समय सचमुच ज़रूरी काम है इसलिए मैं अधिक नहीं ठैर सक्ता परतु मैं आजकल मै आप के पास हाज़िर होऊँगा और सलाह करके जो बात मुनासिब मालूम होगी उस्के अनुसार बरताव किया जायगा" यह कह कर वह मनुष्य तत्काल वहाँ सै चल दिया.

लाला मदनमोहन और एक मित्र के मकान पर पहुंचे. बाहर खबर मिली कि "वह मकान के भीतर है" भीतर सै जवाब आया कि "बाहर गये" लाचार मदनमोहन को वहाँ सै भी खाली हाथ फिरना पडा और अब मित्रों के हाँ जाने का समय नहीं रहा इसलिये निराश होकर सीधे अपने मकान को चले गये.

प्रकरण ३४

हीनप्रभा (बदरोबी)

नीचन के मन नीति न आवै। प्रीति प्रयोजन हेतु लखावै॥
कारज सिद्ध भयो जब जानैं। रंचकहू उर प्रीति न मानैं॥
प्रीति गए फलहू बिनसावै। प्रीति बिषै सुख नैक न पावै॥
जा दिन हाथ कछू नही आवै। भाखि कुबात कलक लगावै॥
सोइ उपाय हिये अवधारै। जासु बुरो कछु होत निहारै॥
रंचक भूल कहूँ लख पावै। भाँति अनेक बिरोध बढ़ावै॥*
विदुर प्रजागरे।

---

* निवर्तमाने सौहार्दे प्रीतिर्नीचे प्रणश्यति।
यावैव फलनिर्वृत्तिः सौहृदे चैव यत्सुखम्॥

लाला मदनमोहन मकान पर पहुँचे उस्समय ब्रजकिशोर वहाँ मोजूद थे . लाला ब्रजकिशोर नें अदालत का सब बृत्तात कहा उस्मै मदनमोहन मोदी के मुकद्मे का हाल सुन्कर बहुत प्रसन्न हुए उस्समय चुन्नीलाल नें सकेत मै ब्रजकिशोर के महन्तानें की याद दिवाई जिस्पर लाला मदनमोहन ने अपनी अँगुली सै हीरे की एक बहुमूल्य अँगूठी उतार कर ब्रजकिशोर को दी और कहा "आप की महनत के आगे तो यह महन्ताना कुछ नहीं है परतु अपना पुराना घर और मेरी इस दशा का बिचार करके छमा करिये."

यह बात सुन्ते ही एक बार लाला ब्रजकिशोर का जी भर आया परतु फिर तत्काल सम्हल कर बोले "क्या आप ने मुझको ऐसा नीच समझ रक्खा है कि मै आप का काम महन्ताने के लालच सै करता हू ? सच तो यह है कि आप के वास्ते मेरी जान जाय तो भी कुछ चिता नहीं परतु मेरी इतनी ही प्रार्थना है कि आपनें अँगूठी देकर मुझ सै अपना मित्र भाव प्रगट किया सो मैं आप की बराबर का नहीं बना चाहता मै आप को अपना मालिक समझता हू इसलिये आप मुझे अपना 'हल्कः बगोश' (सेवक) बनायँ ."

"यह क्या कहते हो . तुम मेरे भाई हो क्योंकि तुम को पिता सदा मुझ सै अधिक समझते थे हाँ तुम्हैं बाली पहन्नें की इच्छा हो तो यह लो मेरी अपेक्षा तुम्हारे कान मैं यह बहुमूल्य मोती देख कर मुझको अधिक सुख होगा परतु ऐसे अनुचित बचन मुख सै न कहो" यह कह कर लाला मदनमोहन नें अपनें कान की बाली ब्रजकिशोर को दे दी

"कल हरकिशोर आदि के मुकद्मे होंगे उन्की जवाबदिही का बिचार करना है कागज़ तैयार करा कर उस्सै रहत (बदर) छोंटनी है इसलिये

यतते चापवादाय यत्नमारभते ह्यये ।
अल्पेप्यपकृते मोहन् न शान्तिमधिगच्छति ॥

अब आज्ञा हो" यह कह कर ब्रजकिशोर रुखसत हुए और लाला मदन-मोहन भोजन करने गए .

लाला मदनमोहन भोजन करके आये उस्समय मुशी चुन्नीलाल ने अपने मतलब की बात छेड़ी .

"मुझको हर बार अर्ज़ करने मै बडी लज्जा आती है परतु अर्ज़ किये बिना भी काम नहीं चलता" मुशी चुन्नीलाल कहने लगा "ब्याह का काम छिड गया परतु अब तक रुपे का कुछ बदोबस्त नहीं हुआ आप नें दो सौ के नोट दिये थे वह जाते ही चटनी हो गए . इस्समय एक हज़ार रुपे का भी बदोबस्त हो जाय तो खैर कुछ दिन काम चल सक्ता है नही तो काम नहीं चलता"

"तुम जान्ते हो कि मेरे पास इस्समय नकद कुछ नहीं है और गहना भी बहुत सा काम मैं आ चुका है" लाला मदनमोहन बोले "हा मुझको अपनें मित्रों की तरफ सै सहायता मिल्ने का पूरा भरोसा है और जो उन्की तरफ सै कुछ भी सहायता मिली तो मै प्रथम तुम्हारी लडकी के ब्याह का बदोबस्त अच्छी तरह कर दूगा "

"और जो मित्रों सै सहायता न मिली तो मेरा क्या हाल होगा ?" मुशी चुन्नीलाल नें कहा "ब्याह का काम किसी तरह नहीं रुक सक्ता और बड़े आदमियों की नौकरी इसी वास्ते तन तोड कर की जाती है कि ब्याह शादी मैं सहायता मिले, बराबर वालों मै प्रतिष्ठा हो परतु मेरे मद भाग्य सै यहा इस्समय ऐसा मौका नही रहा इसलिए मै आप को अधिक परिश्रम नहीं दिया चाहता अब मेरी इतनी ही अर्ज़ है कि आप मुझको कुछ दिन को रुख्सत दे दें जिस्सै मैं इधर उधर जाकर अपना कुछ सूझता करू".

"तुमको इस्समय रुखसत का सवाल नहीं करना चाहिए मेरे सब कामों का आधार तुम पर है फिर तुम इस्समय धोका दे कर चले जाओगे तो काम कैसे चलेगा ?" लाला मदनमोहन नें कहा .

"वाह ! महाराज वाह ! आप नें हमारी अच्छी कदर की !" मुंशी चुन्नीलाल तेज हो कर कहनें लगा "धोका आप देते हैं या हम देते हैं ? हम लोग दिन रात आप की सेवा मैं रहैं तो ब्याह शादी का खर्च लेने कहा जाय ? आप ने अपनें मुख सै इस ब्याह मै भली भाँति सहायता करने के लिये कितनी ही बार आज्ञा की थी, परतु आज वह सब आस टूट गई तो भी हमने आप को कुछ ओलभा नहीं दिया आप पर कुछ बोझ नहीं डाला केवल अपने कार्य निर्वाह के लिए कुछ दिन की रुखसत चाही तो आप के निकट बडा अधर्म हुआ, बडा धोका हुआ. खैर ! जब आप के निकट हम धोकेबाज ही ठैरे तो अब हमारे यहा रहने सै क्या फ़ायदा है ? यह आप अपनी तालियाँ लें और अपना अस्बाब सम्हाल लें पीछे घटे बढ़ेगा तो मेरा ज़िम्मा नहीं है. मैं जाता हूँ" यह कह कर तालियों का झूमका लाला मदनमोहन के आगे फेंक दिया और मदनमोहन के ठडा करते करते क्रोध की सूरत बना कर तत्काल वहाँ से चल खड़ा हुआ.

सच है नीच मनुष्य के जन्म भर पालन पोषण करनें पर भी एक बार थोडी कमी रह जानें सै जन्म भर का किया कराया मट्टी मै मिल जाता है लोग कहते हैं कि अपनें प्रयोजन मै किसी तरह का अतर आनें सै क्रोध उत्पन्न होता है अपने काम मैं सहायता करनें सै बिरानें अपनें हो जाते हैं और अपनें काम मै विघ्न करनें सै अपनें बिराने समझे जाते हैं परंतु नहीं, क्रोध निर्बल पर विशेष आता है और नाउम्मेदी की हालत मैं उस्की कुछ हद नहीं रहती. मुंशी चुन्नीलाल पर लाला मदनमोहन कितनी ही बार इससै बढ़ बढ़ कर क्रोधित हुए थे परतु चुन्नीलाल को आज तक कभी गुस्सा नहीं आया ! और आज लाला मदनमोहन उस्को ठडा करते रहे तो भी वह क्रोध कर के चल दिया. बृद नें सच कहा है—

"बिन स्वारथ कैसे सहे कोऊ करुए बैन।
लात खाय पुचकारिए होय दुधारू धेन॥"

मुंशी चुन्नीलाल के जाने सै लाला मदनमोहन का जी टूट गया परतु आज उन्को धैर्य देने के लिए भी कोई उन्के पास न था, उन्के यहाँ सैकडों आदमियों का जमघट हर घडी बना रहता था सो आज चिडिया तक न फटकी. लाला मदनमोहन इसी सोच बिचार मै रात के नौ बजे तक बैठे रहे परतु कोई न आया तब निराश होकर पलग पर जा लेटे

अब लाला मदनमोहन का भय नोकरो पर बिल्कुल नही रहा था सब लोग उन्के माल को मुफ्त का माल समझने लगे थे. किसी ने घड़ी हथियाई, किसी ने दुशाले पर हाथ फैका चारों तरफ लूट सी होनें लगी. मोजे, गुलूबद, रूमाल आदि की तो पहले ही कुछ पूछ न थी. मदनमोहन को हर तरह की चीज खरीदने की घत थी परतु खरीदे पीछे उस्को कुछ याद नहीं रहती थी और जहाँ सैकड़ों चीजें नित्य खरीदी जायँ वहाँ याद क्या धूल रहै? चुन्नीलाल, शिभूदयाल आदि कीमत मै दुगुनें चौगने कराते थे परतु यहाँ असल चीज़ों ही का पता न था. बहुधा चीज़े उधार आती थीं इस्सै उन्का जमाखर्च उस्समय नही होता था और छोटी छोटी चीज़ों के दाम तत्काल खर्च मै लिख दिये जाते थे इस्सै उन्की किसी को याद नही रहती थी' सूचीपत्र बनाने की वहाँ चाल न थी और चीज़ बस्त की झड़ती कभी नहीं मिलाई जाती थी नित्य प्रति की तुच्छ, तुच्छ बातों पर कभी, कभी वहा बडा हल्ला होता था परतु सब बातों के समूह पर दृष्टि करके उचित रीति सै प्रबंध करने की युक्ति कभी नही सोची जाती थी और दैवयोगेन किसी नालायक सै कोई काम निकल आता था तो वह अच्छा समझ लिया जाता था परतु काम करने की प्रणाली पर किसी की दृष्टि न थी लाला साहब दो तीन वर्ष पहलै आगरे लखनऊ की सैर को गए थे वहाँ के रस्ते खर्च के हिसाब का जमाखर्च अब तक नही हुआ था और जब इस तरह कोई जमाखर्च हुए बिना बहुत दिन पडा रहता था तो अत मै उस्का कुछ हिसाब किताब देखे बिना यों ही

खर्च मैं रकम लिख कर खाता उठा दिया जाता था. कैसे ही आवश्यक काम क्यों न हो लाला साहब की रुचि के विपरीत होनें सै वह सब बेफायदे समझे जाते थे और इस ढब की वाजबी बात कहना गुस्ताखी मैं गिना जाता था. निकम्मे आदमियों के हर वक्त घेरे बैठे रहनें सै काम के आदमियों को काम की बात करनें का समय नहीं मिल्ता था, "जिस्की लाठी उस्की भैंस" हो रही थी जो चीज़ जिस्के हाथ लगती थी वह उस्को खुर्द बुर्द कर जाता था भाड़े और उघाई आदि की भूली भुलाई रकमों को लोग ऊपर चट कर जाते थे आधे परदे पर कर्ज़दारों को उनकी दस्तावेज़ फेर दी जाती थी देशकाल के अनुसार उचित प्रबंध करनें मै लोकनिंदा का भय था! जो मनुष्य कृपापात्र थे उनका तनूतना तो बहुत ही बढ रहा था उन्के सब अपराधों सै जान बूझ कर दृष्टि बचाई जाती थी. वह लोग सब कामों मै अपना पाँव अडाते थे और उन्के हुक्म की तामील सबको करनी पडती थी. यदि कोई अनुचित समझ कर किसी काम मैं उज्र करता तो उस्पर लाला साहब का कोप होता था और इस दुफसली कारवाई के कारण सब प्रबध बिगड़ रहा था.

"दुसह दुराज प्रजान को क्यों न बढ़ै दुख दंद।
अधिक अँधेरो जग करै मिल मावस रवि चंद॥"

बिहारी

ऐसी दशा मै मदनमोहन की स्त्री के पीछे चुन्नीलाल और शिभूदयाल के छोड जाने पर सब माल मते की लूट होने लगे जो पदार्थ जिस्के पास हो वह उस्का मालिक बन बैठे इस्मै कौन आश्चर्य है?

———

प्रकरण ३५

स्तुति निंदा का भेद

बिनसत बार न लाग ही ओछे जन की प्रीति ।
अंबर डंबर साँझ के अरु बारू की भीति ।।

सभाबिलास

दूसरे दिन सबेरे लाला मदनमोहन नित्य कृत्य सै निबट कर अपने कमरे मै बैठे थे. मन मुर्झा रहा था किसी काम मैं जी नहीं लगता था एक एक घडी एक एक बरस के बराबर बीतती थी इतने मैं अचानक घड़ी देखने के लिये मेज पर दृष्टि गई तो घडी का पता न पाया हे ! यह क्या हुआ ! रात को सोती बार जेब सै निकाल कर घडी रक्खी थी फिर इतनी देर मै कहाँ चली गई ! नौकरों सै बुला कर पूछा तो उन्होंने साफ जवाब दिया कि "हम क्या जानें आप नें कहाँ रक्खी थी ? जो मौकूफ करना हो तो यों ही कर दें वृथा चोरी क्यों लगाते हैं " लाचार मदनमोहन को चुप होना पडा क्योंकि आप तो किसी जगह आने जानें लायक ही न थे सहायता को कोई आदमी पास न रहा लाला जवाहरलाल की तलाश कराई तो वह भी घर सै अभी नहीं आए थे लाला मदनमोहन को अपाहजों की तरह अपनी पराधीन दशा देख कर अत्यत दुःख हुआ परतु क्या कर सक्ते थे ? उन्के भाग्य सै उन्का दुःख बटाने के लिये इस्समय बाबू बैजनाथ आ पहुँचे उन्को देख कर लाला मदनमोहन के शरीर मैं प्राण आ गया लाला मदनमोहन ने आँखों सै आँसू बहा कर अपना दुःख कहा और अत मे अपनी घडी जाने का हाल कह कर इस काम मैं सहायता चाही

"आप का हाल सुन्कर मुझको बहुत खेद होता है मुझे चुन्नीलाल

आदि की तरफ सै सर्वथा ऐसा भरोसा न था इसी तरह आप अपने काम काज सै इतने बेखबर होंगे यह भी उम्मेद न थी" बाबू बैजनाथ ने काम बिगड़े पीछे अपनी आदत मूजिब सब की भूल निकाल कर कहा "मै ने तो अखबारों मे आप के नाम की धूम मचा दी थी परतु आप अपनें काम ही की सम्हाल न रक्खे तो मै क्या करूँ ? महाजनी काम मुझको नहीं आता और इतना अवकाश भी नही मिल्ता . मै घड़ी का पता लगानें के लिए उपाय करता परतु आजकल रेल पर काम बहुत है इस्सै मै लाचार हूँ मेरे निकट इस्समय आप के लिये यही मुनासिब है कि आप इन्साल्वंट होने की दरखास्त दे दें ."

"अच्छा ! बाबू साहब ! आप सै और कुछ नहीं हो सक्ता तो आप केवल इतनी ही कृपा करें कि मेरी घडी जाने की रपट कोतवाली मै लिखाते जायँ" लाला मदनमोहन नें गिडगिडा कर कहा .

"मै रेलवे कपनी का नौकर हू इस वास्ते कोतवाली मै रिपोर्ट नही लिखा सक्ता बल्कि प्रगट होकर किसी काम मैं आप को कुछ सहायता नहीं दे सक्ता मुझ सै निज मै आप की कुछ सहायता हो सकेगी तो मैं बाहर नहीं हू परतु आप मुझ सै किसी जाहरी काम के वास्तै कह कर मुझे अधिक लज्जित न करें और अत मै मै आप को इतनी सलाह देता हू कि आप लाला ब्रजकिशोर पर विश्वास रख कर उस्के बस मे न हो जाय बल्कि उस्को अपनें बस मै रखकर अपना काम आप करते रहै"

"सच है यह समय किसी पर विश्वास रखनें का नही है जो लोग अपने मतलब की बार सच्चे मित्र बनकर मेरे पसीनों की जगह खून डालने को तैयार रहते थे मतलब निकल जाने सै आज उन्की छाया भी नही दिखाई देती . सत्सम्मति देना तो अलग रहा मेरे पास खड़े रहने तक के साथी नहीं होते . जो लोग किसी समय मेरी मुलाकात के लिए तरस्ते थे वह अब तीन तीन बार बुलानें सै नही आते . मेरे पास आनें जानें सै जिन् लोगों की इज्जत बढ़ती थी वह आज मुझ सै किसी तरह

सबध रखनें मैं लजाते हैं" लाला मदनमोहन नें भरमा भरमी इतनी बात कहकर अपनी छाती का बोझ हल्का किया .

"यह तो सच है जिस्का प्रयोजन होता है उसै उचित अनुचित बातों का कुछ बिचार नहीं रहता" बाबू बैजनाथ ने जैसे का तैसा जवाब दिया और थोडी देर इधर उधर की बातें कर के रुखसत हुआ .

लाला मदनमोहन बड़े चकित थे कि हे परमेश्वर ! यह क्या भेद है मेरी दशा बदलते ही सब ससार के बिचार कैसे बदल गए . और जिन्सै मेरा किसी तरह का सबध न था वह भी मुझको अकारण क्यों तुच्छ समझने लगे ? मेरे नर्म होने पर भी बेप्रयोजन मुझ सै क्यों लडाई झगडा करनें लगे ? जिन लोगों को मेरी योग्यता और सावधानी के सिवाय अब तक कुछ नहीं दिखाई देता था उन्को अब क्यों मेरे दोष दृष्टि आनें लगे ? लाला मदनमोहन इन बातों का बिचार कर रहे थे इतनें मैं लाला ब्रजकिशोर वहाँ जा पहुँचे और मदनमोहन ने अपनें मन का सब सदेह उन्हें कह सुनाया .

"एक तो जो लोग प्रथम स्वार्थ बस प्रीति करते हैं उन्की कलई ऐसे अवसर पर खुल जाती है . दूसरे साधारण लोगों की स्तुति निंदा कुछ भरोसे लायक नहीं होती वह किसी बात का तत्व नही जान्ते प्रगट मै जैसी दशा देखते हैं वैसा ही कहने लगते हैं बल्कि उसी के अनुसार बरताव करते है इस्सै साधारण लोगों की प्रतिष्ठा योग्यता के अनुसार नहीं होती द्रव्य अथवा जाहरदारी के अनुसार होती है और द्रव्य अथवा जाहरदारी के परदे तले घोर पापी अपने पापो को छिपा कर क्रम, क्रम सै प्रतिष्ठित लोगों मै मिल सक्ता है बल्कि प्रतिष्ठित लोगों मै मिलना क्या ! कोई पूरा चालाक मनुष्य हो तब तो वह द्रव्य के भरम और जाहरदारी के बरताव सै द्रव्य तक पैदा कर सक्ता है ! ऐसा मनुष्य पहले अपने द्रव्य अथवा योग्यता का झूठा प्रपच फैला कर लोगों के मन मै

"अच्छा ! हम को साझ तक की छुट्टी दीजिये हम सै हो सकेगा जहा तक हम घडी का पता लगावेंगे" नौकरों नें जवाब दिया

"तुम लोग यह बहाना करके अपने घर सै चोरी का माल दूर किया चाहते हो परतु मै घड़ी का पता लगाये बिना तुम को कभी ढीला नही छोड्रूंगा मै अभी कोतवाली को रुक्का लिखता हूं" यह कह कर लाला ब्रजकिशोर सचमुच रुक्का लिखनें लगे .

जिन लोगों ने सबेरे मदनमोहन की बात पर कुछ ध्यान नहीं दिया था वही इस्समय ब्रजकिशोर की ज़रा सी धमकी सै मदनमोहन के पाव पकड कर रोनें लगे . तुलसीदासजी ने सच कहा है—

"शूद्र गमार ढोल पशु नारी । सकल ताड़ना के अधिकारी ।।"

"भाई ! इन्को साझ तक अवकाश दे दो जो तुम अब करना चाहते हो साझ को कर लेना" लाला मदनमोहन ने पिगल कर अथवा किसी गुप्त कारण सै दब कर कहा .

"आप को किसी की रिआयत हो तो आप निज मै भले हो उन्को कुछ इनाम दे दै परंतु प्रबध के कामों मै इस तरह अपराधियों पर दया करके अपने हाथ सै प्रबध न बिगाडे ये लोग आप का क्या कर सक्ते हैं ? मनुस्मृति मै कहा है—

"दंड बिपै संभ्रम भये वर्ण दोष है जाय ।
मचै उपद्रव देश मैं सब मर्याद नसाय ।।*"

सादी कहते हैं—

"पापिन माहि दया है ऐसी । सज्जन संग क्रूरता जैसी ।।†"

लाला ब्रजकिशोर ने कहा

---

* दुष्येयुः सर्ववर्णाश्च भिद्यरन् सर्वसेतवः ।
सर्वलोकप्रकोपश्च भवेद्दण्डस्य विभ्रमात् ॥

† निकोई बाबदा कर्दन् चुनानस्त को बदकर्दन् बजाय नेकमदा ॥

"खैर ! कुछ हो आज का दिन तो इन्को छोड दीजिये" लाला मदनमोहन नें दबा कर कहा .

"बहुत अच्छा ! जैसी आप की मर्ज़ी" ब्रजकिशोर नें रुखाई सै जवाब दिया .

"मुझको मित्रों की तरफ सै सहायता मिलने का विश्वास है परतु दैवयोग सै न मिली तो क्या इन्सालवन्ट होने की दरख्वास्त देनी पड़ेगी ?" लाला मदनमोहन ने पूछा .

"अभी तो कुछ ज़रूरत नहीं मालूम होती परतु ऐसा बिचार किया भी जाय तो आप के लेन देन और माल अस्बाब का कागज़ कहा तैयार है ?" लाला ब्रजकिशोर नें जवाब दिया और कचहरी जाने के लिए मदनमोहन सै रुखसत होकर रवानें हुए

प्रकरण ३६

धोके की टट्टी

बिपत बराबर सुख नहीं जो थोरे दिन होय ।
इष्ट मित्र बन्धू जिते जान परैं सब कोय ॥
लोकोक्ति ।

लाला ब्रजकिशोर के गये पीछे मदनमोहन की फिर वहे दशा हो गई. दिन पहाड सा मालूम होनें लगा खास कर डाक की बडी तलामली लग रही थी निदान राम, राम करके डाकका समय हुआ डाक आई. उस्मैं दो तीन चिठ्ठीऔर कई अखबार थे .

एक चिठ्ठी आगरे के एक जौहरी की आई थी जिस्मैं जवाहरात की

बिक्री बाबत लाला साहब के रुपे लेने थे और वह यों भी लाला साहब से बडी मित्रता जताया करता था. उसने लाला साहब की चिट्ठी के जवाब मे लिखा था कि "आप की जरूरत का हाल मालूम हुआ मै बड़ी उमग से रुपे भेजकर इस समय आप की सहायता करता परतु मुझको बडा खेद है कि इन दिनों मेरा बहुत रुपया जवाहरात पर लग रहा है इसलिये मैं इस्समय कुछ नही भेज सक्ता . आप ने मुझको पहले से क्यों न लिखा ? अब जिस्समय मेरे पास रुपया आवेगा मै प्रथम आप की सेवा मे ज़रूर भेजूँगा मेरी तरफ से आप भली भाँति विश्वास रखना और अपने चित्त को सर्वथा अधैर्य न होने देना परमेश्वर कुशल करेगा". यह चिट्ठी उस कपटी ने ऐसी लपेट से लिखी थी कि अजान आदमी को इस्के पढ़ने से लाला मदनमोहन के रुपे लेने का हाल सर्वथा नहीं मालूम हो सक्ता था वह अच्छी तरह जान्ता था कि लाला मदनमोहन का काम बिगड जायगा तो मुझसे रुपे माँगनेवाला कोई न रहेगा इस वास्ते उसने केवल इतनी ही बात पर सतोष न किया बल्कि वह गुप्त रीति से मदनमोहन के बिगडने की चर्चा फैलाने और उस्के बड़े बड़े लेनदारों को भड़कानें का उपाय करने लगा . हाय ! हाय !! इस असार ससार मै कुछ दिन की अनिश्चित आयु के लिये निर्भय होकर लोग कैसे घोर पाप करते हैं !!!

दूसरी चिट्ठी मदनमोहन के और एक मित्र की थी. वह हर साल आकर महीनें बीस रोज़ मदनमोहन के पास रहते थे इसलिए तरह तरह की सोगात के सिवाय उन्की खातिरदारी मैं मदनमोहन के पाँच सात सौ रुपे सदैव खर्च हो जाया करते थे . उसने लिखा था कि "मैं ने बहुत सस्ता समझ कर इस्समय एक गाँव साठ हजार रुपे मे खरीद लिया है और उस्की क़ीमत चुकाने के लिये मेरे पास इस्समय पचास हजार अदाज़मोजूद हैं इसलिये मुझ को महीनें डेढ़ महीनें के वास्ते दस हजार रुपे की ज़रूरत होगी जो आप कृपा करके यह रुपया मुझ को साहूकारी ब्याज पर दे देंगे तो मै आप का बहुत उपकार मानूँगा" यह चिट्ठी लाला मदनमोहन की चिट्ठी

पहुँचते ही उस्नें अगमचेती कर के लिख दी थी और मिती एक दिन पहले की डाल दी थी कि जिस्सै भेद न खुलने पावै .

मदनमोहन के तीसरे मित्र की चिट्ठी बहुत सङ्क्षेप थी उस्मैं लिखा था कि "आप की चिट्ठी पहुँची उस्के पढनें सै बडा खेद हुआ . मै रुपे का प्रबध कर रहा हूँ यदि हो सकेगा तो कुछ दिन मै आप के पास अवश्य भेजूँगा" इस्के पास पत्र भेजने के समय रुपया मोजूद था परतु इस्नें यह पेच रक्खा था मदनमोहन का काम बना रहैगा तो पीछे सै इस्के पास रुपया भेज कर मुफ्त मे अहसान करेंगे और काम बिगड जायगा तो चुप हो रहैंगे अर्थात् उस्को रुपे की जरूरत होगी तो कुछ न देंगे और जरूरत न होगी तो जबरदस्ती गले पड़ेंगे !

इन्के पीछे लाला मदनमोहन एक अखबार खोलकर देखने लगे तो उस्मै एक यह लेख दृष्टि आया—

"सुसभ्यता का फल"

'हमारे शहर के एक जवान सुशिक्षित रईस की पहली उठान देख कर हमको यह आशा होती थी बल्कि हमने अपनी यह आशा प्रगट भी कर दी थी कि कुछ दिन मे उस्के कामों सै कोई देशोपकारी बात अवश्य दिखाई देगी परतु खेद है कि हमारी वह आशा बिल्कुल नष्ट हो गई बल्कि उस्के विपरीत भाव प्रतीत होने लगा, गिन्ती के दिनों मै तीन चार लाख पर पानी फिर गया वलायत मै डरमोडी नामी एक लड़का ऐसा तीक्ष्ण बुद्धि का हुआ था कि वह नौ वर्ष की अवस्था मै और विद्यार्थियों को ग्रीक और लाटिन भाषा के पाठ पढ़ाता था परतु आगे चलकर उस्का चालचलन अच्छा नही रहा इसी तरह यहाँ प्रारभ सै परिणाम विपरीत हुआ . हिदुस्थानियों का सुधरना केवल दिखाने के लिए है वह अपनी रीति भाँति बदलने मैं सब सुसभ्यता समझते हैं परतु असल मैं अपने स्वभाव और बिचारों के सुधारने का कुछ उद्योग नहीं करते . बचपन

में उन्को तबियत का कुछ कुछ लगाव इस तरफ को मालूम होता भी है तो मदरसा छोड़े पीछे नाम को नहीं दिखाई देता. दरिद्रियों को भोजन वस्त्र की फिकर पडती है और धनवानों को भोग विलास से अवकाश नहीं मिलता फिर देशोन्नति का विचार कौन करे? विद्या और कला की चर्चा कौन फैलाय? हम को अपने देश की दीन दशा पर दृष्टि करके किसी धनवान का काम बिगडता देख कर बडा खेद होता है परतु देश के हित के लिये तो हम यही चाहते हैं कि इस तरह पर प्रगट में नए सुधार की झलक दिखा कर भीतर से दीये तले अधेरा रखने वालों का भडा जल्दी फूट जाय जिस्से और लोगों की आँखे खुलें और लोग सिह का चमडा ओढनेवाले भेडिए को सिह न समझें". इस अखबार के एडीटर को पहले लाला मदनमोहन से अच्छा फायदा हो चुका था परतु बहुत दिन बीत जाने से मानों उस्का कुछ असर नहीं रहा. जिस तरह हरेक चीज़के पुराने पडने से उस्के बधन ढीले पडते जाते हैं इसी तरह ऐसे स्वार्थपर मनुष्यों के चित्त में किसी के उपकार पर, लेन देन पर, प्रीति व्यवहार पर, बहुत काल बीत जानें से मानों उस्का असर कुछ नहीं रहता. जब उन्के प्रयोजन का समय निकल जाता है तब उन्की आँखे सहसा बदल जाती हैं जब वह किसी लायक होते हैं तब उन्के हृदय पर स्वेच्छाचार छा जाता है जब उन्के स्वार्थ में कुछ हानि होती है तब वह पहले के बड़े से बड़े उपकारों को ताक पर रख कर बैर लेने के लिए तैयार हो जाते है. सादो ने कहा है—

"करत खुशामद जो मनुज सो कछु दे बहु लेत।
एक दिवस पावै न तो दो सै दूषण देत॥"*

---

* अला ता नशनवी दह सखुन गोए कि अदक मायः नफए अज़तो दारद।
अगर रोज़े मुरादश बर नयारी दोसद चन्दा अयूबत बर शुमारद॥

इस अखबार का एडीटर विद्वान था और विद्या निस्संदेह मनुष्य की बुद्धि को तीक्ष्ण करती है परंतु स्वभाव नहीं बदल सक्ती जिस मनुष्य को विद्या होती है पर वह उस्पर बरताव नहीं करता वह बिना फल के वृक्ष की तरह निकम्मा है .

लाला मदनमोहन इन लिखावटों को देख कर बडा आश्चर्य करते थे परंतु इस्सै भी अधिक आश्चर्य की बात यह थी कि बहुत लोगों ने कुछ भी जवाब नहीं भेजा उन्मैं कोई, कोई तो ऐसे थे कि बडों की लकीर पर फकीर बने बैठे थे यद्यपि उन्के पास कुछ पूंजी नहीं रही थी उन्का कार व्योहार थक गया था उन्का हाल सब लोग जान्ते थे इस्सै आगे को भी कोई बुर्द हाथ लगने की आशा न थी परंतु फिर भी वह खर्च घटाने मैं बेइज्जती समझते थे . सतान को पढाने लिखाने की कुछ चिंता न थी परंतु ब्याह शादियों मैं अब तक उधार लेकर द्रव्य लुटाते थे उन्सै इस अवसर पर सहायता की क्या आशा थी ? कितने ही ऐसे थे जिन्होंने केवल अपने फायदे के लिए धनवानों का सा ठाठ बना रक्खा था इस वास्तै वह मदनमोहन के मित्र न थे उस्के द्रव्य के मित्र थे वह मदनमोहन पर किसी न किसी तरह का छप्पर रखने के लिए उस्का आदर सत्कार करते थे इसलिए इस अवसर पर अपना पर्दा ढकने के हेतु मदनमोहन के बिगाडने मैं अधिक उद्योग न करें इसी मैं उन्का विशेष अनुग्रह था इस्सै अधिक सहायता मिलने की उन्सै क्या आशा हो सक्ती थी ? कोई, कोई धनवान ऐसे थे जो केवल हाकमों की प्रसन्नता के लिए उन्की पसंद के कामों मैं अपनी अरुचि होने पर भी जी खोल कर रुपया दे देते थे परंतु सच्ची देशोन्नति और उदारता के नाम फूटी कौडी नहीं खर्ची जाती थी वह केवल हाकमों सै मेल रखने मैं अपनी प्रतिष्ठा समझते थे परंतु स्वदेशियों के हानि लाभ का उन्हैं कुछ विचार न था , वह केवल हाकमों मैं आने जाने वाले रईसों सै मेल रखते थे और हाकमों की हा मैं हा मिलाया करते थे, इस वास्ते साधारण लोगों

की दृष्टि मैं उन्का कुछ महत्व न था. हाकमों मैं आने जाने के हेतु मदनमोहन की उन्सैं जान पहचान हो गई थी परतु वह मदनमोहन का काम बिगडने सैं प्रसन्न थे क्योंकि वह मदनमोहन की जगह कमेटी इत्यादि मैं अपना नाम लिखाया चाहते थे इस वास्तै वह इस अवसर पर हाकमों सैं मदनमोहन के हक मैं कुछ उलट पुलट न जडते यही उन्की बडी कृपा थी इस्सैं बढ कर उन्की तरफ सैं और क्या सहायता हो सक्ती थी ? कोई कोई मनुष्य ऐसे भी थे जो उन्की रकम मैं कुछ जोखों न हो तो वह मदनमोहन को सहारा देनें के लिए तैयार थे परतु अपने ऊपर जोखों उठाकर इस डूबती नाव का सहारा लगाने वाला कोई न था. बिष्णुपुराण के इस वाक्य सैं उन्के सब लक्षण मिलते थे—

"जाचत हू निज मित्र हित करैं न स्वारथ हानि।
दस कौड़ी हू की कसर खायँ न दुखिया जानि *॥"

निदान लाला मदनमोहन आज की डाक देखे पीछे बाहर के मित्रों की सहायता सैं कुछ, कुछ निराश हो कर शहर के बाकी मित्रों का माजना (माजरा) देखनें के लिए सवार हुए.

---

* अभ्यर्थितोपि सुहृदा स्वार्थहानिं न मानवः।
पणार्धार्धार्धमात्रेण करिष्यति तदाद्विज॥

प्रकरण ३७

विपत्त में धैर्य

प्रिय वियोग को मूढ़जन गिनत गड़ी हिय भालि।
ताही को निकरो गिनत धीर पुरुष गुणशालि ॥*

रघुवंशे।

लाला ब्रजकिशोर नें अदालत मैं पहुँच कर हरकिशोर के मुकद्दमे में बहुत अच्छी तरह बिबाद किया निहालचद आदि के कई छोटे, छोटे मामलों में राजीनामा हो गया जब ब्रजकिशोर को अदालत के काम से अवकाश मिला तो वह वहाँ से सीधे मिस्टर ब्राइट के पास चले गये

हरकिशोर नें इस अवकाश को बहुत अच्छा समझा तत्काल अदालत मै दरखवास्त की कि "लाला मदनमोहन अपनें बाल-बच्चों को पहले मेरठ भेज चुके हैं उन्के सब माल अस्बाब पर मिस्टर ब्राइट की कुर्की हो रही है और अब वह आप भी रूपोश (अतर्धान) हुआ चाहते हैं, मै चाहता हूँ कि उन्के नाम गिरफ्तारी का वारट जारी हो" इस बात पर अदालत मै बडा बिबाद हुआ, जवाबदिही के वास्तै लाला ब्रजकिशोर बुलाए गए परतु उन्का कहीं पता न लगा हरकिशोर के वकील ने कहा कि लाला ब्रजकिशोर झूँट बोलनें के भय से जान बूझ कर टल गए है . निदान हरकिशोर के हलफी इज़हार (अर्थात शपथपूर्वक वर्णन करने) पर हाकम को बिबस होकर वारट जारी करने का हुक्म देना पडा हरकिशोर ने अपनी युक्ति से तत्काल वारट जारी करा लिया और आप उस्की तामील करनें के लिये

---

* अवगच्छति मूढचेतनः प्रियनाश हृदिशल्यमर्पितम्।
स्थिरधी स्तुतदेव मन्यते कुशलद्वारतया समुद्धृतम् ॥

उस्के साथ गया . मदनमोहन सै जिन लोगों का मेल था उन्मै सै कोई कोई मदनमोहन को खबर करनें के लिये दौड़े परंतु मद भाग्य सै मदन-मोहन घर न मिले .

हाँ मदनमोहन की स्त्री अभी मेरठ सै आई थी वह यह खबर सुन्कर घबरा गई उस्ने चारों तरफ को आदमी दौडा दिये मेरठ मै मदनमोहन के बिगड़ने की खबर कल सै फैल रही थी परतु उस्के दुःख का बिचार करके उस्के आगे यह बात कहने का किसी को साहस न हुआ. आज सबेरे अनायास यह बात उस्के कान पड गई बस इस बात को सुन्ते ही वह मच्छी की तरह तडपनें लागी, रेल के समय मै दो घंटे की देर थी वह उसै दो जुग सै अधिक बीते उस्के घर के बहुत कुछ धैर्य देते थे परतु उसै किसी तरह कल नहीं पडती थी . जब वह दिल्ली पहुँची तो उस्ने अपने घर का और ही रग देखा न लोगों की भीड, न हँसी दिल्लगी की बाते, सब मकान सूना पड़ा था और उस्मै पाँव रखते ही डर लगता था जिस्पर विशेष यह हुआ कि आते ही यह भयकर खबर सुनी जब सै उस्ने यह खबर सुनी उस्के आँसू पल भर नहीं बद हुए वह अपने पति के लिए प्रसन्नता सै अपना प्राण देने को तैयार थी .

इधर लाला मदनमोहन अपने स्वार्थपर मित्रों सै नए, नए बहानो की बाते सुन्ते फिरते थे इतनें मै एकाएक कान्स्टेबल ने कोचमैन को पुकार कर बग्गी खड़ी कराई और नाज़िर ने पास पहुँचते ही सलाम करके वारट दिखाया, लाला मदनमोहन उस्को देखते ही सफेद हो गए, सिर झुका लिया, चहरे पर हवाइयाँ उडनें लगीं, मुख सै एक अक्षर न निकला . हरकिशोर ने एक खखार मारी परतु मदनमोहन की आँख उस्के सामनें न हुई निदान मदनमोहन ने नाजिर को सकेत मै अपनो पराधीन्ता दिखाई इस्पर सब लोग कचहरी को चले .

मदनमोहन अदालत मै हाकम के सामनें खड़े हुए उस्समय लाज

सै उन्की आँख ऊँची नही होती थी हाकम को भी इस बात का अत्यत खेद था परतु वह कानून सै परवस थे

"हमको आप की दशा देख कर अत्यत खेद है और इस हुक्म के जारी करनें का बोझ हमारे सिर आ पडा इस्सै हम को और भी दु.ख होता है परतु हमारे आप के निज के सबध को हम अदालत के काम मै शामिल नही कर सक्ते . ताज की वफादारी, ईमान्दारी, मुल्क का इन्तजाम सब लोगों की हकरसी, और हरेक आदमी के फायदे के लिए इन्साफ करना बहुत ज़रूरी है" हाकम ने कहा "आप से सीधे सादे आदमियों को अपनें भोलेपन सै इतनी तक्लीफ उठानी पड़े यह बडे खेद की बात है और मेरा जी यह चाहता है कि मुझ सै हो सके तो मै अपने निज सै आप के कर्ज का इतजाम करके आप को छोड दू परंतु यह बात मेरे बूते सै बाहर है . क्या आप के कोई ऐसे दोस्त नहीं हैं जो इस्समय आप की सहायता करै ? या आप इन्साल्वन्सी वगैरे की दरख्वास्त रखते हैं ?"

लाला मदनमोहन के मुख सै कुछ अक्षर न निकले इस वास्तै थोडी देर पीछे हार कर उन्को हवालात मै भेजना पडा .

इतने मै लाला ब्रजकिशोर आ गए . उन्का स्वभाव बडा गभीर था परतु बिना बादल के इस बिजली गिरने सै तो वह भी सहम गए उन्को इतनें तूल हो जाने का स्वप्न मै भी खयाल न था इसलिए वह थोडी देर कुछ न समझ सके. वह कभी इन्साल्वन्सी का विचार करते थे कभी हरकिशोर की डिक्री का रुपया दाखिल करके मदनमोहन को तत्काल छुडा लिया चाहते थे परतु इन बातों सै उन्के और प्रबध मै अंतर आता था इसलिए इन्मै सै कोई बात उस्समय न कर सके . वह समझे कि "ईश्वर की कोई बात युक्तिशून्य नही होती कदाचित् इसी मै कुछ हित समझा हो, ईश्वर की अपार महिमा है सेआक्सनी का हेन्री

नामी अमीर बड़ा दुष्ट, क्रूर और अन्याई था उसके स्वेच्छाचार से सब प्रजा त्राहि त्राहि कर रही थी इसलिये उसको भी प्रजा से बडा भय रहता था एक बार वह कुछ दुष्कर्म करके निद्रा बस हुआ उस्समय उसने यह स्वप्न देखा कि वहाँ का ग्राम्य देवता उसकी ओर कुछ क्रोध और दया की दृष्टि से देख रहा है और यह कह रहा है कि "ले अधम पुरुष ! तेरे लिए यह आज्ञा हुई है" यह कह कर उस ग्राम देवता नें एक लिपटा हुआ कागज़ हेन्री की तरफ फेंक दिया और आप अतर्धान हो गया हेन्री ने कागज़ खोल कर देखा तो उसमै ये शब्द लिखे थे कि "छः के पश्चात्" हेन्री ने जग कर निश्चय समझा कि मै छः पहर, छः दिन, छः अठवाड़े, छः मास या छः वर्ष मै अवश्य मर जाऊगा इससे हेन्री को अपनें दुष्कर्मो का बडा पछतावा हुआ और छः महीने तक मृत्यु भय से अत्यत व्याकुल रहा परतु फिर मृत्यु की अवधि छुटे वर्ष समझ कर समाधानी से सत्कर्म करनें लगा अपने कुकर्मो के लिए सच्चे मन से ईश्वर की क्षमा चाही और उससे पीछे केवल सत्कर्म ही सत्कर्म करके प्रजा की प्रीति प्रतिदिन बढ़ाता गया उसकी पहली चाल से वह कडुआ फल उसको मिला था कि जिससे बेचैन होकर वह गुमराह हुआ जाता था उसके बदले इस्समय के आनद के मिठास से उसका चित्त प्रफुल्लित रहनें लगा और जैसे जैसे वह पहले के कडुआपन से इस्समय के मिठास का मुक़ाबला करता गया वैसे वैसे उसका आनद विशेष बढ़ता गया उसके चित्त मै कोई बात छिपाने के लायक नहीं रही इससे उसके मन पर किसी तरह का बोझ न मालूम होता था. लोगों के जी मै उसका विश्वास एक साथ बढ गया बड़े बड़े राजा उसको अपना मध्यस्थ करनें लगे और छः वर्ष पीछे जब वो अपनें मरने की घडी समझता था ईश्वर की कृपा से उसी स्वप्न के कारण वह जर्मनी का राज करनें के लिए सब से योग्य पुरुष समझा जा कर राज सिहासन पर बैठाया गया !!!" इसलिये अब यह सूरत हो चुकी है तो लाला मदनमोहन के चित्त पर इसका पूरा असर हो जाना चाहिए

क्योंकि जो बात सौ बार समझाने सै समझ में नहीं आती वह एक बार की परीक्षा सै भली भाँति मन मै बैठ जाती है और इसी वास्तै लोग "परीक्षा (को) 'गुरु' मान्ते हैं ." बस इतनी बात समझ मैं आते ही लाला ब्रजकिशोर मदनमोहन को धैर्य देने के लिए उस्के पास हवालात मै गये. उस्का मुँह उतर गया था, आँसू डबडबा रहे थे, लज्जा के मारे आँख ऊँची नहीं होती थी .

"आप इतनें अधैर्य न हो इस बिना बिचारी आफत आनें सै मुझको भी बहुत खेद हुआ परतु अब गई बीती बातों के याद करने सै कुछ फायदा नही मालूम होता" लाला ब्रजकिशोर कहने लगे "हर बात के बन्ते बिगडते रहनें सै मालूम होता है कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर की इच्छा ससार का नकशा एक सा बनाए रखने की नहीं है देवताओं को भी दैत्यो सै दु ख उठाना पडता है, सूर्य चद्रमा को भी ग्रहण लगता है, महाराज रामचद्र जी और राजा नल, राजा हरिश्चद्र, राजा युधिष्ठिर आदि बड़े बड़े प्रतापियों को भी हद्द सै बढ कर दुःख झेलने पड़े हैं . अभी तीन सौ साढ़े तीन सौ वर्ष पहलै दिल्ली के बादशाह महम्मद बाबर और हुमायूँ ने कैसी कैसी तक्लीफें उठाई थीं कभी वह हिंदुस्थान के बादशाह हो जाते थे कभी उन्के पास पानी पीने तक को लोटा नहीं रहता था और बलायतों मै देखो फ्रास का सुयोग्य बादशाह चोथा हेन्री एक बार भूखो मरनें लगा तब उस्ने एक पादरी सै गवैयों मै नौकर रखनें की प्रार्थना की परंतु उस्के मद भाग्य सै वह भी नामजूर हुई . फ्रास के सातवें लूई ने एक बार अपना बूट गठने के लिए एक चमार को दिया तब उस्की गठवाई के पैसे उस्की जेब मै न निकले इस्सै उसे लाचार हो कर वह बूट चमार के पास छोड देना पडा अरस्तातालीस नें लोगों के जुल्म सै विष पी कर अपने प्राण दिये थे और अनेक विद्वान बुद्धिमान राजा महाराजाओं को काल चक्र की कठिनाई सै अनेक प्रकार का असह्य क्लेश झेल, झेल कर यह असार ससार छोडना पड़ा है इसलिए इस दुःख सागर मै जो दुःख न भोगना

पड़े उसी का आश्चर्य है जब अपने जीनें का पल भर का भरोसा नही तो फिर कौन्सी बात का हर्ष विषाद किया जाय . यदि ससार मै कोई बात विचार करनें के लायक है तो यह कि हमारी इतनी आयु वृथा नष्ट हुई इस्मैं हम ने कौन्सा शुभ कार्य किया ? परतु इस विषय मै भी कोरे पछतावे के निस्बत आगै के लिए सम्हल कर चलना अच्छा है क्योंकि समय निकल जाता है तुलसीदास जी विनयपत्रिका में लिखते है:—

"लाभ कहा मानुष तन पाये ।
काय बचन मन सपनेहुँ कबहुँक घटत न काज पराये ॥
जो सुख सुर पुर नरक गेह बन आवत बिनहिं बुलाये ।
तिह सुख कहुँ बहु यत्न करत मन समुझत नहि समुझाये ।
पर दारा पर द्रोह मोह बस किये मूढ़ मन भाये ।
गर्भ बास दुख रासि जातना तीव्र बिपति बिसराये ।
भय निद्रा मैथुन अहार सबके समान जग जाये ।
सुर दुर्लभ तन धरि न भजे हरि मद अभिमान गँवाये ।
गई न निज पर बुद्धि शुद्ध ह्वै रहे राम लय लाये ।
तुलसिदास यह अवसर बीते का पुन के पछताये ?"

धम का आधार केवल द्रव्य पर नही है, हरेक अवस्था मै मनुष्य धर्म कर सक्ता है अलबत्ता पहले उस्को अपना स्वरूप यथार्थ जान्ना चाहिये यदि अपनें स्वरूप जान्ने मै भूल रह जायगी तो धर्म अधर्म हो जायगा. और व्यर्थ दुःख उठाना पड़ेगा . विपत्ति के समय घबराहट की बराबर कोई बस्तु हानिकारक नही होती बिपत्ति भँवर के समान है जों जों मनुष्य बल करके उस्सै निकला चाहता है अधिक फँसता है और थक कर बिबस होता जाता है परतु धैर्य सै पानी के बहाव के साथ सहज मै बाहर निकल सक्ता है . ऐसे अवसर पर मनुष्य को धैर्य सै उपाय सोचना चाहिये और परम दयालु भगवान की कृपा दृष्टि पर पूर्ण विश्वास रखना चाहिये उस्को सब सामर्थ है "

"यह सब सच है परंतु विपत्ति के समय धैर्य नहीं रहता" लाला मदनमोहन ने आँसू भर कर कहा

"विपत्ति मनुष्य की कसोटी है, नीति-शास्त्र मै कहा है—

"दूरहि सो डरपत रहै निकट गए तें शूर।
बिपत पडे धीरज गहै सज्जन सब गुण पूर॥"*

लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे "महाभारत मै लिखा है कि राजा बलि देवताओं सै हार कर एक पहाड की कदरा मै जा छिपे तब इद्र ने वहाँ जा कर अभिमान सै उन्को लज्जित करने का विचार किया इस्पर बलि शांति-पूर्वक बोले "तुम इस्समय अपना वैभव दिखा कर हमारा अपमान करते हो परंतु इस्मै तुम्हारी कुछ भी बडाई नहीं है हारे हुए के आगे अपनी ठसक दिखाने सै पहली निर्बलता मालूम होती है, जो लोग शत्रु को जीत कर उस्पर दया करते हैं वही सच्चे वीर समझे जाते हैं. जीत और हार किसी के हाथ नही है यह दोनों समयाधीन है प्रथम हमारा राज था अब तुम्हारा हुआ आगे किसी और का हो जायगा दुःख सुख सदा अदलते बदलते रहते हैं होनहार को कोई नहीं मेट सक्ता तुम भूल सै इस वैभव को अपना समझते हो यह किसी का नहीं है. पृथु, ऐल, मय और भीम आदि बहुत से प्रतापी राजा पृथ्वी पर हो गए है परंतु काल ने किसी को न छोडा इसी तरह तुम्हारा समय आवेगा तब तुम भी न रहोगे इसलिये मिथ्याभिमान न करो सज्जन सुख दुःख सै कभी हर्ष विषाद नहीं करते वह सब अवस्थाओं मै परमेश्वर का उपकार मान कर संतोषी रहते हैं, और सब मनुष्यों को अपना समय देख कर उपाय करना चाहिए सो यह समय हमारे बल करने का नहीं है सहन करने का है इसी सै हम तुम्हारे कठोर

---

* महतो दूरभीरुत्वमासन्ने शूरता गुण.।
विपत्तौ हि महाल्लोके धीरता मनुगच्छति॥

बचन सहन करते हैं. दुःख के समय धैर्य रखना बहुत आवश्यक है क्योंकि अधैर्य होने से दुःख घटता नही बल्कि बढता जाता है इसलिए हम चिता और उद्वेग को अपने पास नही आने देते" ऐसे अवसर पर मनुष्य के मन को स्थिर रखने के लिए ईश्वर ने कृपा करके आशा उत्पन्न की है और इसी आशा से ससार के सब काम चलते हैं इसलिये आप निराश न हो परमेश्वर पर विश्वास रख कर इस दुःख की निवृत्ति का उपाय सोचे. यह विपत्ति आप पर किस तरह एकाएक आ पडी इस्का कारण ढूँढे ईश्वर शीघ्र कोई सुगम मार्ग दिखावेगा".

"मुझको तो इससमय कोई राह नहीं दिखाई देती तुम्हें अच्छा लगे सो करो" लाला मदनमोहन ने जवाब दिया

इतने में लाला ब्रजकिशोर से आकर एक चपरासी ने कहा कि "आप को कोई बाहर बुलाता है" इसपर वह बाहर चले गए.

प्रकरण ३८

सच्ची प्रीति

धीरज धर्म मित्र अरु नारी।
आपति काल परखिये चारी॥

तुलसी कृत.

लाला ब्रजकिशोर बाहर पहुँचे तो उन्को कचहरी से कुछ दूर भीड भाड से अलग वृक्षों की छाया में एक सेजगाडी दिखाई दी चपरासी उन्हें वहाँ लिवा ले गया तो उसमे मदनमोहन की स्त्री बच्चे समेत मालूम हुई लाला मदनमोहन की गिरफ्तारी का हाल सुन्ते ही वह

बिचारी घबरा कर यहाँ दौड आई थी उस्की आँखों सै आँसू नहीं थमते थे और उस्को रोती देख कर उस्के छोटे छोटे बच्चे भी रो रहे थे. ब्रजकिशोर उन्की यह दशा देखकर आप रोनें लगे. दोनों बच्चे भी ब्रजकिशोर के गले सै लिपट गए और मदनमोहन की स्त्री ने अपना और अपने बच्चों का गहना ब्रजकिशोर के पास भेज कर यह कहला भेजा कि "आप के आगे उन्की यह दशा हो इस्सै अधिक दुःख और क्या है? खैर! अब यह गहना लीजिए और जितनी जल्दी हो सके उन्को हवालात सै छुडानें का उपाय करिये"

"वह समझदार होकर अनसमझ क्यों बन्ती हैं? इस घबराहट सै क्या लाभ है? वह मेरठ गई जब उन्होंने आप कहवाया था कि ऐसी सूरत मै इन अज्ञान बालकों की क्या दशा होगी? फिर वह आप इस बात को कैसे भूली जाती हैं? उन्को अपने लिये नहीं तो इन छोटे, छोटे बच्चों के लिये हिम्मत रखनी चाहिये" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे "इंग्लैंड के बादशाह पहले जेम्स की बेटी इलेक्टर पेलेटीन के साथ ब्याही थी उस्ने अपनें पति को बोहोमिया का बादशाह बनाने की उमग मै इन्की तरह अपना सब जेवर खो दिया इस्सै अब मै उस्को अपने निर्वाह के लिये भेष बदल कर भीख माँगनी पडी थी"

"अपनें पति के लिए भीख माँगनी पडी तो क्या चिंता हुई? स्त्री को पति सै अधिक ससार मै और कौन है? जगत माता जानकी जी नें राज सुख छोड कर पति के सग बन मै रहना बहुत अच्छा समझा था, और यह वाक्य कहा था—

"देत पिता परिमित सदा परिमित सुत अरु भ्रात।
देत अमित पति तासु पद नहि पूजहिं किहि भाँति?॥"*

---

* मित ददाति हि पिता मित भ्राता मित सुतः।
अमितस्य च दातार भर्तार का न पूजयेत्॥

सती शिरोमणि सावित्री नें पति के प्राण-वियोग पर भी वियोग नहीं सहा था मनुस्मृति मैं लिखा है—

"शील रहित पर नारि रत होय सकल गुण हानि।
तदपि नारि पूजै पतिहि देव सदृश जिय जानि ॥*
नारिन को व्रत यज्ञ तप और न कछु जग माहि।
केवल पति पद पूज नित सहज स्वर्ग मै जाहि ॥†"

पति के लिए गहना क्या प्राण तक देने पड़ें तो मै बहुत प्रसन्न हूँ. हाय! वह कैद रहैं और मै गहने का लालच करूँ? वह दुःख सहें और मै चैन करूँ? हम लोगों की जबान नही है इस्से क्या हमारे हृदय भी प्रीतिशून्य हैं? क्या कहूँ? इस्समय मेरे चित्त को जो दुःख है वह मै ही जान्ती हूँ. हे धरती माता! तू क्यों नहीं फटती जो मै अभागी उस्मै समा जाऊँ!" लाला मदनमोहन की स्त्री गद्गद स्वर और रुके हुए कण्ठ से भीतर बैठी हुई बहुत धीरे धीरे बोली. "भाई! मै तुम से आज तक नहीं बोली थी परतु इस्समय दुःख की मारी बोल्ती हू सो मेरी ढिठाई क्षमा करना. मुझ से यह दुःख नहीं सहा जाता मेरी छाती फटी जाती है मुझको इस समय कुछ नहीं सूझता जो तुम अपनी बहन के और इन छोटे, छोटे बच्चों के प्राण बचाया चाहते हो तो यह गहना लो और हो सके जैसे इसी समय उन्को छुडा लाओ नहीं तो केवल मै ही नहीं मरूँगी मेरे पीछे ये छोटे छोटे बालक भी झुर झुर कर—"

"बहन! क्या इस्समय तुम बावली हो गई हो तुम्हे अपने हानि लाभ का कुछ भी विचार नहीं है?" लाला ब्रजकिशोर बाहर से सम-

---

* विशीलः कामवृत्तो वा गुणैर्वा परिवर्जितः।
उपचर्य्यः स्त्रिया साध्व्या सततं देववत्पतिः ॥

† नास्ति स्त्रीणा पृथग्यज्ञो न व्रतन्नाप्युपोषितम्।
पति शुश्रूषते येन तेन स्वर्गे महीयते ॥

झाने लगे "देखो शकुनला भी पतिव्रता थी परतु जब उस्के पति ने उस्को झूठा कलक लगा कर परित्याग करने का बिचार किया तब उसै भी क्रोध आए बिना नहीं रहा. क्या तुम उस्सै भी बढ़ कर हो जो अपने छोटे, छोटे बच्चों के दुःख का कुछ बिचार नहीं करतीं? थोडी देर धैर्य रक्खो धीरे धीरे सब हो जायगा".

"भाई! धैर्य तो पहले ही बिदा हो चुका अब मै क्या करूँ? तुम बार बार बाल बच्चों की याद दिवाते हो परतु मेरे जान पति सै अधिक स्त्री के लिये कोई भी नही है". मदनमोहन की स्त्री लजा कर भीतर सै कहने लगी "पति सै बिबाद करना तो बहुत बात है परंतु शकुतला के मन मैं दुष्यत की अत्यत प्रीति हुए पीछे शकुतला को दुष्यत के दोष कैसे दिखाई दिए यही बात मेरी समझ मै नहीं आती फिर मैं शकुतला की अधिक नकल कैसे करूँ? मै बडी आधीन्ता सै कहती हूँ कि ऐसे मर्मवेधी बचन कह कर मेरे हृदय को अधिक घायल मत करो और यह सब गहना ले जाकर हो सके जितनी जल्दी इस डूबती नाव को बचाने का उपाय करो. मुझको तुम्हारे साम्ने इस बिषय मे बात करते अत्यत लजा आती है. हाय! यह पापी प्राण अब भी क्यों नहीं निकलते इस्सै अधिक और क्या दुःख होगा?"

यह बात सुन्ते ही ब्रजकिशोर की आँखो सै आँसू टपकने लगे, थोडी देर कुछ नही बोला गया. उस्को उस्समय नारमडी के अमीरजादे रोबर्ट की स्त्री समबिल्ला की सच्ची प्रीति याद आई. रोबर्ट के शरीर मै एक ज़हरी तीर लगने सै ऐसा घाव हो गया था कि डाक्टरों के बिचार मै जब तक कोई मनुष्य उस्का ज़हर न चूसे रोबर्ट के प्राण बचने की आशा न थी और जहर चूसनें सै चूसने वाले का प्राण भय था रोबर्ट नें अपनी प्राणरक्षा के लिए एक मनुष्य के प्राण लेने सर्वथा अंगीकार न किये परतु उस्की पतिव्रता स्त्री नें उस्के सोते मै उस्के घाव का विष चूस कर उस्पर अपने प्राण न्योछावर कर दिये.

"बहन ! मै तुम्हारे लिए तुम सै कुछ नहीं कहता परतु तुम्हारे छोटे छोटे बालकों को देखकर मेरा दहृय अकुलाता है तुम थोडी देर धैर्य धरो ईश्वर सब मगल करेगा" . लाला ब्रजकिशोर ने जैसे तैसे हिम्मत बाध कर कहा .

"भाई ! तुम कहते हो सो मै भी समझती हू यह बालक मेरी आत्मा है और बिपत्त मै धैय धरना भी अच्छा है परतु क्या करूँ ? मेरा बस नहीं चल्ता देखो तुम ऐसे कठोर मत बनो" मदनमोहन की स्त्री बिलाप कर कहने लगी "महाभारत मै लिखा है कि जिस समय एक कपोत ने अतिथि सत्कार के बिचार सै एक बधिक के लिए प्रसन्नतापूर्वक अपने प्राण दिये तब उस्की कपोती बिलाप कर कहने लगी "हा ! नाथ ! हमने कभी आप का अमगल नहीं बिचारा सतान के होने पर भी स्त्री पति बिना सदा दुःख-सागर मैं डूबती रहती है भाई बधु भी उस्को देख कर शोक करते हैं आप के साथ मै सब दशाओं मैं प्रसन्न थी पर्वत, गुफा, नदी, झर्ना, वृक्ष और अकाश मै मुझको आपके साथ अत्यत सुख मिल्ता था परतु वह सुख आज कहाँ है ? पति ही स्त्री का जीवन है पति बिना स्त्री को जी कर क्या करना है" यह कह कर वह कपोती आग मै कूद पडी फिर क्या मै एक पत्नी सै भी गई बीती हूँ ? तुम सै हो सके तो सौ काम छोड कर पहले इस्का उपाय करो न हो सके तो स्पष्ट उत्तर दो मुझ स्त्री की जाति सै जो उपाय हो सकेगा सो मै ही करूँगी . हाय ! यह क्या गज़ब है ! क्या अभागों को मोत भी माँगी नहीं मिल्ती ?"

"अच्छा ! बहन ! तुमको ऐसा ही आग्रह है तो तुम घर जाओ मै अभी जा कर उन्को छुडाने का उपाय करता हू" लाला ब्रजकिशोर ने कहा .

"न जाने कैसी घड़ी मैं मैं मेरठ गई थी कि पीछे सै यह गज़ब हुआ जिस्समय मेरे पास रहने की आवश्यकता थी उसी समय मै अभागी

दूर जा पडी ! इस दुःख सै मेरा कलेजा फटता है मुझको तुम्हारे कहनें पर पूरा विश्वास है परतु मै एक बार अपनी आँख सै भी उन्है देख सक्ती हूँ ?" मदनमोहन की स्त्री नें रो कर कहा

"इस्समय तो कचहरी मै हजारों आदमियों की भीड हो रही है सन्ध्या को मौका होगा तो देखा जायगा" ब्रजकिशोर ने जवाब दिया .

"तो क्या सन्ध्या तक भी वह—" मदनमोहन की स्त्री के मुख सै पूरा बचन न निकल सका कठ रुक गया और उस्को रोते देख कर उस्के बच्चे भी रोनें लगे .

निदान बड़ी कठिनाई सै समझा कर ब्रजकिशोर नें मदनमोहन की स्त्री को घर भेजा परतु वह जाती बार ज़बरदस्ती अपना सब गहना ब्रजकिशोर को देती गई और उस्के बच्चे भी ब्रजकिशोर को छोड़ कर घर न गए जब ब्रजकिशोर के साथ कचहरी मै जाते थे तब उन्की दृष्टि एका-एक मदनमोहन पर जा पडी और वह उस्को वहाँ देखते ही उस्सै जाकर लिपट गए .

"क्यों जी ! यह कहाँ सै आए ?" मदनमोहन ने आश्चर्य सै पूछा .

"इन्की मा के साथ ये अभी मेरठ सै आए हैं वह बिचारी आप का यह हाल सुन्कर यहाँ दौड आई थी सो मै नें उसै बडी मुश्किल सै समझा बुझा कर घर भेजा है" ब्रजकिशोर ने जवाब दिया

"लाला जी घर क्यों नही चल्ते ? यहाँ क्यों बैठे हो ?" एक लडके ने गले सै लिपट कर कहा .

"मै तो तुम्हारे छंग (सग) आज हवा खाने चलूँगा और अपने बाग मै चल कर मच्छियों का तमाछा (तमाशा) देखूँगा" दूसरा लडका गोद मै बैठ कर कहने लगा

"लालाजी तुम बोल्ते क्यों नहीं ? यहाँ इकल्लै क्यों बैठे हो ? चलो छैल (सैर) करनें चलैं" एक लड़का हात पकड कर खैचनें लगा .

"जाने चुन्नीआल (लाल) कहाँ हैं ? विन्ने (उन्होंने) हमें एक तछवीर (तस्वीर) देनी कही थी लालाजी ! तुम उछे (उसे) चोकटे मै लगवा दोगे ?" दूसरे लड़के ने कहा .

"छैल (सैर) करने नहीं चल्ते तो घर ही चलो, अम्मा आज सबेरे सै न जाने क्यों रो रही है और विन्नें आज कुछ भोजन भी नहीं किया" एक लडका बोला

"लालाजी ! तुम बोल्ते क्यों नहीं ? गुच्छा (गुस्सा) हो ? चलो, घर चलो हम मेरठ छे (सै) खिलौने लाये हैं छो (सो) तुम्है दिखावेंगे" दूसरा ठोडी पकड कर कहनें लगा .

"तुम तो दंगा करते हो चलो हमारे साथ चलो हम तुमको बरफी मँगा देंगे यहाँ लालाजी को कुछ काम है" ब्रजकिशोर ने कहा .

"आँ आँ हम तो लालाजी के छग (सग) छैल को जायंगे बाग मै मच्छियों का तमाछा देखेंगे हमको बफ्फी (बरफी) नही चाहिये हम तुम्हारे छग नही चल्ते" दोनो लडके मचल गये

"चलो हम तुम्हें पीतल की एक, एक ऐसी मछली खरीद देंगे जो लोहे की सलाई दिखाते ही तुम्हारे पास दौड आया करेगी" लाला ब्रज-किशोर ने कहा

"हम यों नही चल्ते हम तो लालाजी के छग चलेंगे ."

"और जब तक लालाजी घर नहीं जायँगे हम भी नही जायँगे" यह कह कर दोनों लड़के मदनमोहन के गले सै लिपट गए और रोने लगे उस्समय मदनमोहन की आँखों सै आँसू टपक पड़े और ब्रजकिशोर का जी भर आया .

"अच्छा ! लो तुम लालाजी के पास खेल्ते रहोगे ? मैं जाऊँ ?" लाला ब्रजकिशोर नें पूछा .

"हाँ हाँ तुम भलेई जाओ, हम अपने लालाजी के पाछ (पास) खेला करेंगे" एक लडके नें कहा .

"और भूक लगी तो ?" ब्रजकिशोर ने पूछा

"यह हमे बफ्फी मँगा देंगे" छोटा लडका अँगुली सै मदनमोहन को दिखा कर मुस्करा दिया .

"महाकवि कालिदास नें सच कहा है वे मनुष्य धन्य हैं जो अपनें पुत्रों को गोद मै लेकर उन्के शरीर की धूल सै अपनी गोद मैली करते है और जब पुत्रों के मुख अकारण हँसी सै खुल जाते हैं तो उन्के उज्वल दाँतो की शोभा देख कर अपना जन्म सफल करते हैं" लाला ब्रजकिशोर बोले और उन लड़को के पास उन्के रखवाले को छोड कर आप अपने काम को चले गए .

बच्चे थोडी देर प्रसन्नता सै खेलते रहे परतु उन्को भूक लगी तब वह भूक के मारे रोने लगे पर वहाँ कुछ खाने को मौजूद न था इसलिये मदनमोहन का जी उस्समय बहुत उदास हुआ .

इतने मै सध्या हुई इस्सै हवालात का दरवाजा बद करने के लिए पोलिस आ पहुँची अब तक उस्ने दीवानी की हवालात और मदनमोहन ब्रजकिशोर आदि का काम समझ कर विशेष रोक टोक नहीं की थी परतु अब करनी पडी वह छोटे छोटे बच्चे मदनमोहन के साथ घर जाने की जिद करते थे और जबरदस्ती हटाने सै फूट फूट कर रोते थे लोगों के हाथो सै छूट छूट कर मदनमोहन के गले सै जा लिपटते थे इसलिए इस्समय ऐसी करुणा छा रही थी कि सब की आँखो सै टप टप आँसू टपकनें लगे

निदान उन बच्चों को बड़ी कठिनाई सै रखवाले के साथ घर भेजा गया और हवालात का दरवाजा बद हुआ .

———

प्रकरण ३६

प्रेत भय।

पियत रुधिर बेताल बाल निशिचरन साथ पुनि।
करत बमन बिकराल मत्त मन मुदित घोर धुनि॥
सद्य मांस कर लिये भयंकर रूप दिखावत।
रुधिरासव मद मत्त पूतना नाचि डरावत।
मांस मेद बस बिवस मन जोगन नाचहि बिबिध गति।
बीर जनन की बीरता बहु बिध बरणै मद मति ॥रसिकजीवने.

संध्या का समय है कचहरी के सब लोग अपना, अपना काम बद करके घर को चल्ते जाते हैं सूर्य के प्रकाश के साथ लाला मदनमोहन के छूटनें की आशा भी कम होती जाती है. ब्रजकिशोर नें अब तक कुछ उपाय नहीं किया. कचहरी बद हुए पीछे कल तक कुछ न हो सकेगा रात को इसी छोटी सी कोठरी मै अधेरे के बीच जमीन पर दुपट्टा बिछा कर सोना पड़ेगा. कहा मित्र मिलापियों के वह जल्से! कहा पानी प्यानें के लिये एक खिदमतगार तक पास न हो! इन बातों के विचार सै लाला मदनमोहन का व्याकुल चित्त अधिक, अधिक अकुलानें लगा.

इसी बिचार मै सन्ध्या हो गई चारों तरफ अधेरा फैल गया मकान मनुष्य शून्य हो गया आस पास की सब चीजें दिखनी बद हो गईं

---

* रक्त नक्तचरौघैः पिवति चैवमति व्यग्रकुन्तः शकुन्तः।
क्रव्य नव्य गृहीत्वा प्रणुदति मुदितो मत्तवेतालबालः।
क्रीडत्यत्रीडमस्मिन् रुधिर मधुवशात् पूतना कुत्सितागी।
योगिन्यो मासमेदः प्रमुदितमनसः शूरशक्तिं स्तुवन्ति॥

लाला मदनमोहन के मानसिक विचारों का प्रगट करना इस्समय अत्यत कठिन है जब वह अपने बालकपन सै लेकर इस्समय तक के वैभव का विचार करता है तो उस्की आखों के आगे अधेरा आ जाता है लाला हरदयाल आदि रगीले मित्रों की रगीली बाते, चुन्नीलाल, शिभूदयाल आदि की झूटी प्रीति, रात के एक, एक बजे तक गानें नाचने के जल्से, खुशामदियों का आठ पहर घेरे रहना, हर बात पर हाँ मै हाँ, हर बात पर वाह वाह, हर काम मै प्राण देनें की तैयारी के साथ अपनी इस्समय की दशा का मुकाबला करता है और उन लोगों की इन दिनों की कृतघ्नता पर दृष्टि पहुंचाता है तो मन मैं दु.ख की हिलोरे उठने लगती है ! ससार केवल धोके की टट्टी मालूम होता है जिन्के ऊपर अपने सब कार्य व्यवहार का आधार था, जिन्को बारबार हजारो रुपे का फायदा कराया गया था, जो हर बात मै पसीनें की जगह खून डालने को तैयार रहते थे वह सब इस्समय कहा है ? क्या उन्मैं सै थोड़े सै कर्ज को चुकानें के लिए कोई भी आगे नही आ सक्ता ? जिन्की झूटी प्रीति मै आ कर अपनी पतिव्रता स्त्री की प्रीति भूल गया, अपने छोटे छोटे बच्चों के लालन पालन का कुछ विचार नहीं किया वह मुझ मै चैन करनें वाले इस्समय कहा हैं ?

"मेरी इज्जात गई, मेरी दौलत गई, मेरा आराम गया, मेरा नाम गया, मै लज्जा सै किसी को मुख नही दिखा सक्ता, किसी सै बात नही कर सक्ता, फिर मुझको ससार मै जीनें सै क्या लाभ है ? ईश्वर मोत दे तो इस दुःख सै पीछा छुटे परतु अभागे मनुष्य को मोत क्या मागे सै मिल सक्ती है ? हाय ! जब मुझको तीस वर्ष की अवस्था मै यह ससार ऐसा भयकर लगता है तो साठ वर्ष की अवस्था मै न जाने मेरी क्या दशा होगी ?

"हा ! मोत का समय किसी तरह नहीं मालूम हो सक्ता सूर्य के उदय अस्त का समय सब जान्ते हैं, चंद्रमा के घटनें बढ़नें का समय

सब जान्ते हैं, ऋतुओं के बदलनें का, फूलों के खिलने का, फलों के पकने का समय सब जान्ते हैं परतु मोत का समय किसी को नहीं मालूम होता . मोत हर वक्त मनुष्य के सिरपर सवार रहती है उस्के अधिकार करने का कोई समय नियत नहीं है कोई जन्म लेते ही चल बसता है कोई हर्ष विनोद मै, कोई पढने लिखने मै, कोई खाने कमानें मै, कोई जवानी की उमग मै, कोई मित्रों के रस रग मै अपनी सब आशाओं को साथ लेकर अचानक चल देता है परतु फिर भी किसी को मोत की याद नही रहती कोई परलोक का भय करके अधर्म नहीं छोडता ? क्या देखत भूली का तमाशा ईश्वर ने बना दिया है ?"

लाला मदनमोहन के चित्त मै मोत का बिचार आते ही भूत प्रेतादि का भय उत्पन्न हुआ. वह अँधेरी रात, छोटी सी कोठरी, एकात जगह, चित्त की व्याकुलता मै यह बिचार आते ही सब सुधरे हुए बिचार हवा में उड़ गए छाती धडकने लगी, रोमाच हो आए, जी दहल गया और मन की कल्पना शक्ति नें अपना चमत्कार दिखाना शुरू किया .

कोई प्रेत उन्की कोठरी मै मोजूद है उस्के चलने फिरने की आवाज सुनाई देती है बल्कि कभी, कभी वह अपनी लाल, लाल आँखों से क्रोध करके मदनमोहन को घुरकता है, कभी अपना भट्टी सा मुँह फैला कर मदनमोहन की तरफ दौडता है, कभी गुस्से से दात पीस्ता है, कभी अपना पहाड़ सा शरीर बढा कर बोझ से मदनमोहन को पीस डाला चाहता है, कभी कानके पर्दे फाड डालने वाले भयकर स्वर से खिलखिला कर हँस्ता है, कभी नाचता है, कभी गाता है, कभी ताली बजाता है, और कभी जम-दूत की तरह मदनमोहन को उस्के कुकर्मों के लिए अनेक तरह के दुर्वचन कहता है ! लाला मदनमोहन नें पुकारनें का बहुत उपाय किया परतु उन्के मुख से भय के मारे एक अक्षर न निकल सका, वह प्रेत मानों उन्की छाती पर सवार होकर उन्का गला घोंटने लगा . उस्के भय से मदनमोहन

अधमरे हो गए उन्होंनें हाथ पाँव चलाने का बहुत उद्योग किया परतु कुछ न हो सका . इस्समय लाला मदनमोहन को परमेश्वर की याद आई

जो मदनमोहन परमेश्वर की उपासना करने वालों को और धर्म की चर्चा करने वालों को नास्तिक भाव सै हँसा करता था और मनुष्य देह का फल केवल ससारी सुख बताता था किसी तरह सै छल छिद्र कर कै अपना मतलब निकाल लेने को बुद्धिमानी समझता था वही मदनमोहन इस्समय सब तरफ सै निराश होकर ईश्वर की सहायता माँगता है ! हा ! आज इस रगीले जवान की क्या दशा हो गई ! इस्का अभिमान कहाँ जाता रहा ! जब इस्का कुछ बस न चल सका तो यह मूछित होकर पृथ्वी पर गिर पडा और कुछ देर यों ही पडा रहा .

जब थोडी देर पीछे होश आया चित्त का उद्वेग कुछ कम हुआ तो क्या देखता है कि उस भयकर प्रेत के बदले एक स्त्री इस्का सिर अपने गोद मै लिये बैठी हुई धीरे धीरे इस्के पाँव दबा रही है, अँधेरे के कारण उस्का मुख नहीं दिखाई देता परतु उस्की आँखों सै गरम, गरम आँसुओं की बूँदे उस्के मुख पर गिर रही हैं और इन आँसुओं ही सै मदनमोहन को चेत हुआ है .

इस्समय लाला मदनमोहन के व्याकुल चित्त को दिलासा मिलने की बहुत जरूरत थी सो यह स्त्री उन्है दिलासा देने के लिए यहाँ आ पहुँची परतु मदनमोहन को इस्सै कुछ दिलासा न मिला वह इसै देख कर उल्टे डर गये .

"प्राणनाथ ! कैसे हो ! आप के चित्त मै इस्ससमय अत्यत व्याकुलता मालूम होती है इसलिये अपनें चित्त का जरा समाधान करो, हिम्मत बाँधो मै आप के लिए भोजन लाई हू सो कुछ भोजन करके दो घूँट पानी के पिओ जिस्सै आप के चित्त का समाधान हो इस छोटी सी कोठरी मै अधेरे के बीच आप को जमीन पर लेटे देख कर मेरा कलेजा फटता है" उस स्त्री ने कहा .

"यह कोन ? वही मेरी पतिव्रता स्त्री है जिस्ने मुझ से सब तरह का दुःख पाने पर भी कभी मन मैला नहीं किया ! आवाज़ से तो वैसी ही मालूम होती है परंतु उस्का आना सभव नहीं रात के समय कचहरी के बद मकान मे पुलिस की पहरे चोकी के बीच वह बिचारी कैसे आ सकैगी ! मै जान्ता हू कि मुझको कोई छलावा छलता है" यह कह कर लाला मदनमोहन ने फिर आँखे बद कर लीं .

"मेरे प्राणपति के लिए यहाँ क्या मुझको नर्क मैं भी जाना पड़े तो क्या चिंता है ? सच्ची प्रीति का मार्ग कोई रोक सक्ता है ? स्त्री को पति के सग कैद, जगल या समुद्रादि मे जाने से कुछ भी भय नहीं है परतु पति के बिना सब ससार सूना है, यदि सुख दुःख के समय उस्की विवाहिता स्त्री उस्के काम न आवैगी तो और कोन आवैगा ?" उस स्त्री ने कहा

लाला मदनमोहन से थोडी देर कुछ नही बोला गया न जानें उन्के चित्त मैं किसी तरह का भय उत्पन्न हुआ, अथवा किसी बात के सोच बिचार मे अपना आपा भूल गए, अथवा लज्जा से कुछ न बोल सके, और लज्जा थी तो अपनी मूर्खता से इस दशा मे पहुँचने की थी, अथवा अपनी स्त्री के साथ ऐसे अनुचित व्यवहार करने की थी ? परतु लाला मदनमोहन के नेत्रों से आँसू निस्सदेह टपकते थे वह उस स्त्री की गोद में सिर रख, फूट फूट कर रो रहे थे .

"मेरे प्राण प्रीतम ! आप उदास न हों ज़रा हिम्मत रक्खो जो आप की यह दशा होगी तो हम लोगों का पता कहाँ लगेगा ? दुःख सुख वायु के समान सदा अदलते बदलते रहते है इस लिये आप अधैर्य न हों आप के चित्त की स्थिरता पर हम सब का आधार है" उस स्त्री ने कहा .

"मुझ से इस्समय तेरे सामने आँख उठा कर नहीं देखा जाता, एक अक्षर नहीं बोला जाता, मै अपनी करनी से अत्यत लज्जित हूं जिस्पर तू अपनी लायकी से मेरे घायल हृदय को क्यों अधिक घायल करती है ?

मुझको इतना दुःख उन कृतघ्न मित्रों की शत्रुता सै नहीं होता जितना तेरी लायकी और आधीनता सै होता है तू मुझको दुःखी करनें के लिए यहाँ क्यों आई ? तैने मेरे साथ ऐसी प्रीति क्यों की ? मै ने तेरे साथ जैसी क्रूरता की थी वैसी ही तैने भी मेरे साथ क्यों न की ? मैं निस्सदेह तेरी इस प्रीति लायक नहीं हूँ फिर तू ऐसी प्रीति करके क्यों मुझको दुःखी करती है ?" लाला मदनमोहन ने बडी कठिनाई सै आँसू रोक कर कहा

"प्यारे प्राणनाथ ! मै आप की हू और अपनी चीज़ पर उस्के स्वामी को सब तरह का अधिकार होता है जिस्पर आप इतनी कृपा करते है यह तो बड़े ही सौभाग्य की बात है" वह स्त्री मदनमोहन की इतनी सी बात पर न्योछावर होकर बोली "महाभारत मै एक कपोती नें एक बधिक के जाल मै अपने पति के फसे पीछे उस्के मुख सै अपनी बडाई सुन्कर कहा था कि "आहा ! हम मै कोई गुण हो या न हो जब हमारे पति हम सै प्रसन्न होकर हमारी बडाई करते हैं तो हमारे बड़भागिनी होनें मै क्या सदेह है ? जिस स्त्री सै पति प्रसन्न नही रहते वह झुल्सी हुई बेल के समान सदा मुर्झाई रहती है ."

"तेरी ये ही तो बातें हृदय विदीर्ण करनें वाली है मुझको क्षमा कर मेरे पिछले अपराधों को भूल जा . मे जान्ता हू कि मुझ सै अब तक जितनी भूलें हुई हैं उन्में सब सै अधिक भूल तेरे हक मे हुई है मै एक हीरा को ककर समझा, एक बहुमूल्य हार को सर्प समझ कर मै नें अपनें पास सै दूर फेंक दिया, मेरी बुद्धि पर अज्ञानता का पर्दा छा गया परतु अब क्या करूँ ? अब तो पछताने के सिवाय मेरे हाथ और कुछ भी नही है" लाला मदनमोहन आसू भर कर बोले .

"मुझको तो ऐसी कोई बात नहीं मालूम होती जिस्सै मेरे लिये आप को पछताना पड़े मै आप की दासी हूँ फिर ऐसे सोच विचार करने की

क्या जरूरत है ? और मै आप की मर्जी नही रख सकी इस्मे तो उल्टी मेरी ही भूल पाई जाती है" उस स्त्री ने रुके कठ से कहा .

"सच है सोने की पहचान कसौटी लगाये बिना नहीं होती परतु तू यहाँ इस्समय कैसे आ सकी ? किस्के साथ आई ? कैसे पहरेवालों ने तुझे भीतर आने दिया ? यह तो समझा कर कह" लाला मदनमोहन ने फिर पूछा .

"मै अपनी गाडी मै अपनी दो टहलनियों के साथ यहाँ आई हूँ और मुझको मेरे भाई के कारण यहाँ तक आने मै कुछ परिश्रम नही हुआ मै विशेष कुछ नही कह सक्ती वह आप आकर अभी आप से सब वृत्तात कहेंगे" यह कहते, कहते वह स्त्री दरवाजे के पास जाकर अतर्धान हो गई !!!

प्रकरण ४०

सुधरनें की रीति .

कठिन कला हू आय है करत करत अभ्यास ।
नट ज्यो चालतु धरत पर साधे बरस छ मास ॥

वृद ।

लाला मदनमोहन बड़े आश्चर्य मै थे कि यह क्या भेद है जगजीवनदास यहाँ इस्समय कहाँ से आए ? और आए भी तो उन्के कहनें से पुलिस कैसे मान गई ? क्या उन्होंने मुझको हवालात से छुडानें के लिए कुछ उपाय किया ? नहीं उपाय करनें का समय अब कहाँ है ? और आते तो अब तक मुझ से मिले बिना कैसे रह जाते ?

इतने मै दूर सै एकाएक प्रकाश दिखाई दिया और लाला व्रज-किशोर पास आ खड़े हुए

"हैं ! आप इस्समय यहा कहाँ ! मै ने तो समझा था कि आप अपने मकान मै आराम सै सोते होंगे" लाला मदनमोहन ने कहा .

"यह मेरा मद भाग्य है जो आप ऐसा समझते हैं क्या मुझ को भी आप ने उन्ही लोगों मै गिन लिया ?" लाला व्रजकिशोर बोले .

"नही, मै आप को सच्चा मित्र समझता हूँ परतु समय आए बिना फल नही होता ."

"यदि यह बात आप ने अपने मन सै कही है तो मेरे लिये भी आप वैसा ही धोका खाते है जैसा औरों के लिए खाते थे . मै पहले कह चुका हूँ कि मनुष्य का स्वभाव उस्की बातों सै नही मालूम होता उस्के कामों सै मालूम होता है फिर आप ने मुझ को किस्तरह सच्चा मित्र समझ लिया ?" लाला व्रजकिशोर पूछने लगे "मै ने आप के मुकद्दमों मै पैरवी की जिस्के बदले भर पेट महन्ताना ले लिया यदि आप के निकट उन्के मेरे चाल चलन मै कुछ अतर हो तो इतना ही हो सक्ता है कि वह कच्चे खिलाडी थे जरा सी हलचल होते ही भंग निकले मै अपना फ़ायदा समझ कर अब तक टैरा रहा "

"जो लोग फायदा उठा कर इस्समय मेरा साथ दे उन्को भी मै कुछ बुरा नहीं समझता क्योंकि जिन्पर मुझ को बडा विश्वास था वह सब मुझे अधर धार मै छोड कर चले गए और ईश्वर ने मुझ को किसी लायक न रक्खा" लाला मदनमोहन रोकर कहने लगे .

"ईश्वर को सर्वथा दोष न दो वह जो कुछ करता है सदा अपने हित ही की बात करता है ." लाला व्रजकिशोर कहने लगे, "श्रीमद्-भागवत मै राजा युधिष्ठिर सै श्रीकृष्णचद्र ने कहा है—

"जा नर पर हम हित करैं ताको धन हर लेहि।
धन दुख दुखिया को स्वतः सकल बन्धु तज देहि॥"*

सो निस्संदेह सच है क्योंकि उद्योग की माता आवश्यकता है इसी तरह अनुभव सै उपदेश मिल्ता है. सादी ने गुलिस्ता मै लिखा है कि "एक बादशाह अपनें एक गुलाम को साथ लेकर नाव मै बैठा. वह गुलाम कभी नाव मै नही बैठा था इसलिए भय सै रोने लगा. धैर्य और उपदेश की बातों सै उस्के चित्त का कुछ समाधान न हुआ निदान बादशाह सै हुक्म लेकर एक बुद्धिमान नें (जो उसी नाव मै बैठा था) उसै पानी मैं डाल दिया और दो चार गोते खाए पीछे नाव पर ले लिया जिस्सै उस्के चित्त की शाति हो गई. बादशाह नें पूछा इस्मै क्या युक्ति थी? बुद्धिमान ने जवाब दिया कि पहले यह डूबने का दुःख और नाव के सहारे बचने का सुख नही जान्ता था. सुख की महिमा वही जान्ता है जिस्को दुःख का अनुभव हो."

"परतु इस्समय इस अनुभव सै क्या लाभ होगा घोडा बिना चाबुक वृथा है" लाला मदनमोहन नें निराश होकर कहा.

"नही, नहीं ईश्वर की कृपा सै कभी निराश न हो वह कोई बात युक्ति-शून्य नही करता" लाला ब्रजकिशोर कहने लगे "मिस्टर पारनेल नें लिखा है कि "एक तपस्वी जन्म सै बन मै रह कर ईश्वराराधन करता था एक बार धर्मात्माओं को दुखी और पापियों को सुखी देख कर उस्के चित्त मै ईश्वर के इसाफ बिषै शका उत्पन्न हुई और वह इस बात का निर्धार करनें के लिये बस्ती की तरफ चला. रस्ते मैं उस्को एक जवान आदमी मिला और यह दोनों साथ साथ चलने लगे. सन्ध्या समय इन्को एक ऊँचा

---

* यस्याहमनुगृह्णामि तस्य वित्तं हराम्यहम्।
ततोधन त्यजन्त्यस्य स्वजनादुःख दुःखितम्॥

महल दिखाई दिया और वहाँ पहुँचे जब उसके मालिक नें इन दोनों का हद्द सै ज्यादः सत्कार किया. प्रातःकाल जब ये चलनें लगे तो उस जवान ने एक सोने का प्याला चुरा लिया. थोडी दूर आगे बढे इतनें मै घनघोर घटा चढ आई और मेह बरसनें लगा इस्सै यह दोनो एक पास को झोपडी मैं सहारा लेनें गए. उस झोपडी का मालिक अत्यत डरपोक और निर्दय था इसलिये उस्नें बडी कठिनाई सै इन्हैं थोडी देर ठैरनें दिया, अनादर सै सूखी रोटी के थोड़े से टुकड़े खाने को दिये और बरसात कम होते ही चलने का सकेत किया. चल्ती बार उस जवान नें अपनी बगल सै सोने का प्याला निकाल कर उसै दे दिया जिस्पर तपस्वी को जवान की यह दोनों बाते बडी अनुचित मालूम हुई, खैर, आगे बढे सन्ध्या समय एक सद्गृहस्थ के यहाँ पहुँचे जो मध्यम भाव सै रहता था और बडाई का भी भूका न था. उस्नें इन्का भली भाँति सत्कार किया और जब ये प्रातःकाल चलने लगे तो इन्को मार्ग दिखानें के लिये एक अगुआ इन्के साथ कर दिया पर यह जवान सबकी दृष्टि बचा कर चल्ती बार उस सद्गृहस्थ के छोटे से बालक का गला घोंट कर उसै मारता गया. और एक पुल पर पहुंच कर उस अगुए को भी धक्का दे नदी मै डाल दिया! इन्बातों सै अब तौ तपस्वी के धिःकार और क्रोध की कुछ हद्द न रही. वह उस्को दुर्वचन कहा चाहता था इतने मै उस जवान का आकार एकाएक बदल गया उसके मुख पर सूर्य का सा प्रकाश चमकनें लगा और सब लक्षण देवताओं के से दिखाई दिये वह बोला "मैं परमेश्वर का दूत हूँ और परमेश्वर तुम्हारी भक्ति सै प्रसन्न हैं, इसलिये परमेश्वर की आज्ञा सै तुम्हारा सशय दूर करनें आया हूँ जिस काम मै मनुष्य की बुद्धि नहीं पहुँचती उस्को वह युक्तिशून्य समझनें लगता है परतु यह उस्की केवल मूर्खता है. देखो मेरे यह सब काम तुम को उल्टे मालूम पडते होंगे परतु इन्हीं सै उस्के इसाफ का बिचार करो जिस मनुष्य का प्याला मै नें चुराया वह नामवरी का लालच करके हद्द सै ज्यादः

अतिथि सत्कार करता था और इस रीति सै थोड़े दिन मै उस्के भिखारी हो जानें का भय था इस काम सै उस्की वह उमंग कुछ कम होकर मुनासिब हद्द पर आ गई जिस्को मैंने प्याला दिया वह पहलै अत्यन्त कठोर और निठुर था इस फायदे सै उस्को अतिथि सत्कार की रुचि हुई . जिस सद्गृहस्थ का पुत्र मै ने मार डाला उस्को मेरे मारने का वृत्तात न मालूम होगा परतु वह इन दिनों सन्तान की प्रीति मै फँस कर अपने और कर्तब्य भूलनें लगा था इस्सै उस्की बुद्धि ठिकाने आ गई जिस मनुष्य को मै ने अभी उठा कर नदी मै डाल दिया वह आज रात को अपनें मालिक की चोरी कर के उसै नाश किया चाहता था इसलिये परमेश्वर के सब कामों पर विश्वास रक्खो और अपना चित्त सर्वथा निराश न होने दो ."

"मुझ को इस्समय इस्बात सै अत्यत लज्जा आती है कि मै ने आपके पहले हितकारी उपदेशों को वृथा समझ कर उन्पर कुछ ध्यान नहीं दिया" लाला मदनमोहन नें मन सै पछतावा करके कहा

"उन सब बातो का खुलासा इतना ही है कि सब पहलू विचार कर हरेक काम करना चाहिये क्योंकि ससार मै स्वार्थपर ही स्वार्थपर विशेष दिखाई देते हैं" लाला ब्रजकिशोर ने कहा

"मै आप के आगे इस्समय सच्चे मन सै प्रतिज्ञा करता हूँ कि मै अब कभी स्वार्थपर मित्रों का मुख नही देखूंगा झूंटी ठसक दिखाने का बिचार न करूंगा, झूंटे पक्षपात को अपने पास न आनें दूंगा और अपने सुख के लिए अनुचित मार्ग पर पाँव न रक्खूंगा" लाला मदनमोहन ने बडी दृढ़ता सै कहा

"इस्समय आप यह बातें निस्सदेह मन सै कहते है परतु इस तरह प्रतिज्ञा करनेवाले बहुत मनुष्य परीक्षा के समय दृढ नहीं निकलते . मनुष्य का जातीय स्वभाव (आदत) बडा प्रबल है तुलसीदासजी नें भगवान सै यह प्रार्थना की है :—

"मेरो मन हरिजू हठ न तजै।
निशि दिन नाथ देउँ सिख बहु बिध करत सुभाव निजै॥
ज्यों युवती अनुभवति प्रसव अति दारुण दुख उपजै।
है अनुकूल बिसारि शूल शठ पुनि खल पतिहि भजै॥
लोलुप भ्रमत गृह पशू ज्यों जहँ तहँ पद त्राण बजै॥
तदपि अधम बिचरत तेहि मारग कबहुँ न मूढ लजै॥
हो हार्यौ करि यत्न बिबिध बिधि अतिशय प्रबल अजै।
तुलसिदास बस होइ तबहि जब प्रेरक प्रभु बरजै॥"

आदत की यह सामर्थ्य है कि वह मनुष्य की इच्छा न होने पर भी अपनी इच्छानुसार काम करा लेती है, धोका दे दे कर मन पर अधिकार कर लेती है, जब जैसी बात करानी मजूर होती है तब वैसीही युक्ति बुद्धि को सुझाती है, अपनी घात पाकर बहुत काल पीछे राख में छिपी हुई अग्नि के समान सहसा चमक उठती है मैं गई बीती बातों की याद दिवा कर आप को इस्समय दुखित नहीं किया चाहता परंतु आप को याद होगी कि उस्समय मेरी ये सब बातें चिकनाई पर बूंद के समान कुछ असर नहीं करती थीं इसी तरह यह समय निकल जायगा तो मैं जान्ता हूं कि यह सब विचार भी वायु की तरह तत्काल पलट जायँगे हम लोगों का लखोटिया ज्ञान है वह आग के पास जानें सै पिगल जाता है परंतु उस्सै अलग होते ही फिर कठोर हो जाता है इस दशा मैं जब इस्समय का दुःख भूल कर हमारा मन अनुचित सुख भोगने की इच्छा करे तब हम को अपनी प्रतिज्ञा के भय सै वह काम छिप कर करने पड़ें, और उन्को छिपाने के लिये झूटी ठसक दिखानी पड़े झूटी ठसक दिखाने के लिए उन्हीं स्वार्थपर मित्रों का जमघट करना पड़े, और उन स्वार्थपर मित्रों का जमघट करनें के लिए वही झूटा पक्षपात करना पड़े तो क्या आश्चर्य है?" लाला ब्रजकिशोर ने कहा

"नहीं, नहीं यह कभी नहीं हो सक्ता. मुझ को उन लोगों सै इतनी

अरुचि हो गई है कि मैं वैसी साहूकारी सै ऐसी गरीबी को बहुत अच्छा समझता हू. क्या अपनी आदत कोई नहीं बदल सक्ता ?" लाला मदन-मोहन नें जोर देकर पूछा .

"क्यों नहीं बदल सक्ता ? मनुष्य के चित्त सै बढ कर कोई वस्तु कोमल और कठोर नहीं है वह अपनें चित्त को अभ्यास कर के चाहै जितना कम ज्यादः कर सक्ता है कोमल सै कोमल चित्त का मनुष्य कठिन सै कठिन समय पडने पर उसे भी झेल लेता है और धीरै धीरै उस्का अभ्यासी हो जाता है इसी तरह जब कोई मनुष्य अपने मन मैं किसी बात की पक्की ठान ले और उस्का हर वक्त ध्यान बना रक्खे उस्पर अत तक दृढ रहै तो वह कठिन सै कठिन कामों को सहज में कर सक्ता है परतु पक्का बिचार किये बिना कुछ नहीं हो सक्ता" लाला ब्रजकिशोर कहने लगे :—

"इटली का प्रसिद्ध कवि पीट्रार्क लोरा नामी एक परस्त्री पर मोहित हो गया इसलिए वह किसी न किसी बहानें सै उस्के सन्मुख जाता और अपनी प्रीति भरी दृष्टि उस्पर डालता परंतु उस्के पतिव्रतापन सै उस्के आगे अपनी प्रीति प्रगट नही कर सक्ता था . लोरा ने उस्के आकार सै उस्का भाव समझ कर उस्को अपने पास सै दूर रहनें के लिए कहा और पीट्रार्क ने भी अपनें चित्त सै लोरा की याद भूलने के लिये दूर देश का सफर किया परतु लोरा का ध्यान क्षण भर के लिये उस्के चित्त सै अलग न हुआ . एक तपस्वी नें बहुत अच्छी तरह उस्को अपना चित्त अपने बस मै रखनें के लिये समझाया परतु लोरा को एक दृष्टि देखते ही पीट्रार्क के चित्त सै वह सब उपदेश हवा मैं उड गये . लोरा की इच्छा ऐसी मालूम होती थी कि पीट्रार्क उस्सै प्रीति रक्खे परतु दूर की प्रीति रक्खे . जब पीट्रार्क का मन कुछ बढनें लगता तो वह अत्यत कठोर हो जाती परतु जब उस्को उदास और निराश देखती तब कुछ कृपा दृष्टि करके उस्का चित्त

बढा देती इस तरह अपनें पातिव्रत मैं किसी तरह का धब्बा लगाए बिना लोरा नें बीस वर्ष निकाल दिये . पीट्रार्क वेरोना शहर मैं था उस्समय एक दिन लोरा उसै स्वप्न मैं दिखाई दी और बड़े प्रेम सै बोली कि "आज मै नें इस असार ससार को छोड दिया एक निर्दोष मनुष्य को ससार छोडती बार सच्चा सुख मिल्ता है और मैं ईश्वर की कृपा सै उस सुख का अनुभव करती हूँ परतु मुझको केवल तेरे वियोग का दुःख है" "तो क्या तू मुझ सै प्रीति रखती थी ?" पीट्रार्क ने पूछा "सच्चे मन सै" लोरा नें जवाब दिया और उस्का उस दिन मरना सच निकला अब देखिए कि एक कोमल चित्त की स्त्री, अपनें प्यार की इतनी आधीनता पर बीस वर्ष तक प्रीति की अग्नि को अपनें चित्त मैं दबा सकी और उसे सर्वथा प्रबल न होनें दिया फिर क्या हम लोग पुरुष होकर भी अपने मन की छोटी छोटी कामनाओं के प्रबल होनें पर उन्है नहीं रोक सक्ते ?

"यूनान के प्रसिद्ध वक्ता डिमास्टिनीस को पहलै पूरा सा बोलना नहीं आता था उस्की जबान तोतली थी और जरा सी बात कहनें मै उस्का दम भर जाता था परतु वह बड़े बड़े उस्तादो की वक्तृता का ढग देख कर उन्की नकल करने लगा और दरिया के किनारे या ऊची टेकडियों पर मुँह मै ककर भर कर बडी देर, देर तक लगातार छद बोलने लगा जिस्सै उस्का तुतलाना और दम भरना ही नहीं बद हुआ बल्कि लोगों के हल्ले को दबा कर आवाज़ देने का अभ्यास हो गया . वह वक्तृता करने सै पहलै अपनें चेहरे का बनाव देखने के लिये काच के सामने खड़े हो कर अभ्यास करता था और उस्को वक्तृता करतो बार कधे उचकाने की आदत पड गई थी इस्सै वह अभ्यास के समय दो नोकदार हथियार अपने कंधों सै ज़रा ऊँचे लटकाए रखता था कि उन्के डर सै कधे न उचकने पायँ . उस्ने अपनी भाषा मै प्रसिद्ध इतिहासकर्ता थ्युसी-डाइगस का सा रस लानें के लिये उस्के लेख की आठ नकल अपनें हाथ सै की थीं .

"इग्लैड का बादशाह पाँचवाँ हेन्री जब प्रेस आफ वेल्स (युवराज) था तब इतनी बदचलनी मै फँस गया था और उस्की सगति के सब आदमी ऐसे नालायक थे कि उस्के बादशाह होने पर बड़े जुल्म होनें का भय सब लोगों के चित्त मै समा रहा था . जिस्समय इग्लैड के चीफ जस्टिस गासकोइन नें उस्के अपराध पर उसै कैद किया तो खास उस्के पिता ने इस बात सै अपनी प्रसन्नता प्रगट की थी कि शायद इस रीति सै वह कुछ सुधरे परतु जब वह शाहज़ादा बादशाह हुआ और राज का भार उस्के सिर आ पडा तो उस्ने अपनी सब रीति भाँति एकाएक ऐसी बदल डाली कि इतिहास मै वह एक बडा प्रामाणिक और बुद्धिमान बादशाह समझा गया . उस्ने राज पाते ही अपनी जवानी के सब मित्रों को बुला कर साफ कह दिया था कि मेरे सिर राज का बोझ आ पडा है इसलिये मै अपना चाल चलन सुधारा चाहता हूँ सो तुम भी अपना चाल चलन सुधार लेना आज पीछे तुम्हारी कोई बदचलनी मुझको मालूम होगी तो मै तुम्है अपने पास न फटकने दूगा . उस्सै पीछे हेन्री ने बड़े योग्य, धर्मात्मा, अनुभवी और बुद्धिमान आदमियों की एक काउन्सिल बनाई और इसाफ की अदालतों मै सै सदिग्ध मनुष्यों को दूर करके उन्की जगह बड़े ईमानदार आदमी नियत किये खास कर अपने कैद करने वाले गासकोइन की बडी प्रतिष्ठा करके उस्सै कहा कि "जिस्तरह तुमने मुझको स्वतत्रता सै कैद किया था इसी तरह सदा स्वतत्रता सै इसाफ करते रहना"

"मेरे चित्त पर आपके कहने का इस्समय बडा असर होता है और मै अपनें अपराधों के लिए ईश्वर सै क्षमा चाहता हूँ मुझको उस अमीरी के बदले इस कैद मै अपनी भूल का फल पाने सै अधिक सतोष मिल्ता है मै अपने स्वेच्छाचार का मज़ा देख चुका अब मेरा इतना ही निवेदन है कि आप प्रेम विवस होकर मेरे लिये किसी तरह का दुख न उठायॅ और अपना नीति मार्ग न छोड़े" लाला मदनमोहन नें दृढता सै कहा .

"अब आप के विचार सुधर गए इसलिये आप के कृतकार्य (काम याब) होने में मुझको कुछ भी संदेह नहीं रहा ईश्वर आप का अवश्य मंगल करेगा" यह कह कर लाला ब्रजकिशोर ने मदनमोहन को छाती सै लगा लिया.

———

प्रकरण ४१

सुख की परमावधि

जब लग मन के बीच कछु स्वारथ को रस होय।
सुद्ध सुधा कैसे पियै! परै बीच में तोय॥

सभाविलास

"मैंने सुना है कि लाला जगजीवन दास यहाँ आए हैं?" लाला मदनमोहन नें पूछा

"नहीं इस्समय तो नहीं आये आप को कुछ संदेह हुआ होगा" लाला ब्रजकिशोर नें जवाब दिया.

"आप के आनें सै पहलै मुझको ऐसा आश्चर्य मालूम हुआ कि जाने मेरी स्त्री यहाँ आई थी परंतु यह संभव नहीं कदाचित स्वप्न होगा" लाला मदनमोहन ने आश्चर्य सै कहा.

"क्या केवल इतनी ही बात का आप को आश्चर्य है? देखिये चुन्नीलाल और शिवूदयाल पहलै बराबर मेरी निंदा करके आप का मन मेरी तरफ़ सै बिगाडते रहते थे बल्कि आप के लेनदारों को बहका कर आप के काम बिगाडनें तक का दोषारोप मुझ पर हुआ था परंतु फिर उसी चुन्नीलाल नें आप सै मेरी बडाई की, आप सै मेरी सफाई कराई, आप को

मेरे मकान पर लिवा लाया, आप की तरफ़ से मुझ से क्षमा मांगी मुझे फ़ायदा पहुँचा कर प्रसन्न रखने के लिए आप को सलाह दी और अंत मैं मेरा आप का मेल करवा कर चुन्नीलाल और शिभूदयाल दोनों अलग हो गए ! उसी समय मेरठ से जगजीवन दास आकर आप के घर को लिवा ले गया ! मैंने जन्म भर आप से रुपे का लालच नहीं किया था सो तीन दिन में ऐसे कठिन अवसर पर ठगों की तरह पाकटचेन, हीरे की अँगूठी और बाली ले ली ! एक छोटे से लेनदार की डिक्री में आप को इतनी देर यहाँ रहना पड़ा क्या इन बातों से आप को कुछ आश्चर्य नहीं होता ? इन्में कोई बात भेद की नहीं मालूम होती ?" लाला ब्रजकिशोर ने पूछा .

"आप के कहनें से इस मामले में इस्समय निस्संदेह बहुत सी बातें आश्चर्य की मालूम होती हैं और किसी किसी बात का कुछ, कुछ मतलब भी समझ में आता है परंतु सब बातों के जोड़ तोड़ पूरे नहीं मिलते और मन भरनें के लायक कोई कारण समझ में नही आता यदि आप कृपा करके इन बातों का भेद समझा देंगे तो मै आप का बडा उपकार मानूँगा" लाला मदनमोहन नें कहा .

"उपकार मान्नें के लायक मुझ से आप की कौन्सी सेवा बन पडी है ?" लाला ब्रजकिशोर ने जवाब दिया और अपनी बगल से बहुत से काग़ज़ और एक पोटली निकाल कर लाला मदनमोहन के आगे रख दी . इन काग़ज़ों में मदनमोहन के लेनदारों की तरफ़ से अदाज़न पचास हज़ार रुपे के राज़ीनामे फारखती, और रसीद वगैरे थी और मिस्टर ब्राइट का सैलमन्ट था जिस्में पैंतीस हज़ार पर उस्से फैसला हुआ था और मिस्टर रसल की रकम उस्के देनें में लगा दी थी, और मिस्टर ब्राइट की बेची हुई चीज़ों में से जो चीज़ फेरनी चाहें बराबर दामों में फेर देनें की शर्त ठैर गई थी . उस पोटली में पद्रह बीस हज़ार का गहना था !

लाला मदनमोहन यह देख कर आश्चर्य सै थोडी देर कुछ न बोल सके फिर बड़ी कठिनाई सै केवल इतना कहा कि "मुझको अब तक जितनी आश्चर्य की बातें मालूम हुई थीं उन सब मै यह बढ कर है !"

"जितना असर आप के चित्त पर होना चाहिये था परमेश्वर की कृपा सै हो चुका इसलिये अब छिपाने की कुछ जरूरत नहीं मालूम होती" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे "आप किसी तरह का आश्चर्य न करैं . इन सब बातों का भेद यह है कि मै ठेठ सै आप के पिता के उपकार मै बध रहा हू जब मैनें आप की राह बिगडती देखी तो यथाशक्ति आप को सुधारनें का उपाय किया परतु वह सब बृथा गया जब हरकिशोर के झगड़े का हाल आप के मुख सै सुना तो मुझको प्रतीत हुआ कि अब रुपे की तरी नहीं रही लोगों का विश्वास उठता जाता है और गहनें गाँठे के भी ठिकाने लगने की तैयारी है आप की स्त्री बुद्धिमान होनें पर भी गहनें के लिये आप का मन न बिगाड़ेगी लाचार होकर उसे मेरठ ले जाने के लिये जगजीवन दास को तार दिया और जब आप मेरे कहने सै किसी तरह न समझे तो मै नें पहले विभीषण और विदुर जी के आचरण पर दृष्टि करके अलग हो बैठनें की इच्छा की परतु उस सै चित्त को सतोष न हुआ तब मैं इस बात के सोच विचार मैं बडी देर डूबा रहा तथापि स्वाभाविक झटका लगे बिना आप के सुधरनें की कोई रीति न दिखाई दी और सुधरे पीछे उस अनुभव सै लाभ उठानें का कोई सुगम मार्ग न मिला . अत मैं सुग्रीव को धमकी देकर रघुनाथ जी जिसतरह राह पर ले आये थे इसी तरह मुझको आप के सुधारनें की रुचि हुई और मैं नें आप के वास्तै आप ही सै कुछ रुपया लेकर बचा रखनें का बिचार किया पर यह काम चुन्नीलाल के मिलाये बिना नहीं हो सक्ता था इसलिये तत्काल उस्के भाई (हीरालाल) को अपनें हाँ नोकर रख लिया परंतु इस अवसर पर हरकिशोर की बदोलत

अचानक यह विपत्ति सिर पर आ पडी. चुन्नीलाल आदि का होसला कितना था ? तत्काल घबरा उठे और उन्सै मेल करने के लिये फिर मुझको कुछ परिश्रम न करना पडा. वह सब रुपे के गुलाम थे जब यहा कुछ फ़ायदे की सूरत न रही, उधर लोगों ने आप पर अपने लेने की नालशें कर दीं और आप की तरफ सै जवाबदिही करनें मै इन्को अपनी खायकी प्रगट होने का भय हुआ तत्काल आप को छोड, छोड़ किनारे हो बैठे. मै ने आप सै जो कुछ इनाम पाया था उस्की कीमत सै यह सब फैसले घटा, घटा कर किये गए हैं अब दिसावर वालों का कुछ जुजबी सा देना बाकी होगा सो दो, चार हजार मै निबट जायगा परतु मेरे मन की उमग इस्समय कुछ नहीं निकली इस्सै मै अत्यत लज्जित हू" लाला ब्रजकिशोर नें कहा.

"आप ने मेरे फायदे के लिए बिचारे लेनदारों को वृथा क्यों दबाया" लाला मदनमोहन बोले.

"न मै ने किसी को दबाया न धोका दिया न अपनें बस पडते कसर दी उन लोगों ने बढा, बढा कर आप के नाम जो रकमै लिख ली-थीं वही यथाशक्ति कम की गई हैं और वह भी उन्की प्रसन्नता सै कम की गई हैं" लाला ब्रजकिशोर ने अपना बचाव किया

"इन सब बातों सै मै आश्चर्य के समुद्र मै डूबा जाता हू. भला यह पोटली कैसी है ?" लाला मदनमोहन ने पूछा.

"आप की हवालात की खबर सुन्कर आप की स्त्री यहा दौड आई थी और जिस्समय मैं आप सै बातें कर रहा था उस्समय उसी के आने की खबर मुझको मिली थी मैं नें उसै बहुत समझाया परतु वह आप की प्रीति मै ऐसी बावली हो रही थी कि मेरे कहने सै कुछ न समझी, उस्नें आप को हवालात सै छुडानें के लिए यह सब गहना जबरदस्ती मुझै दे दिया. वह उस्समय सै पाच फेरे यहा के कर चुकी है उस्नें सबेरे सै एक दाना मुह मै नहीं लिया उस्का रोना पल भर के लिये बद

नहीं हुआ रोते, रोते उस्को आखे सूज गईं . हा ! उस्की एक, एक बात याद करने सै कलेजा फटता है . और आप ऐसी सुपात्र स्त्री के पति होनें सै निस्सदेह बड़े भाग्यशाली हो" लाला ब्रजकिशोर नें आसू भर कर कहा .

"भाई ! जब उस्ने उसी समय तुमको यह गहना दे दिया था तो फिर मेरे छुडाने मैं देर क्यों हुई ?" लाला मदनमोहन ने सदेह करके पूछा

"एक तो दो एक लेनदारों का फैसला जब तक नहीं हुआ था और हरकिशोर की डिक्री का रुपया दाखिल कर दिया जाता तो फिर उन्के घटने की कुछ आशा न थी, दूसरे आप के चित्त पर अपनी भूलो के भली भाति प्रतीत हो जाने के लिए भी कुछ ढील की गई थी परतु कचहरी बरखास्त होने सै पहलै मै ने आप के छुडाने का हुक्म ले लिया था और इसी कारण सै मेरी धर्म की बहन आपकी सुशीला स्त्री को आप के पास आने मे कुछ अड़चल नहीं पडी थी हा मै नें आप का अभिप्राय जाने बिना मिस्टर ब्राइट सै उस्की चीजै फेरने का वचन कर लिया है यह बात कदाचित आप को बुरी लगी होगी" लाला ब्रजकिशोर ने मदनमोहन का मन देखने के लिए कहा .

"हर्गिज नहीं, इस बात को तो मै मन सै पसद करता हू झूटी भडक दिखाने मै कुछ सार नही है 'आई बहू आए काम गई बहू गए काम' की कहावत बहुत ठीक है और मनुष्य अपने स्वरूपानुरूप प्रामाणिकपने सै रह कर थोड़े खर्च मै भली भाति निर्वाह कर सक्ता है" लाला मदनमोहन ने सतोष करके कहा .

"अब तो आप के बिचार बहुत ही सुधर गए . एबडोलोमीन्स को गरीबी सै एकाएक साइडोनिया के सिहासन पर बैठाया गया तब उस्ने सिकदर से यही कहा था कि "मेरे पास कुछ न था जब मुझको विशेष आवश्यकता भी न थी अब मेरा वैभव बढ़ेगा वैसी ही मेरी आवश्यकता

भी बढ जायगी" कच्चे मन के मनुष्यों को अपनें स्वरूपानुरूप बरताव रखनें मैं जाहिरदारी की झूटी झिझक रहती है इसी सै वह लोग जगह जगह ठोकर खाते हैं परतु प्रामाणिकपनें सै उचित उद्योग करकै मनुष्य हर हालत मैं सुखी रह सक्ता है" लाला ब्रजकिशोर नें कहा .

"क्या अब चुन्नीलाल और शिभूदयाल आदि को उन्की बदचलनी का कुछ मजा दिखाया जायगा ?" लाला मदनमोहन ने पूछा .

"किसी मनुष्य की रीत भाति सुधरे बिना उस्सै आगे को काम नहीं लिया जा सक्ता परतु जिन लोगों का सुधारना अपने बूते सै बाहर हो उन्सै काम काज का संबध न रखना ही अच्छा है और जब किसी मनुष्य सै ऐसा संबध न रक्खा जाय तो उस्के सुधारने का बोझ सर्वशक्तिमान परमेश्वर अथवा राज्याधिकारियों पर समझ कर उस्सै द्वेष और बैर रखनें के बदले उस्की हीन दशा पर करुणा और दया रखनी सज्जनों को विशेष शोभित करती है" लाला ब्रजकिशोर ने जवाब दिया .

"मेरी मूर्खता सै मुझ पर जो दुख पड़ना चाहिये था पड चुका. अब अपना झूटा बचाव करनें सै कुछ फ़ायदा नहीं मालूम होता मैं चाहता हू कि सब लोगों के ही निमित्त इन दिनों का सब वृत्तात छपवाकर प्रसिद्ध कर दिया जाय" लाला मदनमोहन ने कहा .

"इस्की क्या ज़रूरत है ? संसार मैं सीखने वालों के लिये बहुत से सतशास्त्र भरे पड़े हैं" लाला ब्रजकिशोर नें अपना संबंध बिचार कर कहा

"नहीं सच्ची बातों मैं लजाने का क्या काम है ? मेरी भूल प्रगट हो तो मैं मन सै चाहता हू कि मेरा परिणाम देख कर और लोगों की आंखैं खुलैं इस अवसर पर जिन जिन लोगों सै मेरी जो, जो बातचीत हुई है वह भी मैं उस्मैं लिखनें के लिए बता दूँगा" लाला मदनमोहन नें उमग सै कहा .

"धन्य ! लाला साहब ! धन्य ! अब तो आप के सुधरे हुए बिचार हद्द के दरजे पर पहुंच गए" लाला ब्रजकिशोर नें गद्गद बाणी सै कहा "औरों के दोष देखने वाले बहुत मिल्ते हैं परंतु जो अपनें दोषों को यथार्थ जान्ता हो और जान बूझ कर उन्का झूटा पक्ष न करता हो बल्कि यथाशक्ति उन्के छोडने का उपाय करता हो वही सच्चा सज्जन है"

"सिलसिलेबन्द सीधा, सीधा मामूली काम तो एक बालक भी कर सक्ता है परंतु ऐसे कठिन समय मै मनुष्य की सच्ची योग्यता मालूम होती है आपनें मुझको इस अथाह समुद्र मैं डूबने सै बचाया है इस्का बदला तो आप को ईश्वर के हा सै मिलैगा मै सो जन्म तक लगातार आप की सेवा करूं तो भी आप का कुछ प्रत्युपकार नहीं कर सक्ता परंतु जिस तरह महाराज रामचद्र जी नें भिलनी के बेर खाकर उसै कृतार्थ किया था इसी तरह आप भी अपनी रुचि के विपरीति मेरा मन रखनें के लिये मेरी यह प्रार्थना अगीकार करैं" लाला मदनमोहन ब्रजकिशोर को आठ, दस हज़ार का गहना देने लगे .

"क्या आप अपने मन मैं यह समझते हैं कि मै नें किसी तरह के लालच सै यह काम किया है ?" लाला ब्रजकिशोर रुखाई सै बोले "आगे को आप ऐसी चर्चा करके मेरा जी वृथा न दुखावैं . क्या मै ग़रीब हू इसी सै आप ऐसा बचन कह कर मुझको लज्जित करते हैं ? मेरे चित्त का सतोष ही इस्का उचित बदला है . जो सुख किसी तरह के स्वार्थ बिना उचित रीति सै परोपकार करने मैं मिल्ता है वह और किसी तरह नहीं मिल सक्ता . वह सुख, सुख की परमावधि है इसलिए मै फिर कहता हू कि आप मुझको उस सुख सै वचित करने के लिये अब ऐसा बचन न कहैं "

"आप का कहना बहुत ठीक है और प्रत्युपकार करना भी मेरे बूते सै बाहर है परतु मै केवल इस्समय के आनद मैं....."

"बस आप इस विषय में और कुछ न कहें . मुझको इस समय जो मिला है उससे अधिक आप क्या दे सक्ते हैं ? मैं रुपे पैसे के बदले मनुष्य के चित्त पर विशेष दृष्टि रखता हू और आप को देने ही का आग्रह हो तो मै यह मागता हू कि आप अपना आचरण ठीक रखनें के लिए इस समय जैसे मजबूत हैं वैसे ही सदा बनें रहें और यह गहना मेरी तरफ से मेरी पतिव्रता बहन और उसके गुलाब जैसे छोटे छोटे बालकों को पहनावे जिन्के देखने से मेरा जी हरा हो" लाला ब्रजकिशोर ने कहा .

"परमेश्वर चाहेंगे तो आगे को आप की कृपा से कोई बात अनुचित न होगी" लाला मदनमोहन नें जवाब दिया

"ईश्वर आप को सदा भले कामों की सामर्थ्य दे और सब का मगल करे" लाला ब्रजकिशोर सच्चे सुख मे निमग्न होकर बोले

निदान सब लोग बड़े आनद से हिलमिल कर मदनमोहन को घर लिवा ले गए और चारों तरफ से "बधाई" "बधाई" होने लगी .

जो सच्चा सुख, सुख मिलनें की मृगतृष्णा से मदनमोहन को अब तक स्वप्न में भी नहीं मिला था वही सच्चा सुख इस समय ब्रजकिशोर की बुद्धिमानी से परीक्षागुरु के कारण प्रामाणिक भाव से रहने में मदनमोहन को घर बैठे मिल गया ! ! !

* समाप्तम् *